



चौराशी. वैष्णवनी

वारता.

१४३४

छपायी प्रसिद्ध करनार

पुस्तकालय न. १७ वनवास दलपतराम

तथा

पुस्तकालयत्रीभोवन रणछोड डाकोरना

अमदावाद्

भामानी हयेलीमां अमदावाद् युनाइटेड प्रिन्टींगअन्ने

जनरल एजन्सी कंपनी 'लिमिटेडना' प्रेसमां

रणछोडलाल गंगारामे छापी.

सन् १८८१.

संवत् १९३७.



॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

॥ श्रीगोपीजनवक्त्रायनमः ॥

अथ श्री आचार्यं महाप्रभुन के सेवकनकी यौरासी पार्ता लि-  
प्यते अथ श्री आचार्यं महाप्रभुनके सेवक दामोदरदास हरसांनी  
तिनकी पार्ता सो अेक समै श्री आचार्यं महाप्रभु प्रथीपरी कृमाकों  
पाव धारे हुते तय तहां दामोदरदास श्री आचार्यं महाप्रभुनके  
साथ हेसा श्री आचार्यं महाप्रभु आप दामोदरदास सों अपने श्री  
मुप सों दमलाकहते और कहते ने यह मार्ग तेरे लीपे प्रगट कीनीं  
है सो श्री आचार्यं महाप्रभु आप अैसे कहते सो प्रथी परिकृमा  
करत श्री गोकुल पधारे से थी गोकुलमें अेक यैतरा श्री गोविंद धाट  
उपर हुतो तहां श्री आचार्यं महाप्रभु आप जियांम करते ताहारे  
उपर श्री आचार्यं महाप्रभुनकी जैठक है और श्री द्वारिकानाथं  
के मंदिर है तहां श्री आचार्यं महाप्रभु जैठे हुते तासमें श्री आ-  
चार्यं महाप्रभुनका महा सिंता उपण ने श्री ढादुरेण तो आ-  
सा दीनी है ने तुम जवनका अल संबंध करावो तय श्री आचार्य-  
ं महाप्रभु अपने मनमें विचारै ने जवतो दोषवंत हैं और श्री  
पुश्पोचमण तो गुननिधान है तातें अैसे कैसे संबंध होय तातें सिंता  
उपण सो अत्यंत आपुर नये ता समय श्री ढादुरेण आप तकाज  
प्रगट होय के श्री आचार्यं महाप्रभुन सों पूछो ने तुम सिंता  
आपुर क्योंहो तय श्री आचार्यं महाप्रभु आप कहें ने जवकी  
स्वरूप तो तुम जनत हीहो दोषवंत हैं सो तुम सों संबंध कैसे होय  
तय श्री ढादुरेण आप हैं ने तुम जवन कां अल संबंध करावो  
गेतिन कोहो अंगीकार करंगो तुम जवनका नाम देउ गेतिनके सकल  
दोषनि वन होय गेये वार्ते आवण शुदि ११ के दिन अर्द्ध रात्रकां अ-  
धप्रातः काणपवित्रा द्वासी हुती तातें पवित्रा सुतको करी राज्यो हुतो  
सो पवित्र श्री पूरन पुश्पोचमणको पहरायो मिअी भाग धरीता  
समय केये अक्षर हुते ताको श्री आचार्यं महाप्रभु आपसिद्धांत  
रहस्य ग्रंथ कीयेहैं सो श्लोक. १००

श्रावण स्यामले पक्षे एकादस्यां महानिशि ॥ सा

क्षांत भगवता प्रोक्तंतद क्षरस उच्यते. १

तासमें श्री आचार्य महाप्रभुनने पूछो ने दमलाते कछु सुन्यो



तय दामोदरदासने भीनीजी कीनीजी महाराज श्री हाकुरेजी के अचन सुने तो सही परिकछु समुझ्यो नाही तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कही जे मोक्ष श्री हाकुरेजीने आत्ता कीनी है जे तुम जवनको अंख संबंध करावोगे तिन कोहिं अंगोकार कइ गीतिनके सकलदोष निवर्त होयगे ताते अंख संबंध अवश्य करेनां ॥

पार्ता प्रसंग.

बहुरि श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री हाकुरेजी के पास यह मां-ग्यो जे मेरे आगे दामोदरदासकी देह न छुटे और श्री आचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास से कछु गोप्य न राखते और श्री आचार्यजी महाप्रभु श्री भागवत अहमिस देखते क्या कहते और मार्गको सि-द्धांत भगवद लीला रहस्य श्री आचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदास के हृदये स्थापन कीयो ॥

पार्ता प्रसंग. २

और एक समे दामोदरदास और श्री गुसांछंजी अंकांतमें बैठे हुते तय श्री गुसांछंजीने दामोदरदाससें पूछो जे तुम श्री आचार्य-जी महाप्रभुनको कहा करि जनतहौ तय दामोदरदासने कही जे हमतो श्री आचार्यजी महा प्रभुनको जगदीस जे श्री हाकुरेजी तिन हुते अधिक करि जनत हैं तय श्री गुसांछंजी दामोदरदाससें कहै जे तुम ऐसे क्यों कहतहों जे श्री हाकुरेजीने श्री आचार्यजी अउ हैं तय दामोदरदासने कही जे महाराज दान वजो कै दाता वजो काहुके पास धन अहुत होय तो राज कहा करे जे देवताको जनिये और श्री आ-चार्यजी महाप्रभुनको सर्व स्वधन श्री हाकुरेजीहैं सो हम जवको दान कीये ताते हम श्री आचार्यजी महाप्रभुनको सब ते अउ करि जनतहैं ॥

पार्ता प्रसंग. ३

और एक समे श्री आचार्यजी महाप्रभु तथा श्री गुसांछंजी अपनी बैठकमें बैठे हुते पास द्वैवारि वैभवा हंसिमे जलि अके बैठे हुते आप उनसें हसते खेलते मसखरी करते बहुत प्रसन्नतामें उन संजेल भेकी पार्ता करतहुते ता समे दामोदरदास आये तासमें श्री गुसांछंजीने बहुत आदरसन्मान कीये पाछे दामोदरदास बैठे तय श्री गुसांछंजी से दामोदरदासने कही जे महाराज अपनी मार्ग नि-श्च्यताको नाही यह मार्ग अत्यंत कष्ट आतुरताको हैं तय श्री गुसांछं-जीने कही जे तुम आखी बात कहतहौ परि हमको जव श्री आचा-र्यजी महाप्रभुनकी कृपा होयगी तय कष्ट आतुरता होयगी यह मार्ग तो श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी कृपाते न होय तय दामोदरदास सा-

ष्टांग दंडवत करिकें जीनती कीये जे हमकोनो अकवार राजसों वीनती  
करनीहै पाछें आप प्रभु हो बनी जनोंगे सो करोगे परि यह मार्गतो  
याभातिकोहै तब श्री गुसांछण बहुत प्रसन्न भये और कहें जे ह-  
मको यह आर्ता श्री आचार्यण द्वाराहै और कहें जे तुम न कहोतौ  
कौन कहे हम तुमको देखतहैं तब अति प्रसन्न होतह आप श्री आ-  
चार्यण महा प्रभुनके सेवक जानिकें दामोदरदासकी सिद्धा मानत भये  
ताते अउसो अउर

आर्ता प्रसंग. ॥ ४ ॥

और प्रथम श्री आचार्यण महाप्रभु श्री ढाकुरण के पास य-  
ह भाष्यो जे अरे आगे दामोदरदासकी देहन छुटे ताको हेत यह जे  
श्री आचार्यण महाप्रभु संन्यास ग्रहन करिअको विचार मनमें करे  
तासमें श्री गोपीनाथण श्री गुसांछणये दोउ बाई बाणक हुते ताते  
मार्गको सिद्धांत आर्ता श्री आचार्यण महाप्रभु संन्यास ग्रहन कीअ-  
तब कितनेक दिन पाछें श्री गुसांछणने अक्वाणसों पूछो जे श्री  
आचार्यण महाप्रभुनने मार्ग प्रगट कीयो है सो उच्छयको कहा प्रकार  
है हमनो कछु जनत नाही तब श्री अक्वाणने कछो जे मार्ग तथा  
उच्छयको प्रकार सब दामोदरदास सों कहे हैं सो तुम उनसों पूछो तु-  
मसों दामोदरदास कह्यो तब श्री गुसांछण दामोदरदासने बहुत स-  
न्मान करि भक्तभावसों धरये पधराये पाछे उच्छयको प्रकार श्री  
गुसांछणने पूछो सो दामोदरदासने सब कछो.

वारता प्रसंग ॥ ५ ॥

और अक सभे दामोदरदास के पिताको आरुद्धिन हुतो तादिन  
श्री गुसांछण दामोदरदास के घर पधारे और दामोदरदासको आरु-  
करवायो पाछे उत्थापन के सभे दामोदरदास दृश्य को आये तब श्री  
गुसांछणने कही जे मोको आरु करवायेको दक्षणा देउ तब दामोदर-  
दास कह्यो दक्षणा में अक जगत कहुगो सो सिद्धांत रहस्य के उह  
स्मिक्को व्याख्या कहे यह अस्ती जातहैं तब श्री गुसांछणने कही जे  
आगे कहे तब दामोदरदासने कही जे मैं तो भूतनाही संकल्प कोयो  
है तब श्री गुसांछण सुप करि रहे पाछे दामोदरदासने मार्गकी प्र-  
नामिका श्री गुसांछण के आगे कही श्री बागवतकी सुभाषनी श्री आ-  
चार्यण महाप्रभुन के ग्रंथकी टीका और रहस्य आर्ता श्री आचार्यण  
महाप्रभु कहे हैं सोसब कहीता पाछे श्री गुसांछण दामोदरदासको  
नमस्कार करनन दैते याते जे श्री गुसांछण अपने मनमें विचार  
जे श्री आचार्यण महाप्रभुनको स्वरूप दामोदरदास के हृदय अर्पे स-

દાં સર્વદાં બિરાજમાન હૈ તો ઈન પાસ દંડોત નમસ્કાર ન કરાવની  
 યાતે નમસ્કાર ન કરત દેતે પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન દામોદર-  
 દાસકોં દર્શન દીયો ઐર આત્મા દીયેન્ને અમતે તુ શ્રી ગુસાંઈજીકો  
 ચરણોદક નિત્યલીયો કરિ તમ પ્રાંતઃકાળ દામોદરદાસ શ્રી ગુસાંઈજી કે  
 પાસ આએ ઐર ચરણોદક માગ્યો તમ શ્રી ગુસાંઈજીને ચરણોદક  
 કીનાહીં કીના તમ દામોદરદાસને શ્રી ગુસાંઈજી સોં કહા જોમોકોં શ્રી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી આત્મા બધેહૈ ઐર દર્શન બધેહૈ ઐર કહ્યો  
 જો તુ શ્રી ગુસાંઈજીકો ચરણોદક નિત્ય લીજીયો તમ શ્રી ગુસાંઈજીને  
 ચરણોદક દીયો ઐર દામોદરદાસકોં શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ તીસરે  
 દિન દર્શન દેતે માર્ગ કીરહસ્ય ખાર્તા કહતે એસી કૃપા કરતે ઐર ક-  
 દાયિત તીસરે દિન દર્શન નહોતો તાદિન દામોદરદાસ કે પેટમે પીડા  
 હોતી અમ્યંત કષ્ટ પાવતે પાછે જમ દર્શન હોતો તમ તત્કાળ કષ્ટ  
 નિવર્તન હો જતો એસે કરત કિતનેક વર્ષ પર્યંત દામોદરદાસકોં શ્રી ગુ-  
 સાંઈજીને દર્શન દીનો તથા શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દર્શન દીનાં  
 એસી કૃપા કરને જો વાત હોતી સો દામોદરદાસ શ્રી ગુસાંઈજી કે  
 આમે કહતે ઐર માર્ગ કે પ્રકારકી ખાર્તા અહરનિસ કહતે જો દામો-  
 દરદાસકે હૃદય મેં શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુજી આપ વિરાજતહૈં તાતે  
 દામોદરદાસકોં દંડોતન કરન દેતે ઐર કહતે જો દામોદરદાસકી વાર્તા  
 કોપારે નાહીં એસે માર્ગ દેટેકકે કૃપાપાત્રહૈં ॥

#### ખાર્તા પ્રસંગ ૬

તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસકોં પૂછે જો દામોદ-  
 રદાસ તુ શ્રી ગુસાંઈજીકો કહા કરિ જનતહો તમ દામોદરદાસને કહી  
 જો મહારાજ હમનો તુમહારે પુત્ર કરિ જનત હૈં તમ શ્રી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુનને દામોદરદાસકોં આત્મા દીની જો જોસેં તુમ મેકોં જનત  
 હો તેસે ઈનકો સ્વરૂપ જાનિયો ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને શ્ર-  
 ગાર રસમંડત ગ્રંથ કીયો હૈ તામેં લિખેહૈં તાતે યે દામોદરદાસ એસે  
 કૃપાપાત્ર ભગવદીહૈં.

#### ખાર્તા પ્રસંગ ૭

ઐર પ્રથમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસસોં કહ્યો જો  
 યહ માર્ગ તેરે લીયે પ્રગટ કીયો હૈ તાકો હેત યહ જગહાં લગિ શ્રી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુકે માર્ગકી રિથિતિહૈ તહાંતાંઈ દામોદરદાસકી સ્થિ-  
 તિ ગોખ્ય હૈ પાછે દામોદરદાસને કહ્યો જો મેં શ્રી હાકુરજીકે ખચન  
 તો સુને પરિ કછુ સમુજ્યો નાહીં તા સમેં શ્રી આચાર્યજી મહાપ્ર-  
 ભુને કહ્યો જો આજ હું દસ જન્મકો અંતરાયહૈ તાકો હેત યહ જો જમ

( ४ )

लग्न श्री आचार्यजी महाप्रभुनके मार्गकी स्थिति है तहां तांछ दा-  
मोदरदासके प्रागज इरि इरि हैं मार्गके स्थल प्रथम याते कहें श्री आ-  
चार्यजी महाप्रभुननें दामोदरदासके -हृदयमें जगवद लीला स्थापी संपू-  
र्ण अष्टिका संशोधन करि जेको तांको हेत यह जे जय्य लगी श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनके मार्गकी स्थिति है तयलगी दामोदरदासकी हु  
स्थिति है सो वे दामोदरदास जैसे ठेके कृपापात्र जगवदी यहैं ताते  
धनकी आर्ताको पार नाहीं ताते धनकी आर्ता कहां तांछ लिप्पिये ॥

आर्ता प्रसंग. ८

॥ वैश्रव १ ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

कृष्णदास मेघन क्षत्रि तिनकी वार्ता.

सो जेक सभ श्री आचार्यजी महाप्रभुनने प्रथी परिक्रमा  
करी तय कृष्णदास मेघनसाथ हे सो अद्वीनारायनके परली ओरकिरनी  
नाम पर्वत है सो तहां ते जेक जडी मित्रा गिरी सो कृष्णदासने हाथ  
सो थांली तय श्री आचार्यजी महाप्रभु प्रसन्न जमे तय कृष्णदा-  
ससो कह्यो जे माग कहा मांगत है तय तीन अस्तु मांगी जेकतो  
मुप्परताको दोस जय दूसरे मार्गको सिद्धांत समझो तीसरे जे गुरके  
धर पधारो तामे होय अस्तु दीनी गुरके धर पधारी जेकी नाहीं कीनी  
जहुरी अद्वीकायमते आगे पधारे जहां जयकी गम्य नाहीं है तथा  
जेदव्यासजीको स्थान है तहां पधारे तय कृष्णदाससो कह्यो जे तु ठाडो  
रहियो तय श्री आचार्यजी महाप्रभु आगे पधारे तय जेदव्यासजी  
सामे आये सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनको अपने धाममे जेआये  
पाछे जेदव्यासजीने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसो कह्यो जे तुमने  
श्री जागवतकी टीका कीनीहै सो मोझे सुनायो तय श्री आचार्यजी  
महाप्रभुन गुगल गीतके अध्यायको जेक श्लोक कह्योसो श्लोक.

वामबाहु कृतवाम कपोलो बलित धूरधरार्पित वेणं ॥

कोमलांगुलिभिराश्रितमार्गगोप्यईरयतियत्रमुकंदः १

या श्लोकको व्याख्यान कह्यो सो तीनि दिनमे संपूर्ण जयो तय  
जेदव्यासजीने भीतती करी जे या जागवत के व्याख्यानकी अय

ધારના કરી સકત નાહી તાતે અપ ક્ષમા કરો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને બેઠવ્યાસજીસો કહ્યો જો તુમ બેઠાંતકે એસે સૂત્ર કહાકીયે જો માયા બાદપર અર્થલાગ્યો તપ વ્યાસજીને કહ્યો જો મે કહા કર મોકો આત્માહી એસી હુતી જો એસે અર્થ કરિયો તપ શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનને કહી જો મે બ્રહ્મબાદપર અર્થ કીયોહૈ સો વ્યાસજીકુ સુતાપો સો વ્યાસજી સુનિકે બહુત પ્રસન્ન ભયે તા પાછે બેઠવ્યાસજી સો બીઠ હોયકે તીસરે દિન પધારે તપ કૃષ્ણદાસસો કહ્યો જો તૂ ગયો નાંહીસો કહે તે તપ કૃષ્ણદાસને કહી જો મહારાજ હાં કહાં જાગે મોકો તુમારે ચરણાર્પિત બિના ઐર આશય નાહીહૈ તપ યહ સુનિકે શ્રી આચાર્ય જી મહાપરબુ બહુત પ્રસન્ન ભયે તપ કહ્યો જો માંગિ તપ વેહી તીન બશ્ત માંગી એકતો મુખરતાકો દોષ જાણ ફુસરે માર્ગકો સિદ્ધાંત સમુગ્રો તીસરે મેરે ગુરુકે ઘર પાવધારો સો તામે દોષ બશ્તુ દીની ગુરુકે ઘર પધારિ વેકો નાહી કીની.

### પાર્તા પ્રસંગ. ૧

બહુર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ગંગા સાગર પધારે તહાં શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પૌઠે હુતે તહાં કૃષ્ણદાસ મેધન પાવદાવત હુતે તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ મનમે વિચારે જો ધાંત કે મુરમુ રા હોયતો લીજીયે તપ શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનકે અંતઃકરનકી કૃષ્ણદાસ મેધનને જાતી ઇતનેમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો નિદ્રા આહ તપ કૃષ્ણદાસ ઉડી કે ગંગા સાગર ઉપર આયે તપ દેખે તોપાર એક દીયા બરતહૈ તાકી અટ કરતે પૈરિકે ગંગાજીકે પાર આયે તહાં ગામ હોસો એતમે તે ગીલે ધાંત કટવાયે તહાં ગામમે જાણકે ભર ભુજા કાટકાકો જગે ચારિ ટકા દેકે મુરમુરા સિદ્ધિ કરવાયે તપ લેકે આયે તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ચરણાર્પિત દાખી કે જગાયે ઐર મુરમુરા આગે રાખે તપ કહ્યો રાજ આરોગો તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને પ્રજો જો તું કહાંતે લાગો તપ સમાચાર કહે જો મહારાજ મે પારતે લાગો તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ બહુત પ્રસન્ન ભયે તપ કહ્યો જો માંગિ તપ વેહી તીન બશ્તુ માંગી મુખરતાકો દોષ જાણ માર્ગકો સિદ્ધાંત મેરે -હૃદયમે આવે તીસરે મેરે ગુરુકે ઘર પાવધારો તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો જીવ કહા માંગિ જાને યા સમ જો માંગતો સોઈ દેતો જો કહતો તો શ્રી ઠાકુરજીકો સ્વરૂપ દિધા વતો તહાં તે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ સોરો પધારે તપ કૃષ્ણદાસને વીનતી કરિકે કહ્યો જો મહારાજ મેરે ગુરુકે સો બુદ્ધાય લાઉ તપ

श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे तु जेद पावेगो पाछे कृष्ण दास जेको गुर्के पास आयो तय कृष्णदासको गुर्ने देख्यो तय कृष्ण दाससो गुर्ने कह्यो जे अरे तेने और गुर् कियो तय कृष्णदासने कह्यो जे भेनेतो और गुर् नाही कियो भेरे गुर्तो तुमही हो परि तुम्हारी कृपाते भेने पूरेन पुरपोतम पायेहैं तय गुर्ने कही जे पुर-पोतम क्यो जनीये तय गुर्के आगे अग्निकी अंगीठी धकधकाती हुती तामे ते कृष्णदासने दोढ हाथकी अंगठुली बरोके अंगार हाथमे लीये और कह्यो जे श्री आचार्यजी महाप्रभुजी पूरेन पुरपोतम होय तो भेरे हाथ मति जरियो और जे और जाति होयतो भेरे हाथ भरम होय जहयो सो जेक महूर्तलो अग्नि हाथमे राखी तय गुर्ने जय पाछे और कह्यो जे अग्नि उरि देओ पाछे उन गुर्ने कृष्णदासके हाथमे सो अपने हाथ सो पकरिके अग्नि उरवाय दीनी तय कृष्णदास उहां ते जेद पावेके उही आयो यह प्रसंग समय श्री वल्लभाष्टकी टीकामे श्री गोकुलनाथजी विस्तार करिके लिख्यो है

### प्रसंग. २

जहुरी मार्ग -हृदयाउठ जयो पाछे कदाचित गोप्यपार्ता होय सो समयके आगे कहे पाछे कालु वैष्णवने श्री आचार्यजी महाप्रभुन सो कह्यो जे कृष्णदास समयके आगे गोप्यपार्ता कहतहै तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कृष्णदाससो कह्यो जे क्योरे तु समयके आगे गोप्यपार्ता कहतहै तय कृष्णदासने कह्यो जे महाराज आप उनहीसो पूछिये जे भेने कहा कह्यो है तय उन वैष्णवसो श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पूछो जे तुमसो कृष्णदासने कहा जात कही है तय वैष्णवने कही जे महाराज हमको तो सुधि रहो नाही तय श्री आचार्यजी महाप्रभु मुसिकायेके मुप करि रहै.

### प्रसंग. ३

और जेक समय श्री ढाकुरजी छिछा ते श्री आचार्यजी महाप्रभुनसो कृष्णदासने प्रभू पूछो जे महाराज श्री ढाकुरजीको प्रिय अस्तु कहा है सो मोसो कहोसो ताको प्रतिउत्तर श्री आचार्यजी महाप्रभु कहे जे श्री ढाकुरजी उचम वस्तुके भोजना हैं परंतु गोरसपेद न पानी कहियतु है गोरस अति प्रिय है ताके भाव अनिर्वचनीय हैं और समन ते भक्तिको स्नेह प्रभाव अति प्रिय है ताते भक्तवत्सल कहवांत हैं तय कृष्णदासने करि प्रभू पूछो जे महाराज श्री ढाकुरजीको अप्रिय अस्तु कहा है तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे श्री ढाकुरजीको धुआंसभांन अप्रिय अस्तु कछु नाही और ताते अप्रिय

ભક્તનકે દેસી હૈં ફરિ કૃષ્ણદાસને પ્રમ્ન પૂજ્યો જો મહારાજ શ્રી રધુના-  
થજી સંપૂર્ણ અષ્ટિકો લેકે સ્વધામમે પધારે હૈં ઐર રાજ દશરથકો સ્વર્ગ  
દીયો સો કહે તે તાકો પ્રતિકૃતર શ્રી આચાર્ય મહાપ્રભુનને કહ્યો જો  
શ્રી રધુનાથજી પરમદયાલ હૈં તા તે સ્વર્ગ દીયો નાતર દશરથકો સ્વર્ગકો  
યોગ્યતા ન હતી. યાતે અપનો બચન સત્ય કરિ બેકો બનબાસ પઠાય  
દીયે એસો કર્મ કીયો.

#### પ્રસંગ. ૪

ઐર એક સમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં કૃષ્ણદાસને પ્રમ્ન  
પૂજો જો મહારાજ ભક્ત હોય કે શ્રી ઠાકુરજીકી લીલાકો બેદ નાહી જા-  
નત સો કહેતે તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો એ વિધિ  
પૂર્વક સમર્પણ જો કહ્યો હૈ સો નાહી કરત અનુભવ ક્યો જાને ઐર  
ભગવદ ભક્તકો સંગ કરે તો શ્રી ઠાકુરજીકી લીલાકો બેદ જાને સો તો  
આપુકો યોગ્યતા માનિ કાહુકો સંગ નાહિ કરત ઐર કહ્યુ કરત હૈ સો  
અંતઃકરન પૂરવક નાહી કરત હૈ સો તે શ્રી ઠાકુરજી કે સ્વરૂપકો તથા  
લીલાકો બેદ નાહી જાનત ઉતિમ ભક્તનકો સંગ કરે શ્રી બાગવત શ્રી  
સુબોધની ગ્રંથનકો અહર્નિસ અવગાહન કરે તમ ભગવદભાવ ઉત્પન્ન હોય  
શ્રી ઠાકુરજી ભક્તનકે હરે બિષે સદૈવ રહત હૈં તથા સેવા કરિકે વંધે  
હૈં તહા. એક અન્યમાર્ગી વૈષ્ણવ જાકે હરેમે શ્રી ઠાકુરજી બિરાજત  
હૈં તાકો સંગ કરનો તહાં ગજનધાવન વૈષ્ણવકો દૃષ્ટાંત દીએ હૈં જિન જિન  
ભાવપૂર્વક સેવા કરી તિનકે સકલ દોષ નિર્મલ બએ તાતે લીલા સ્થદજ  
ભક્તનકે ભાવકો બિચાર કરનો જે વૈષ્ણવ શ્રી ઠાકુરજીકો સ્વરૂપ જા-  
નત હૈં જિનકો સ્વરૂપ અલૌકિક દૃષ્ટિસો જાઓ જાય જો આગ્યા હોય  
સો જાને જે વૈષ્ણવ શ્રી ઠાકુરજીકો જાનત હૈ સો જો કહ્યુ કારજ  
કરત હૈ ઐર શ્રી ઠાકુરજી સોં બિરહભાવ તાપ કરત હૈ અપનો સ્વદો-  
ષભાવ બિચાર કરતે અપનો સ્વરૂપ જાને જોહો કાનહો પહલે કહા  
હુતો ભગવદ સંમંધ કીએ તે કહા બયો અબ મોકો કહા કરતઅ રાવ  
દિવસ એસો બિચાર કરતરે તમ અપનો સ્વરૂપ જાને એ પ્રાકટ્ય  
બુજ ભક્તનકે અર્થતથા એતન્માર્ગીયકે અર્થ તાતે ઉતિમ સંગ હોયતો  
એતન્માર્ગકે ઠાકુર જાને ઐર સાસ્ત્રપુરાણ અનેક સિદ્ધાંત ઇતિહાસ  
હૈ તાતે બૃજરાજકે ઘર પ્રગટે સો શ્રી ઠાકુરજી ન જાને જાય એ શ્રી  
ઠાકુરજીકો તમહી જાને તાતે ભગવદ ભક્તકો સંગ કરનો સેવાકો પ્રકાર  
એતન્માર્ગીય વૈષ્ણવ જાનત હૈં તિનસોં મિલિ તિનકો ભાવ પૂછિકે સેવા  
કરની તમ ભગવદભાવ ઉત્પન્ન હોય શ્રી ઠાકુરજીકી સ્નેહયુક્ત સેવા  
કરે જો શ્રી ઠાકુરજી વાકો સખ જતાવે.

## પ્રસંગ. ૫

ઐર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપરબુ શ્રી બદ્રીનાથજીકે મંદીરમે પધારે તમ બેદવ્યાસજી સાથ હે તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને બેદવ્યાસજી સો પૂછો જો ભમરગીતકો અધ્યાય તામે ઉધવજીકો વૃજભકતનકે પાસ પડાએહૈ તા પ્રસંગમે. ॥

શ્લોક આઘો ઘટતેહૈ તમ બેદ વ્યાસજીને શ્લોક આઘો કહ્યો સો શ્લોક.

## આતમત્વાત્ મક્ત વસલાત્ સતવત્કાન્ સ્વભાવતઃ

યાકી ટીકા શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનને પહલેહી કીતીહૈ સો સુનિકે બેદ વ્યાસજી બહુત પ્રસન ભયે તા પાછે શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુ બદ્રીનાથજીકે મંદિરમે પધારે તા દિન બામન દ્વાદશીકા દિન હતો સો તાદિન શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો વિચાર મનમે બૃત કરિ વેકો હતો તમ શ્રી બદ્રીનાથજીને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો કહ્યો જો મને કુલાહારકો સર્વત્ર યોજ કીનો પરિ પાઈયત નાહી તાતે તુંમ રસોઈ કરિ શ્રી ઠાકુરજીકો ભોગ ધરિ ભોજન કરો શ્રી ઠાકુરજીકી ઇચ્છા એસી દીસત હૈ ઇતનેમે કૃષ્ણદાસને આપકે કહ્યો જો મહા રાજ હહાં તો કછુ પાવત નાહી પાછે તા દિનતે બામન દ્વાદશીકે દિન બૃત ન કરતે ઉત્સ બાતેચ પારણં એસો બચન હૈ પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ બદ્રીનાથજીતે બિદા ભયે તમ કૃષ્ણદાસ સાથહોહૈ.

## બાર્તા પ્રસંગ ૨.

પ્રથમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ બેદવ્યાસજીકે મંદિરમે પધારે તમ કૃષ્ણદાસસો કહ્યો જો તુ ઠાકો રહિયો તમ કૃષ્ણદાસ ઠાકે રહે પાછે આપ તીસરે દિન પધારે તમ કહ્યો જો તુ ગયો નાહીસો કાહે તે તમ કૃષ્ણદાસને કહ્યો જો મહારાજ તુમારી આસ્તા ન માને તો સેવક કાહેકો સેવકકોતો આગ્યા પ્રમાન ચલનો સો કૃષ્ણદાસ એસે કૃપા પાવ હૈ પ્રભુનકી આસ્તા પ્રમાન માનતે તાતે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ કૃષ્ણદાસકે ઉપર સંદાં પ્રસન્ન રહતે પાછે મુખરતાકો દોષ મનમે ન લાવતે એસે આપ ઉદાર રાય જીવનકી ઐર ન દખને દયા રાખતે ઐર અપની ઐરતે દયા રાખિ જીવનકો અંગીકાર કરતે જીવનકી ઐરકો વિચાર ન કરતે કૃષ્ણદાસ માર્ગ તથા ઘરમે સદૈવ રહતે સોવે કૃષ્ણદાસ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે એસે કૃપાપાવ ભગવદીયહૈ તાતે ઇતની બાર્તાકો પાર નાહીસો અમ કહાંતાઈ બિબિધે.



## संवाद १४ वैश्रव. २

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक  
 दामोदरदास संबलवार क्षत्री कनौ-  
 जके बामी तिनकी बार्ता.

सो दामोदरदासको एक पत्र ताचेको पायो और पत्रमें पासो  
 कबो ने या पत्रको पाये ताकी तु सरन बैसो सो धर पत्र काहसो  
 पाये न जय सो कितनेक दिन पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभु कनौज  
 पधारे तहां गामके बाहिर आप उतरे और कन्नदास भिन्नके गाम-  
 में पहायो और कबो ने सीधा सामग्री लेआ उपरि काहसो कहि-  
 योमती ने श्री आचार्यजी महाप्रभु यहां पधारे है तय कन्नदास  
 गाममें जय सीधा सामग्री सय लीनो सो लेके जय यजन लगे  
 तय दामोदरदास ताही समय राजद्वारेते आवत हुते सो मार्ग नत  
 कन्नदासको देखो तय दामोदरदास घोरते उतरिके कन्नदासके पास आ-  
 ये और दंडवत किये पाछे पूछे ने तुम कहाते आये और श्री  
 आचार्यजी महाप्रभु पधारे है तय कन्नदासने कबो ने आज्ञा नाही  
 दामोदर दासने कबो ने ये श्री आचार्यजी महाप्रभुन पिता काहेको  
 आये सो जय कन्नदास यले तय पाछे पाछे दामोदरदास आये  
 और घोरा होसो पहाय दीयो सो कन्नदासको दूरते आवत श्री आ-  
 चार्यजी महाप्रभुनने देखो पाछे दामोदरदासको देखो तय दामोदरदासने  
 दंडवत कीनो तय कन्नदाससो श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पूछे ने ते-  
 ने पासो कयां कबो तय कन्नदासने कही ने महाराज मैंने तो धनसो  
 नाही कही तय दामोदरदासने वीनती कीनी ने महाराज धन मोसो  
 नहीं कबो हुंतो धनके पाछे पाछे यथो आयो हूं और श्री आ-  
 चार्यजी महाप्रभु नाही कीये सो याते तादीन कनौज पधारंगे तय  
 भावन करने है तय श्री आचार्यजी महाप्रभु मनमें पीयारें ने  
 आज्ञा लई है सो आपुही होयगा ताके लीये नाही कही हुतो पा-  
 छे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने दामोदरदाससो पूछे ने पत्र लायो है  
 तय दामोदरदासने वीनती कीनी ने महाराज पत्रको कहा काम ह  
 मोको सरल लीजिये तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कही ने जो

આત્મા બર્ધ છે. જે યહ પત્ર બાંચે તાકી તૂ સરણુ જાણ્યો તાતે પત્ર બાઉ તમ પત્ર મગાયો તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને પત્ર બાંચ્યો પાછે વા પત્રકો અભિપ્રાય દામોદરદાસસો કહ્યો દામોદરદાસકો પાછે નામ સુનાયો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો દામોદરદાસને અપને ઘર પધરાએ પાછે દામોદરદાસ તથા દામોદરદાસકી સ્ત્રી દોડિજને સ્નાન કરિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી સરણુ આએ તવ દામોદરદાસકો સમર્પણુ કરવાયો ઐર દામોદરદાસકી સ્ત્રીકી પ્રથમ નામ સુનાયો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને સંમર્પણુ કરવાયો તમ દામોદરદાસને બી-નતી કીની જે મહારાજ અમ હમકો કહા આત્મા છે અમ હમ કહા કરે તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને આત્મા કરી જે અમ તુમ સેવા કરો તમ દામોદરદાસને કહી જે મહારાજ સેવા ક્રાંતભાંતિ કરે તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહી જે કહું શ્રી ઠાકુરજીકો સ્વરૂપ દેખોસો એક દરજીકે ઘર શ્રી ઠાકુરજીકો સ્વરૂપ હુતો સો તાંકો દામોદરદાસ દ્રવ્ય દેકે લે આએ પાંચ સમ ઘર પોત્યો પાત્ર સવ વદલાએ પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને વા સ્વરૂપકો પંચામૃત સો જ્ઞાન કરવાયો શ્રી દારિકાનાથજી નામ ધર્યો પાછે સિંધાસન બેઠાએ તમ દામોદરદાસકે માયે સેવા પધરાયકે પાંચ ભોગ સમર્પ્યા સમયાનુસાર ભોગ સરાય બીડ સમર્પન લાગે તમ દેએ તો પાન હરે હૈં તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યો જે દામોદરદાસ હરેપાન કબહુન સમર્પિયે ઉત્તમ સા-મગ્રી હોય સો શ્રી ઠાકુરજીકો સમર્પી એ શરી ઠાકુરજીનો ઉત્તમ બચ્નુકે બોક્તા હૈ પાછે સ્ત્રી પૂરૂ બલો ભાંતિસો સેવા કરન લાગે તમ શ્રી દારિકાનાથજીકી સેવા બલો ભાંતિસો હેાન લાગી ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને આત્મા દીની જે ઉતરચોપર કાલો હોય સો શ્રી ઠાકુરજીકો કબહુ ન સમર્પિયે વહ કામ ન આયે સારે ધર કાલે મેતે પ્રથમ શ્રી ઠાકુરજીકો લીજિયે ઐર ઉત્તમ ક્રામલ બચ્ન હોયસો શ્રી ઠાકુરજીકે કામ આયે પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને ઐર આત્મા દીની જે ઉત્તમ સામગ્રી હોયસો શ્રી ઠાકુરજીકે લીએ અપને ઘર લે આધ્યે શ્રી ઠાકુરજીકી સામગ્રીએ તે ઐર ઠૌર ખરચ ન કરિયે તમ દામોદરદાસ સ્ત્રી પૂરૂ દોડિજને બલો ભાંતિસો સેવા કરન લાગે ઐર સામગ્રી ઉજ્જલ હોતી જે રૂપાંકે કટોરાનએ અપરેસ રાખતે સો એસી ઉજ્જલ કોઈ જાનતો નાહી જે પામે સામગ્રી હૈ વા ભાંતિસો સેવા કરન લાગે.

આર્તા પ્રસંગ. ૧

ઐર દામોદરદાસ શ્રી ઠાકુરજીકા જલ આપ ભરતે સો એક દીન દામોદરદાસકો સુસર દામોદરદાસકે ઘર આયકે દામોદરદાસસો

કહેને લાગ્યો જો તુમ જલ ભરિ લાવત હોસો હમકો જાતિમે લગ્યા આવતહૈ તાતે તુમ જલ મતિ ભરો લોડીકે પાસ જલ ભરાવો તમ દામોદરદાસને એક ઘડાતો આપ લીયો ઐર એક ઘડા સ્ત્રીકે હાથમે દોષે તવ દોઉ જને ઘડા લેકે બાકી હાટકે આગે હોયકે નિકસે તમ જલ ભરિકે ધર આપ્પે પાછે દામોદરદાસકો મુસર આપોસો આયકે દામોદરદાસકે પાવન પરચો ઐર કહી જો મે ચૂક્યો અખતે તુમહી જલ ભરો પરિ સ્ત્રી પાસ જલ મતિ ભરાવો આજ પાછે હમ કછુ ન કહેગે તવ આપુહી જલ ભરન જાગે જો ચાહીયેસો શ્રી હારિકાનાથજી દામોદરદાસકે પાસ માંગિયે તે ખાતે કરતે સેવા કરિકે શ્રી ઠાકુરજી કો એસે પ્રસન્ન કોએ તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ અપને શ્રી મુખતે કહે જો જીનને રાગ્ન અંવરીખને દેખ્યો હોઈ સો દામોદર દાસકો દેખે રાગ્ન અંવરીખતો મર્યાદા માંગિય હુતે ઐર યે પુષ્ટ માંગિયહુ ધનમે ઈતની અધિકતા હૈ ॥

### પ્રાર્થા પ્રસંગ. ૨

ઐર એક દિન ઉગ્રકાલકે દિન હુતે તવ શ્રી હારિકાનાથજીકો પૌદાએ આપ દામોદરદાસ જય કે ચોધારમે સોએ સોવાદિન ગરમી બહુત ભઈ તવ શ્રી હારિકા નાથજીને લોડીકો આસા દીની જોડી વાડ ખોલિ મોકો ગરમી બહુત લગતહૈ તમ લોડીનકી વાડ ખોલે તમ શ્રી હારિકાનાથજીને લોડીસો કહ્યો જો પંખા કરિ તવ લોડીને પંખા કીયો સો ઘડી એકસો પંખા કીયો પાછે લોડીસો કહ્યો જો અવ તું જાયકે સોય રહિ તવ લોડીકિ વાડ ખુલે જોડિકે સોય રહી તમ સવા રો બયો તવ દામોદરદાસ દેખે લોકિ વાડ ખુલે પરેહૈ તવ પૂજો જોડી વાડ કિમ ખોલે તવ લોડીને કહી જો મોકો શ્રી ઠાકુરજીને કિ વાડ ખોલનકી આસા કરોહૈ તવકી વાડ ખોલેહૈ તમ દામોદર લોડીસો બહુત ખીન્ને ઐર કહ્યો જો તેનકિ વાડ ક્યાં ખોલે જો મોકો શ્રી ઠાકુરજી નેકિ વાડ ખોલનકી આસા ક્યાં ન કરી આપ ક્યાં ન ખોલે ઐર લોડી સોં ક્યાં કહી પરિ પ્રભુ બડે દયાલહૈ તાવિયે મેહ હોય તાંહીસો સંભાસન કરે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે અંગીકારમે સખ સમાનહૈ લૌકિકમે કોઉ ઊંચ નીચ કહિ લેઉ શ્રીઠાકુરજી તો રનેહકે બસહૈ પાછે શ્રીઠાકુરજીને કહ્યો જો મને કિવાડ ખુજાએ હૈ તવ ધન ખોલે હૈ તુ તો ચોવારેમે જય સોયો ઐર મોકો બોતર સુવાયો મોકો ગરમી વહુત લગી તાતે ખુજાએ હૈતુ લોડીસોં ક્યાં ખીજત હૈ, યોં કહલિકે બહુત ખીન્ને તમ દામોદરદાસને કહ્યો જો પ્રસાદ તમ લેજો જમ્ય મંદિર સમરાજી તમ સ્ત્રીને કહ્યો જો એસે ક્યાં બને યહ તો પાંચ સાત

દિનકો કામ નાહી પ્રસાદ લીએ વિના ક્યાં ચલે તમ કહ્યો ને પ્રં  
સાદ તો નાહી ષેઝ ફલહાર કરૂંગો તમ એસે કરત કરત મંદિરે સિધ  
બયો તમ શ્રી હારિકાનાથજીકો મંદિરમે પાઠ બ્રહ્માએ તમ ઉત્સવ કીયો  
બૈશ્નવકો મહાપ્રસાદ લિવાયો તા પાછે પ્રસાદ લીયો.

### પ્રસંગ ૩.

ઐર એક દિવ દામોદરદાસ શ્રીઠાકુરજીકો રાજભાગ સમર્પિ કે  
સધયા મંદિરમે સમારન ગએ તમ દેખે તો ફુલીયા ઉપર બિછીને વિ-  
ગાર કીયોહૈ તવ દામોદરદાસને કહી ને શ્રી ઠાકુરજી અપની સધયા  
હુ રાખિ સકત નાહી એસે કહ્યો તમ શ્રી ઠાકુરજીને થાર ચોકી  
ઉપરસોં લાત મારકે ડારી દીનો ઐર દામોદર દાસ સોં શ્રીઠાકુરજીને  
કહ્યો ને તુ કેસો સેવક હૈ સેવક હોય કે વા બાતિ કહત હૈ એસે  
બહુત ખીન્ને પાછે દામોદરદાસને ખીનતી કીની મનુહાર બહુત કરી  
સામગ્રી સિદ્ધ કરવા પાકે શ્રીઠાકુરજીકો ભાગ સમર્પ્યો તમ શ્રીઠાકુરજી  
આરોગે પરિ તો હુ માસ દોય લોવો લેનાહી તવ દામોદરદાસને બ-  
હુત વીનતી કીની તમ ફેરિયોલન લાગે.

### વાર્તા પ્રસંગ ૪.

વહુરિ એક સત્રે દામોદરદાસ હરસાંતી ઇનકે ઘર પાહુને આએ  
સો દામોદરદાસ સંવલ વારકે ઘર પાચ સાત દિન રહે તમ ઇન ભલી  
ભાંતીસોં સમાધાન કીયો પાછે દામોદરદાસ હરસાંતી ઇનસોં વિદા  
હોય કે અડેલ આએ તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદરદાસ  
સો કહ્યો ને દમલા તુ કહાં ઉતર્યો હો ઐર કહાં પ્રસાદ લીયો હો  
તમ દામોદરદાસ હરસાંતીને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો ખીનતી  
કીની નેમહારાજ કનોજમે દામોદરદાસ સંવલ વારકે ઘર ઉતર્યો હો  
પારિ અનસખડી મહાપ્રસાદ લેતો સખડી ન લેતો તવ શ્રીઆચાર્યજી  
મહાપ્રભુ દામોદરદાસ સંવલવારકે ઉપર અપ્રસન બયે ઐર કહ્યો  
ને યહ મેરો અંતરંગ સેવક યાકો સખડી મહાપ્રસાદ ક્યાં ન લિવાયો  
સો યહ ખાત શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે અંતઃકરનકી દામોદરદાસ  
સંવલ વારને ઘર ઐઠે જનની ને આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ અપ્રસન  
બએ મેરે ઉપર તમ અસતરંગસોં કહ્યો નેતુ શ્રીઠાકુરજીકી સેવાનીકી  
બાતિસોં કરિયો ઐર મે તો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ચરન દે-  
ખિવેકો અડેલ.

જાતહો સો તવ તહાં તે ચલે સો અડેલ જય પહુચે તવ શ્રી  
આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શન કરિકે સાષ્ટાંગ દંડવત કીએ તમ શ્રી  
આચાર્યજી મહાપ્રભુ પીઠિ દે ઐઠે તમ દામોદરદાસ સંવલવારને શ્રી

આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો બીનતી કીની જે મહારાજ મેરો અપરાધ કહાઈ ઐર જીવતો અપરાધ કરતહી આયો હૈ પરી અપરાધ જનિયે તો ભજો હૈ તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જે તેનેદામોદર દાસ હરસાનોકો અપને ઘરે મહાપ્રસાદ અનસખડીકો લિવાયો સખ-ડકો ન લિવાયો તખ દામોદરદાસ સંવલવારને બીનતી કીની જે મહારાજ દામોદરદાસરો આપ પૂછિયે જે સખડી ક્યો ન લીની તખ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદર હરસાનીસો કહ્યો જે તેને સખડી મહાપ્રસાદ ક્યો ન લીનો તવ દામોદરદાસને કહ્યોજે મહારાજ શ્રી ઠાકુરજી પ્રાતઃકાલ આલભોગ આરોગતે પાછે પકવાન મિઠાઈ દૂધપા બહુત લેતો સો સખડીકી રચિ રહતી નાહી તાતે ન લેતો તખ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જે તુતો તેરી ઇચ્છા તે ન લેતો પરી મોકોતો યાકે ઉપર વડી ખુતસ ભઈ હુતી સો ભક્તનકે અંતઃ કરનકી બૃતિ દેખિયેકો પ્રભુતકો પ્રાગટ્ય હૈ કહિતે જે દામોદરદાસ સંવલવારને અપને ઘરે જૈઠે કનોજમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે અંતઃકરનકી જનતી તો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુતો ભક્તનકે હૃદયમે સદા સ્થિતિ હૈ તો ભક્તનકે હૃદયકી બાત ક્યો ન જનને પરિ ભક્તનકી પરિકાર્ય યહ પ્રભુતકો પ્રાગટ્ય હૈ પાછે દામોદરદાસ સંવલવારકો બહુત સન્માન કરિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને વાકો અપને ઘરકો પઢાયો તવ દામોદરદાસ અપને ઘરે કનોજમે આઐ તખ દાઉ સ્ત્રી પુરખ મલી બાંતિસો સેવા કરન લાગે.

### આર્તા પ્રસંગ. ૫

ઐર સિંહનંદકે જૈશ્નવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ જાતે સો સખ કનોજમે દામોદરદાસકો મિલિકે જાતે જે જૈશ્નવ આવતે તિન સતનકો કનોજમે અપને ઘરે આદરસન્માન કરિકે ઉતારતે સતન કો મહાપ્રસાદ લિવાવતે પાછે જખ આડેખમિદા હોતે તખ તિન જૈશ્નવ પ્રતિ એક એક મહોર એક એક શ્રીકૃષ્ણ આચાર્યજી મહાપ્રભુતકો બેઠ પઠાયતે કાહતે જે મેરી દંડોત ખાતી હાથન કેસે કરેગે એસે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ઇનપર સદા પ્રસન્ન રહતે.

### આર્તા પ્રસંગ. ૬

બહુર દામોદરદાસકો સુસાર બહુત પ્રસન્ન હુતો તિન એકસો લોંડી બેઠકે દાયજમે દીની જે મેરી બેઠી બેઠી રહેગી કામકાજ સખ લાંડી કરેગી પરિ એસે ન કરતી સેવા સંબંધી કાર્ય સખ આપુ કરતી સોવહ એસી ભગવદી યહી.

### પાર્તા પ્રસંગ. ૭

બહુર એક સમયે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ દામોદરદાસકે ધર પોઠે હુતે ઐર દામોદરદાસ પાવદાવત હુતો તય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદરદાસમાં પૂછો ને દામોદરદાસ તેરે મનમે કાહુ પા- તો મનોરથ હૈ તય દામોદરદાસને કહ્યો ને મહારાજ મોકો તો આપકે અનુગ્રહ તે કાહુ પાતકો મનોરથ રહ્યો નાહી તય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો ને તુ અપની સ્ત્રીસિં પૂછિઆઉ ને તોકો કાહુ પાતકો મનોરથ હૈ તમ દામોદરદાસ જયકે અપની સ્ત્રીસિં પૂછો ને તેરે કાહુ પાતકો મનોરથ હૈ તવ સ્ત્રીને કહ્યો ને કોઈ પાતકો મનોરથ રહ્યો નાહી એક પુત્રકો મનોરથ હૈ એક પુત્ર હોય તો ભલો. તય યહ પાત દામોદરદાસને જયકે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં કહી ને મ- હારાજ સ્ત્રીકો મનોરથ હૈ ને એક પુત્ર હોય તો ભલો હૈ તય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ કહે ને હાં હોયગો પાછે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપતો શ્રી નાથજી દાર પધારે પાછે જય વાકે સમય ભયો તવ સ્ત્રી ગર્ભસ્થિતિ ભઈ પાછે વાખાપરમે કિતનેક દિનમે એક ડાકોતિયા આયો તવ વાકો સવ સાયકી સ્ત્રી પૂછન લાગી તયતામે તે કાહુને દામોદરદાસકી સ્ત્રીસિં કહી ને અમુકી તુહુ પૂછિદેખિ ને કહા હોયગો બેટા હોય ગો કે બેટો હોયગી પાછે લોડોને જયકે વા ડાકોતિયાસોં પૂછી ને દામોદરદાસકી સ્ત્રીકે કહા હોયગો બેટા હોયગો કે બેટી હોયગી તય વાડાકોતિયાને કહી ને બેટા હોયગો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ કિતનેક દિનમે કનોંજમે પધારે તય દામોદરદાસ ચરણ છુવન લાગે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો ને મોકો છુવે મતિ તોકો અન્યાઅય ભયો હૈ તય દામોદરદાસને કહ્યો ને મ- હારાજ મેતો કધુ જનનત નાહી હો તય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો ને તુ અપની સ્ત્રીસિં પૂછિ આઉ તય દામોદરદાસને સ્ત્રીસિં પૂછો ને તેને કધુ અન્યાઅય કીનોં હૈ તય સ્ત્રીને ને પ્રકાર ભયો હુતો સો સય કહ્યો સો પાત શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં કહી તય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહી ને વાકે પેટમે મલેક્ષ હોયગો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપતો અડેજ પધારે પાછે યહ પાત દામોદર- દાસકી સ્ત્રીને સુની તય તે ઓ ઠાકુરજીકે પાત તથા રૂપસ ન કરતી ઐર કહતી ને મેરે પેટમાં મલેક્ષ હૈ તાતે મે શ્રી ઠાકુરજીકે પાત તથા સમિત્રી કેસે છઉ યા ભાંતિસો કહતા પાછે જય પ્રસુતકે દિન આએ તય દામોદરદાસકી સ્ત્રીને અપની મહતારીસોં કહવાય પઠાઈ ને મેરે પુત્ર હોયગો સો હોત મા તુ અપને ધરે લે જૈયો હમ વાકો

મુખ્ય ન દેખેગે જો હમ વાકો મુખ્ય દેખેગે તો હમારો ધર્મ નષ્ટ હોયગો  
તાતે હમ વાકો મુખ્ય ન દેખેગે સો ઉપાય તુ કરિયો પાછે વાકી મહ-  
તારીને એસેહી કીયો પ્રસુત હોતમાત્ર અપને ધર લે ગઈ પાછે ધાયકો  
દેકે બડો કીયો.

### આર્તા પ્રસંગ. ૮

બહુરિ કિતનેક દિન પાછે દામોદરદાસકી દેહ છુટી તખ વાકી  
સ્ત્રીને છિપાય રાખો પાછે વા સ્ત્રીને એક વૈશ્ણવ સોં કહીજો તુમ અ-  
ડેલકો એક નાવ ભાડે કરિલાવો સો વહ વૈશ્ણવ ભાડે કરિલાયો તા ના-  
વમે શ્રી દ્વારિકાનાથજી ઐર ધરમેકી સામિત્રી તિનુંકાપર્યંત કછુ ધર-  
મે રાખ્યો નાહી ધરમે જો હુતો સો સવનાવમે ભરચો તખ વા વૈશ્ણવ  
સો કહ્યો જોયહ નાવ અડેલકોં લેજાઉ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન કે  
મંદિરમે પહુચાય આવો સો વહ વૈશ્ણવ નાવલેકે ચાલ્યો સો કીસતી-  
સપર નાવ ગઈ તાપાછે સ્ત્રીને પ્રગટ કરી જો દામોદરદાસકી દેહ છુટી  
હૈ તખ વૈશ્ણવ જુરી આપે દામોદરદાસકો સંસ્કાર કીયો પાછે દામો-  
દરદાસકો ખેટા તુરક ભયો હુતોસો આવો આપકે ધરમે દેખે તો કછુ  
નાહી જળકો ભરચો કરવા ધરમે ધરચોહૈ સો દેખકે મૂડ પીટિ રહચો  
પાછે દામોદરદાસકો મુસર આપો તિનને અપની ખેટીસોં કહ્યો જો  
ખેટી તુમને ધરમે કછુ રાખ્યો નાહી સોતુ અખ કહા ખાઈગી તખ  
વાને કહીજો તુમ દેઉગે સોમે ખાઈગી ક્ષત્રી લોગનકે પાસમે સગે  
સોદરે કછુ દેતહૈ એસીગ્યાતકી કછુ રોતિહૈ તખ દામોદરદાસકી સ્ત્રીને  
અખ જલકો ત્યાગ કીયો સોધોરેસે દિનમે વાકી હુ દેહ છુટી તવકૃત્ય  
દોઉનકો સાથહી ભયો વહ એસી ભગવદીયહી સોયહ આતકિતનેક દિન  
પાછે કાહુ વૈશ્ણવને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન કે આગે આપ  
કહી તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહી ઇનકોં વોહીચાહિયે વે ૩૭  
ઉજને એસે ભગવદી યહે ઉનકી સરાહના શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ  
શ્રી મુખતે કરતે તાતે ઇનકી આર્તા અનિર્મયનીયહે ઇનકી આરતા કહાં  
તાંઈ લિખિયે.

आर्ता प्रसंग ६.

संवद २४.

अबश्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

पद्मनाभदास सनोडिया ब्राह्मणक

नोजमें रहते तिनकी बार्ता.

ये एक सभे श्री आचार्यजी महाप्रभु कनोज पधारे तय पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनको आये तय पद्मनाभदासने श्री आचार्यजी महाप्रभुनके श्री मुअते भगवत आर्ता को प्रसंग सुन्यो तय जनी जे जेतो साक्षात धरहेँ जेसे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शन जये प्रथम पद्मनाभदास व्यास आसन पैठते ओता जहुत कथा सुनिषेको आवते काहुके धर जनी न पडतो वृषधर जेठे यलो आवती वालातिसों रहतेसो पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके श्री मुअते भगवत प्रसंग सुन्यो तय यह जनी जे जेतो साक्षात पूरेन पुरषोत्तमहेँ सो पूरेन पुरषोत्तम जनिके पद्मनाभदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी सरला आये नाम पायो पाछे समर्पण करवायो तय उत्थापनके समय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पोथी जोली तहां दामादर संवलवार के धर जेठे हुते तासमय पद्मनाभदास अपने धरते आये श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी दंडोत करिके जेठे तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पोथी जोली और श्लोक निबन्धनको कही.

श्लोक-पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुबिबर्जिते वृत्त्यर्थे नैव पुजीत  
प्राणौ कंठगतैरपि तदभावे तथैव स्यात्तथानिर्वाहसांचरेत्.

१ यह श्लोक पढे सो पद्मनाभदासने सुन्यो पाछे दसमस्कंधकी कथा कही सो सुनी तय श्री आचार्यजी महाप्रभु कथा कहि रहे तय पद्मनाभदासने जलकी अंगुली भरके संकल्प कीयो जे अजते कथा कहिये को जूतन कइंगे जेसे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके आगे संकल्प कीयो तय श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री मुअते कह्यो जे श्री भागवत जूत रथन कहनी और तो तुम्हारी वृत्त है तुम खास्यो हो और पुराण महा भारथीतो धर्मादिक कहनी तय पद्म



નાભદાસને કહ્યો જો મહારાજ હમને અવતો સંકલ્પ કીયો સોતો કીયો યાતે કછુ ન કહનો તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ કહે જો તુમ અહસ્થહો સો કોન ભાતિ નિર્વાહ કરોગે તમ પદ્મનાભદાસને કહ્યો જો મહારાજ ભિક્ષા માંગિ કે નિર્વાહ કરંગો પાછે એક જીજ્ઞાસાનંકે ધર બૃત્સર્થ ગએ તિન તમ બહુત આદર સન્માન કીયો તમ પદ્મનાભ દાસકે મનમે ગિલાન આઈ જો કમહુ પહલેતો ભિક્ષા બૃત્સ કરી નાહી ઐર અમ જૈશ્નવ ભયે તાકોતો યહ ભિક્ષાહુ ઉચિત નાહી તમ ફેરિ સંકલ્પ કીયો જો અવતો ભિક્ષા કતિહુન કરંગો તમ ફેરિ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યો જો અવ નિર્વાહ કોન ભાતિ કરોગે તવ પદ્મનાભદાસને કહી જો અમ જૈશ્નવ કિત કરિ નિર્વાહ કરંગો પાછે દોડી બેચતે લકડીલિ આવતે પરિ ઐર બાત ન ગિચારી યાભાતિ દેહાદિ પર્યંત નિર્વાહ કીનો એસે ટેકકે કૃપા પાત ભગવદી વહે.

### બાર્તા પ્રસંગ. ૧

અમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુજી બાગમે યધારે હ તમ પદ્મનાભદાસ સાથે રાત્ર પહર એક ગઈહી તવ શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુને પદ્મનાભદાસ સો કહી જો શ્રી અકવાજીકો પારતે પધરાય લાવો સો સુતતહી પદ્મનાભદાસ હઠી ચલે તમ પાંચ સાત જૈશ્નવ તહાં બેઠે હુતે સો કહન લાગે જો યહ પ્રાક્ષણ બાવરો ભગોહૈ યા બેરે કહાં જાયગો નાવ સમ બંધી હૈં ઘટ વાર સમ ધરે ગએહૈં તાતે યહ બિરિયાં જાય બેકી નાહી પરિયાકોનો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી આસાહૈ તાકો વિશ્વાસ જો યહ કાંમ અવશ્ય હોયગો સો ઘાટ ઉપર આએ તવ ઇત ઉત્તેષ ન લાગે ઇતનેમે દેખેનો અકસમાત એકલરિકા વરસ દસકો એક ડોંગી લેકે આપો સોવાને પદ્મનાભદાસકો પૂછો જો તુ પાર જાયગો તમ પદ્મનાભદાસને કહ્યો જો હાંહાં જાગેગો તમ ઉનપાર તાર દીનો પાછે ફેરિ પૂછો જો તુ ફેરિ આવેગો તમ પદ્મનાભદાસને કહ્યા જો ઘડી દોય પાછે આગેગો તવ લરિકાને કહ્યો જો ડોંગી રાખત હો તુ વેગો આઈયો પાછે અડવમે જાયકે શ્રી અકવાજીકો પધરાય લાએ તમ વાહી ડોંગીમે બઢાયપાર ઉતારે તવ ફેરિ દેખેનો વહાં ડોંગી હુનાહી ઐર લરિકાહુનાહી પાછે શ્રી અકવાજીકો પધરાયકે ધરે આપો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુને પદ્મનાભદાસકો આસા દોની જો જાગે સોયરહો જય જહાં જૈશ્નવસોએ હુતે તહાં આએ તમ જૈશ્નવ સમ પૂછન લાગે જો તુમ કહા કરિઆએ તમ પદ્મનાભદાસને સમ સમાચાર કહે તમ જૈશ્નવનને કહ્યો જો તેને થરી ઠાકુરજીકો શ્રમ બહુત કરવાયો પાછે જૈશ્નવનને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુસોં

पूछो जे महाराज पदमनाभदासने श्री हाकुरजीको अम बहुत करवा-  
यो तव शरी आयास्यछ महाप्रभुनने कह्यो जे यह जे भयोहै कछु  
सो मेरी धृष्टता ते भयोहै ताते तुम पदमनाभदाससो कछु मति कहे.

पार्ता प्रसंग. २.

अहुरि जेक सभे श्री आयास्यछ महाप्रभु श्री गोकुलते अउय  
को जत हुते तव जेक व्योपारी कछु अरतु लेके साथमे यद्यो और  
श्री आयास्यछ महाप्रभु कनोन्हे वीच पधारे तव व्योपारी पीछे  
रह्यो ताके उपर और आय पडे सो वरतु समय लुटि जानी और श्री  
आयास्यछ महाप्रभु आपतो दामोदरदास संवलवारके घर पधारे सो  
उहां उतरे रसोई करि श्री हाकुरजीको लोग सभयो धतनेमे वह व्यो-  
पारी रोयत पीठत आयो तव पूछो जे श्री आयास्यछ महाप्रभु  
कहा करत है तव पदमनाभदासने कह्यो जे भोजन करत होयगे तव  
वा व्योपारिनि कह्यो जे हमारो भाल समय लुटि गयो है और श्री  
आयास्यछ महाप्रभु भोजन करत है तव पदमनाभदासने अपने  
मनमे विचारयो जे श्री आयास्यछ महाप्रभु सुनेगे तो भोजन न  
करेगे घडी होयकीअ बार होयगी ताते पदमनाभदास वा व्योपारीकी  
वाहु पकरिके जेक साहकी दुकान पैले गये तासाहने पदमनाभदासको  
बहुत आदरसन्मान कीयो तव वाने कह्यो जे आज्ञा हो कैसे पधारे  
हो तव पदमनाभदासने वा साहसो कह्यो जे या व्योपारीको धतिनो द्विज  
दियो द्विजको अतपत्र आज्ञाहुम जोअदेगे तासहने कह्यो जे पदमनाभ-  
दासछ तुमको छानो द्विज साहिये तिनो लेउ अतपत्रकी कहायातहै तव  
पदमनाभदासने कह्यो जे पहिले तो अतपत्र जिमोंगो पीछे द्विज लेउगो विना  
अत जिमो मे लेउगो नाही तव साहने कही जे तुम्हारी धृष्टता पाछे  
पदमनाभदासने अत जिम दीनां तव साहने वा व्योपारीको द्विज दीयो  
तव वह व्योपारी तो अपने द्विज लेके अपने घर गयो तव पदमना-  
भदास अपने घर आयो तव पदमनाभदाससो श्री आयास्यछ महा-  
प्रभुनने पूछो जे पदमनाभदास तु कहां गयो हो तव पदमनाभदासने  
कह्यो जे महाराज जेक काम गयो होसो श्री आयास्यछ महाप्रभु आय  
तो साक्षात् धर सो तत्काल जानि गये तव पदमनाभदाससो श्री  
आयास्यछ महाप्रभुनने कह्यो जे हम वा व्योपारीको संग तो न जानी  
हुतो जेवाको भाल देनो वह पीछे रह्यो तो हम कहा करे परि तेने व-  
हुत बुरी करी जेरिअे कादिके पैसा दीनो तव पदमनाभदासने कही जे  
महाराज सोतो परि वह व्योपारी पुकारतोतो राज भोजनको दोष घडीकी  
अवार होती तो मेरी जन्म समय अथवा जतो और रिणु तो काजि देउगो

મહ કિતનીક ખાત હૈ તવ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો તેને ધર્મ ગહને લિખિ દીનોસાં કાહે તે તમ પદમનાભદાસને કહ્યો જો મહારાજ એસો ગાઠો લિખિ દીયો જો વિના દીયો ન જાય પાછે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુ તો અડેલ પધારે પાછે પદમનાભદાસ એક રાજા હુતો તાકે પાસ ગએ તમ પદમનાભદાસકો વા રાજાને બહુત આદર સન્માન કીયો પાછે રાજાને કહ્યો જો મોકો કૃપા કરિકે કધુ સુનાવો તમ પદમનાભદાસને કહ્યો જો રાજા ઓ ભાગવત તો નાહી સુનાઈ કહોતો મહાભારથ સુનાઈ તમ રાજાને કહ્યો જો મહાભારથહી સુનાતો તવ મહાભારથહી કહન લાગે સો જય પુરકો પ્રસંગ આપે તવ સવનકે હયિયાર છુડાય ધરે તમ આગે કહન લાગે. સો કથા કહત મે કોઈ ખીર રસ એસો ઉપજ્યો સો આપુ સમે સવ લાત મુકવીનસો લરન લાગે પાછે કિતેક દિનમે મહાભારથ સંપૂરણ બયો તવ રાજા બહુત દક્ષણ દેન લાગ્યો તવ પદમનાભદાસને કહ્યો. જો ઇતિનો તે મે નાહી લેડગો મેરે માથે રિણુ હૈ તિતને લેજગો બાકકો ફેરિ દીનો પાછે સાહકો દ્રિઅ દેકે ખત ફરિડારો.

### ખાતા પ્રસંગ. ૩.

ઐર પદ્મનાભદાસકે એક બેટી કુમારો હતી તાકે નિમિત્ત એક બર ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સેવક આહિયત હુનોસો. જૈણવ નસોં પૂછન લાગે તવ જૈણવનને કહ્યો જો એક બર ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સેવક હૈ પરિ સનોડિયા બ્રાહ્મણ હૈ સો પદ્મનાભદાસ કો લૌકિક કત્યાસિમે બિખારકી સુધિ રહી નાહી જૈણવન કહ્યોજો બસો જૈણવ હૈ સો થાકો બેટી દીજયે તમ પદ્મનાભદાસને કહ્યો જો બલોસો પદ્મનાભદાસને વા જૈણવકો તિલક કીયો વિવાહસહી કરિકે અપને ઘર આપે તમ તુલસાવડી બેટી હતી તાસોં કહ્યો જો અપ. અપની બેટીકો વિવાહ અમુકે જૈણવસોં સહી કરિ આપો હાં તમ તુલસાને કહ્યો જો વહતો સનોડિયા બ્રાહ્મણ હૈ ઐર આપન ક. નોજઆ બ્રાહ્મણ હૈ સો એસે કૈસે હોય તમ પદ્મનાભદાને કહી જો અખતો ભઈસો ભઈ તમ તુલસાને કહ્યો જો સગાઈ ફેરો તમ પદ્મનાભદાસને કહી જો સગાઈ કૈસે ફેરો જય છુરી લાવો. મેરો અંગુઠા કાટો તવ તુલસાને કહ્યો જો અંગુઠા કૈસે કાટયો જય તમ પદ્મનાભદાસને કહ્યો જો સગાઈ કૈસે ફેરો જય જો અંગુઠા કાટો તો સગાઈ ફેરો જય પાછે પદ્મનાભદાસને વિવાહ કરિ દીયો બ્યાતિકે સવ જમ્ય મારિ રહે જૈણવકે કહેકો વિધાય તાતે સગાઈ ન ફેરો.

## વાર્તા પ્રસંગ. ૪

ઐર એક ક્ષત્રાણી પદમનાભદાશકે ધર નિત્ય આવતી તમ એક દિન તુલસાને કહ્યો ને ક્ષત્રાણી તુ નિત્ય ક્યાં આવત હૈ તમ વા ક્ષત્રાણીને કહી ને પદમનાભદાશ બડે બગવદીય હૈ ઐર બડેમહા પુરુષ હૈ ઐર મેરે સંતતિ નાહી હોતહૈ તાતે આવત હાં તાતે તુમ પદમનાભદાસસોં મેરી બીનતી કરો તમ એક દિન તુલસાને પદમનાભદાસસોં કહ્યો ને પદમનાભદાસ એક ક્ષત્રાણીકે સંતતિ નાહી હોત હૈ તાકે લીએ તુમસોં બીનતી કરત હાં તમ પદમનાભદાસને કહ્યો ને તુલસા જલ લાઉ તમ તુલસાને જલ લાયકે આગે ધરે તમ જલ અપને અંચુડાકો ચરણોદક કરિકે પદમનાભદાસને વા ક્ષત્રાણીકો ચરણોદક દીયો ઐર કહ્યો નેજા તેરે પુત્ર હોયગે તારો તુ મથુરાદાસ નામ ધરિયો પાછે વાકે પુત્ર બયો.

## વાર્તા પ્રસંગ. ૫.

ઐર એક સમ બડે રામદાશજી અપને સેવ્ય ઠાકુરજીકો પદમનાભદાશકે ધર પધરાયકે આપ શ્રીનાથજીકી સેવા કરત લાગે શ્રીનાથજીકે બોતરિયા બએ તમ પદમનાભદાસ શ્રીઠાકુરજીકી સેવા કરત લાગે સો કિતેક દિન પાછે મુંગલકી કૌજ આઈ તાને ગામ લુંચોસો શ્રીઠાકુરજીકો મુંગલ લે ગયો તમ પદમનાભદાસ વા મુંગલકે પાછે સાત દિનલોં રહે જલ પાન કર્યો તમ વા મુંગલસો વાકી મુંગલાની ને કહ્યો ને યહ બ્રાહ્મણ જલપાનહુ નાહી કરત યાકો સાત દિન બએ હૈ અન જલ છોડે સો ને યહ બ્રાહ્મણ મરેગો તો તેરે માયે હત્યા ચઢેગી તો તેરો સંગ છોડી દેઝગી નાતરે દેવ યાકે તેરે પાસ હૈ સો તુમ દેવ યાકે દેઉ તમ વા મુંગલને પદમનાભદાશકો શ્રી ઠાકુરજી દીયે સો લેકે પદમનાભદાશ અતિ આનંદ પાયકે અપને ધર આએ પાછે આપ સ્નાન કરિ શ્રી ઠાકુરજીકો પંચામૃતસોં સ્નાન કરિવાયો અંગ વસ્ત્ર કરિ મુંગાર કોયો રસોહ કરિ બોગ શનૈયા પાછે શમયાનુ સાર ભોગ સરાય અનાંશર કરિ પાછે મહાપ્રશાદ આપુ લાએ ઐર જાદિન તે વા કમોજમે શ્રી ઠાકુરજી વા મુંગલકે હાથ પરેસો તાદિન રામદાશને યહ ખાત જાનીસો તાદિનતે બડે રામદાશને હું સાત દિન તાંઈ મહાપ્રશાદ નાહી લીનો પરિ શ્રીનાથજીકી સેવા સાવધાનીસોં કરત રહે યહ વાત પદમનાભદાશને ધર બેઠે જાની ને રામદાસહુ વા ખાત કે ઉપર બહુત દુખ પાયો સાત દિનલોં જલપાનહુ નાહી લીયો યહ જાનિ પદમનાભદાસ શ્રીનાથજીકે દર્શન તથા રામદાસજીસોં મિલિયેકો શ્રીનાથજી દાર આએ તવ શ્રીનાથજી દર્શન કીએ પાછે

રામદાસજીમાં મિલે તમ રામદાસજીને પદમનાભદાસ સોં કહ્યો જો તુમને બહુત દુખ પાયો તમ પદમનાભદાસને કહ્યો જો હું તો દુખ પાયોસો તો ન્યાયહૈ પરિતુમ ઝરે માંધે સેવા પધરાય આપ્ને ઝૈર તુમને સાત દિનલોં મહાપ્રસાદ નાહી લીયો સો કહે તે તમ રામ-દાસને કહ્યો જો તુમ કહતહો સો તો સાંચહૈ પરિ મે હુંતો બહુત દિનલોં સેવા કીતાહૈ તાતે ઇતનો તો સંયંધ ચહિયે પાછે કિતનેક દિન લો ઉહાં રહિકે પદમનાભદાસ શરીનાયજીસો બિદા હોય કે અપને ધર આપે પાછે સેવા કરત લાગે.

### વાર્તા પ્રસંગ. ૬

ઝૈર એક સમૈ પદમનાભદાસ અપને સેવ્ય શ્રીઠાકુરજી શ્રીમયુરાનાયજી તથા અપનોં કુટુંબ લેકે અડેજ આય રહે પરિદ્રવ્યકો સંકાય બહુત હુતો તાતે શ્રીઠાકુરજીકો ભોગ સમર્થ તેસો છોલા તલિકે સર્ગર્થ તેસો છોલા આછી રીતિ સો બીનિકે પહલે દિન બિન્નેય રાખતે દૂસરે દિનનીકી ભાંતિ સોં તલિકે પરામને એક મુઠ્ઠી ધરકે કહે જોયહ દારિ એક મુઠ્ઠી ભરીકે ધરે ઝૈર કહે જો પહરોટી હૈ યા ભાંતિ જિતને સાજ ન હોંય તિતનેત્રકો નામ લેકે એક એક મુઠ્ઠી સમર્થ તે યા ભાંતિ સોં નિત્ય કરતેસો શ્રી ઠાકુરજી સોહી આરોગતે પાછે એક વૈષ્ણવને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે આગે કહ્યોજો મહારાજ પદમનાભદાસ શ્રીઠાકુરજી કાયાભાંતિ સમર્થતહૈ સો એકદિનશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ભોગ સમર્થ બેકાંપિરિયાં આપ પદમનાભદાસકે ધરપધારે સોજેસં નિત્ય ભોગ સમર્થતે તેસેઈ પદમનાભદાસને ભોગ સમર્થહો સોજય ભોગ સરાયો તમ પદમનાભદાસને કહ્યોજો મહારાજ યહ ખીરહૈ યહ બાતહૈ યહદારિહૈ યહ સાકહૈ યહ સિખરનહૈ યહ દોટીહૈ યહ વરાહૈ એસે કહિકે સમ સામગ્રીનકો નામ લેકે છોલાનકોટરીખતાઈ તમશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો હુદોભરિ આયો ઝૈર કહ્યોજો દ્રિવ્યકો સંકાયહ તકેજોએ એસે કરતહૈ પાછે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપતો ધરકો પધારે તમશ્રી અક્રાજીસોં કહ્યોજો પદમનાભદાસ કે ધર નિત્ય રસો-ઈકી સામગ્રી પઠાવતિ રહિયો તમ દુસરેદિન શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને પદમનાભદાસકે ધર સીયો સામગ્રી પઠાયો તમ પદમનાભદાસને વુજસા સોં કહ્યોજો ઇહાંતે અમ પ્રભુ કાદન હારબએ હૈ તમ પદમનાભદાસને દિનદ્વેચારિકો સામાન કરિ પાછે અપને સેવ્ય ઠાકુરજી શ્રીમયુરાનાયજી સોં કહ્યોજો મહારાજ કામન હોયતો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ પધરાય આજી તહાં સકલ સામગ્રી સિદ્ધિહૈ તમ શ્રીમયુરાનાયજીને કહ્યોજો મોક્ષો તેરોહી કીયોબાવ તહૈ તાતે તેરે ઇહાં

अहुत प्रसन्नहो तु कछु संकोचमति करे ऐसे श्री मथुरानाथजी आप  
 के नव पदमनाभदासने नाव लाउे कीनी तामें श्री हाकुरजी पधाराये  
 और सगंधुंय नावमें बैठाये आय श्री आचार्यजी महाप्रभुन सों  
 विदाहोन गये और सीधे सामग्री दिनद्वैयारिको आयो हुतो सो  
 भंडारीको इरिदेके आप श्री आचार्यजी महाप्रभुनके पास विदा होय के  
 दर्शन करिके दंडोत करिके कछो न्ने महाराज हमतो चलन्ह तय शरी  
 आचार्यजी महाप्रभुनने पूछो न्ने शरी मथुरानाथजी कहाँ है तव प-  
 दमनाभदासने कछो न्ने महाराज शरी हाकुरजी तो नावमें गिराजतहैं  
 शरी हाकुरजीको नावमें पधराय केहों महाराज के पास दर्शन करिवेको  
 तथा विदा होय वेको आयो हुं तय शरी आचार्यजी महाप्रभुनने  
 पदमनाभदासको विदाकीयो पाछे भंडारीने आचार्यजी महाप्रभुन सों  
 आयके कछो न्ने महाराज पदमनाभदासके घर सीधे सामग्री दिनद्वै  
 यारिकी पडाई हुनसो पदमनाभदास इरि देगयेहै तय शरी आचा-  
 र्यजी महाप्रभुनने कछो न्ने सीधे सामग्री पडाई ताते पदमनाभ-  
 दास गयो नातरन गतो यहवात आप शरीमुज्जते कहीसो पदमना-  
 भदासकी आर्ता शरी गोकुलनाथजी शरी सगौनमकी टीकामे लिखेहैं न्ने  
 पदमनाभदास सोगिरना कोटि स्वपी दुर्लभहैं सोये पदमनाभदास श-  
 री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीयके  
 ताते धनकी वार्ता कोपार नहीं पदमनाभदासकी ऐसी कितनीक आर्ताहैं

आर्ता प्रसंग ॥ ७ ॥ वैश्रव ॥ ४ ॥ संबंध ॥ ३१ ॥ ४ ॥

अवधारी आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

पदनाभदासकी बेटी नुलसा

तिनकी वार्ता लिख्यते

सो एक सभे एक जैमय श्री आचार्यजी महाप्रभुनको सेवक  
 तुलसाके घर आयो सो श्री हाकुरजीको दर्शन कीयो तय राजभोग  
 समर्प्योहो तय तुलसानेवा जैमयसो कछो न्ने उठो भान करो महा  
 प्रसाद लेउ तव वा वैश्रवने कछो न्ने हुतो घर जायके महाप्रसाद लेउगो  
 तव स्नान कउंगो तय तुलसा चुप वहे रही पाछे वह वैश्रव उठिके  
 अपने घर गयो तय तुलसाके मनमे अहुत जेद लयो न्ने देखो मेरे  
 घरते जैश्रव लुप्तो गयो अहुरि मनमे आध न्ने ग्याति व्यवहार के  
 बाये सज्जी न कीनी होयगो परि लवो सकारे पूरी करि महाप्रसाद

લિવાર્જી પાછે મૈદા છાંનિ સિદ્ધિ કરવાઈ તવ સોઈ પાછે રિવાજો  
 મથુરાનાથજી પદમનાભદાસકે સેવ્ય ઠાકુર તિનને સ્વપ્નમે તુલસાસો જ-  
 નાપો જો સકારેવૈશ્નવકો સખડી મહાપ્રસાદ લિવાધ્યો વા વૈશ્નવ અ-  
 પને ધર પ્રસાદ તાહી લેયગો પાછે વા વૈશ્નવસો સ્વપ્નમે કહી જો  
 સકારે તુ સખડો મહાપ્રસાદ તુલસાકે ધર લીજિયો પાછે પ્રાતઃકાલ  
 સ્નાન કરી તુલસાને પુરી કરી શ્રી ઠાકુરજીકો જગાય સેવા કરન લાગી  
 ઇતનેમે વહ વૈશ્નવ આપો શ્રી ઠાકુરજીકે દર્શન કરી જૈઠિ રહ્યો તખ તુ-  
 લસા ભોગ સમર્પિકે બાહિર આઈ તખ વા વૈશ્નવસો કહ્યો જો ઉઠો  
 સ્નાન કરો મહાપ્રસાદ લેઉ તખ જૈશ્નવને કહ્યો જો બલો તખ વા જૈ-  
 શ્નવને સ્નાન કરિ તિલક મુદ્રા કરિકે સ્મરન કીયો ઇતનેમે રાજ ભોગ  
 સર્વો તખ વા વૈશ્નવને દર્શન કોએ પાછે તુલસાને શ્રી ઠાકુરજીકો  
 અનોસર કરિ તુલસા વાહિર આઈ તખ પુરી પુરા સધામો વા વૈશ્નવ  
 કે આગે રાખ્યો એર કહ્યો જો મહાપ્રસાદ લેઉ તખ વાજૈશ્નવને કહ્યો  
 જો યહતો નાહી લેઉગો હુંતો સખડી મહાપ્રસાદ લેઉગો તખ તુલસાને  
 કહ્યો જો કછુ સંકોચ મતિ કરો યહતો ગ્યાતિ બિહારહે તખ વા જૈ-  
 શ્નવને કહ્યોજો સોતો સાંચ પહેલોતો એસેહી મનમે આઈ હુતી પરિ  
 અખતો આગ્યા બહહે પાછે વા જૈશ્નવને સખડી મહાપ્રસાદલીયો  
 તખ દોડનજને પરસ્પર પ્રસંન્ય બએ.

### પાર્તા પ્રસંગ. ૧

બહુરી એક દિન તુલસાકે ધર શ્રી ગુમાંઈજી પધારે તખ તુલ-  
 સાને બલીભાંતિસો સેવા કીની તાતે શ્રી ગુમાંઈજી બહુત પરશન બએ  
 એર એકદિન શ્રી ગુમાંઈજી ભોજન કરિકે પોઠે હુતે તખ તુલસાને  
 બગવદ વાર્તા કરી અતિ પરશનતામે શ્રી ગુમાંઈજી કહીજો પદમનાભ  
 દાસકો સંતર્તિ એસીહી ચહિએ પાછે શ્રી ગુમાંઈજીને તુલસાસો પુછો  
 જો શ્રી ઠાકુરજી શાનુભાવ તાજ તાવતહે તખ તુલસાને કહ્યો જો માહરાજ  
 અખતો પેટભરિ ખાધયતહે એર નીદભરી સોઈયતહે એર શી આ-  
 ચારયજી મહા પરબુનકે ગ્રંથનકો પાઠ કરિયતહે તખ શી ગુમાંઈજી  
 બહુત પરશન બએ વહ તુલસા એશી બગવદી હુતી તે તાતે શી ઠા-  
 કુરજી આર્તિ શહિનશકે તાતે વા તુલસાકે ઉપર શી ગુમાંઈજી બહુત  
 પરશન રહેતે તાતે ઇનકી વાર્તા કહાં તાંઈ લિખિયે. ॥

पार्ता प्रसंग २ ॥ ऐश्वर्य ५ संबंध ॥३३॥

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक पद्मनाभदासको बेटा ताकी बहु पार्वती ताकी वार्ता.

सो पार्वती श्री हापुरलुकी सेवा नाकी भातिसों करती और पुरषोत्तमदास मेहरा। धनको नाकी भातिसों जनतो जन्म कनो जन्म तो तप पार्वतीके धरे उतरतो तप कितनेक दिन पाछे पार्वतीके हाथ पांवस्वेत है गम्मे तप ते श्री हापुरलुकी रसोई करत तथा स्पर्स करत अहुत अहुत गिलान आवती तव पुरषोत्तमदास मेहराको पार्वतीने पत्र लिख्यो तामे लिख्यो जे मेरो वीनती श्री गुसांछलुसों कह्यो मेरी रहको यह प्रकार बयो है ताते मोको सेवा करत पाक करत अहुत गिलान आवत है सो मे कहा कइ सो पुरषोत्तमदास मेहराने पार्वतीको लिख्यो पत्र श्री गुसांछलुको वांगि सुनायो और वीनती कोनी भेटकी मोहरही सो आगे राखी पाछे शरी गुसांछलुने पुरषोत्तमदास मेहराको आग्या दीनी जे दिनद्वै आरिमे कहुंगो पाछे दिनद्वै आरि वीते तव शरी गुसांछलुने पुरषोत्तमदास मेहराको आग्या दीनी जे पार्वतीको पत्र लिखिता मे लिखियो जे तू शरी हापुरलुकी सेवा नाकी भातिसों करियो कहु जातकी गिलान भति लाधयो शरी हापुरलु तेसे लोग सभ आपुही ते दुरि करेगे तप पुरषोत्तमदास मेहराने पार्वतीको पत्र लिख्यो तामे शरी गुसांछलुने शरी मुज ते अयन कहे सो लिखि पढाये सो वह पत्र पार्वती पै पहुंयो सो पत्र वांछिके शरी गुसांछलुकी आग्या ते सेवा प्रसन्नतासों करन लागी कछु गिलान मनमे नहीं लावती पाछे महीना बीनि आरिमे हाथ पावनाके बम्मे तव पार्वती अहुत प्रसन्न भई सो प्रसन्नतासो सेवा करन लागी, अहुरि शरी गुसांछलुकी पत्र लिख्यो भेट पडाई और कह्यो जे महाराजके प्रताप तेनीकी भईहो सो पत्र वांछिके शरी गुसांछलु अहुत प्रसन्न बम्मे सो वह पार्वती अडी कृपापात्र भगवदी हुती प्रभुनके प्रमान यलती ताते शरी गुसांछलु धनके उपर सदा प्रसन्न रहते यह पार्ता सब पदमनाभदासके कुटुंबकी भई ताते पदमनाभदास अउ भगवदी रहे ताते धनकी पार्ता कहांताई लिखिये.



प्रसंग १ ज्यैष्ठ्य ६ ॥ संवत् ३४ ॥

## अब श्री आचार्यजी महा प्रभूनके सेवक पद नाभदासको नाती पार्वतीको बेटा रघुनाथदास ताकी वार्ता.

सो रघुनाथ दास बनारसमे बहुत शास्त्र पढि के शरी गोकुल  
आयो तय शरी गुसांछुके दंडोत कीनी सो शरी गुसांछु अउनकी  
कानिते धनके ठपर कृपा करते कथा कहते सो रघुनाथदास सुनते  
सो अके दीन परमानंद सोनीने धनसो पूछो जे रघुनाथदास तुमतो  
अहुत सास्त्र पढेहो पंडितहो आन शरी गुसांछुने कहा कथा कही  
हुती सो कहो तव रघुनाथदासने परमानंद सोनीसे कहयो जे तुमतो  
साय पूछतहो परि हुंतो कछु समजत नाही तव यह बात परमानंद  
सोनीने शरी गुसांछुके आगे कही जे महाराज रघुनाथदास तो कछु  
समजत नाही पाछे शरी गुसांछुने रघुनाथदासको ग्रंथ दिय आरी  
पढाये और मार्गकी प्रनालिका कही पाछे रघुनाथदास समजत लाग्यो  
अउो पंडित भयो सो कितकदिन पाछे अपने घर कनोजमे आयो  
तय भांतासों कहीजे हुंतो न्यारो होकिगो श्रीडाकुरलुकी सेवा करगो त-  
वमाताने कहीजे भलेछ तु सेवा करि पाछे न्यारोभयो वाकी माता-  
जल भरिजावती पार्वती पात्र मांजती श्रीडाकुरलुकी सेवा नीकीभांति  
सों करती परचारगी समय करतो नवरान्भाग सरतो तय आपने घर  
अकेली लीठी करि श्रीडाकुरलुके भाग समर्पि भागसराय आयप्रसाद  
छेती याभांतिसों करती ऐसे करतदिन पांचसातवीति तव अपने सेव्य  
श्रीडाकुरलुने कछो जे अरी पार्वती भिरोगरो घरअरातहै अकेली ली-  
ठी नते ताते तु दारितो करयो करि तय पारवतीने कछो जे महाराज  
तुमतो दारिभात साजनसो आरोगतहो तयअ श्री डाकुरलुने कछो जे  
भैंतो तेरो कीयो आरोगतहो पाछे दारिभात समय साजन करनजागी  
ताते पार्वती वडी कृपापात्र भगवदी हुती येवार्ता सव पदमनाभदास  
के परवारकी भर्तातेये पदमनाभदास श्री आचार्यलु महाप्रभुनके  
ऐसे कृपापत्र भगवदीयहें सोधनकी वार्ता ऐसी ऐसी कितनी कहैं तते  
अप्यकहांतांछ लिप्पियो.

वैश्रव ७ ॥ संबंध ३५ ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुन

के सेवक २ जो क्षत्राणी

४॥ अडेल में रहती

ताकी वार्ता.

सो वरन्ने क्षत्राणी निय पकवांन सामग्री करि श्री आचार्यज महाप्रभुनके लीअये आवती सो श्री आचार्यज महाप्रभु आरोगते वाकां नितको नेमहुतो सो अेकदिन लक्ष्मन बटुजको आर्द्धदिन आपो सो श्री आचार्यज महाप्रभुनने आक्षेप भोजनन कोबुलाअे हुते तहां धृत थोरोसो यहियत हुतो तय श्री आचार्यज महाप्रभुनने अेक पैम्न सों कही न्नेरन्ने के सों धृतये आडि तयवा पैम्नने रन्ने सों कही न्नेरन्ने श्री आचार्यज महाप्रभुनने धृत मंगायोहै तय रन्नेनेवा पैम्न सों कखो न्ने धृत कहेकां यहियतहै तय वा पैम्नने कखो न्ने आग्युओ लक्ष्मन बटुजको आर्द्ध दिनहै सो आक्षेप भोजन कोबुला अेहै सो थोरो सो धृत रसोर्ध में धृतयेहै ताते मंगायो है तवरन्ने ने कखो न्नेभरे तो धृत नाहीहै तयवह वधम्नव क्षिर आरो आयके श्री आचार्यज महाप्रभुन सों कखो न्ने महाराज न्ने के धृत नाहीहै तय श्री आचार्यज महाप्रभुनने कखो न्ने तु डेरिज और जीज के कहियो न्ने श्री आचार्यज महाप्रभुनने धृत मंगायोहै तयवह पैम्न क्षिर गयो और रन्नेसों कखो न्ने श्री आचार्यज महाप्रभु जीनतहैं तयहु रन्नेने धृत नाही दीनो तयवह पैम्न क्षिर आयो तय श्री आचार्यज महाप्रभुन सों कहीन्ने महाराज रन्ने धृत नाही दैत तय श्री आचार्यज महाप्रभुनने कखो न्ने अयके डेरिज और कहियो न्ने श्री आचार्यज महाप्रभु जीनतहैं ताते धृतदेड तयहु नाही दीनो तय श्री आचार्यज महाप्रभुन सों कखो न्ने महाराज रन्ने धृतनाहीं दैत तय श्री आचार्यज महाप्रभुनने और डोर ते काम अलायो तयरात्रि डी रन्ने पकवान खेके आर्ध तय रन्नेकां देजिके श्री आचार्यज महाप्रभु पीठि द्यैड तय रन्नेने कही न्ने महाराज भरो अपराध कहाहै तय श्री आचार्यज महाप्रभुनने कखो न्ने तेरे धृत नहुतो तो सामग्री

कहाते करि लख तवरन्नेने कह्योन्ने हुं लक्ष्मन भट्टकी बांड़ी तो नाहीं  
 भरे धृत नहुत्ते ताते नदीनो ताते तुम्हारे धृत हुतो सोझो न काव्यो  
 तप्यथी आचार्यण महाप्रभुनने क्यो न्ने भैं श्री आङ्कुरण्को धृत क्यो  
 करि के दह तप्य रन्नेने कहीन्ने भैं श्री आङ्कुरण्को धृत क्यो करि के दह  
 तप्य आप पोषे नाहीं तप्य रन्नेने सामग्री आगे राजो और कही  
 न्ने राज आरोगो तप्यथी आचार्यण महाप्रभुनने क्योन्ने आन  
 आरु दिनहै ताते दुसरीवार खेनो नाहीं तप्य रन्नेने कहीन्ने महाराज  
 न्ने तुम्हारे धरको होय सोमति लेह यहतो लीयो यहिये तप्य रन्ने के  
 आग्रहते श्री आचार्यण महाप्रभुनने आरोगी रन्ने श्री आचार्यण  
 महाप्रभुनकी ऐसी कृपा पात्र बनवदी यही ताते धन रन्नेकी वार्ता  
 कहांतां लिखिये.

आर्ता प्रसंग १ ॥

वैश्रव ८ ॥ संबंध ३६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभू

के सेवक सेठ पुरुषोत्तमदा

स क्षत्रविनारसमें रहते

तिनकी बार्ता.

सो सेठ पुरुषोत्तमदासको श्री आचार्यण महाप्रभुनकी आत्ता  
 हुती न्ने तुम पास छोड़ नामधेन आवेताको तुम नाम दीज्यो ताते  
 सेठ पुरुषोत्तमदास नामधेते और अपने धर श्री मदन मोहनणकी  
 सेवा करते परिक्रमहु विधेधरनाथ महादेवण के दर्शनको न नते  
 ऐसे करत अहुत दिनवते तप्य ओक दिन विधेधरनाथ महादेवणने  
 सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यो न्ने सेठण तुम हमसो गामको नातो तो  
 राजो क्यहु हमको प्रसाद तो दीयो करो ऐसे रवत्र में कही तप्यसवारे  
 सेठ पुरुषोत्तमदास छठि सेवा सों पहुंचिके बाहिर आये तप्य अस्त्र  
 पहिरिके बीजा होय प्रसादो बडे उररा प्रसादो बडे विधेधरनाथ महा-  
 देवण के दर्शनको अले तप्य गाम के लोग आश्चर्य भयेन्ने सेठ पुरु-  
 षोत्तमदास क्यहु दर्शनको न आवते सो आण्णु क्यो आयेहैं सो सय  
 सोम साथ आयेसो सेठ पुरुषोत्तमदास आपदिवाज में लयके विधे-  
 धरनाथ महादेवण के आगे बीजारोय धरि प्रसाद कोउररा धरि श्री

કૃષ્ણસ્મરન કહિકે ઉઠિ ચલે તખ ખડે ખડે પંડિત બ્રાહ્મણ હુતે તિ-  
નને સેઠ પુરષોત્તમદાસ સો કહ્યો ને સેઠ પુરષોત્તમદાસ દંડોત નમ-  
સ્કારે કંછુનકીનો શ્રી કૃષ્ણસ્મરન કહિકે ઉઠિ ચલે સો યહ તો તુમકોં  
ઉચિત નાહીં તખ સેઠ પુરષોત્તમદાસને ઉન બ્રાહ્મણ નસો કહ્યો ને  
તુમ મહાદેવજીકો પૂછિ લીજીયો તુમસો મહાદેવજી કહેંગે પાછે ઉન  
બ્રાહ્મણ નમેં એક મહાદેવજીકો ખડો કૃપા પાત્ર ભગવદી યહુતો તાસો  
મહાદેવજીને સ્વપ્નમેં કહ્યો ને હમને ઇનસો મહાપ્રસાદ માગ્યોહો સો-  
દેન આએહેં હમારો ઇનકો બ્યોહાર જૈસી કૃષ્ણકોહે તાતે તુમ ઇનસો  
કંછુ મતિકહો પાછે સેઠ પુરષોત્તમદાસ ખડે ઉત્સવકો પ્રસાદ કમ્પહુરજે  
જાતે તખ એક દિન મહાદેવજીને કાળ ભૈરવ સો કહ્યો ને સેઠ પુરષો-  
ત્તમદાસ વૈષ્ણવનકે ધરતે અવરો સવરો આવતહૈ તાતે તુ ઇનકે ધર-  
કો એકી પહરાનિત્ય દેત રહિયો સો કાળ ભૈરવ નિત્ય ઇનકે ધરકો એકી  
પહરાદિતો સો એક દિન સેઠ પુરષોત્તમદાસ વૈષ્ણવનકે ધરતે અવારે  
આવતહો સો સેઠ પુરષોત્તમદાસ ધરકેદ્વાર આએ તખકિરિકે દેએ તો  
કાળ ભૈરવ એક ઠૌર ઠાડોહૈ તખ સેઠ પુરષોત્તમદાસને વાસો પૂછો ને  
તુ કોનહૈ તવવહ બોલ્યો ને હું કાળ ભૈરવહો મોકો મહાદેવજીને આગ્યા  
દીનીહૈ તાતે તુમહારે ધરકી એકી પહરા દેતહો તખ સેઠ પુરષોત્તમદાસ  
ખિરકી દેકે બીતર ગએ.

### ખાતો પ્રસંગ ૧ ॥

ખહુરિ એક દક્ષણ દેશકો બ્રાહ્મણ સૈયી હુતો સો ખડો પંડિત  
મહાદેવજીકો કૃપા પાત્ર હુતો સોવા બ્રાહ્મણકો મહાદેવજીકો સાક્ષાત  
દર્શન હોતો સોવહ બ્રાહ્મણ નિત્ય પ્રતિ મહાદેવજીકે દર્શન કરતો તખ  
જગપાન કરતો એસો મહાદેવજીકો ભક્ત હુતો સો એક સર્મેજનમાષ્ટમીકો  
ઉત્સવ આયો સો વિષ્ણુસ્વરનાથ મહાદેવજી સેઠ પુરષોત્તમદાસકે ધર  
ગએ જનમાષ્ટમીકો ઉત્સવ દેખનકો સોવા બ્રાહ્મણને જનમાષ્ટમી કે  
ઉત્સવકે દિના દર્શન ન પાયો ઐર નવમીકેડુ પહર લોજવ સેઠ પુરષો-  
ત્તમદાસકે ધરતે મહાદેવજી વિદા હોય કે આએ તખ વા બ્રાહ્મણને  
મહાદેવજીકો દર્શન પાયો તખ વા બ્રાહ્મણને મહાદેવજી સોં પૂછો ને  
કાળિ ઐર આગુ હમ દર્શન ફુપહરલો નાહીં પાયો સો કહિ તે તખ  
વા બ્રાહ્મણ સોં મહાદેવજીને કહ્યો ને હમકાળિ સેઠ પુરષોત્તમદાસકે  
ધરે ઉત્સવ દેખન ગએ હે સો અખહીં સેઠ પુરષોત્તમદાસકે ધરતે વિ-  
દા હોય કે આવતહો તખ વા બ્રાહ્મણને કહી ને સેઠ પુરષોત્તમદાસ  
કોન હૈ તિનકે ધર તુમ ઉત્સવ દેખનકો જાતહો તખ મહાદેવજીને ક-  
હ્યો નેવે ખડે ભગવદ ભક્તહો તવવા બ્રાહ્મણને કહી ને મોહુકો બ-

અવડ ભક્ત કરો તપ મહાદેવજીને કહ્યોજી સેઠ પુરષોત્તમદાસકે પાસ તુ જાવ કે નામલે આઉ તપવા બ્રાહ્મણને કહીજી તુમ હીમીકો નામ દેઉ તપ મહાદેવજીને કહીજી મે તોકો નામદેઉગો તો સહી પરિ મેરો દીપો નામતોકો ક્ષેગો નાહી તાતે તુ સેઠ પુરષોત્તમદાસકે પાસ નામલે આઉ વેતોકો નામ દેવમે તપ વહ બ્રાહ્મણ સેઠ પુરષોત્તમદાસકે પાસ નામ લેમે ગયો સો આયકે બીતર ખખર કરવાઈજી એક બ્રાહ્મણ આયોહૈ તપ સેઠ પુરષોત્તમદાસને કહીજી બૈઠારોમાંથો ખાતી કરન આયો હોયગો તપ સેઠ પુરષોત્તમદાસ સેવા સોંપહુચિકે બાહિર આએ તવવા બ્રાહ્મણને દંડોતકીની તપ સેઠ પુરષોત્તમદાસને કહીજી એસે અનુચિત ક્યો કરતહો હમક્ષત્રી તુમ બ્રાહ્મણ એસેયોન ઘટેહૈ તપવા બ્રાહ્મણને સેઠ પુરષોત્તમદાસ સોં કહ્યોજી હમકો નામ દેઉ તપ સેઠ પુરષોત્તમદાસને કહ્યોજી હુંતો નામ નાહી દેકગો વહુરિ બ્રાહ્મણને ખહુત આગ્રહકીનો પરિપુરષોત્તમદાસને નામ નદીયો તવ વહ બ્રાહ્મણ મહાદેવજી કે પાસ આયોતપ કહ્યોજી સેઠ પુરષોત્તમદાસ નામ નાહી દેવ તપ મહાદેવજીને કહ્યોજી તુ ફેરિજી હમારો નામ લીજીયોજી મોકો શ્રી મહાદેવજીને પઠાયોહૈ તુમસોં મહાદેવજીને કહ્યો હૈ તપ વહ બ્રાહ્મણ ફેરિ સેઠ પુરષોત્તમદાસકે પાસ આયો ઐર કહ્યોજી મોકો મહાદેવજીને પઠાયોહૈ તાતે મોકો નામ દેઉ તવ સેઠ પુરષોત્તમદાસને વા બ્રાહ્મણકો નામ દીયો નામ સુનાયકે હાય જોરિકે શ્રી કૃષ્ણસ્મરન કહ્યો તપવા બ્રાહ્મણને કહ્યોજી અવ મોકો પ્રનામ ક્યો કરત હો તવ સેઠ પુરષોત્તમદાસને કહ્યોજી અપ તુમ ભગવદ ભક્ત ભએ મેરે તુમ વંદનીયહો તુમહારે ઐર હમારે વંદનીય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ હૈ મેતો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી કૃપાતે નામ દેતહોં પાછે વહ બ્રાહ્મણ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ અડેલ આયો તપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ નામ સમર્પણ કરવાયો પાછે કિતેક દિન રહિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ગ્રંથ પઢે.

વાર્તા પ્રસંગ. ૨.

ખહુરી એક સમિ શેઠ પુરષોત્તમદાસ બૈઠે બૈઠે મંદીર વચ્ચ ક-  
રતહુતે ઈતનેહીમે ગોપાલદાસ બેઠા શ્રી હાકુરજીકો સેનબોગ સરાય  
બેકોં મંદીરમે નહાયકે આયો તપ દેખે તો સેઠ પુરષોત્તમદાસ બૈઠે બૈઠે  
મંદીર બચ્ચ કરતહૈ તપ ગોપાલદાસ કે મનમે આહ જી અવતો સે-  
જી વૃદ્ધ બએહૈ તાતે મે સેવામે તત્પર હોઊતો આહો તપ વહ વાત  
ગોપાલદાસકે મનકી સેઠ પુરષોત્તમદાસને જાતી તપ કહ્યોજી બેઠા  
આગે આઉ તપ ગોપાલદાસ જાવકે દેખે તો વર્ષ વીસ તથા પચીસ

के जैसे है तब पुरुषोत्तमदासने कछो जे जेरा मह भगवदी यनकी मन-  
मे न लावनी भगवदी सदा तरन है परी अवस्था होय ताको मान  
दीयो आहिये.

### वार्ता प्रसंग. ३

जहुरि ओक सभे सेठ पुरुषोत्तमदास आंस अंसमे मंदार मधुमु-  
दन ठाकुरैहै सो पर्वत उपर मंदिर है पर्वतको नाम मंदार पर्वत है ता  
उपरते मनुष्य गिरेतो ओठ न लगे और अपने सब पाप कहि काम-  
ना करि गिरेतो देह छुटे पाप दूर होय और जे कामना करी होय  
सो दुररे जनममे सिद्धि होय वह जैसे स्थल है तहां ओक सभे  
श्री आचार्य महाप्रभु पधारे हुते तहां सेठ पुरुषोत्तमदास और  
ओक ब्राह्मण श्री आचार्य महाप्रभुनको सेवक सो देखिने मं-  
दारमधुमुदनछके दर्शनको पर्वत उपर ओहो सो उहां नयके मधुमुदन-  
छको दर्शन कीनो पाछे रात्र परगट ताते उहां सोय रहे पाछे  
रात्रांज उहां ओक सिद्धब्राह्मण आगे तिनने सेठ पुरुषोत्तमदासके  
साथके ब्राह्मणसो पूछा जे तुम कोन हो तब वह बोधो जे हम  
जैमलहै श्री आचार्य महाप्रभुनके सेवक है तब वा सिद्ध ब्राह्मण  
ने कछो जे मेरे पास ओक मणि है सो तुम लेनउतो लेउ तब  
वा जैमलने कछो जेयह मणि कोन काम आवतहै तब सिद्ध ब्राह्मण  
ने कही जे यह मणि ऐसी है जे भागे सो दैतहै तब वा ब्राह्म-  
णने कही जे भेनो विरक्त हो मे मणीलेके कहा कर परि मेरे साथ  
ओकक्षत्री है सो वह ग्रहस्थह सो वह सोचतहै जे बांधो देखिनी जगाओ  
तब वा सिद्ध ब्राह्मणने कहा जे जगावो तब वा जैमलने सेठ पु-  
रुषोत्तम दासको जगायो और कही जे यह ब्राह्मण मणि दैतहै सो  
तुम लेउ तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कही जे यह मणी कोन काम आ-  
वतहै तब वा मणीको प्रभाव कछो तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कछो  
जे यह मणि हमारे कामकी नाही ताते हुंनो न लेउगो तब सिद्ध  
ब्राह्मण किरिगयो तब सेठ पुरुषोत्तमदासके संग ब्राह्मण हुतो ताने  
सेठ पुरुषोत्तमदाससो कछो जे तुमनो गृहस्थहो जहुत कुटुंबहो तुमारे  
भांघे सेवाहै तुमने मणि क्यो न बीनी तुमकोतो मणी लेनो उचितहो  
तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कछो जे अरे ब्राह्मण जावरे मे श्री ठाकुरछको  
तथा श्री आचार्य महाप्रभुनको आश्रय छोडि के कहा मणीको  
आश्रय कर तेने मणी क्यो न बीनी तब वाने कछो जे भेनो वि-  
रक्तहो मे मणी लेके कहा कर मोको जगदीस सेरयुन देखओ तब सेठ  
पुरुषोत्तमदासने वा जैमलसो कछो जे तोको जगदीस सेरयुन देखओ तो

એકો કહા જગદીસ દસસેર ચુત ન દેયગો જગદીસકે કાહુ વાતકી ન્યુ-  
નતા હે એસે કહિકે દોકિ જનને વહ મણી ન લીની વે સેઠ પુરષોત-  
તમદાસ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુને એસે કૃપાપાત્ર ભગવદીયેહૈ.

બાર્તા પ્રસંગ. ૪

બહુરી એક સત્તે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુ સેઠ પુરષોત્તમદાસ  
કે ઘર પધારે તપ દામોદરદાસ હરસાની ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુને  
સાથ હે સો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુને સેઠ પુરષોત્તમદાસકે સેવ્ય  
હાકુરજી ઓ મદનમોહનજીકો પંચામૃત જ્ઞાન કરવાયો ઔર આપુ પાક  
કરી ઓ હાકુરજીકો ભોગ સમર્પ્યો ભોગ સરાવ અન્તેસર કરિ ઓ આ-  
ચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કીયો તપ દામોદરદાસ હરસાનીને  
ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુને પૂછો જો રાજ વહ કહા તપ ઓ આ-  
ચાર્યજી મહા પ્રભુને કહ્યો જો વહ મેરી આસા તે નામ દેતહૈ  
તયાપિ મોકો યાકી ઇતની મર્યાદા રાખી ચાહ્યો સો વે સેઠ પુરષોત્તમ  
દાસ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુને એસે પરમ કૃપા પાત્ર ભગવદી ય  
હે તાતે ઇતકી બાર્તાકો પાર નાહી સો અપ્પ કાંહાં તાંઈ બિખિયે.

બાર્તા પ્રસંગ. ૫

વૈશ્નવ ૧૧૮૧ સંખંધ ૪૧ ॥

અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભૂને

સેવક સેઠ પુરુષોત્તમદાસ

કી બેટી સુલિમની તાકી

વાર્તાહૈ.

સો એક સત્તે ઓ ગુસાંઈજી કાસીમે પધારે હુતે તવ તહાં  
સુર્યગ્રહન આયો તપ ઓ ગુસાંઈજી મનકર્ણિકાજ્ઞાનકો પધારે તપ રૂ-  
કિમનીહુ ઓ મદનમોહનજીકો જ્ઞાન કરાયકે આપ મનકર્ણિકાજ્ઞાનકો  
ગહ ઓ ગુસાંઈજી પધારે જાનિકે તપ ઓ ગુસાંઈજીસોં વૈશ્વતનને ક-  
હ્યો જો મહારાજ સેઠ પુરુષોત્તમદાસકી બેટી રૂકિમની આપહૈ તપ ઓ  
ગુસાંઈજીને કહ્યો જો રૂકિમની આગે આહિતવ અપને પાસ જુલા-  
યલીની તપ ઓ ગુસાંઈજીને પૂછો જો તુ કિતકદિન પાછે ગંગાજ્ઞાનકું  
આપહૈ તપ રૂકિમનીને કહ્યો જો મહારાજ ચોવીસ વર્ષ પયત પાછે  
આપહૈં તપ વહસુનિકે ઓગુસાંઈજીકે હદો બરિ આયો ઔર કહ્યો  
જો એસી ભગવદી યજ્ઞતકો એક ક્ષણકું અવકાસ નાહીહૈ જો ગંગાજ્ઞાન-

नहो आवे श्रीगुसांछि बहुत प्रसन्न भये और इकिमनी को देखी श्री गोसांछि कहते जे श्रीहाकुरजी पाछे आरखि कहेयंगे.

आर्ता प्रसंग. १.

अहुरि क्षत्री लोक सब कार्तिक भासमे गंगाभांन करते तब इकिमनीने सेठ पुरुषोत्तमदास सों कखो जे तुम आग्या करो तो में हूं कार्तिकभांन कई तब सेठ पुरुषोत्तमदासने कखो जे भलेभभांन करिजे यहिसे सोखीछिये तब इकिमनीने कखो जे आंठ धृतदियाय देव मैदा तो घरमेंहै तब सेठ पुरुषोत्तमदासने आंठ धृतदियाय दीयो तब इकिमनी पहरराय पिछली रहैजय है सोनौतन सामग्री करिके समय समय राज भोगतो श्री मदनमोहनजीको समर्पिकरि उस्थापन सों सामग्री करे सो सैन भोग सों समर्पे जैसे कार्तिकभासमे करे और पैसाजमे सीतल सामग्री करे श्री हाकुरजीको आरोग्यमे सो प्रसाद भैक्षणको जियावे या भांतिसो करे सो एक दिन श्रेष्ठ पुरुषोत्तमदासने इकिमनी सो कही जे इकिमनी तु भान क्य करत है तोंको ज्ञात क्यहु इजियत नाही तु कार्तिक कोनवेर न्हाति है तब इकिमनीने कखो जे मेको भानसों कदा काम है भेतो या भांतिसों करतहों तब यह सुनिके सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भये श्री गुसांछि आप श्री भुज्य ते सराहना करते इकिमनी ऐसी कृपापात्र भगवदीयही.

आर्ता प्रसंग. २

अहुरि कितेक दिनमे इकिमनीको देह आसक्ति भर्ष तब इकिमनीने कखो जे अज यह देह छुटे तो भलो है. श्री हाकुरजीकी सेवा न होय आवे तो यह देह कान कामकी है तब कितेक दिन पाछे इकिमनीकी देह छुटी सो एक वैष्णवने श्री गुसांछि सों कही जे महाराज इकिमनीने गंगा पाछ तब श्री गुसांछि श्री भुज्यते कहे जे ऐसे मति कहे जे इकिमनीने गंगा पाछ ऐसे कहे इकिमनी गंगाने पाछ यह इकिमनी श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी ऐसी कृपापात्र भगवदी यही ताते धनकी बार्ता अनिर्वचनीय है सो कहांतांछि लिखिये.

आर्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैश्रव ॥ ६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

शेठ पुरुषोत्तमदास को बेटा गो-

पालदास ताकी बार्ता.

सो गोपालदास सों श्री मदनमोहनजी सानुभाव हुते जे यहिये



सो मांगिलेते ऐसे सदैव कृपा करते यहुरि गोपालदास कीर्तन बहुत करते और गोपालदासकी देह आसक्ति भर्ष तब भगवद नामको उच्चार करते तब श्री मदनमोहनजी आप हुंकारी देते ऐसी कृपा करते श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ग्रंथ सुनोधनीजी श्री भागवत निबंध और रहस्य ग्रंथसो सभ पाठ करते भगवद लोलासे भग्न रहते सदैव लीलाको विचार करते ऐसे करिके सर्वकार विनोत कीयो पाछे देह छुटी तब श्री गुसांईजीने सुनी गे गोपालदासकी देह छुटी है तब आप श्री भुज्य ते कही गे गोपालदासकी सराहना करी सोये गोपालदास ऐसे भगवदीय है ये सभ वार्ता श्रेष्ठ पुद्गोत्तमदासके परिवारिकी भर्ष ताते धनकी वार्ताको पार नाही सो अय कहांतांई लिजिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैश्रव ११ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

रामदास सारस्वत ब्राह्मण

ताकी वार्ता.

सोये रामदास श्री हाकुरजी सेवानीकी भांतिसों करते अपरस मे जल भरते वीडाहु अपरसमे राखते या प्रकारसों करते सो रामदासके पास द्रव्य बहुत हुतो सो कितेक पाछे वह द्रव्य अरु भयो थोरासो द्रव्य आय रह्यो तब मनमे विचारी गे कछु आवत होय तो भवो है तब तादितते वह द्रव्य तातीनको व्याजु दीनां तब व्याजु बहुत आवत लाग्यो लोभके लीये तातीन को व्यापार कीयो पूर्व देशमे इष्टेयस्त्र पुनत हैं तिनसों ताती कहत हैं तब रामदासजीके सेव्य श्री हाकुरजी श्री नवनीत प्रियाजीने कखो रामदास तुतो हमको तातीनपर राखत है तब रामदासजी यह बात सुनिकै बोकि ठे और कखो गे महाराज मेसों बुकि परी तब रामदासजी तातीनपर गले और कखो गे मेरो द्रव्य देइ तब उन तातीनने रामदासजीसों पूछो गे यह कारन कहाहै सो द्रव्य मांगत हो तब रामदासजीने कखो गे मे कहा कइ मोक्ष तो लरिका संग कांम परयो है ताते लरिकाको मन राख्यो यहिये तब तातीनने कखो गे हम द्रव्य छिके मेरो करत है तब कितेक दिनपाछे उनतातीनने द्रव्य दीयो सो द्रव्य सेके धर आये इरि वैसे ही सेवा करन लागे सो सभ द्रव्य निमट्यो तब अनियांनकी दुकांनते व्यापति करन लागे तब रिणु माये बहुत भयो तब व्यापतिवनि

યાકી દુકાન તે દુરિકીની ઝૌર બનિયાંકી દુકાન તે ઉચાપતિ કરત લાગે  
 પરિ વાવનિયાંકી હાટકે આગે હોયકે નિકસતે નાહી ઝૌર ગૈલ હોયકે  
 જતે તવ એક દિન વા બનિયાંને રામદાસસોં કહી જ્ઞે બલો તુમ મેરી  
 દુકાનકે આગે હોય કે નાહી નિકસતહો ઝૌર ઉચાપતિ નાહી કરત તો  
 મેરો લેખો કરિકે મેરો પૈસા ચુકાય દેઉ તમાદો વહુત કરડો કીયો તખ  
 શ્રી ઠાકુરજી રામદાસજીકો સ્વરૂપ ધરિકે વા વનિયાંકી હાઠ ઉપર ગએ  
 ઝૌર શ્રી મુખ્ય તે કહી જ્ઞે લેખો લાઉ પૈસા ચુકાય દેઉ તખ વા  
 બનિયાંને બહી દેખિ લેખો કરિકે પૈસા ચુકાય દીયો રૂપૈયા એક સૌ  
 અધિકી દીએ શ્રી ઠાકુરજી આપ શ્રી હસ્ત સોં લિખિઆએ પરિ  
 યહ વાત રામદાસજીને ન જાની તખ એક દિન રામદાસજીકો બુલાય  
 વે બમ્મવ આએ તખ ઉત બમ્મવતકે પાછે રામદાસજી ગએ સો  
 રામદાસજી વા બનિયાંકી હાટકે આગે નિકસે તખ આંનીકાંની દેકે  
 નિકસે ધતનેમે વા બનિયાંને કહી જ્ઞે રામદાસજી તુમ મેરી હાટતે  
 ઉચાપત નાહી કરત સો તો મેરો અભાગ્ય હૈ પરિ તુમહારો મોપૈ અ-  
 ધિક દ્રવ્ય હૈ સોતો ઉડાય લેઉ તખ રામદાસજીને કહ્યો. જ્ઞે ઉહાં તે  
 ફિરિ આવત હેં તખ રામદાસને મનમે વિચાર્યો જ્ઞે મેતો યાકો કછુ  
 દાંયો નાહી ઝૌર યહ કરત હૈ જ્ઞે તુમહારો અધિકી દ્રવ્ય હૈ સો તો  
 ઉડાય લેઉ યહ કારન કહા હૈ પરિ જાનીયત હૈ જ્ઞે યહ શ્રી ઠાકુરજીકી  
 ઝૌર તે કામ બયો હૈ પાછે રામદાસજી બૈમ્મવતકે ઘરતે આએ તખ  
 વા બનિયાંકી હાટપૈ જાંયકે લેખો માંયો કહ્યો જ્ઞે લેખો લાઉ તખ વા  
 બનિયાંને કહ્યો જ્ઞે કહા લેખો દેખોગે તખ વા બનિયાંને બહી દિખાઈ  
 તખ વહીમે રામદાસજીને શ્રી ઠાકુરજીકે હસ્તાક્ષર દેખે તખ ચુપ કરિ  
 રહે તખ ઘર આય રામદાસજીને સ્ત્રીસોં કહી જ્ઞે હુંતો ઘરને નાહી  
 રહુંગો ચાકરી કરુંગો તખ સિપાઈગીરીકો બિચાર કીયો તખ ઘોડા મોજ  
 લીયો સખ હથિયાર બાંધન લાગે તખ જલ ઝૌર વીડા અપરસમે લેન  
 લાગે સો કિતેકદિન પાછે રામદાસજી અડેત આએ સો હથિયાર  
 બાંધી જાય કે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુતકે દર્શન કીને દંડવત કીની  
 તખ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુતને શ્રી મુખ્ય તે ધંન્ય ધંન્ય કહ્યો જ્ઞે  
 રામદાસ તુ ધંન્ય હૈ તખ ઝૌર બમ્મવ પાસ બૈઠે સો કહન લાગે જ્ઞે  
 મહારાજ અબ યાકો ધંન્ય કયોં કહતહી અખ તો યહ અપરસ તાસોં  
 નાહી રહત હૈ સિપાઈનમે ચાકરી કરત હૈ તખ શ્રી આચાર્યજી મહા  
 પ્રભુતને કહી જ્ઞે યહ ધંન્ય યાતે હૈ જ્ઞે શ્રી ઠાકુરજીકો અમ નાહી  
 કરવાત યાકી બરાબર કોઉ ધીરજવંત નાહી ઝૌર શ્રી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુ આપતાસમે ગંગાજ્ઞાનકો પધારે તખ માર્ગમે એક ખાડ દેખ્યો

तम श्री आचार्यगु महाप्रभुनने कछो न्ने यह आऽ अण्डुं भरयो  
नांही सो धतनो कहतही जैमव सय आऽ भरन लागे वागो पहरेही  
तम रामदासगु हु अेक टोकरा लेके आऽ भरन लागे तम श्री आचा-  
र्यगु महाप्रभु स्नान करिके पधारे तव तांछ आऽ भरि दीनां तव  
रामदासगुहुं देखि के श्री महाप्रभुगु अहुत प्रसन्न भये.

प्रसंग ॥१॥

आरे रामदासगुके कछु संतति न हुती तव स्त्रीनि रामदासगु  
सो कछो न्ने तुम आरे विवाह करो तो तुम्हारे बालक होय तम  
रामदासगुने कछो न्ने हमको तो बालककी छच्छा नांही तम स्त्रीनि  
कछो न्ने भोको तो बालककी छच्छा है तम रामदासगुने कछो न्ने  
तोको बालककी छच्छा है तो हमारे श्री नवनीत प्रियागुकी बालभाव  
सो सेवा करि जैसे बालकहुं अत्राघये पाघये जिलाघये हितकरिये  
तैसे तुम श्री नवनीत प्रियागुको लडवो तम तेरे बालक होयगो तम  
रामदासगुकी स्त्रीनि ओ नवनीत प्रियागुकी बाल भावसो सेवा करी  
सो वा प्रकारशे सेवा करी न्ने बालक भयो है सो ये रामदासगु आ-  
चार्यगु महाप्रभुनने अैसे कृपापात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता  
अय कहांतांछ लिजिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥२॥ वैश्रव ॥७॥

अव श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

गदाधरदास सारस्वत ब्राह्मण

कडामें रहते तिनकी वार्ता.

सो गदाधरदास के भाये श्री मदनमोहनगुकी सेवा हुती सो श्री  
हाकुरगु अउ गौर हुते सो नित्यप्रति जैसो उनके निजमान केसो  
आवतो तैसो श्री हाकुरगुको समर्पिते सो अेक दिन निजमान केसो  
कछु आयो नाही तम बलही छानिके समरप्यो परि सतमे अहुत अेद  
भयो छातीमे अग्निसी छी अैसे करत रात्रपर गछ तम अेक निज.  
मान द्वारे पै आय पुकारयो आरे कही न्ने किया जोसो तम गदाधर  
दासने किया जोले तव वा निजमानने अेक बागो आरे आरि  
इपैया आरे कछु सामग्री गदाधरदासको दीअे आरे कह्यो न्ने आज  
अरे पिताको आद्व दिन हुतो ताकी यह दक्षणा लेऊ तम गदाधरदासने  
क्षीनी सो बागो सामग्री धरमे धरिके आय अन्तरमे गये सो अेक

હલવાઈ મિઠાઈ આછી કરત હુતો તાકી હાટ પૈ ગએ તમ બપેકે વા  
 હલવાઈ સોં પૂછો જો તેરે મિઠાઈ આછી હૈ તમ વા હલવાઈને કહ્યો  
 જો મિઠાઈ જલેવી અવહી કીની હૈ વામે તે બેચી નાહીં તમ જલેવી તુ  
 લાય મોજ દેકે ઘર આએ તમ ગદાધરદાસ આપકે સ્નાન કરી આ  
 ઠાકુરજીકોં ભોગ સમર્પ્યો સમમાનુસારે ભોગ સરાય આનોંસર કરિકે  
 પાછેં જૈનવનકોં વુઝાય મહાપ્રસાદ સવનકોં લિવાયો સો અતિ અલૌ  
 કિક સ્વાદ ભયો એસો જો કછુ કહ્યો ન જાય સો સમ મહાપ્રસાદ  
 જૈનવનકોં લિવાયો ઔર આપુ બુખેહી સોય રહે પાછેં સવારે ઉઠિ  
 સીધો સામગ્રી લાએ તવ સ્નાન કરિ રસોઈ કરી આ ઠાકુરજીકી સેવા  
 શુંગાર કરિ આ ઠાકુરજીકોં ભોગ સમર્પ્યો ભોગ સરાય જૈનવ ફેરિ  
 વુઝાએ જવ જૈનવ પ્રસાદ લેવેકોં વૈઠે તવ પૂછન લાગે જો રાત્રકો  
 મહાપ્રસાદ હમને લીયો સો બહુત સ્વાદ ભયો સો ક્યોં કરિ સમર્પ્યો તવ  
 ગદાધરદાસને સમ પ્રકાર કહ્યો તવ સમ જૈનવ બહુત પ્રસન્ન બએ  
 ઔર કહ્યો જો ગદાધરદાસને સત્ય કહ્યો.

#### વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૮

બહુરિ એક દિન ગદાધરદાસને સમ જૈનવ મહાપ્રસાદકોં વુઝાએ હુતે  
 પરિ સાક સાજન કછુ ન હુતો તમ ગદાધરદાસને કહી જો એસો કોજો  
 જૈનવ હૈ સો સાકલે આએ તમ તિનમેં એક જૈનવ બેણીદાસકો ભાઈ  
 માષોદાસ સો બજો વિષઈ હુતો તાને બેગ્યા ઘરમેં રાખી હુતી તિનને  
 કહ્યો જો મે લેઆઈગો તમ ગદાધરદાસને કહ્યો જો બલે લેઆવો  
 તમ માષોદાસ ગયો સો બચુવાકી ભાજી લે આયો સો માષોદાસને  
 નીકી ભાંતિસોં દીની રસોઈમે પાછે રસોઈ સિદ્ધિ ભઈ તમ આ  
 ઠાકુરજીકોં ભોગ સમર્પ્યો પાછે ભોગ સરાય આનોંસર કરિકે જૈનવનકોં  
 મહાપ્રસાદ લેન વૈડાએ પરિવહ ભાજી અતિ સ્વાદ ભઈ તમ ગદાધર  
 દાસને માષોદાસકો આસીર્વાદ દીયો જો તુ હરિભક્ત દ્રઢ હોયગો પાછે  
 ગદાધરદાસકે આસીર્વાદ તે માષોદાસ ભલો જૈનવ બયો સોવે ગદા-  
 ધરદાસ આ આચાર્યજી મહાપ્રમુતકે એસે કૃપા પાત્ર ભગવદીય હુતે  
 તાતે ઈનકી વાર્તાકો પાર નાહીં તાતે ઈનકી વાર્તા અમ કહાંતાઈ લિખિયે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૨૧ જૈનવ ૧૧૮૧ સંબંધ ૧૧૪૯

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक बेणीदास माधोदास दोऊ भाई तिनकी वार्ता है

सो अउभाध वेणीदास छोटे भाध माधोदाससो माधोदास वही जे गदाधरके घर पयुवाकी भाण ले आयो हो सो माधोदास अउ विपध हुतो ताने घरमे जेसा राखी हुतो ताते सय जैभव माधोदासकी नींदा करते सो जात श्री आचार्यण महाप्रभुनने सुनी जे माधोदास वउ विपध जयो है घरमे जेसा राखी है सो अक दिन श्री आचार्यण महाप्रभुनने माधोदाससो पूछो जे क्यारे माधोदास तेने घरमे जेसा राखी है तव माधोदासने श्री आचार्यण महाप्रभुनसो कखो जे महाराज मेरो मन आसक्ति जयो है तासों राखी है तय श्री आचार्यण महाप्रभु आप गुप करि रहे सो तीनिपर आपने माधोदाससों पूछो तय तीनोपर माधोदासने बोली कही जे महाराज मेरो मन वासो आसक्ति जयो है तासों राखी है तय जैनवनने श्री आचार्यण महाप्रभुनसों कही जे महाराज आपलो तो आपकी कानिहीपरि अवतो तुम्हारे आगे कखो तासो तुमने तो कछु न कही तय श्री आचार्यण महाप्रभुनने उन जैनवनसों कही जे वाको मन वासों आसक्ति जयो है सो श्री ठाकुरणको इरिते कितनीक वार लागेगी आर गदाधरदासने वाकों आसीर्वाद दीयो है जंतो में हरिभक्त दृढ़ होयगी सो यह माधोदास है तय कितेक दिन पाछे माधोदासकी बुद्धि श्री ठाकुरणने देरी तव तो वाने जेसा दुरि कीनी पाछे श्री आचार्यण महाप्रभुनकी कृपाने माधोदास जसो जैभव जयो.

### वार्ता प्रसंग ॥१॥

वहुरि कितेक दिन पाछे अक मात्रा मोतीनकी अहुत सुंदर अहुत मोलकी विक जेकों आध सो देखिडे माधोदासने वउ भाध वेणीदास सों कखो जे यह मात्रा श्री ठाकुरणके कंड लायक है तव अउभाध वेणीदासने कही जे यह मात्राकी कहा है हमारे पास जे है सो सय श्री नवनीत प्रियाणको है जैसे कहिके जात शरिदीनी तय माधोदासने कही जे अपने घरमें है सो सय श्री ठाकुरणको है तो मात्रा क्यो न लेउ तय अउभाध वेणीदासने कही जे हम अस्थ है हमेंकों बियाह कान् सय करनां है जैसे क्यो वने तय छोटे भाध

माघिदासने कही जे हुंतो न्यारो होअगो सो न्यारो ज्यो द्रव्य सय  
वांछि लीनां सो द्रव्यकी वस्तु लेके दक्षिण गयो तव अस्तु सय ज्यो  
तव व्यवहार करिके द्रव्य बहुत उपज्यो तव अक भाला मोतीनकी  
पहले भेल ले उनमोतम लीनां सो भाला लेके धरेकों यले सो आवत  
पाठमे अक अडी नदी आछि तय नावमे बैठे तय श्री नवनीत प्रि-  
याछ लाव छडी हाथमे लेके आये और कछां जे नाव दुआरि तय  
माघिदासने कही जे निजे छातः करिष्यतिः तव श्री हाकुरेछने कही  
जे तु क्यो गयोहो तय माघिदासने कही जे महाराज मे भाला खेन  
गयोहो तय श्री नवनीत प्रियाछने कही जे हमारे का भाला न हुती  
हमारे भाला अहुतेरी हँ तय माघिदासने कछां जे तुम्हारे भाला  
वहुतेरी हँ परि सेवकां तौ उपाय करनो तय नाव दुआते सों रही  
जितने मनुष्य नावमे बैठे हुते ते सय हलकल करन लागे और  
माघिदासको मन प्रसन्न हुतो तय सवनके मनमे आछि जे अउ  
महापुरुष है पाछे माघिदास उहांते धर आये तय श्री आचार्य  
छ महाप्रभुनकों दंडोत कीनी और हाथमे भाला दीनी तव श्री आ-  
चार्यछ महाप्रभुनने कही जे नाव दुवतते कैसे रही तय माघिदासने  
सय समायार कहे तय और जैनव पास बैठे हुते तिनने श्री  
आचार्यछ महाप्रभुनसो कही जे वही माघिदास है जे श्री महाप्र-  
भुनकी कृपाते श्री हाकुरेछने माघिदासको मन इशयो और भगवद्भाव  
उत्पन्न ज्यो आभ्य ऊपर आसक्तिता हुती सो श्री हाकुरेछके ऊपर  
भर सो माघिदास ऐसे भगवदीय छे ताते धनि पेसादास माघि-  
दासकी वार्ताको पार नाही सो धनकी वार्ता कहां तांछि लिजिये.

वार्त प्रसंग ॥२॥ जैनव ॥६॥

अवधू आचार्यजी महाप्रभुन के सेवक

हरिवंस पाठक सारस्वत ब्राह्मण बना

रसमें रहते तिनकी वार्ता.

सो वे हरिवंस पाठक पठना में गयेछे सो उहांके हाकिम सों व-  
हुत मिलाप हुतो सो वह हाकिम अपने मनमें कहे जे अमेरे पास  
कछु भागे तोमे धनको दंड परीये कछु भागे नाहीं यो करत जोल उत  
सबके दीनद्वै रहे तय अपने सेय हाकुरेछ हुते तिनने स्वप्नमें जाताछ  
जे तुमको जोलन जुझायैगो तय हरिवंस पाठकने अपने मनमे वि-

आरघो जे अवकहाइ इतमहरांस पाठक हाकीम पास गये सो जय  
 के कहीनि आपके पास कछु भागत आयो हुं सो मोको दीयो आहिये  
 तम राजने कहीनि कहा आहिये तम हरीअंस पाठकने कछो जे मोको  
 दीनद्वैमे जनारस पहुअनोहै तवहाकीमने कछोनि लखो तमहाकीमने  
 धोडा और मनुष्य साथ दीये पेउ मे डांक याकी नाई ऐसे करत अ-  
 पने घर आये पाछे आप मंदीरमे आयके जलसिद्धि कीयो जलकी  
 सामग्री समझी करी पाछे श्री हाकुरजके जल जैसमे बहुत गुण  
 लयो सो घोरसे दीन पाछे किरी पटना गये तमहाकीमने कही जे  
 तुमको ऐसी कहा जलदी हुती तम हरीअंस पाठकने कहीनि कछु काम  
 हुतो परीमनकी बात कछुन कही सोये हरीअंस पाठक श्री आचार्य-  
 ज महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदी यह ताते धनकी आता  
 अनिवर्यनीयहै सो कहांताई लिजिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्रव ॥१॥ संभंद ॥५॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक गो-

विंददास भलाति नकी वार्ता.

सो गोविंददास लखलाकी गांठिमे द्रव्य बहुत हुतो सो श्री आ-  
 चार्यज महाप्रभुनके सेवक लये तमगोविंददासने श्री आचार्यज  
 महाप्रभुन सों पुछो जे महाराज मेरी गांठिमे द्रव्यहै सों मे कहाकई  
 तम श्री आचार्यज महाप्रभुनने कछो जे श्री हाकुरजकी सेवा करी  
 तम गोविंददासने कछो जे महाराज सेवा कैसे कई स्त्री अनकुल  
 नाहीं तम श्री आचार्यज महाप्रभुनने कछो जेतु स्त्रीको त्याग करी  
 तम गोविंददासने स्त्रीको त्याग कीयो पाछे कहीनि महाराज द्रव्यको  
 कहा कई तमश्री आचार्यज महाप्रभुनने कछो जे अम्य द्रव्यको  
 च्यारी वीभाग करी तम गोविंददासने च्यारी वटकीये तम इरी कछो  
 जे महाराज अम्य कहा आयाहै तम श्री आचार्यज महाप्रभुनने  
 कछो जे अेक वीभाग तो श्री नाथजके समर्पि और अेक वीभाग  
 आपनी स्त्रांदि और अेक वीभाग सेवा के लिये तु राखि तम  
 गोविंददासने कही जे महाराज कछु आपअंगीकार करीये तम श्री  
 आचार्यज महाप्रभुनने कछो जे लखो अेक वीभाग हमदे तवसव-  
 वीभाग जहां के तहां देके अपने वटको द्रव्य लेके आपु महावन आय  
 रहे सो महाप्रसाद वैष्णवनको जियावते वैष्णवन भिक्षुतो गायन को-  
 अवावते तामे ते आपरंयक हु न लेते आ पुनारी लीटी करी

ભોગ સમર્પિત લેતે એસી ભાંતિ સોં સેવા કરતે સોસમ દ્રવ્ય નિવટ-  
 નો તપશ્રી ગોવર્દનનાથજીકી સેવામે આપ રહે તવશ્રી ગોવરધનનાથ-  
 જીકો પરચારગી કરતે રસોઈકી ટહલસવ કરતે દોઢવારે કે પાત્ર માં-  
 જતે ઐર રાત્રિ ઉઠ તથા સવાપહર પાછલી રહતી તપ ઉડતે સો  
 ગાગરી તહાંતે લેકે ચલિતે સો મધુરામે બીઆંતિ સ્નાન કરીકે શ્રીયમુ  
 નાજલકી ગાગરી બરાંકે ચલતે સો રાજ ભોગ પહલે આપ પહુચતે  
 વહુરિ પાત્રમાંજ રસોઈ પોત અપની સમ સેવા સોં પહુંચિકે નીચે  
 આવતે પાંચે તિલક પોંછિ માલા ઉતારી ગાંઠી બાંધીકે આસપાસ કે  
 ગામન તે કોરી બોક્ષા માગી લાવતે સો સેરચારી પાંચકો અહાર કરતે  
 સો અહાર માફક જુરતો તપ આવતે તપ આપુ પીસિરોટી કરી શ્રી  
 નાથજીકી વ્યવનકે સન્મુખ દિખયતામે ચરણોદક મિલાય પ્રસાદલે  
 તેણેસે નિર્વાહ કરતે તવ એસી ભાંતિકરત બહુતદિન બીતે પરિપહ્યાત  
 શ્રીનાથજીકો ન બાપે તપ શ્રીનાથજીને શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુન  
 સોં કહ્યો જો તુમ્હારો એક સેવક મોકો બહુત કુખદેતહૈ તપ શ્રી આ-  
 ચારચજી મહાપ્રભુ આપ આડેલ તે ચલેસો આગરે આએ તપ તહાં  
 કે વૈશ્ણવ સોં શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને પૂછો જો શ્રી ઠાકુરજીકી  
 નીરડાએ એહૈં તવઉન બૈશ્ણવનને કહી જો મહારાજ હમતો કહુ જન-  
 નત નાહીં તપ ઉહાંતે શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુ શ્રી મધુરા પધારે  
 તપ મધુરાકે વૈશ્ણવ સોં શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને પૂછો જો શ્રી  
 ઠાકુરજીકો નીરડાએહૈં તપ ઉહાં કે વૈશ્ણવનને કહ્યો જો મહારાજ હમ-  
 તો કહુ સમજત નાહીં તપશ્રી આચારચજી મહાપ્રભુ ઉહાં તે શ્રીજી  
 હાર પધારે તપ શ્રી નાથજીકે દોઢ કપોલ હાપન સોં છુધકે કહ્યો જો  
 વાવા અન મને કેસે હૌ તપ કહીજો તુમ્હારો સેવક મોકો બહુત બી-  
 જવતહૈ તપ શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને સમ સેવકન સોં પૂછો જો  
 તુમ કહાકહા સેવા કરતહૌ આરે કહા પ્રસાદ લેતહૌ તપ સમને અ-  
 પની અપની સેવા કહી ઐર પ્રસાદ લેવેકો પ્રકાર કહ્યો પાંચે ગો-  
 વિંદદાસ સોં પૂછો જોતુ કહા સેવા કરતહૈ તપ જો સેવા કરતહુતો સો  
 સમ કહી ઐર પ્રસાદ લેવેકો પ્રકાર કહ્યો સો સમ શ્રી આચારચ-  
 જી મહાપ્રભુનને સુનો તપ અપને મનમે જની જોઈ નરડાએહ તપ  
 શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને ગોવિંદદાસ ભલા સોં કહી જો તુમ શ્રી  
 ઠાકુરજીકી રસોઈ મેં પ્રસાદ લેઉ તપ ગોવિંદદાસને કહ્યો દેવ અંસ  
 કેસે લેજી તપ શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો તુ હમારી ર-  
 સોઈ મેં પ્રસાદલે તપગોવિંદદાસને કહ્યો જો ગુર અંસ કેસેલેઉ તપશ્રી  
 આચારચજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો તુ સેવા મતિકરે તપ ગોવિંદદાસ



क्षत्री अहंकार सों सेवा छोडि के मथुरा गये सो डेसो रायछुकी सेवाको धनरो पठान के पासते लीयो तय सेवा करन लागो सो अेकवार श्री डेसोरायछुकी सिन्यानिवार सों पुनाछ सो सिन्या अहुत अदभुतब-  
 छ तय श्री डेसोरायछु वा सिन्या के उपर पोहन लागे तयतै सीहीनि वारवा गाम के हाकमने जुनवाछ परिवह निवार पैसीनबछ तयवा कारीगरने कही गे वहनिवार तौ श्रीहाकुरछुकीहै तय हाकमने कहीगे वहनिवारमें देखुंगो पाछे हाकम श्री हाकुरछु के दिवालमें नयके सिन्या उपर यहि बैठनो सो गोविंददासने सुनी तय गोविंददासने आयके गु-  
 भी लेके हाकीमको गारीदीना गे तु जानहै सोहमारे श्रीहाकुरछुकी सि-  
 न्या उपर बैठ्योहै ऐसे वा हाकमकां ठौर भाच्यो तयहाकम के मनुथनने गोवींददासको ठौर मारयो सोयहवात श्री आ-  
 सारचछु महाप्रभुनके आगे काहु वैश्वानर नय कही और कछो गे ऐसी गति वैश्वानरकां क्यो जुत्रिये तय श्री आसारचछु महाप्रभुनने कही जेयाके परलोकमे तो कछुहांनि नाहीं परीधनमरी आग्या नमानी तासियाकां देहया भांतिसां छुटीहै यह गोविंददास पहिले जन्ममें श्री नंदरायछुको भिसा हुतो याने मांछो पानी अहुत होगोछो सोये गोविंददास बहला श्री आसारचछु महाप्रभुनके ऐसे कृपापाव लगवदीय हेटाते धनकी वार्ता कपार नाहीं सो कहांतांछ जिजिये.

पार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥११॥ संबंध प३.

## अवधूरी आचार्यजी महाप्रभू के सेव क अम्या क्षत्राणी कडसेमे रहती तीनकी वार्ता.

सो अम्या के होय भेटा हुते सो होजे परम ऐश्वर्य हुते आप ऐश्वर्य हुती और वाके लरिका वासों अम्या कहते और श्री हाकुर-  
 छुकी सेवानीकां भांति सों करती सो वाके सेव्य हाकुरछु श्री आजकृ-  
 ष्ण वासो अम्या कहते सो कितेकदिन पाछे अेक भेटा वाको भरि गयो तय श्री हाकुरछुकी रसोछ करि श्री हाकुरछुको भाग समर्पिस-  
 मयानुसार भाग सराय पाछे रोवन लागी तय अम्याको रोवत देखिके श्री हाकुरछु अेद पावन लागे श्री हाकुरछु कहे अम्या तु रोवै भति परि यह रोवत ते रहै नाहीं ऐसे करत वाको दुसरोहु भेटा भरि गयो तयतो अहुत रोवन लागी तय श्री हाकुरछु वाको रोवते सो राये

और इहे अम्मा तु मति रोवै तय अम्मा रोवत ते रहै नाही तव श्री हाकुरेणने श्री गुसांछिसे कखो न्ने अम्मा रोवतहै सोमि अहुत भेद पावतहो तव श्री गुसांछि अम्माके घर पधारे और कखो न्ने अम्मा तु मति रोवै श्री हाकुरेण भेद पावतहै तय रोवतते रही और अम्मा सेवाको सय साज करिके पाछे ज्ञान करिके पाछे मंदिरमे जन-के होठ हाथसों सेवो लगाये श्री हाकुरेणके लगावे या भांतिसो सेव आजी तरे करती.

### आर्ता प्रसंग. १॥

अहुरी ओक दिन दुधको कटोरा श्री हाकुरेणके आगे भरि रामो हुनो ता समय श्री गुसांछि अम्माके घर पधारे मंदिरको टेरा स-रकाये दर्शन करन लागे तय श्री गुसांछि देखिनो श्री हाकुरेण दूध पीवतहै तय श्री गुसांछि देखिके पाछे किरि आये तय अम्माने कही न्ने आयापाछे क्यो किरि आये तय श्री गुसांछिने कखो न्ने श्री हाकुरेण दुध पीवतहै तय अम्माने कही न्ने श्री हाकुरेण तो ज-रिका है तूम कहा जनत नाही तय श्री गुसांछि दर्शन करिके पाछे किरि और अम्मासो श्री गुसांछिने कखो न्ने यह दुध हमारे घर पडाय दीछ्यो तय अम्माने कखो न्ने राज आपुहीनो आरोगन वारे भाँवै तो छहं आरोगो भाँवे छहं आरोगो पाछे श्री गुसांछि आपनो घर पधारे तय अम्माने यह दुध श्री गुसांछिके घर पडाय दीयो सो अम्मासो श्री हाकुरेण जैसे सानुभाव हुते प्रसन्न वार्ता कर-ते न्ने अम्मु सहिये सो मांगिये ते सो अम्मा श्री आचार्यण महा प्रभुनकी ऐसी कृपा पात्र वागवदीय ही ताते छनकी वार्ताको पार नाही सो अय कहां ताँछ जिगिये.

आर्ता प्रसंग. १२॥ अश्व ११२॥ संबंध ११४॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

गडजन धावन क्षत्री आगरेके

वासी तिनकी वार्ता.

सो गज्जन धावन श्री नवनीत प्रियाणकी सेवा नीकी भांतिसों करते श्री हाकुरेण सानुभाव हुते गज्जनके साथ श्री नवनीत प्रियाण भेजते गज्जनको कपहु गाय करते कपहु बछरा करते तय गायको भुज अपने पीतांबर सों पोछिते तय बछरा करते. तय पकरि राखते अ-

लन न देते और न्य धोरा करते तब पीछे उपर असवारी  
 करते न्य हाथी करते तब श्रीवा उपर असवारी करते जैसे करत  
 गज्जनके धुदुर बिसि भये जैसे कृपा श्री नवनीत प्रियाण गज्जन  
 धावनके उपर जैसे करते भोग सामग्री ने यहिये सो भांगि लेते  
 जैसे कितनीक वार्ता है सो कहां तांछ लिपिये और एक दिन श्री  
 नवनीत प्रियाणने गज्जन धावन सों कही ने मोक्ष श्री गुसांछण  
 श्री आचार्यण महाप्रभुन के धर पधराय ता संभक श्री आचार्य  
 ण महाप्रभु श्री गोकुलमे हुते तहां गज्जन आये श्री आ-  
 चार्यण महाप्रभुन सों कही ने महाराज श्री नवनीत प्रियाण की  
 जैसे आता लक्ष है ने मोक्ष श्री आचार्यण महाप्रभुन के  
 पास पधराय तब श्री आचार्यण महाप्रभुनने कही ने लखो पध-  
 राय तब गज्जन धावनने श्री नवनीत प्रियाण श्री आचार्यण  
 महाप्रभुनके मंदिरमे पधराये तब श्री आचार्यण महाप्रभुनने जैसे  
 प्रस्ताव ज्यो तैसे पधराय भोग समरूपो पाछे रात्रिके आप जल  
 सोंघो जगाये श्री नवनीत प्रियाणको अपनी सिन्या उपर ले पोढ़े  
 दुसरे दिन नछ सिन्या करवाछ ता उपर पोढ़े परि वह सिन्या छोटी  
 लक्ष तब श्री नवनीत प्रियाणने कही ने हुंतो या सिन्या उपर  
 न पोहुंगो तब श्री आचार्यण महाप्रभुनने कहि ने जैसे कसे वने  
 तब श्री नवनीत प्रियाणने कही ने कछु आधक नाही है तब श्री  
 आचार्यण महाप्रभु आप सोंघो जगाये पासहो ले पोढ़े पाछे  
 दुसरे दिन सिन्या जडी करवाछ तापर पोढ़ाये तब पोढ़े ता पाछे  
 थोरेसे दिन रहिके श्री आचार्यण महाप्रभु श्री गोकुलने अउलको प-  
 धारे तब गज्जनहु साथ गये गज्जन धावन गिता श्री नवनीत  
 प्रियाण ओक क्षणहुं न रहते जैसेही श्री नवनीत प्रियाण गिता  
 गज्जन ओक क्षणहुं न रहतो तब ओक दिन श्री नवनीत प्रियाणके  
 बिये श्री अक्वाणने गज्जन धावनको पान लेवे पहायो कही ने  
 पान ले आयो तब गज्जन जैसे तो कहि न सक्यो ने श्री नवनीत  
 प्रियाण मोसों हिये है सो म कैसे लख ताते अनयोक्ष्यो पान लेनको  
 छि यक्ष्यो सो थोरीसी दुरि गयो छितने में न्वर यहि आयो सो छहांछ  
 पडि रह्यो और छहां श्री अक्वाणने श्री नवनीत प्रियाणको भोग  
 समरूपो तब श्री अक्वाणसों श्री नवनीत प्रियाणने कही ने ग-  
 ज्जनको पुत्रावो भरो गज्जन आवेगो न्य भोजन कइये तब श्री  
 अक्वाणने मनुष्य दोष पुरायनको पहाये तब वे मनुष्य देखे तो  
 गज्जन थोरीसी दुरि परयो है न्वर यहि रह्यो है मनुष्य तहां ते

पुलाय लाये तम गज्जन आप र्नात करि मंदिरमे गयो तम तत्काल  
 ग्वर उतरि गयो तम गज्जनने श्री नवनीत प्रियाछुसों कबो ने आमा  
 भोजन कयो नाही करत अम भोजन करो तम भोजन श्री नवनीत  
 प्रियाछुने कीयो गजन धायनसों श्री नवनीत प्रियाछु ऐसे सानुभाव  
 हुते श्री नवनीत प्रियाछु ते अक क्षण न्यारो अपो ने तत्काल ग्वर  
 अठि आयो और नम निकट आयो तम तत्काल ग्वर उतरि गयो  
 ताते गज्जन धायन श्री नवनीत प्रियाछुके सदा पास रहते सोवे  
 गज्जन धायन श्री आचार्यछु महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहे  
 ताते धनकी वार्ता को पार नाही सो कहां ताछ लीजिये.

आर्ता प्रसंग ॥१॥ जैश्रव ॥१३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

नारायण दास ब्रह्मचारी सार

स्वत ब्राह्मण महा बनमें रह

ते तिनकी वार्ता.

सो नारायणदासके सेव्य श्री ढाकुरछु श्री गोकुलचंद्रमाछु सो  
 नारायणदास श्री गोकुलचंद्रमाछुकी नौकीभातिसों सेवा करते और  
 मायनकी धास जवावते सो घोष पोंछिके जवावते ताको तात्पर्य यहने  
 श्री ढाकुरछु दुध आरोगत है ने मति दुधमे रज आवे ऐसे करते  
 और श्री आचार्यछु महाप्रभु नव श्री गोकुल पधारते तम नित  
 प्रातःकाल श्री गोकुल ते महापुन पधारते श्री गोकुलचंद्रमाछुकी सेवा  
 करी भेकोसो सेवा करि लोग समर्पिके पाछे श्री गोकुल पधारते और  
 नारायणदास जहां हाथ पाव घोष वेदो भरहे मे जते ठौर ते मांठी  
 ओदते ता ठौर द्रव्य निकसतो ता उपर मांठी जरिके छि आवते परि  
 द्रव्यमे रक्षन न करते नारायणदास ऐसे लागी हुते सो अक दिन  
 नारायणदास सोयत हुते तहां जाठके आसपास द्रव्यके ढेर भयेहुते  
 तव नारायणदास देखेतो जाठ के आसपास द्रव्यके ढेर भयेहै तव  
 नारायणदासने भतीछुसो कही ने भेठी भेगि छी धरमे भिगार  
 पाहुत अपो है पुहारिके कूरो सय आहिर जारि आवि तम नारायण  
 दासतो वरहेमे देह कुतको गये पाछे भतीछुने सोछ कीयो सव पुहारिके  
 कूरे कीनाछ आहिरि जरी दीनो जगे सय दीप जरी पाछे नारायण

दास ज्ञान करि के मंदिर मे गये तब सेवा सिंगार सब करि के श्री हाकुर-  
 ७ के सामे दये सो श्री हाकुर ७ ने नारायण दास को अति सुंदर ध्यान  
 दीयो तब अति प्रसन्न श्री हाकुर ७ को देखि के नारायण दास ने कछो ने  
 महाराज यह घटा कहे को उनही है न न ने कहां परसेगी पाछे आपही  
 कछो ने यह घटा श्री आचार्य ७ महा प्रभुन को सरवर है उहां पर-  
 सेगी पाछे नारायण दास श्री गोकुल चंद्रभाण्ड को राजभोग स-  
 मर्पि के बाहिर आय जेठे तब -हो बरी आयो ने श्री हाकुर ७ को न  
 जानिसो आरोगत है ऐसा गियार मन मे लाये तब बती ७ ने कही  
 ने श्री आचार्य ७ महा प्रभुन के सेवक जहां भोग समर्पत है सो श्री  
 आचार्य ७ महा प्रभुन की कानि ते आरोगत है सो तुमतो श्री आचार्य-  
 ७ महा प्रभुन के सेवक परम कृपा पाव लगव दीये ताते तुमरो समर्थो  
 क्यो न आरोगिगे तुम संहै क्यो करत हो तब नारायण दास ने कछो ने  
 भेटी आरोगे जय जनि ये तब को ध जेअव अपने घर आय अत्यांत  
 महा प्रसाद लेय तब जनि ये ने श्री हाकुर ७ आरोगे होयगे जेअव  
 उपर नारायण दास को ऐसो भाव हुतो.

## ॥ आर्ता प्रसंग ॥१॥

जहुरि एक दिन नारायण दास श्री गोकुल चंद्रभाण्ड को सिंगार  
 करि रसोद्य मे गये तहां सिंगार भोग को सिद्धि करि के सिराय के थार  
 धरयो हति ने मेक वैअवने नारायण दास को पास आये अधार् दीनी  
 ने श्री आचार्य ७ महा प्रभु श्री गोकुल ते पधारत है सो नारायण  
 दास सुनत ही ताती आरि को उपर मे भेल श्री हाकुर ७ को भोग समर्पि  
 उतावने श्री आचार्य ७ महा प्रभुन के दर्शन को आये. तब आये श्री  
 आचार्य ७ महा प्रभुन के दर्शन करि के दंडोत दीनी सो श्री आचार्य ७  
 महा प्रभुन के सरनारिद उपर मांथे भेल रहे तब नारायण दास को मांथो  
 पकरि आप श्री हरत सो उहायो और पूछो ने श्री गोकुल चंद्रभाण्ड के  
 उहां कहा समय है तब नारायण दास ने कही ने महाराज आपही  
 सिंगार भोग समर्पि के आयो हं सो सुनि के श्री आचार्य ७ महा प्रभु  
 तत्काल पधारे तब जतही ज्ञान करि के मंदिर मे हाथ धोय आय मन की  
 आरि हाथ मे लेके भोग सराय के मंदिर मे पधारे तब भीतर नयके  
 दये तो श्री गोकुल चंद्रभाण्ड के अहस्त आरि सो बरे है और अहस्त  
 कमल अयि रहे है तब श्री आचार्य ७ महा प्रभुन ने श्री गोकुल चं-  
 द्रभाण्ड को कही ने महाराज अहस्त को को अयि रहे हो तब श्री गोकुल  
 चंद्रभाण्ड ने कही ने तुम को आये जनि के मोको नारायण दास तातो

ખીરિ સમર્પિ કે તુમ્હારે પાસ ગયો સો ખીરિ મેરે હાથસોં તાતી લાંગી  
 સો મેને થોરીસો આટિ કે હાથ જુર કે સો સગ મંદિરમે છોટ લાગીહે ઐર  
 મેરે હાથ ઐર યોટ રાતે બઝે હૈ સો ઓ ગોકુલચંદ્રમાજી કે હાથ ઐર  
 યોટ અજાણું લાગીહે પાછે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતને ખીરિ પંખાસોં  
 સોરી કરિ ભોગ સમર્પિ કે બાહિર આપે તખ નારાયણદાસસોં ખીજ  
 ઐર કહ્યો જો તેને ઓ ઠાકુરજીકો તાતી ખીરિ સમર્પિ તખ નારાયણ  
 દાસને ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતસોં ખીનતી કીની જો મેં રાજકો  
 પધારે જનનિ કે ઉતાવળો રાજ પાસ આપો તખ ઓ આચાર્યજી મહા  
 પ્રભુતને કહી જો આજ પીછે ઐસો કામ કપહુ મતિ કરિયો પાછે  
 સમમ ભયો તખ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતને ભોગ સરાયો તખ ઓ  
 ગોકુલચંદ્રમાજીને ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતને દોડી ઓ હસ્ત પકરિ કે  
 કહ્યો જો તુમ ખીરિ મહાપ્રસાદ લેડ તખ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતને  
 કહ્યો જો મહારાજ જાતિ વ્યવહારકી કડિત હૈ તખ ઓ ગોકુલચંદ્રમાજી  
 ને કહ્યો જો યહ મેરી આસા હૈ તાતે તુમ કધુ વિચાર મતિ કરો  
 ખીરિ મહાપ્રસાદ લેડ તખ ઓ ગોકુલચંદ્રમાજીને વીરકો મહાપ્રસાદહે  
 સો અપને આગેહો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતકો લિવાયો તખ ઓ  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુતને લીંગો તા દિન તે વીરિ અનસખડી મે હોત  
 હૈ નારાયણદાસસોં ઓ ગોકુલચંદ્રમાજી ઐસી બાંતિ સેવા કરવાવતે વે  
 નારાયણદાસ ઐસે ભગવદીયહે તાતે ઓ ગોકુલચંદ્રમાજી ઐસી કૃપા કરતે.

### ॥ ખાર્તા પ્રસંગ ૧૨૨ ॥

બહુરિ કાંતેક દિન પાછે નારાયણદાસકી દેહ થકી સો બહુત  
 આસકિત બાઈ તખ એક દિન ઓ ગોકુલચંદ્રમાજીને નારાયણદાસ સોં  
 કહી જો નારાયણદાસ તુ કધુ માંગિ તખ નારાયણદાસને કહી જો  
 મહારાજ હું યહ માંગતું જો તુમ ઓ ગુસાંઈજીકે ઘર પધારિ સેવા  
 કરવાયો નારાયણદાસકે મનમે યહ જનની ઓ ઠાકુરજી ઐર કહું સુ-  
 ખન માનેગે સેવા આછી બાંતિસોં ન હોયગી સો નારાયણ દાસને  
 અંત સમે ઓ ઠાકુરજીકે પાસ યહ માંગો પાછે કિતેક દિનમે નારા-  
 યણદાસકી દેહ છુટી તખ ઓ ગોકુલચંદ્રમાજીને કિતેક દિન તાંઈ  
 કૃષ્ણદાસ રવામી કે પાસ સેવા કરવાઈ પાછે ઓ ગુસાંઈજીકે ઘર મથુરા  
 મે પધારે સો ઓ ગુસાંઈજીને ઓ રઘુનાથજીકે માંયે પધરાય દીએ સો  
 વે નારાયણદાસ જલ્લયારી ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુતને ઐસે કૃપા  
 પાવ ભગવદીયહે તાતે ધનકી વાર્તા કહાં તાંઈ લિખિયે.

### ॥ ખાર્તા પ્રસંગ ૧૨૩ ॥ બૈશ્વ ૧૧૪૧ સંવંધ ૧૧૫૮ ॥

## અવશ્રી આચાર્યજી મહોપદેશન કે સેવક એક ક્ષત્રાણી મહાવનને રહતી તાકી વાર્તા છે.

સો એક સત્રે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પૃથ્વી પરિક્રમા કરત કરત મહાવન પધારે સો વાક્ષત્રાણીકો ચારી સ્વરૂપ પ્રતિભાએહે સો ચારો સ્વરૂપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે આગે આનિ રાખે સોતિત ચારો સ્વરૂપનકે નામ એક તો શ્રી નવનીત પ્રિયાજી ઐર એક શ્રીગોકુલચંદ્રમાજી ઐર એક શ્રી લલીત ત્રિભંગીજી ઐર એક શ્રી લાડીલિજી એ ચારયો સ્વરૂપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને ચારી વૈશ્ણવ કે માથે પધરાય દીએ સોયાભાતિ શ્રી ગોકુલચંદ્ર માજી તો નારાયણદાસ અલ્પચારી કે માથે પધરાય ઐર શ્રી લાડીલિજી જીવદાસ ક્ષત્રીકે માથે પધરાયે ઐર શ્રી લલીત ત્રિભંગીજી વે વા ક્ષત્રીકે માથે પધરાયે ઐર શ્રી નવનીત પ્રિયાજી ગજ્જન ધાવન કે માથે પધરાયે યાભાતિ ચારયો સ્વરૂપ ચારી વૈશ્ણવને માથે પધરાય દીએ તમ ચારયો વૈશ્ણવ સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુજીનને કહ્યો જો યે મરે સર્વ સ્વહે સો સ્વરૂપ તુમહારે માથે પધરાએહે સો ઈનકી સેવા તુમનીકી ભાતિસો કરિયો ઐર તુમસો જમ સેવા નહોય આવે તમ હમારે ધર પધરાય જૈયો પાછે શ્રી નવનીત પ્રિયાજીને તો કધુકદિન ગજ્જન ધાવનકે માથે સેવા કરવાઈ પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ધર પધરાયે સો સમતો ગજ્જન ધાવનકી વાર્તાએ લીખ્યોહ ઐર શ્રી ગોકુલચંદ્ર માજીને કિતેક દિનતાઈ નારાયણદાસ અલ્પચારી કે માથે સેવા કરવાઈ પાછે કૃષ્ણદાસ સ્વામીકે પાસ સેવા કરવાઈ પાછે શ્રી ગુસાંઈજીકે ધર પધારે પાછે શ્રી ગુસાંઈજીને શ્રી રધુનાથજી કે માથે પધરાયે સો પ્રકાર નારાયણદાસ અલ્પચારીકી વાર્તા એ લીખ્યોહ ઐર શ્રી લાડીલિજીકો પ્રકાર સમ જીવદાસકી વાર્તાએ લીખ્યોહ સો અખ્ય શ્રી આચાર્યજી કે કુત્રમે બિરાજતહે ઐર શ્રી લલીત ત્રિભંગીજી અંતર્ધ્યાન બએ સો પ્રકાર દેવાક્ષત્રી કપૂરકી વાર્તાએ લીખ્યોહ સોવહ ક્ષત્રાણી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી એસી કૃપાપાત્ર ભગવદીયહી તાકી વાર્તા કહાંતાઈ લિખિયે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧ સંબંધ ૧૧૫૬૧ વૈશ્ણવ ૧૧૫૧૧

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

### जीयदास क्षत्रीसूर तीनकी

#### वार्ता लिख्यते.

सो जयदासके माये श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री लाडिले  
 छुकी सेवा दीनी सो जयदासके पास श्री लाडिलेजने आरिपहर सेवा  
 करवाध सो जयदासके आरि भेटा हुते तिनमे पुरषोत्तमदास छवील  
 दास धन दोड़ भाहनने कोध अेक दीन सेवा कीनी, पाछे दोड़ भा-  
 धनके संतती न भध, तम धनके पाछे धनके मांमां कृष्णदास यो-  
 पडा हुते, तिनके माये श्री लाडिलेज पधारे सो कितेक दिन तांध  
 कृष्णदास योपडा सो सेवा करवाध सो बली भांतिसो सेवा कीनी,  
 सो अेक सभे महाभरी आध सो कृष्णदासके घरके सभ कुंअकी देह  
 छुटी तम कृष्णदास अेकेले रहे तम कृष्णदासके मित्र हरज तथा  
 मयुरामल क्षत्री हुते सो कृष्णदास तहां आय रहे सो कितेक दिनतांध  
 कृष्णदासने और हरजने दोड़ मिलीके सेवा कीनी पाछे कृष्णदासकी  
 देह छुटी तम हरजभाधने देह अपि लो सेवा कीनी पाछे श्री गुसां-  
 धजके घर पधारे सो श्री लाडिलेज अम गिराजत है सो वे  
 जयदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके अैसे परम कृपापात्र भगवदीय  
 है सो धनकी आनीको पार नाही सो कहांतांध लिखिये.

॥ आर्ताप्रसंग ॥ ११॥ जैष्ठ्य १६॥ संवत् १०॥

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

### देवाक्षत्री कपूर तिनकी

#### वार्ता लिख्यते.

सो देवा कपूर के माये श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री ललित  
 त्रभंगीछुकी सेवा पधराय दीनी सो देवा कपूरकी नव लो देह रही  
 तम लो सेवा कीनी तापाछे देवा कपूरकी स्त्रीकी देह छुटी ताको संस्कार  
 करि आये तापाछे मंदिर उधारेके देजे तो श्री हाकुरज नाही और  
 सामग्री सब धरी है अेक श्री हाकुरज नाही है सो जने कहां अंतर  
 ध्यान भये याते यो जनी परी जे देवा कपूरके आरि भेटा हुते परि  
 उनके पास सेवा न करवाध श्री हाकुरज तो स्नेहके असहै सो भगवद  
 धिच्छा अैसी ही भध ताते देवा कपूर तथा देवा कपूरकी स्त्री श्री



आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहे ताते धनकी वार्ता  
कहातांछ लिप्पिबे.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ संबंध ॥६॥ वैश्व ॥१॥

अवधूती आचार्यजी महाप्रभुनके

सेवक दिनकरदास सेठ

तिनकी वार्ता.

सो दिनकरदासको कथा के उपर बहुत इच्छिहुती सो श्री आचार्य  
जी महाप्रभु आप आउलमे कथा कहते तहां दिनकरदास नित्य सु-  
नते सो एक दिन दिनकरदास रसोई करत हुते सो आठो सांध्यो  
हुतो उपरा वराय दीनहे लीटी करी राजी हुती धननेमे श्री आचार्य-  
जी महाप्रभुनको सेवक जल धरीया सो श्री डाकुरजीको जल भरी  
वेको आपो तय दीनकरदासने पुछे जे सीआचार्यजी महाप्रभु कहा  
करतहैं तय वाजल धरियाने कछो जे पोथी जोतही आप कथा कहेंगे  
तय दिनकरदासने कासीही अंगी करी लीनी सेकी नाही वेकी डी वख  
पहरीके आपो आप के कथा सुनी श्री आचार्यजी महाप्रभु कथा कहि  
रहे हे तय वाजल धरियाने श्री आचार्यजी महाप्रभुन से कछो  
जे महाराज दिनकरदासने कांसी अंगी करी लीनी सेकीहु नाही त-  
य दिनकरदास से श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कछो जे तु कांसी  
अंगी करी को आप आपोहैं तय दिनकरदासने कछो जे महाराज  
अंगी करी तो नित्य लेउगो परीयहु अमृत कथा कथसुनुंगो तय श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनने कछो जे आप ते तु रसोई करी श्री डाकुर-  
जीको भोग समर्पि प्रसाद लेछि पलुंयिके जय आपोगो तय पोथी  
जोतुंगो तरे आपेविता कथा न कहेंगे आज ते हमारी कथाको ओ  
तातु ताते तु निश्चित होय के आपो तयता दिनते दिनकरदास जे  
गीही रसोई करी भोग समर्पि प्रसाद लेके जय कथाके समय आवते  
तय श्री आचार्यजी महाप्रभु पोथी जोतते सो वे दिनकरदास सेठ  
श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहे सो धनकी  
वार्ता कोपार नाही ताते आप कहातांछ लिप्पिबे.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥१॥ संबंध ॥६॥

( ५५ )

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुन के सेवकमूकंददास कायस्थ नाकीवार्ता.

सो मुकंददास आप किय हुते सो कवित करत सो कवित अहुत  
कीयेहै श्री आचार्यजी महाप्रभुनके तथा श्री गुसांईजी के तथा श्री  
ठाकुरजीके अहुत कवित कीयेहै और मुकंद सागर ऐक ग्रंथ कीयोहो सो  
ऐक समे मुकंददास उज्जैन के कारकुन होय के आये तय तहां के  
पंडीत सय आबमिले तय पंडीतनने मुकंददास सों कबो जे तुम  
हमारे पास श्री भागवत सुनो तो सुनावे तय मुकंददासने कबो जे  
तुम हमारी भागवत जनत हो तय उन पंडीतनने कह्यो जे तुम्हारी  
कहा श्री भागवत न्यारोहै तय मुकंददासने ऐक श्लोक को व्याख्यान की-  
यो पाछे महीना लों सुनायो परी आप काहु पास कथा न सुनी कोकि  
पंडीत कदासीत व्याख्यान करतो ताको अहुत भाति दुःख न देखे आवते  
जे कहिते सुयोधनी मे अहुत प्रवेशहो मुकंददासको श्री आचार्यजी  
महाप्रभुनके सरणु कमणपर द्रवता हुती ताते सुयोध नीरझुई ३५  
हुती ऐसे करत करत कितनेक दिनमे उज्जैनमे मुकंददासको देह छुटी  
तयकाहु वैश्वनने श्री आचार्यजी महाप्रभुनके आगे आय कही जे  
महाराज मुकंददासने अवंतिका पाछ तय आचार्यजी महाप्रभुनने  
कबो जे ऐसे मति कही ताते ऐसे कही जे मुकंददासको अवंतिकाने  
पाये सोये मुकंददास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे परम कृपापात्र  
भगवदीयहै ताते छिनकी वार्ता कोपार नाहों सो कहांतांछ लिजिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ संभंघ ॥६३॥ वैश्व १८.

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक प्रभूदास जलोटा क्षत्री सीहनंदके वासी तिनकी वार्ता.

सो प्रभुदासके सेव्य ठाकुर श्री मदनमोहनजी सो राजनगर सी-  
कंदर पुरमे जैठे हे सो जयश्री आचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधारे तय

પ્રભુદાસ સાચહે તમ એક દિન શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ સંધ્યા વંદન ફેરીકે જ્ઞાન કરત હુતે વિશ્રાંતિકે ઉપર તહાં ઐર બેગનવ ચારી પાંચ વૈકે હે તવતહાં રૂપ જ્ઞાંતન કૃસ્ત ચૈતન્ય કે સેવકને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો પુછો જોયે બૈસ્તવ કોન હૈં તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જોયે અમરિ સેવક હૈ તવ રૂપ સ્નાતનને કહ્યો જોયે એસે દુર્લભ ક્યો રહતહૈં તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યોજો મે ઇનકો બહુત વરજે જો તુ મયા માર્ગમે મતિ પરી પરી ઇન મેરો કહ્યો ન માન્યો તાકો ફલયે ભોગતહૈં પરી રૂપ સનાંતન કછુ સમજે નાહીં તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શન કરી કે રૂપ સનાંતન તો ગએ પાછે કિતેકદિનમે એક વૈશ્ણવ રૂપ સનાંતન કે સાથકો શ્રી જગન્નાથજી કે દર્શનકો ગયો તહાં કૃસ્ત ચૈતન્ય મિલે તમ કૃસ્ત ચૈતન્યને વા બૈસ્તવ સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે કુસલ સમાચાર પુછે ઐર કહ્યો જો નીકે હૈં કહાં મીલે હુતે કહા કરત હુતે તવ વા વશ્ણવને કૃશ્ણ ચૈતન્ય સોં કહ્યો જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ મચુરા પધારે હુતે ઐર વિશ્રાંતિ ઉપર મીલે હુતે બહુત નીકેહે ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શનકો રૂપ સનાંતન હું ગએ હુતે વિશ્રાંતિ ઉપર સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ સો રૂપ સનાંતનને ઐર વૈસ્તવકી વાત પુછી જોયે એસે દુર્લભ ક્યો રહતહૈં તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહી પ્રભુદાસકી વાત કહી જો મે ઇનકું બહુત વરજે પરી ઇન મેરો કહ્યો ન માન્યો તાકો ફલયે ભોગતહે સો યહવાત મુનીકે કૃસ્ત ચૈતન્યકો મુઠ્ઠા આઈ સો એક મહુર્તિ લોં મુઠ્ઠા રહી પાછે સાવધાન બએ તમ ફેરી પુછો જો તુમને કહાવાત કહી તમ વા બૈસ્તવને ફેરી કહ્યો જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો યા માર્ગમે મતી પરી તમ કૃસ્ત ચૈતન્યકો ફેરી મુઠ્ઠા આઈ સો દોય મહુર્તિ જોં રહી પાછે ફેરી સાવધાન બએ એસે તીનીવાર પુછો સો તીન્યો વાર મુઠ્ઠા આઈ ચૌથીવાર ફેરી વા વૈગનવ સો પૂછી જો કહા કહી તવવાને કૃસ્ત ચૈતન્ય સોં કહીજો અમ ગાયે કહી ન જાય જો યહ વાત એસી હૈં જો કેવળ ખીરહી હોય સો જાને રૂપ સનાંતન કહા જાને.

॥ આર્તાપ્રસંગ ॥ ૧ ॥

ઐર એક સમ પ્રભુદાસને પેગો રસોઈ કરી સો દારિ તો કાચી રહી ઐર અંગાકરી જરગઈ તવ પ્રભુદાસકે મનમે આઈ જો એસી સામગ્રી શ્રી ઠાકુરજીકો કહા સમર્પૂ સો ચરણોદિક મેલિકે પ્રસાદ લિયો ઐર શ્રી ઠાકુરજી તો વાટ દેખત હી રહૈ જો પ્રભુદાસ ભોગ

समरपक्षगो और मे आरोहुंगो और प्रभुदासने तो विगरी साम-  
 ग्री जनके न समर्प्यो तब श्री हादुरलुने श्री आचार्यलु महा प्रभुन  
 सेां कही जे आन भोको प्रभुदासने भोग समर्प्यो नाही जेने वाट  
 देखी जे अब भोको प्रभुदास भोग समर्प्यो गो औरमे आरोहुंगो  
 परि प्रभुदासने भोग न समर्प्यो तब उत्थापनके सभे प्रभुदास दर्शन  
 को आये तब श्री आचार्यलु महा प्रभुनने प्रभुदास सेां कही जे  
 आन तेने श्री हादुरलु के विनुं समर्प्ये प्रसाद लीयो तब प्रभुदासने  
 साग्य वात कही जे महाराज दारितो काय रहो और अंगा करी  
 नरि गह ताते ऐसी सामग्री ननि भोग समर्प्यो नाही अरुछादिक  
 भजिके प्रसाद लीयो तब श्री आचार्यलु महा प्रभुनने कही जे अ  
 सी रसोर्ध क्यो करी श्री हादुरलुनेतो वडीवारखो वाट देखी जे प्रभु-  
 दास भोग समर्प्येगो और मे आरोहुंगो ताते तेने ऐसी रसोर्ध  
 क्यो करी सावधान हँ के क्यो न करी पाछे सावधान हे के करन जागे.

पार्ता प्रसंग. ॥ २ ॥

और एक सभे श्री आचार्यलु महा प्रभु वृजमे पावधारे हुते  
 तब प्रभुदास साथ हे तब एक दिन श्री आचार्यलु महा प्रभुनने  
 वृजमे श्री गोवर्धन के निकट स्थल भोग धरायो पाछे भोग सरायो  
 तब प्रभुदास सेां श्री आचार्यलु महा प्रभुनने कही जे प्रसाद लेउ  
 तब प्रभुदासने कही जे महाराज जेने स्नान नाही कीनो तब श्री  
 आचार्यलु महाप्रभुनने प्रभुदास सेां कही जे तु देखि तब श्लोक करी  
 के दीज्यायो सो.

श्लोक. वृक्षे वृक्षे वेणु धारी पत्रे पत्रे चतुर्भुज ॥

पत्र वृन्दावनं तत्रे लक्ष्या लक्ष कथा कुतः॥१॥

जलादिभिः रजःपुन्यं रज सोपि जलंवरं ॥

पत्र वृन्दा वनं तत्र श्रानाश्रान कथा कुतः॥२॥

यह श्लोक पढ़ाके प्रभुदासको दीज्यायो वृजको स्वरूप वृक्ष वृक्ष विषे वे-  
 णु धारी पत्र पत्र विषे चतुर्भुज देख्या भांतीको प्रभुदासको दर्शन  
 करवायो ऐसी साद्रस्य वृजको स्वरूप दीज्यायो पाछे प्रभुदासने प्रसाद  
 लीयो दंडोत करीके प्रभुदासके उपर श्री आचार्यलु महाप्रभुनकी ऐसी  
 कृपा हुती सो आपते कृपा करीके वृजको स्वरूप दीज्यायो.

॥ पार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥

ઐર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ મંદીર મેં હુતે તવ એસી મનમે આઈ જો શ્રીહાકુરજીકો ભોગ સમર્પાયે સો દહીંકો ભોગ સમર્પાયે તાસમે પ્રભુદાસ વાહીર હુતે સો પ્રભુદાસને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે અંતઃકરનકી જાની તવ પ્રભુદાસ વાહીર ગએ તવ ગામે જાય કે એક અહીરી મીલી તાસો પુછો જોતેરે દહી હૈ તવ વા અહીરીને કહ્યો જોહાં દહીહૈ તવ પ્રભુદાસને કહ્યો જો લા ઉતવ અહીરી દહાલે આઈ તવ પ્રભુદાસને કહ્યો યાંકો મોળ કહી તવ વા અહીરીને કહી જો તુ મોકો કહા દેયગો તવ પ્રભુદાસને કહ્યોજો તુ માંગેગો સો દેહગે તવવા અહીરીને કહીજો એક ટકા દે ઐર કહા મુક્તિ દેયગો તવ પ્રભુદાસને કહ્યો જો વહ તો ટકા લે ઐર તોકો મુક્તિ દીની તવવા અહીરીને કરીજો તુ મોકો લીખી દેજો મુક્તિ દીની તવ પ્રભુદાસને લીખી દીની ઐર દહી લેકે ઘર આએસો દહી ભીતર દીયો તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને વહ દહી ભોગ સમર્પ્યો સો શ્રીહાકુરજી આરોગે સો વહ દહી અતી સ્વાદ ભયો પાછે ગુસાંહદાસ સાંજ કે સમે દર્શનકો આએ તવ વહ વાત શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન સો કહી જો મહારાજ પ્રભુદાસને દહીકે ઉપર મુક્તિ દીની સોલીખી આએ તવ શ્રી મહાપ્રભુજીને પ્રભુદાસ સોં પુછી જો પ્રભુદાસ વહ દહી અતીસ્વાદ ભયો હુતો સો તેને યાંકો મોલ કહા દીયો હુતો તવ પ્રભુદાસને કહ્યો જો મહારાજ વા અહીરીને એક ટકા ઐર મુક્તિ માગો સો એક ટકા ઐર મુક્તિ દીનીતવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યોજો તેને કહ્યુ નદીનો તવ પ્રભુદાસને કહી જો મહારાજ હું કહા કરું જો મોપે મોગ્યો હુતે સોદીનો જો ભક્તિ માગતી તો ભક્તિ દેતો પાછે વા અહીરીકી સખીને કહ્યો જો તો કો તો ડગ લીનો તવ વા અહીરીને સખી સોં કહ્યો જો તુ કહા જાને યે વડે ભગવદ ભક્તિહૈ ધનકો વચન સત્યહૈ તવ કિતનેક દીન મેં વા અહીરીકી દેહી છુટી તમયમ ફુત આએ ધતને મેં વિશ્નુફુત હુ આએ સો આપસમે અગરન લાગે તવ યમ ફુતન સોં વિશ્નુફુતને કહી જો યાંકો તો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક પ્રભુદાસને મુક્તિ દીનીહૈ સો કાગદ યાકી સાડી કે ખુટતે બંધોહૈ સોવહ વાત વા અહીરીકે સમે સોદરેનને સુની પરી આખીન ન દેખે પાછે વા અહીરીકો વિશ્નુફુત લે જાન લાગે તવ વા અહીરીને વિશ્નુફુતન સોં કહ્યો જો મેરી સખી કો દર્શન દેઉ વાકો અવિશ્વાસહૈ પાછે વિશ્નુફુતનને વાકો દર્શન દીનો તવ વહ કહન લાગી જોમો હુકો લે જાઉ તવ વિશ્નુફુતનને કહી જો હમારે હાથ કહાહૈ હમતો આખ્યા કરી હૈ તાતે તુ પ્રભુદાસ સોં કહી તવવહ સખી પ્રભુદાસકે પાસ આ-

ई तब प्रभुदासने बाकी श्री आचार्यजी महाप्रभुनके पास नाम दी-  
वायो तब बाहुको कार्य लयो पाछे चिरनुहुत वा अहीरीको ले गये तब  
बाकी भुक्ति लभ पाछे वा अहीरी के सगे कुटने बाकी साडीके चुरते  
कागद पौत्रीके देखो तब बांयके रोत ते रहे सो प्रभुदासको श्री आ-  
चार्यजी महाप्रभुनकी कृपा ते ऐसी सामर्थ हुती सोवे प्रभुदास वरे  
भगवदी यह ताते मनकी वार्ता कलाताई लिखाये.

वार्ता प्रसंग ॥४॥ वैश्रव ॥२॥ संबंध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुन

के सेवक प्रभुदास भाट सी

हनुंद के तिनकी वार्ता.

सोवे प्रभुदास भाट श्री हाकुरजीकी सेवानीकी नांती सो करते  
सो बहुतदीन सेवा करत बीते पाछे बृद्ध लयो तब बहुत आ शक्ति  
लये तब नानी जे यह देह दीन आरी पांयमें छुटेगी तब सावधान-  
ना छुटी असावधान लये तब सगरे मीनके प्रभुदासको प्रयोदीक  
तीर्थ है तहां लगये जब प्रयोदीक आयो तब सावधान लये आप्नी  
पौत्रीके देखे तो प्रयोदीक तीर्थहै तब प्रभुदासने कही जे भोको यहां  
को लाये हो तबसगरे ज्वननने कछो जे यह प्रयोदीक तीर्थहै तुम्हारी  
अंत अवस्था देखीके लायेहै तब प्रभुदासने कही जे भोको प्रयोदीक  
सो कहां कामहै भोको श्री आचार्यजी महाप्रभुनको सेवक हो भोको प्र-  
योदीक कहां कृतार्थ करेगी भोको वरस अकलां कहां राखेगी तो उमरी  
हली यहां न छुटेगी ताते भोको सीहनुंद लेखसो जब अपने श्री हाकु-  
रजी के मरम्भ दे भुंगो तब देह छुटेगी तबदीन पांय सात लो राखे  
परीदीन दीन प्रभुदासको सरीर नीकोलयो सावधान लये तबकिर सी-  
हनुंद ले गये तब अपने सेव्य श्री हाकुरजीके देखे दर्शन करीके दंडित कीनी  
तब प्रभुदासने श्री हाकुरजी सो कछो जे श्री आचार्यजी महाप्रभुने तुमको  
भरे भांये पधरायहै और येनो वावरे लोग तुम्हारी आश्रय छुड़ाव  
के भोको तीर्थ आगे लगये परी श्री आचार्यजी महाप्रभु ऐसी को  
करे जे भरी देह तीर्थ पै छुटे पाछे श्री हाकुरजीकी सेवा सिंगार करिके  
वेगी वेगी भाग समर्थ लोग सराय अनोसरकियो पाछे सवनते कछो  
जे तुम वेगी वेगी प्रसाद लेउ तापाछे भरी देह छुटेगी तबसब  
प्रसाद ले चुके तबसवन सो प्रभुदासने जैसी कृत कछो और प्रभुदा-  
सने तत्काज देह छोडी पाछे सीहनुंद में अंक करत सोधरी हुतो सो

प्रभुदासकी निंदा करने लागे और कबो न्ने प्रभुदास प्रथोदीक ते छत्रो द्विरे आयो और साहनंद मे रह छोडी अस्ता निंदा करतो सो अके दिन रात्री सोयो हुतो तहां कोठि यारी जने हाथ में मुगहर लेके आये सो कीरत मोधरीको बहुत मारयो तव कीरत मोधरीने कबोले पुत मोको क्यो मारतहे तवउन कहो न्ने प्रभुदासकी निंदा तु क्यो करतहै तव कीरत मोधरीने कबो न्ने अवम निंदा न कइंगो और वहुत मनुहार करी तवउन कबो न्नेतु कुरी निंदा कइंगो तौ तोकों याही भांतीसां मारेगे तवकीरती मोधरीने कबो न्ने अवते निंदा न कइंगो लकीं कइंगो पाछे स्तुती करने लागे तव प्रभुदासकी बात सले तव कीरत मोधरीहै जेव वडे महापुरुषहै तव और लोग कहन लागे न्ने पहले तो तुम प्रभुदासकी निंदा करत हुते और अवगुती क्यो करत हो तव सवन को कीरत मोधरीने अपने रहकी व्यवस्था दिआछ और कबो न्ने रात्रीको कोठि यारी जने आये मारमार हाउ बूरन क्यो ताने भगवदीयकी निंदा सर्व थान करनी और न्ने करे तो या लोकमें यहि हाज होय और परलोकमें अगार न्की नय सेवा प्रभुदास भाउ श्री आचार्यछ महा प्रभुपदे अपे कृपा पाव भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहां ताछे लिजिये

॥ वार्ता प्रसंग ॥

॥ वैश्रव ॥ २१ ॥

अवधूती आचार्यजी महा प्रभुनके सेवकपुरुषोत्तम

दास आगरेमें राजघाट उपर

रहत हुने तिनकी वार्ताहै

सो अके सभे श्री गुसांछछ आगरे पधारेहुते तव पुरुषोत्तम दासके धरे उतरे तव पुरुषोत्तम दासकी स्त्री छिपि रहि तव पुरुषोत्तम दाससां श्री गुसांछछने पूछो न्ने तेरो स्त्री कहां गहहै तव पुरुषोत्तम दासने कबो न्ने जनेछ टुठी होयगी पाछे श्री गुसांछछ बेगि बेगि रसोछ करि दारि भाति साक यार पांच करे तव रोठी बेजिवे की बेरि पुरुषोत्तम दासकी स्त्री आछ तव श्री गुसांछछने पूछो न्ने अवलो तु कहां ही तव पुरुषोत्तम दासकी स्त्रीने कबो न्ने राज कछु काम करत ही पाछे पुरुषोत्तम दासकी स्त्रीने रोठी बेजि बेजि दीना तव रसोछ सिद्धि भछ तव श्री गुसांछछने श्री हाकुरछको भाग

समर्थों पाछे समयानुं सार भाग सराय पाछे यही थार कटोरा पड-  
 गो सब उनपावनमे श्री गुसांछणु सों रही जे भोजन करिये तब  
 श्री गुसांछणु ने कछो जे येतो श्री डाकुरणु के पात्र हैं उनिमे  
 भोजन कैसे करे ताते हम उन पावनमे भोजन न करेगे तब पुशपो-  
 तमदास तथा उनकी स्त्रीने कछो जे महाराजकी कृपा ते कछु द्रव्य  
 निवटो नाहो और पावन जे भगामेगे आप उनमे भोजन करिये  
 तब श्री गुसांछणु भोजन करनेको जे तब पुशपोतमदासकी स्त्री श्री  
 गुसांछणु के पास जैही के पंप्पा करने लागी और कछो जे महाराज  
 और सामग्री आरोगो तब श्री गुसांछणुने कछो जे मोक्ष रोगी  
 सो मे आरोगुंगो तब पुशपोतमदासने कछो जे महाराज श्री नंदराय  
 लुके घर कैसे आरोगत हो ऐसे कहिके स्त्री पुशपोतमदासने श्री गु-  
 सांछणुकी बहुत सामग्री जियाय सो तिनके संकोचके जिये श्री गुसां-  
 छणु कहे जे तुम कहोगे सो करेगे तब भोजन कीये पाछे अपने  
 सेव्य श्री डाकुरणुकी सेवा उपर पिछोरा बिछाय श्री गुसांछणुकी  
 पैदाये पुशपोतमदास अरु सेवा करने लागे स्त्री पंप्पा करने लागी  
 पाछे घड़ी एक रहिके श्री गुसांछणुने दोकनसो कछो जे अब तुम  
 नयके महाप्रसाद लेकि तब उन कछो जे महाराज महा प्रसाद तो  
 नित लेतहैं परि तुम्हारी सेवा कम करेगे सोये स्त्री पुशपोतमदासने  
 श्री आचार्यणु महाप्रभुने ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते इनकी  
 जाती कहां तांछ लिप्पीये, ॥ वार्ता प्रसंग ॥ पैम्पव ॥ २२ ॥

**अवश्री आचार्यजी महाप्रभुन केसेवक**

**त्रपुरदास कापस्थ सेरगढ के**

**वासी हुने तिनकी वार्ता.**

सो त्रपुरदासकी श्री आचार्यणु महा प्रभुन उपर तथा श्री  
 गोवर्द्धननाथलुके विषे बहुत समत्व हुनो जहां जैडि ते जहां डांडे  
 होते तहां श्री नाथलु को पीडित देखे जैडिते पीडि देखे डांडे नहोते सो  
 त्रपुरदास एक तुरकके आसरी करते परगना बहुत कमायो जे कछु व-  
 स्तु आवती सो पहले श्री नाथलुको पहुचावते. और साक साजन  
 पहुचावते ऐसे सदा सर्वदा क्यते सो एक दिन वा तुरकने त्रपुरदास  
 को अंधी आनि मे दीये और कछो जे तेने भरो द्रव्य बहुत आयो  
 है सो जय रह तुरक सोयो तब कोडि आसी जने हाथमें मुगदर सेके  
 आये सो आये वा तुरकको आठते आंधी पठिक बहुत भाँते तब



वा तुरकने कबो जे तुम मोक्षे क्यो भारत है तब उनने कबो जे तेने  
 त्रपुरदासके अंदीजाने में क्यो दीयो है तब यह तुरक अहुत बिज वि-  
 लाने हा हा करिके नांकी भूमिमें धरतीके उनसें कबो जे मोक्षे तुम  
 भारी मती में अवली त्रपुरदासके छोडत हो तब उन कबो जे त्रपुर-  
 दास के न छोडगो तो हम याहा जातीं सो नित्य मरेंगे जैसे कबो  
 तब वे तो गये तब वा तुरकने अपने अपने लोगन सें कही जे  
 त्रपुरदास के अंदीजाने में ते अवली छोडी देउ तब मनुष्य त्रपुरदास  
 के न छोडने गये तब त्रपुरदास ने उनसें कबो जे अपने रात्री  
 अहुत गर्ह है ताते सवारे छोडि यों तब वे मनुष्य क्षिरी आये और  
 वा तुरक सें कबो जे साहीव त्रपुरदास कहतहै जे अपने रात्रि अ-  
 हुत गर्ह है सवारे छोडिगी तब वा तुरकने अपने मनुष्यन सें कबो  
 जे तुम अमही त्रपुरदासके छोडी लायो तब वे मनुष्य वेगही नय  
 के त्रपुरदासके छोडी लाये तब वा तुरकने त्रपुरदास सें कबो जे तुम  
 आपन घर नउ तब त्रपुरदासने कबो जे आपनो रात्रि बहुत गर्ह  
 है सवारे नउगो तब वा तुरकने त्रपुरदास सें कबो जे तु कहा काहु  
 काछव लेछगो ताते तु अवली छतनी पर अपने घर नउ तब त्र-  
 पुरदास अपने घर आये.

### आर्ता प्रसंग ॥१॥

बहुने कितने कहीनपाछे त्रपुरदास वाही तुरक के साथ अठकी  
 गये पाछे एकदिन रसोई पाने त्रपुरदास सें कबो जे अरुणोदिक  
 महाप्रसाद निवटोहैरय कहु नाहीं तब त्रपुरदासने रसोई यासें कबो  
 जे पाडे तेने हमसे पहिले क्यो न कहयो हम अरुणोदिक महाप्रसाद  
 भगावदेते अवकहा करीये तब रसोईया ग्रुप करी रहयो तब सवारे उ-  
 ठि के त्रपुरदास वा तुरकके दरबार नन लागे तब कबो जे पांडे रसोई  
 करी श्री ठाढ़रु के भाग समर्पि प्रसाद लीज्यो भरी पाठ मन  
 देजीआ भोरी आपनो न जनगो और मनमें यह निश्चै कीयो जे  
 नय लों यह देह बखेगी तब सो कामकाज कइंगो और देह नय न  
 बखेगी तब पड रहुंगो परि अरुणोदिक महाप्रसाद लीये बीना  
 नलपान न कइंगो यह निरधार अपने मनमें कीयो तब तुरकके दर-  
 बार गये तब रसोईवाने आन करि रसोई करन लागो तब आधी  
 रसोई भई छतनेमें एक बरीका वरस दसको तीन येनी जायोसे एक  
 येनीमें तो अरुणामन और एक येनीमें श्री आचार्यज महाप्र-  
 बुतको अरुणामन और एक येनीमें श्री नाथजो महाप्रसाद सो वे-

तीनो येनी रसोदियाको दीनी और क्खो न्नेये तीनी येनी त्रपुरदासने पढाई है सो येनी देके वह लरीका तुरतही बल्थो गयो पाछे रसोद सिद्धि भई तय श्रीहाकुरजुको भाग समर्थो पाछे समयानुसार भाग सरायो तय रसोदियाने त्रपुरदासको बुलायवेको मनुष्य पढायो परि त्रपुरदास आये नाही तय होय तीनी वाह मनुष्य बुलायवेको पढायो तय त्रपुरदासने रसोदियासों क्खो न्ने पांडे तुम भोको कहे को बुलायत हो मे तो अरुणामृत महाप्रसाद लीये विना जलपान न करंगो तय रसोदियाने त्रपुरदास सों क्खो न्ने अरुणामृत महाप्रसादकी येनी तो तुम हीने पढाई है अेक लरीका वरस दसको हुतो सो तीन येनी दे तय त्रपुरदासने क्खो न्ने वह लरीका कहां है भोको दिनाय तय र-सोदियाने क्खो न्ने वह लरीका तो तुरत ही येनी देके-बल्थो गयो तय त्रपुरदासने जन्थो न्नेये श्री हाकुरजु के काम है तय आपको चिकार करन लाग्यो न्ने मेने जैसे हड क्पों कियो न्ने श्रीहाकुरजुको अम करनेो पज्यो सो आप चिकार अहुत करन लागो न्ने मेने श्री हाकुरजुको अम अहुत करवायो पाछे मान करी अरुणामृत महाप्रसाद लीयो पाछे समर्थो महाप्रसाद लीयो.

आता प्रसंग. २॥

अहुरी कितनेक दिनमे त्रपुरदासकी आहरी छुरी सो सीतधावदे दिन आये तय श्री नाथजुको कथाय पढायो तो कहाने पढायो छतनों समो धरने नाहीं त्रपुरदासकी कथाय हरवर्ष जतनी सो श्रीनाथजु आप अंगीकार करने तय त्रपुरदासने क्खो न्ने अय कहा करीये तय अेक ढाति पीतरकी हुती सो वेयो ताके दामनकी गजु मगाई सो रगाई ताकी कथाय अनवाय के श्री नाथजु को पढाई सोरंगी देखी के भंडारीने भंडारमे डारीदीनी तय कितनेक दिनमे श्रीगुसांभजु श्रीनाथजु द्वार पधारे सो जय श्रीनाथजुको अगार करन लागे तय श्री गुसांभजुसो श्रीनाथजुने क्खो न्ने भोको सित अहुत लागत है तय श्रीगुसांभजुने क्खो न्ने दूसरी अंगीडी लायो तय दूसरी अंगीडी लायेतो हुं कही न्ने भोको सीत अहुत लागत है तय श्री गुसांभजुने गदल डडायो तय हु श्री नाथजुने कही न्ने भोको सीत लागत है तय श्री गुसांभजुने तीसरी अंगीडी मंगाई तय हु कही न्ने भोको सीत लागत है तय श्री गुसांभजुने भंडारीको बुलायो और वासों पूछो न्ने कोन कोन पैम्पनकी कथाय आई हुती तय आज्ञा पैम्पनकी आई हुती ताता पैम्पनको नाम लीयो तय श्री गुसांभजुने कही न्ने त्रपुरदासकी

क्याय नाही आर्ध तव भंडारीने कस्यो न्ने त्रपुरदासकी अेक रंगीन  
क्याय आर्ध है सो भंडारमे पडी है तव श्री गुसांछिने कस्यो न्ने  
वह रंगीन क्याय से आवे तव भंडारी वह रंगीन क्याय से आवो  
तव श्री गुसांछि देखे तो मैत्री भरणहसी हो रही है तव वांछी  
आरी पाछ के बत्ताल दरुण पुत्राय के इरे गुल सिद्धि करवाछि तव वह  
इरेगुल श्री नाथहो उठाछि तव श्री नाथहोने कस्यो न्ने अव मे अे  
सीत निवर्त्त भयो अैसे श्री नाथहो भक्ति के पक्षपात न्ने भक्ति  
भावकी वस्तु को या भाति अंगीकारे करे सोये त्रपुरदास श्री आया  
रखहो महा प्रभुनके अैसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता  
कहां ताछ जिप्पिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ३ ॥ वैश्रव ॥ २३ ॥

अवश्री अचार्यजी महा प्रभुनक सेवक

पूरनमह द्वात्री तिनकी

वार्ता लिख्यते

सो पूरनमहकी गांठिमे द्रव्य बहुत हुतो सो पूरन महकी श्री  
नाथहोकी आग्या भछ हुती न्ने तुभरो मंदिर समराउ तव पूरन मह  
श्री आयास्थहो महा प्रभुनके पास आवो अैरे आवके कस्यो महा-  
राज मोक्षो श्री नाथहोकी आग्या अैसी भछ है न्ने तु भरो मंदिर  
समराउ तव श्री आयास्थहो महाप्रभुनने कस्यो न्ने मंदिर वेगि स-  
मरावे तव पूरन महने श्री आयास्थहो महाप्रभुनसों नाम पायो  
पाछे मंदिर उठावन लाग्यो सो द्रव्य हुतो सो सवनीव प्योद तेमे लग्यो  
जव सव द्रव्य निवयो पाछे पूरन मह पूरव यादरी को गये तव राज  
सी लोगनने श्री आयास्थहो महाप्रभुन सो पूछो न्ने महाराज आ-  
ग्या देखे तो हम मंदिर सवरावे तव श्री आयास्थहो महा प्रभुनने  
श्री नाथहोसो पूछो न्ने महाराज ये राजसी भाग मंदिर सवरान  
कहत है सो समरावे तव श्री नाथहोने श्री आयास्थहो महाप्रभुनसों  
कस्यो न्ने पूरन मह आवेगो तव मंदिर समरावेगो तव राजसी भाग  
नसों श्री आयास्थहो महाप्रभुनने नाही कीनी तव जे क्षिर गये तव  
कितनेक दिनमे पूरन मह पूरवते बहुत द्रव्य क्याय के लायो तव पूरन  
महने कितेक दिनमे मंदिर समरावेके सिद्धि करवायो पाछे श्री आ-  
यास्थहो महाप्रभुनने आछो महर्त्त देखिये श्री नाथहोको मंदिरमे  
पाठ जैडाये तव पूरन महने बहुत द्रव्य प्यरयो.

वार्ता प्रसंग. ॥१॥

बहुरि श्री गुसांभलु श्री नाथलु द्वार पधारै तव पूरन भक्ष  
 श्री नाथलु के दर्शनको आपो सो अति आनंद सो दर्शन कियो तव  
 श्री गुसांभलुने कछो नो पूरन भक्ष तेरे मनमे और कछु मनोरथ  
 है सो राखे मति तव पूरन भक्षने श्री गुसांभलुसो कछो नो म-  
 हाराज मेरे मनमे एक मनोरथ रह्यो है नो अति सुंदर अति सु-  
 गंधको अरगल अपने हाथनसो मे समर्पूँ तव श्री गुसांभलुने आ-  
 ग्या दीनी नो नो समर्पि तव पूरन भक्षने अति उत्तम सुगंधको  
 अरगल करिके श्री नाथलुको समर्प्यो तव पूरन भक्षने अपने मनमे  
 अति आनंद पायो ता पाछे पूरन भक्ष श्री नाथलुके पास ते श्री  
 गुसांभलुके पास आपो तव श्री गुसांभलु पूरन भक्षके उपर बहुत  
 प्रसन्न लखे तव श्री गुसांभलु आप पौढे है सो उपरना पूरनभक्षके  
 उदायो तव पूरन भक्षने अति आनंद पायो पाछे श्री गुसांभलुने  
 श्री नाथलुको पंचामृत सों शनां करवायो पाछे अंग वस्त्र करिके सेवा  
 अंगार करिके रसोई कर जाग समर्प्यो समयानुसार जाग सराय के  
 पाछे श्री गुसांभलुने श्री नाथलुको प्रसादी गढ़ल पूरन भक्षको उदा-  
 यो पाछे प्रति वरस प्रसादी गढ़ल श्री गुसांभलु पूरन भक्षको दे ते  
 सो वे पूरन भक्ष श्री गुसांभलु के तथा श्री आचार्यलु महाप्रभुनके  
 ऐसे कृपा पाव लगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहां ताई लिखिये  
 ॥ वार्ता प्रसंग ॥ २ ॥ वैभवा ॥ २४ ॥ संमंध

अवश्री आचार्यजी महाप्रभून के से-

वक पादवेददास कुम्हार

तिनकी वार्ता.

सो श्री आचार्यलु महाप्रभु तथा श्री गुसांभलु जब परदेस  
 को पधारते तव पादवेददास धनके साथ सामग्री लेके चलते हुआ  
 कनात चित्तावासकी छीटी रावटी तथा एकदिनको सींचो सामग्री धितनो  
 जाग लेके संग चलते और रसोईकी आकरी सज करते रात्रिको  
 पहरो देते.

वार्ता प्रसंग ॥१॥

बहुरि श्री गुसांभलु श्री गोकुल में हुते तारात्रि पहर एक  
 गध हुती तव श्री गुसांभलुने कछो नोया विरिया मंदकी नीव ओदी

जय तो मंदीर जलो द्रव होय अवजलो मूहुर्त है ऐसे कहीके श्री गु-  
सांछि तो पोढे पाछे पादवेंद्रदासने अक पहर मे नीवजोदी सो  
जोदसिद्धी कर राखी सो जय पीछीली रात्रिको श्री गुसांछि पोढे  
ठे तव दये तो मांठीनके ढेर परेहैं तव पूछो जे यह मांठी कैसीहै  
तय वैश्वने कह्यो जे महाराज पादवेंद्रदासने जोदीहै तव श्री गु-  
सांछिने पादवेंद्रदास सो पूछो जे यह नीव तेने जोदी है तव पा-  
दवेंद्रदासने कह्यो जे महाराज रात्रिको वावेर आपने आम्हा करी  
हुती ताही बर जोदीहै सो नीव ऐसी वडी जोदी जे महीना अक  
कां राज मज्जुर दसपंद्रह लगे तो हु जरी न जय सो ऐसी सामर्थ  
पादवेंद्रदास मे हुती.

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और पादवेंद्रदासने श्रीनाथजी द्वारको कुवा अपने हाथ नहीं  
सों जोद्यो सो मांठी नीकसीताकी छट पकार्छ अपने हाथ नहीं कुवा  
जिन्यो परीजल जारी नीकस्यो तव पादवेंद्रदास सोरो गयो श्री गंगाजी  
में ते जय सेके अंजुली जरी जरीके जारे और कहेजे वा कुवाको  
जल आपसो करो ऐसे कहेके तर्पण कीयो ऐसे करत जय जल्यो जे  
जल भीको जयो तव श्री गंगाजी में ते निकस्यो पाछे श्रीनाथजी द्वार  
आये तव वा कुवाको जल श्री नाथजीको अंगीकार करवायो सो पाद-  
वेंद्रदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके परम कृपापात्र भगवदीय हैताते  
धनकी वार्ता कहांतांछ लिजिये.

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैश्व ॥२५॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभू के सेवक

गुसांइदास सारस्वत ब्राह्मण

तिनकी वार्ताहै.

सो अक सभे श्री आचार्यजी महाप्रभुनको श्री ढाकुरजी स्व-  
रूप प्राप्त जयो सो स्वरूप गुसांछिदास के मांथि सेवाको पधराय दीये  
और कहीजे धनकी सेवा पुनीकी भांतिसो करीयो सो गुसांछिदास  
सेवा नीकी भांतिसों करन लागे सो गुसांछिदास सों श्री ढाकुरजी सानु  
भाव जये जोलन लागे पाछे कितनेक दिन मे अक वैश्व सों गुसां-  
छिदासने कह्यो जे तुम यहां रहो तो हमेंकों सहायता होय हम तुम  
भीली के सेवा करे परी यह वैश्व हांन करे पाछे अकदिन श्री ढाकुर-

जुने गुसांघदास सों कह्यो जे तुमोको वा वैष्णव के माथे पधरावि पाछे वा वैष्णव सो गुसांघदासने कह्यो जे श्री ढाकुरजुकी आग्या तो ऐसी लभहै जे तुमोको वा वैष्णव के माथे पधरावि ताते भगवद भ-  
 २४ ऐसी ही दीसतहै तब वा वैष्णवने गुसांघदास सों कह्यो जे तुम कहा करोगे तब गुसांघदासने कह्यो जे हुं तो वद्विकाभम न-  
 ३० उहो उहांमेरी देह छुटेगी तब वा वैष्णवने गुसांघदाससे कह्यो जे श्री ढाकुरजुकी गती नाही जतनी जतहै जे तुम्हारी देह उहां न छु-  
 ३१ टे और तुम उहां कीर आये तोमे श्री ढाकुरजु के देहो नाही तब गुसांघदासने कह्यो जे श्री ढाकुरजु ऐसी तो न करेगे और कदाचित  
 ३२ करे तो तुम्हारेद्वार पोरिया रहुंगो श्री ढाकुरजु के दर्शन करयो कहुंगो तब वा वैष्णवने श्री ढाकुरजु पधराये सो नीकीभाति सों सेवा करन  
 ३३ लाग्यो पाछे गुसांघदास तो वद्विका भमगये सो वद्विकाभम मे उहा गुसांघ दासकी देह छुटी पाछे वा वैष्णवने गुसांघदासकी देह छुटी  
 ३४ की पत्रि पाई तब यह वैष्णव सुप्तसो सेवा करन लाग्यो तब यह वैष्णव श्री महाप्रभुजुकी कृपा ते बसो वैष्णव बयो सोवे गुसांघदा-  
 ३५ स श्री आचार्यजु महा प्रभुनके ऐसे कृपा पाव भगवदीयहे ताते धनकी वार्ता उहां ताई लिखिये

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥ २६ ॥ संक्षेप ॥

अवधू आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

माधोभट्ट कास्मीरके दासी

तिनकी वार्ताहै.

सो माधोभट्ट प्रथम डेसवभट्टके सेवक हुते. सो डेसवभट्टके श्री आचार्यजु महाप्रभुनके पास आय्ये सो बहुत दिन रहे सो श्री आचार्यजु महाप्रभु कथा कहते सो डेसवभट्ट सुनते सो माधोभट्ट श्री आचार्यजु महाप्रभुनके सेवकने जय वैडिते तब भगवद वार्ता कहते सो प्रथम प्रसंग अले तब माधोभट्टसों डेसवभट्टने कखो जे तु मेरो संग छेडि के उहांके सेवकने क्यो जतहै उहां जयके हांसी छोरी करत है तब माधोभट्टने डेसवभट्टसों कखो जे मोको तुम्हारे संग तथा तुम्हारी कथा ते उहांकी हांसी आछी लागत है ताते होजतहों तब डेसवभट्टने जल्पो जे अब यह हमारे कामको नाही अब हमारे काम ते गयो पाछे डेसवभट्टने श्री आचार्यजु महाप्रभुन सों कखो जे मेने श्री

ભાગ

વત તુમ પાસતે સુનૌ પરિ મોકો કછુ બોધ ન ભયો તવ શ્રી  
આચાર્યજી મહાપ્રભુને કહ્યો ને તુમ મેરી વરાવર વૈઠિકૈ સુખો  
ઐર આતકો ભાવ રાખ્યો તાતે બોધ ન ભયો ઐર માધોભટ્ટકી શ્રી  
ભાગવતકી રકુતિ ભઈ યહ દૈવી શૃષ્ટિકો પ્રકાર જનનો તમ શ્રી ભાગ-  
વતકી કયા સંપૂરન ભઈ તમ કેસવભટ્ટને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન  
સોં કહ્યો ને કછુ ગુરુ દક્ષિના લેઉ તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુને  
કહ્યો ને હમ કછુ લેત નાહી તવ કેસવભટ્ટને કહ્યો ને મે તુમકો  
એક સેવક સમર્પત હો સો માધોભટ્ટ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સોંપે  
પાછે કેસવભટ્ટ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ તે વિદા હોયકે  
અપને દેશકો ગયો પાછે માધોભટ્ટને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે  
પાસ નાંમ પાયો પાછે સમર્પણ કરવાયો.

આર્તાપ્રસંગ ૧૧૧૧

ઐર જા ગાંમમે માધોભટ્ટ રહત હુતે તા ગામમે એક વડો  
અહસ્થ રહત હુતો તાકે એક વેટા હુતો સો મરિ ગયો તવ વહ અહસ્થ  
વહુત રોવન લાગ્યો વિલાપ કરન લાગ્યો ઐર કહ્યો ને કોઉ યાકો  
જિવાવેગો તો મેહું જીજગો નાહી તો મેહું મરંગો એસે કહિકે બહુત  
સોક કરે તવ એક વૈભલુવ પેરમે જાત હુતો તવ વા અસ્થકો વિલાપ  
દેખિકે વાને કહ્યો ને યા ગામમે માધોસારિકે ભગવદીય રહત હૈ વે  
વડે ભગવદીય મહાપુરુષ હે તિનકે પાસે તુ જાવે કૃપા કરેગે તવ તેરો  
લરિકા જીવેગો તમ વહ અસ્થ માધોભટ્ટકે પાસે આયો ઐર વહુત  
વિલાપ કરન લાગ્યો ઐર માધોભટ્ટસોં કહ્યો ને યહ લરિકા મેરો  
જીવેગો તો મેહું જીજગો નાતર મેહું મરંગો યા ભાંતિસોં બહુત વિલાપ  
કરે ઐર રોવે તવ વા અસ્થકો દેખિકે માધોભટ્ટકો દયા આઈ તવ  
મનમે વિચારે કરન લાગે ને યાકો બેટા જીવેતો આછો હૈ યહ અસ્થ  
ભલોહૈ યહ વહુત વિલાપ કરતહૈ બહુત દુખ પાવતહૈ યહ વિચારિકે  
માધોભટ્ટકે મનમે બહુત ખેદ ભયો ઐર કહ્યો ને યાકો દુખ દુરિ  
હોયતો ભલો હૈ પાછે માધોભટ્ટ મંદિરમે જાવકે શ્રી ઠાકુરજીસો વીનત  
કીની એક શ્લોક કરિકે શ્રી ઠાકુરજીકે આગે કહ્યો સો

**શ્લોક.॥ દયા સર્વ સમર્થસ્ય દુસ્વારો વદયાલુતા  
વિશ્વોદ્ધારણ દક્ષસ્ય ઉત્તવે કસ્ય સોમને ॥ ૧ ॥**

યહ શ્લોક શ્રી ઠાકુરજીને સુનિકે કહ્યો ને યહ કીતનીક ખા-

તહે જો તુંમકો દયાઆઈ તો વાસોં કહ્યો જો જા તરો બેઠા જીવેગો પાછે માધોભટ્ટ શ્રી ઠાકુરજીકો પોઠાયકે બાહર આએ તમ વા ગ્રસ્થસોં કહ્યો જો જા તરો બેઠા જીવેગો પરિ વા ગ્રસ્થકો વિધાસ નપરે મનમે વિચારે જોહું ધર જાગોંઝોં ઝૈર કદાચિત ન જીયો હોય તો કહાં કંઝે મુખતે તો કધુ કહ્યો ન જાવ પરિ મનમે વિસ્વાસ પરે નાહોં ધતને મે વાકે ધરકે લોગ દોરિકે આય વાસોં કહ્યો જો તરો બેઠા જીવેહોં તાકો વધાઈ દેહ તમ વા ગ્રસ્થ માધોભટ્ટકો દંડોત કરિકે અપને ધર આપો પાછે વધૈયાકો વધાઇદીની ઝૈરે બહુત હરખીત બયો પાછે માધોભટ્ટને અપને મનમે વિચાર કિયો જો બહુત અનુચિત કિયે અવએ લોગ યાહો ભાંતિસોં નિચ દુખ દેયગે યાતે અખ યા ગામમે રહિવૈ કો કામ નાહો એસો વિચાર કે રાત જામ આધીગઢ તમ શ્રી ઠાકુરજીકો જગાય સંપુટમે પધરાય કે તુરતહો ગામ છોડિકે ચલે સો અડેનમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ આય રહે દયા આએતે અસ્થન છુટો શ્રી ઠાકુરજીકો આધીગઢકે સમે ભાજનો પરચો તાને ભગવતીયકો જો કામ કરનો સો વિચારકે કરનો વિના વિચારે સર્વથા નહોં કરનો.

### ॥ આર્તા પ્રસંગ ॥ ૨૧ ॥

ઝૈર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ શ્રી ભગવતકી સુખોધની કહતે સો માધોભટ્ટ વેગિં વેગિં જિખીત જાતે ઝૈર જાઠોર ન સમઝ પરે તાઠોર લેખની છોડીકે બૈઠિ રહતે તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ માધોભટ્ટકો સમજાય કે અર્થ કહતે તમ માધોભટ્ટ સમઝાંકે આગે જિખિતે ઝૈર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે આગે માધોભટ્ટ યાભાંતિ સો બૈઠીતે જો પાવન દીસે એસે સાવધાની સો રહતે.

### ॥ આર્તા પ્રસંગ ॥ ૩૧ ॥

ઝૈર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પ્રદેશ કો પધારે તવ માં ઘોભટ્ટ સાથહે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પેડેમે એક ગામમે ઉતરે તવ રાત્રિ પહરડે ગઢ હુતી તવ માધોભટ્ટ ઉડીકે લધુતા ધાકો ગામમે આએ તહાં ઝોરનને તારે ચલાયો સો માધોભટ્ટકે લાખો તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો નામલેત માધોભટ્ટને દેહ છોડી તવ ધતનેમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સાથકે વૈજનવ આઘ ગએ તવ દેખેતો માધોભટ્ટ કી દેહ છુટીહૈ તવ વૈજનવનકે મનમે સંદેહ બયો જો માધોભટ્ટ સારીકે વૈજનવકી એસી ગતી કયો બુઝીયે તવ સાથકે વૈજનવનને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો પૂજ્યો જો મહારાજ પહવાત કેસે હોય જો માધો સારી



के वैष्णवकी ऐसी गती को धुर्धुरि तव श्री आचार्यछ महाप्रभुनने  
 उन वैष्णवनसो कह्यो ने माघोभटने तो श्री हाकुरेछके अर्धारविंद  
 बांघे सो धनको कछु करतव्यता रही नाही अहवजो भगवदी यहो परी  
 धनसो अेक भगवद अपराध पर्योहो तव वैष्णवनने पूछी ने महा-  
 राज्ज ऐसो कहा अपराध पर्योहो तव श्री आचार्यछ महाप्रभुनने  
 कह्यो ने यहपहले अपने सेअ श्री हाकुरेछकी सेवा उपर फुल गी-  
 छावतहो सो अेकदीन बीना नने पुजनमे सुध रही गधसो माघो-  
 भटने नाही ननी सेवा सुधको श्री हाकुरेछके श्री अंगमे रपर्स  
 भयो सो ता अपराध ते ऐसे भयो पोरियाकी देह सावधान तासो  
 छुटी है भगवद नाम ही सेत छुटी ताते यह श्री नाथछके पासहै  
 जरी कान ते श्री नाथछ वुरी गत कवहुं न करेगे अपने पास ही  
 राखेगे यह श्री आचार्यछ महा प्रभुनने अपने श्री मुणिसो कह्यो  
 ताते वैष्णवनको श्री हाकुरेछकी सेवा नीकी बातिसो करनी बहुत साव-  
 धानी सोये माघोभट श्री आचार्यछ महाप्रभुनके ऐसे कृपा पात्र  
 भगवदीय हे ता ते धनकी वार्ता अय कहां ताछ लिखिये ॥

वार्ता प्रसंग ॥३॥ वैष्णव ॥ २७ ॥

अवधूरी आचार्यजी मह प्रभुन

के सेवक गोपालदास तिन-

की वार्ता

सो गोपालदासने मार्ग अजन वारेन को अपने धरेके पास वि-  
 आम के लीये अस्थल करि राख्यो हुतो ने मार्गमे विआम करे  
 ताको हेत यह ने कोछ भगवद भक्त आयरहै तासो भगवद वार्ता  
 करे ता कारन अस्थल करि राख्यो हुतो सो उहां अेक सभे पद्मरावल  
 उज्जैनके वासी सो द्वारिका आवते हे सो रात्रिके वागाममे आय  
 वसे सो गोपालदास से वासो पहुंचिके पद्मरावल के पास आअे  
 और पद्मरावलसो पूछी ने तुम कहांते आंयेहो तव पद्मरावलने  
 कह्यो ने हम श्री द्वारिकाछते आंयेहो तव गोपालदासने श्री रणु  
 छोडछके कृसल समायार पूछे तव उहांके समायार पद्मरावलने गो-  
 पालदाससो कहे पाछे पद्मरावलकी ने बाल पनेते अवस्था हुती  
 सो वात आली ने पद्मरावल द्वारिकामे बहुत रहते श्री रणुछोडछके

દર્શન કરતે સો જય ખરચી નિવડતી તવ અપને ઘર આવતે સો  
 પદમરાવલ કે જીજમાંન માવજી પટેલ આજન કુનખી ગાંમકે દેસાં-  
 ઈ હુતે સો પદમરાવલ દ્વારિકાજીતે આવતે તવ માવજી પટેલ ખરચી  
 દેતે સો લેકે જય પદમરાવલ દ્વારિકાજીકો જોતે એસે વરસદિન મે  
 તીનવારે જાતે પદમરાવલકો શ્રી રણછોડજીકે વિષે વહુત આશક્તિ  
 હુર્તાસો શ્રી રણછોડજીકી વાર્તા પદમરાવલને ગોપાલદાસકે આગે કહી  
 તવ ગોપાલદાસને અપને મનમે કહી જો જૈસી ધનકો શ્રી રણછોડ  
 જીકે દર્શનમે આસક્તિ હૈ તૈસી ધનકો શ્રી મહાપ્રભુન કે વિષે આસ-  
 ક્તિ હોય તો ધનકો કાર્ય હોય તાતે ધનસો કધુ કહિયે તવ ગોપાલદાસને  
 પદમરાવલસોં પૂછો જો તુમસો કબહું શ્રી રણછોડજી જોલતહે કધુ  
 કહતહે કધુ માગત હૈ તવ પદમરાવલને કહ્યો જો મોસોં તો કબહું કધુ  
 કહત નાહી તવ પદમ રાવલને ગોપાલદાસસોં પૂછો જો કહા શ્રી રણ-  
 છોડજી કાહુ સો જોલતહે તવ ગોપાલદાસને કહ્યો જો હાંહાં જોલતહે  
 તા શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી વાર્તા કહી જો તુમને એતે દિન  
 શ્રી રણછોડજીસે એહેસો શ્રી રણછોડજી પ્રગટ ભએહૈ તવ પદમરા-  
 વલને પૂછો જોવે કહાં હૈ તવ ગોપાલદાસને કહી જોવે અડેલમે હૈ  
 તવ પદમરાવલને કહી જો જૈસોં દર્શન શ્રી રણછોડજી દેતહે તૈસો  
 દર્શન શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ દેહિગે તવ ગોપાલદાસને કહી જો  
 હાંહાં દેહિગે તવ પદમરાવલકે મનમે વિધાસ આપો જો યહ વાત  
 સત્યહૈ તાહી દિનતે પદમરાવલકો આતુરતા ભઈ જો કવમે જાગે  
 ઐર કવ શ્રી મહાપ્રભુનકો દર્શન પાઝે સો રાત્રિકો ઉહાં ગહે તા પાછે  
 સવારે ગોપાલદાસ સો વિદા હોયકે તહાંતે ચલો સો માર્ગમે વિચાર  
 કરત જાય જો મે કવ જાગે ઐર કવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો  
 દર્શન પાઝે એસે વિચાર કરત અપને ઘર ઉજ્જનનેમે આએ પરિ-  
 ચિત ઉદાસમે રહો પાછે માવજી પટેલ સે મિલે તવ માવજી પટેલ-  
 ને પૂછો જો ગુરૂજી અવકે તુમહારો મન પ્રસન્ન દેખિયત નાહી સો  
 કહિતે તવ પદમરાવલને ગોપાલદાસસો સુની હુતી સો વાત કહી જો  
 શ્રી રણછોડજી અડેલમે પ્રગટ ભએ સો મેરો મનોરથ દર્શન કરિયે  
 કંહૈ સો જાનોહો કવ જાગેગો તવ માવજી પટેલને કહ્યો જો તુમ શ્રી  
 રણછોડજીકે દર્શનકો જાત હો સો મોહુકો અપને સાથ લે ચલો તવ  
 પદમરાવલને કહ્યો જો તુમ રાજસી ભાગ હો તુમહારો સાથ વહુત  
 મનુષ્ય હોયગે ઐર યહ દર્શનતો એકાંત રથલ કંહૈ તાતે યહ વાતલો  
 મોકો ભાવત નાહી તવ માવજી પટેલને કહ્યો જો હુંગે સર્વથા તુમહારે

સંગ અકલોહી ચલુંગી તવ પદમરાવલને કહ્યો ને ભલો તવ યે  
 સમાચાર અપની સ્ત્રી સો કહે ઐર કહ્યો ને મેતો પદમરાવલ કે  
 સંગ અડેલ દર્શનકો જાતહો તવ સ્ત્રીને કહ્યો ને ઉહાં કહા હૈ તવ  
 માવજી પટેલને કહ્યો ને ઉહાં શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પ્રગટ ભગ્યેહૈ સો  
 સાક્ષાત શ્રી રણછોડજી પ્રગટે હૈ ઐર જૈસો દર્શન શ્રી રણછોડજી  
 દેત હૈ તેસો દર્શન શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ દેતહે સો યહ વાત સુ-  
 નિ કે માવજી પટેલકી સ્ત્રીકે મનમે વહુત ઉત્સાહ ભગ્યો ઐર કહ્યો  
 ને આપકે સંગમે હું ચલુંગી તવ માવજી પટેલને કહ્યો ને મેતો  
 પાવનસો ચલુંગી તુ કેસે ચલેગી તવ સ્ત્રીને કહી ને મેહું પાવન ચ-  
 લુંગી મેરે કછુ લરિકાતો હૈ નાહી તવ ફેરિ માવજી પટેલને કહ્યો ને  
 હમ તુમ દોઉ જને ચલેતો ધર કોનકે ભરોસે છોડે તવ સ્ત્રીને કહ્યો ને  
 મેરો ધરતે કછુ પ્રયોજન નાહી હો સર્વથા તુમહારે સાચ ચલુંગી તવ  
 માવજી પટેલને અપને મનસે વિચાર્યો ને યાકો વહુત આતુરતા  
 ભઈ દરશનકો વહુત મનોરથ હૈ તવ કહ્યો ને ભલો તુહુ ચલ તવ  
 માવજી પટેલને અપનો ધર કાહુ ભલે મનુષ્યકે હવાલે કરિ દીનો તવ  
 પદમરાવલ માવજી પટેલ તથા ઉનકી સ્ત્રી વિરે જોયે તીનો ચલેસો  
 જવ પ્રાગ પહુંચે તવ અડેલકો દર્શન ભયો તવ વહુત આતુરતા ભઈ  
 ને શ્રી યમુનાજી હોયકે ચલ્યો જૈયે તા સમે શ્રી આચાર્યજી મહા-  
 પ્રભુ શ્રી યમુનાજી ઉપર પધારે હુતે સો સંધ્યા વંદન કરત હુતે તહાં  
 સેવક દોષચારિ સાચ હુતે તવ ધનિ તીન્યોનકો શ્રી આચાર્યજી મહા-  
 પ્રભુનકો દર્શન ભયો તવલો વહુત હી આતુરતા ભઈ તા સમે શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનને ધનકો દેખ્યો તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને  
 સેવકનસો કહ્યો ને યહ નાવ પાર લે જાઉ પદમરાવલ શ્રી રણછોડ-  
 જીકે સેવક આગ્યે હૈ સો ધનિ તીન્યોનકુ નાવમે જૈઠારકે વેગલે આઉ  
 સો નાવ લેવે વૈજનવ પાર આગ્યે તવ ઉન વૈજનવનને કહ્યો ને પદમ  
 રાવલ તીન્યોનને હોય સો આયો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને નાવ  
 પડાઈ હૈ તવ પદમ રાવલ ઐર માવજી પટેલ તથા ઉનકી સ્ત્રી વિર  
 ને ધનિતીન્યો જનનકો નાવમે જૈઠાય કે લે આગ્યે તવ શ્રી આચાર્ય-  
 ર્યજી મહાપ્રભુનકો દર્શન ભયો સો જૈસો ગોપાલદાસને કહો હુતો  
 તૈસોઈ દર્શન ભયો સો દર્શન કરિકે મનમે વહુત પ્રસન્ન ભગ્યે પાછે  
 પદમરાવલને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન પાસ નામ પાયો સો નામ  
 પાય કે ઉઠે તવ પદમરાવલને વીનતી કરિકે કહ્યો ને મહારાજ અંમી  
 કાર કરિએ તવ શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનને પ્રસન્ન હોયકે કહ્યો

જે તુ કહા કહત હૈ તવ પદમરાવલને કહ્યો જે મેકો ગોપાલદાસને  
 કહ્યો હૈ તાસો નિવેદન કરવાહયે ઐર પદમરાવલને વીનતી કરેકે કહ્યો  
 જે મહારાજ માવજી પટેલ ઐર માવજી પટેલકી સ્ત્રી વિરજીયે દોઢ  
 આપકી સરણુ આગેહૈ સો ઈતકો નામ નિવેદન કૃપા કરિ કે કરિવાહ  
 યે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કૃપા કરેકે ઉતકો નામ સમર્પણ  
 કરવાયો પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભીતરે પધારેતવ શ્રી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુનને પદમરાવલસોં કહ્યો જે તુમ મહાપ્રસાદ  
 ઈલાંઈ લિજીયે તવ પદમરાવલને વીનતી કરેકે કહ્યો જે મહારાજ  
 મોકો તુમને શ્રી રણછોડજીકો દરશન દીનો હૈ સો સ્વરૂપ આપ કૃપા  
 કરિકે આરોગોગે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો દર્શન ભોજન ક-  
 રનમે પદમરાવલકો શ્રી રણછોડજીકો દર્શન ભયો જે સાક્ષાત શ્રી રણ-  
 છોડજી ભોજન કરત હૈ તવ પદમરાવલયો દ્રઢ વીસ્વાસ ભયો તવ શ્રી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ભોજન કરીકે બિરાજે તવ મહાપ્રસાદકી  
 પાતરી પદમરાવલકો કૃપા કરીકે દીની પાછે પદમરાવલને વીનતીકીની  
 જે મહારાજ મોકો કહા આગ્યાહૈ તવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને આ-  
 ગ્યા દીની જે તુમ શ્રી ઠાકુરજીકો સેવા કરો તવ પદમરાવલને કહ્યોજે  
 જૈસો મઝે મન મહારાજ કે સ્વરૂપ મે લાગ્યો હૈતૈ સો મન સેવામે  
 લગે તો સેવા કહું તવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જે તુમ શ્રી  
 ઠાકુરજીકો સેવા તો કરો જે તુમારો મનોરથ શ્રીઠાકુરજી સવપુરન કરેગે  
 તવ પદમરાવલ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન સોં વિદહિાયકે અપને દે-  
 સકો ગએ તવ પદમરાવલ અપને દેસમે જાય કે શ્રીઠાકુરજીકો સેવા  
 કરન લાગે તવ અપને સેવ્ય શ્રીઠાકુરજીકો સૈયા વનવાઈ સો સૈયા  
 છોટીભઈતવ શ્રીઠાકુરજીને કહ્યો જોયા સૈયાપૈ મે પૈ સોયો જાય નાહી  
 પાછે પદમરાવલને દુસરી સૈયા વડી કરવાઈ તાકે ઉપર શ્રી ઠાકુરજી  
 પોઢન લાગે ઐર શ્રી ઠાકુરજી સાનુભાવ જનાવન લાગે ઐર એક  
 સમે પદમરાવલકો સ્ત્રીને શ્રીઠાકુરજીકો ભોગ સમર્પ્યો તામે ખીર તાતી  
 સમર્પિ તવશ્રી ઠાકુરજીને ખીરીમે શ્રી હસ્ત મેલ્યો તવખીરી વહુત  
 તાતી લાગી સો શ્રીઠાકુરજીને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન સોં કહ્યો  
 ઐર શ્રીહસ્ત કમલ દિખાયો સો લાલ પરીગયો તવ પદમરાવલ શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસ વૈઠે હુતે તવ પદમરાવલ સોં શ્રી આચાર્ય-  
 રજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જે તેરી સ્ત્રીને શ્રી ઠાકુરજીકો તાતી ખીર  
 સમર્પિ સો શ્રી ઠાકુરજીકો તાતી ખીર ન સમરપાયે તવ પદમરાવલ  
 ને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો કહ્યો જે શ્રી ઠાકુરજીને એક મહુ-

त वो सारी ज्यो न होने दीनी सबभी आचार्यछ महाप्रभुनने कह्यो  
 ने श्री हाकुरछतो आलक है श्री हाकुरछको भाग धरे पाछे विलंबन  
 सहसके याते ने भाग धरिये सो बहुत तातो न धरिये सो पदभरा-  
 वलको श्री आचार्यछ महाप्रभुनने ऐसी आग्या दीनी आग्या देके  
 श्री आचार्यछ महाप्रभुनने श्री हाकुरछको ऐसी अनुभव जतायो  
 पाछे पदभरावल अपने धरके आये तव यह बात अपनी स्त्रीसो  
 कही पाछे पदभरावल बहुत सावधानी सों सेवा करन लागे श्री आ-  
 चार्यछ महाप्रभुनकी कृपा ते श्री हाकुरछ सानुभावता जनावन ला-  
 गे ने सहिये सो भाग लेने अपनी सब बात कहते सोवे पदभराव-  
 ल गोपालदास के संग ते ऐसे भगवदीय हे ताते छनकी वार्ता कहां  
 ताई निजिये

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ० २८

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक पद्मरावळ साचोरा ब्राह्मण उज्जेन के वासी तिनकी वार्ता

सो पद्मरावण उज्जेन आछके श्री आचार्यछ महाप्रभुनके  
 सेवक भये सो गोपालदास वासनाउ के तीनकी वार्तामे लिखोहै नि-  
 स्तार करिके पाछे अपने देशको यजन लागे तव श्री आचार्यछ  
 महाप्रभुनसो वीनती कीनी ने महाराज होतो अति भूर्जडे जडहे।  
 कछु जनत नाही और भरी जनके आत्मज्ञ महा कर्मी जडहे स्मा-  
 नहे सो मोको दुःख देतहे तव श्री आचार्यछ महाप्रभुनने अपने  
 यरलारविंदको रंजन और यरलामृत दीना और कहयो ने तोको  
 सयसिधांत गुरेगो सो यरलामृत लानो सो छतनेहीमे सय सिधांत  
 स्फुट भयो पाछे अपने देश उज्जेनको आये पाछे 'मउमउ' आत्मज्ञ  
 प्रतिवृति पूछन लागे तव छतनेनने पूछो तिनको प्रति उत्तर देके सय  
 बीदा कीये सो पद्मरावणको श्री आचार्यछ महाप्रभुनकी कृपाने असे  
 विद्या स्फुट भई ने 'मउ' 'मउ' पंडित छतके विदा कीये वे पंडित प्र-  
 तिउत्तर दे नसके,

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥

और पद्मरावण द्वारीका श्री रणछोडछके दर्शनकी यजे तव  
 श्री रणछोडछने स्वप्नमे कह्यो ने राजनगरमे एक सेवक हमारोहै

તાકે ધર તુ જ્યો ઝૈર પાક ઉહાંઈ કરિયો તવ પદમરાવળને કહ્યો જો મહારાજ મેતો જનત નાહી ઝૈર વિના બુલાએ મે કોનકે ધર જજો તવ મી રણછોડજીને કહ્યો જો વહતોકો આપુહી બુલાવનકો આવેગો પાછે મી રણછોડજીને અપને સેવકસો કહ્યો જો પદમરાવળ ઈહાં આવેગે સો ઉનકી સેવા તુ નીકીભાતીસો કરિયો ઝૈર અપને ધર પધરાય પદમરાવળકો રસોઈ ભજી ભાતી સો કરીયો તમ વા સેવકને મી રણછોડજી સો કહ્યો જો મહારાજ મે ઉનકો કેસે જનુગ્રે તવ મી રણછોડજીને કહ્યો જોવેતો પ્રસિધહે તુ આપહીતે જનનેગો તવ કીતનેક દીનમે પદમરાવળ ઉહાં આએ સો વા ગામકે બાહીર ઉતરે સો પદમરાવળકે સાથ એક વિદ્યારથી હુતો તાસો પદમરાવળને કહ્યો. જોતુ ગામમે જનયકે કોરી બિક્ષા માંગી લાઉ તમ યહ વિદ્યારથી ગામમે ગયો સો ચારિ પાંચ ઠોર તે ક્રમી બિક્ષા માંગ લાયો તવ પદમરાવળને વા વિદ્યારથી સો કહ્યો જોતુ અન્ય જનજ કેસો લાયો હૈ તા તાકો ઉલટો ફેરી આઉ તમ યહ વિદ્યારથી જનજકે અન્ય લા-યોહો જો તાકો ફેર ન લાયો તમ એકને કહ્યો જો તુમ લે ગએહે અમ ફેરન કયોં આએહો તમ વા વિદ્યારથીને કહ્યો જો મે કહા કરું હમારે બડે ગુરૂહૈ તીનકી આગ્યા માંની અહિયે તમ વા વિદ્યારથીસો કહ્યો જો તુમહારે ગુરૂકો નામ કહાહૈ તમ વા વિદ્યારથીને કહ્યો જો મેરે ગુરૂકો નામ પદમરાવળહે તમ યહ મી રણછોડજીકો સેવક વિદ્યારથીકે સાથ ચલો આયો સો આયકે પદમરાવળસો કહ્યો જો મેરે ધર પધારો તવ પદમરાવળને કહ્યો જો હુંતો કાહુકે ધર જત નાહી તમ વાને કહ્યો જો મોકો મી રણછોડજીને આગ્યા દીનીહે જો તુ પદમરાવળકો અપને ધર પધરાઈયો રસોઈ ભજી ભાતીસો કરવાઈયો તમ પદમરાવળકો અપને ધર પધરાએ રસોઈ ભજી ભાતીસો કરવાઈ સો પદમરાવળને રસોઈ કરી મી ઠાકોરજીકો ભોગ સમર્પ્યો પાછે પ્રસાદ લાયો ઝૈર રાત્રીકો ઉહાંઈ સોય રહે તમ સવારે પદમરાવળ ચલન લાગે તમ મી રણછોડજી કો સેવક રાખન લાગ્યો તમ પદમરાવળ રહે નાહી.

॥ ખાર્તા પ્રસંગ ॥ ૨૧

બહુરી એકદીન આટોબહુત મીલ્યો ઝૈર ધૂત થોરો મિલ્યો તમ જીતની રોટી વા ધૂતમે ચુપરી ગઈ સોનો ઉપર ધરી ઝૈર કોરીહુતી સો નાચે રાખી તવ મી ઠાકુરજીકો ભોગ સમરપો ઝૈર કહ્યો જો મહારાજ વિનુ ચુપરી રોટી તો રહનદીજીયો ઝૈર ચુપરી રોટી આરો

गीयो तव श्रीठाकुरजीने तो सज्जही रोटी आरोगी पाछे पदमरावणसो  
 कह्यो जे तेने मेरे आगे कहिको धरी मेरे आगे तु धरेगो जे मे  
 आइ गुंगो पाछे महाप्रसाद लेनको जैठे तज्जरोटी बहुत अद्भुतश्वाद  
 भर्ष तज्ज पदमरावणने कितनिक रोटी ज्यो सो साथ बाधिलीनी सो  
 नित्य ज्यो पाक करी भाग समर्थो पाछे प्रसाद लेन जैठो ते तज्जरोटी  
 मे ते अेक टुक मेलिलेते तज्ज महाप्रसाद लेने पाछे कितनेक दीनमे  
 द्वारिकां जय पहुये तज्ज श्री रणछोडजीके दर्शन कीयो दिन पाय  
 सात रही के ओ रणछोडजीसो विदहियेके यले तज्ज मार्गमे गोपाल  
 दास वास वाडके धरे आये तज्ज रात्रिको उहां रहै तज्ज पदमरावणने  
 गोपालदाससो कह्यो जे तुमहारी कृपाते मोको श्री आचार्यजी महा  
 प्रभुनको दर्शन भयो और तुमहारी कृपाते मोपे श्री आचार्यजी महा  
 प्रभुनने कृपा करी सो पदमरावण श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे  
 कृपा पाव भगदीयहे ताते धनकी वार्ता कहां तांछ लिजिये.

॥ आर्ता प्रसंग ॥ ३॥ वैश्रव ॥ २॥

श्रवश्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक

पुरुषोत्तम जोसी सांच्योरा ब्राह्मण

तिनकी वार्ता.

सो अेक सभे पुरुषोत्तम जोसी बनारसको यले सो मार्गमे उ-  
 ननेन आयो सो धननेन आयके पुछो जे पदमरावण के भेटा कहां  
 रहत हैं सो पदमरावणके भेटा बारिहुते सोतीन भेटा तो धकठारे हुते  
 और जडे भेटा कृष्णभट्ट सो न्यारे हुते सो पुरुषोत्तम जोसी जहां  
 पदमरावणकेती न्यो भेटा धकठारे हुतेतिनके धरे गये तिनने पुरुषो-  
 त्तम जोसीको थोरो सो अन्य दीयोसो कछुबुजे रहे तज्ज मनमे कह्यो  
 जे पदमरावणके भेटा ऐसे को पुत्रिये बेनो सुधि आसल्य हे पाछे  
 कृष्णभट्टने सुनी जे पुरुषोत्तम जोसी आयेहे तज्ज कृष्णभट्टने पुरुषो-  
 त्तम जोसीको अपने धरे पधराय तज्जबली भांति सो प्रसाद बिवायो  
 तज्ज पुरुषोत्तम जोसी बहुत प्रसन्न भये दीन मारी राये तज्ज पुरु-  
 षोत्तम जोसी यजन लागे तज्ज कृष्णभट्ट हु साथ यले सोमजल जय  
 उतरे तज्जरात्रिको जय कृष्णभट्ट सोये तज्ज पुरुषोत्तम जोसीने अपनी  
 श्री सो पुछो जे कृष्णभट्ट साये तज्ज खानि कही जेहां सोये तज्ज  
 पुरुषोत्तम जोसीने श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी वार्ता कही पाछे

कृष्णभट्टने मनमे विचारयो जे पुरषोत्तम जेसीने मेरे आगे श्री  
 आचार्यजी महाप्रभुनकी वार्ता नाली कही परीछीं अथ कछु अर्या  
 वार्ता यलाडि सो जव श्री गोकुल मंजल पांच सात रह्यो तव कृष्ण-  
 भट्टने प्रसंग यलायो सो पुरषोत्तम जेसी घोडापै हुते सोये तो वि-  
 हल भये तव कृष्णभट्टने पुरषोत्तम जेसी सो कह्यो जे अेक और  
 ते तुम यामे रहो और अेक और ते मे याम तहानव कृष्णभट्टने  
 वार्ता यलाडि सो भगवद वार्ता मे पुरषोत्तम जेसी तो विहल भये  
 सो घोडा उपर रह्यो न जय तव दोडि जने आसपास यामे जा।  
 ऐसे करत मजल आय उतरे तव घोडा उपर ते उतारन लागे तव  
 पुरषोत्तम जेसीने कह्यो जे मेको तुम क्यो उतारतहो तव कृष्णभट्ट-  
 ने कह्यो जे मजलको मुकाम आय पहुच्यो है ताते उतारतहैं परी  
 पुरषोत्तम जेसीको मजल आधिवेकी अमर नाली भगवद वार्तामे र-  
 साविष्ट भये संपूरण दिवस भयो परी प्रसाद लेवेकी हु कछु सुधी  
 रही नाली ऐसे करत कीतनेक दिन में अोगोकुल आय पहुच्ये तव पु-  
 रषोत्तम जेसीने श्री गुसांघुको दर्शन कियो और श्री गुसांघु  
 सो पुछो जे महाराज कृष्णभट्ट के उपर ऐसी कृपा कहेते भयहै  
 तव श्री गुसांघुने कहीजो याको आयाहरीयंसजु को संगहै ताते  
 असोभयो तव पुरषोत्तम जेसीको गर्भनिवर्त भयो और अतिप्रसन्न  
 भये और कृष्णभट्ट सो आप वार्ता पूछन लागे पाछे कीतनेक दिन  
 रहीके श्री गुसांघु सो विदा होय के याले सो उज्जैन आये मा-  
 र्ग मे भगवद वार्ता करत अले आये और दोडि जने अतिप्रसन्न  
 भये सोये पुरषोत्तम जेसी श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपा  
 पात्र भगदीय होताते धनकी वार्ता कहांतांछ लिप्पिये।

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥३॥ संबंध ॥५॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुन

के सेवक जगन्नाथ जोसी

तिनकी वार्ता.

सो जगन्नाथ जेसीने श्रीठाकुरजीको वागो पहराय सभ सिंगार  
 करंकि राजभासको थार आगे आनी राख्यो तव जगन्नाथ जेसीके  
 मनमे आर्ष जे श्रीठाकुरजी वागे पहरेही आरोगत हैं ताते थार  
 छुर्छ जयगो तव श्री ठाकुरजीने जगन्नाथ जेसीके मनकी जनी तव



થારમે લાત મારિકે ડારિ દીનો તમ જગનાથ જોસીને ઝૌર પાક વેગી વેગી કરીકે થાર પરોસિ શ્રીહાકુરજીકે આગે આની રાખ્યો તમ શ્રીહાકુરજીકે મનમે આઈ જો જૈસેહી ફેરિ લાત મારિકે ડારિ દીનો તમ ફેરી તીસરીવર પાક કરિકે શ્રીહાકુરજીકે આગે આન રાખ્યો તમહુ શ્રીહાકુરજીને લાત મારિકે ડારી દીનો જમ મોથી વેર પાક કરન લાગે તમ જગનાથ જોસી બહુત અમિત બએ પાછે નીચો માંચો કરિકે વિચાર કરન લાગે જો કોન અપરાધતે શ્રીહાકુરજી આરોગત નાહીં થાર ડારિ દેતહે પાછે બહુત વીનતી કીની તમ શ્રીહાકુરજીને શહ વાત જતાઘ જોતું થાર છુઘવેતે ડરપત હૈ તો તું હમારે આગે કાહેકો આની રાખત હૈ ધતનો વચન શ્રીહાકુરજીકો સુનકિ જગનાથ જોસી ચોકી હેકે તમ નાક બુમીસો ધસિ બહુત મનુહાર કરી કે કહ્યો જો મહારાજ મેં તો કહ્યુ જનત નાહી અમ મેરો અપરાધ ક્ષમા કરિએ પાછે શ્રીહાકુરજી આરોગે પરિ માસ દોષ લો ખાલે નાહીં ફેરી બહુત વીનતી કીની તમ બોલન લાગે જૈસો સરલ બાવ હુતો.

આર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧

ઝૌરજગનાથ જોસી શ્રીહાકુરજીકો બાગ સમર્પિતે તામે તાતી ખીર વહુત સમર્પિતે સો કીતને કદિન પાછે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ગુજરાત પધારે તવ ખીરાલુ મેં જગનાથ જોસી કે ધર ઉતરે તવ શ્રીહાકુરજીકો દર્શન કીયો તવ દેખે તો શ્રીહાકુરજીકે ઝોટ રાતેહૈં તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને શ્રી હાકુરજી સોં પૂછો જો મહારાજ જીવ ઝૌરે ઝોટ રાતે ક્યો હે તવ શ્રીહાકુરજીને કહ્યો જો જગનાથ જોસી મોકો તાતી ખીર વહુત સમર્પતહૈં સો તેસી હીમ આરોગતહેં તવ જગનાથ જોસી સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો તુ તાતી ખીર શ્રીહાકુરજીકો ક્યો સમર્પતહૈં તવ જગનાથ જોસીને કહ્યો જો મહારાજ હમતો કહ્યુ જનત નાહી જો એસી વાતહૈં હમતો જનત જો તાતી ખીર બહી તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યોજો ખીર સુહાતી બહી ખીર વહુત તાતી ન સમર્પિયે ના પાછે જગનાથ જોસી વૈસેહી કરન લામે.

આર્તા પ્રસંગ ૧૧૨૧

ઝૌર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શન કરી વેકો જગનાથ જોશી અડેલકો ચલે તવ માર્ગમે અન્યકુટકો દિન આયો તવ એક સેવક સાથ હુતો તાસો કહ્યો જો આમરદારી ધૂત આંડ ઝૌરે કહ્યુ આછી સામગ્રી મિલે સો સગલે આઉ તવ વહ સેવક ગયો

તવ દેખેતો ગામમે કધુ નાહી તવ વહ સેવક ફિર આવો ઐર કહ્યો  
 જે ઈહાં તો કધુ મિલત નહી એક જ્વારી મોલતહે તવ જગન્નાથ  
 જોશીને કહ્યો જે ભલે જ્વારીહી લે આઉ તવ ગામમે જાપકે જ્વારીલીની  
 તવ આજી ભાંતી કુટ કટક છાની વીન ચુનિકે લે આએ પાછે જગ-  
 ન્નાથ જોશીને વા જ્વારીકો ઠેમર કીયો તવ વા સેવકને કહ્યો જે બુસ્તી  
 ની કસીહૈ સો તાકો ટોકરામે કરી ઉપર રાખ્યો જે તાકી વાફસો જલદી  
 હેાય આવેગો તવ જગન્નાથજોશીને કહ્યો જે ભલે તવ વહ ઠેમર ખ  
 દખ્ખાંત લાગ્યો તવ વહ ટોકરા વામે ગિરપડ્યો સો સખ એકઠોરો મિ-  
 લી ગયો પાછે ભગવદ ઇચ્છા માની કે જૈસો તૈસો શ્રી ઠાકુરજીકો  
 ભાગ સમર્પ્યો પાછે ભાગ સરાય મહાપ્રસાદ લીયો તવ જોશી રાત્રીકો  
 સોયો તવ શ્રી ઠાકુરજીને કહ્યો જે મેરે પેટમે દુખતહે તવ જગન્નાથ  
 જોસીને સુતવા ઐર સોઠી ઐર અજવાયણ સમર્પ્યો પરી મનમે પશ્ચા-  
 તાપ બહુત બયો પાછે શી ઠાકુરજીને કહો જે અખ મેરે પેટમેસખ બયો.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૩૧

વહુરિ એક સમે જગન્નાથ જોસી અપને સેચ શરી ઠાકુરજીકાં  
 કલ્યાપન કરીકે પાસ ઠાડે હુતે શરી ઠાકુરજીકાં મુઠા કરત હુતે ઐર  
 વૈખનવ ઠાડે દર્શન કરત હુતે તાસમે એક રજપુત ગરાસિયા આવ્યો સો  
 અવૈખનવ હુતો સો આયકે વૈરનવ નમે ઠાડો બયો તાસમે એક ડોક-  
 રી પુલકી માલા લેકે આહસો વહમાલા દુરિતે શ્રી ઠાકુરજી કે ઉપર  
 વાને ડારો તવ જગન્નાથ જોશીકો રિસ ચઢોસો માલા વૈખનવનકે ઉપર  
 ડારી સોવહ માલા એક વૈખનવ કે ગરેમે જાવ પરી તવ વા ગરાસિયા  
 રજપુતકો રિસ આઈ તવ ગરાસિયાને અપને મનમે વિચારી જે  
 દેખો વા જોશીને માલા વાકો દીની ઐર મોકો ન દીની પરીમલો જે  
 રજપુતકો જા્યો જોયા જોશીકાં ઠોરે માંડે તવ વહરજપૂત તરવાર હાથ  
 મે લેકે નિત્ય તકત ફિરે દાવ પાવે તો ધાત કરે તવ જગન્નાથ જોશી  
 એક દિન વહીર્ભૂમીતે આવત હુતે તવ વા રજપુતને જગન્નાથ જોશી  
 કે ઉપર પીછે તે તરવાર ચલાઈ તવ શ્રી ઠાકુરજીને વહ તરવાર આ  
 હસ્ત સોં ચાલી ઐર શી મુખસો કહ્યો જે વાકોં મારે મતિ તવ વહ  
 રહિ ગયો તવ જગન્નાથ જોશી ફિરીકે દેખેતો શી ઠાકુરજી અમિત બએ  
 પીછે ઠાડે હે તવ જગન્નાથ જોસીને વા ગરાસિયા સોં કહ્યો જે  
 કિટિરે પાપી તૈને વહ કહા કીયો તવ વહ રજપુત તરવાર ડારિકે જ-  
 ગન્નાથકે પાવન પર્યો ઐર કહ્યો જે મેરે ઉપર કૃપા કરિમે અનુગ્રહ  
 કરિયે ઐર જગન્નાથ જોશીકે પાવ હાથસોં પકરિ રહ્યો તવ જગન્નાથ  
 જોશીકાં દયા આહ તવ વાકો નામ દીયો સો જગન્નાથ જોસી એસે

कृपापात्र भगवदीय है तब वा रेण्णुतकों जगन्नाथ जेशीनि नाम दीयो नीवेदन करवायो तब यह भयो भगवदीय भयो वैष्णवके वीर्यहाउ रस्यो ताको कृत्तसिद्धि भयो जे जगन्नाथ जेशी ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहांतांछ लिजिये.

वार्ता प्रसंग ॥४॥ वैश्रव ॥३१॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

जगन्नाथ जोसीकी माता तिनकी

वार्ता लिख्यते.

ताके द्वैभेदा हुते वडे भेदा तो नरहर जेशी और छोटे भेदा जगन्नाथ जेशी भिराबुके वासीतिन दोइन सां माताने कछोन्ने तुम नम्रके श्री आचार्यज महाप्रभुनके पास नाम पाछ आयो और समर्पन करवाछ आयो और भेदानके हाथमे अेक अेक मोहर दीना सो मोहर अेक दाडीमे मेलि डेवे दोडिभाछ अउल डो अले सो कीतने क दीनमे अउल नय पहुये सो शरी आचार्यज महाप्रभु तो अउलमे हुते नाहीं आपतो पुश्पोत्तम क्षेत्र शरी जगन्नाथ रायज के दर्शनको पधारे हुते पाछ जगन्नाथ जेशी नरहर जेशीनि विचार कीयो जे हम किरि अलेगे तो हमारी माता जीन्गी जे नाम समर्पण कीअे वीनु तुम की आअे ताते आपन पुश्पोत्तम क्षेत्र अले यह आपने मनमे विचार करकि जगन्नाथ जेशी और नरहर जेशीये दोडिभाछ पुश्पोत्तम क्षेत्रको अलेसो थोरसे दिनमे पुश्पोत्तम क्षेत्र नय पहुये शरी पुश्पोत्तम क्षेत्रजके मंदिरमे नयके पूछो जे शरी आचार्यज महाप्रभु आप कहां रहतहे तब अेक वैष्णवने घर वताछ दीनो तहाये दोडिभाछ गअे तब शरी आचार्यज महाप्रभुनको दर्शन करकि वैडे तब श्री आचार्यज महाप्रभुनने पूछो जे तुम्हारी माता नीकीहै तब धनको बहुत आश्चर्य भयो जेये तो हमको पहयांन तहे और हमतो कवहुं दजे नाहीं और शरी आचार्यज महाप्रभुनने कुरी पूछो जे शरी ठाकुरजके दर्शन करि आअे तब धन दोइनने कछो जे महाराज नाही कीअे तब शरी आचार्यज महाप्रभुनने आआ दीना जे नयके दर्शन करी आयो तबये दोडिभाछ दर्शनको गअे तहां दजे तो शरी आचार्यज महाप्रभु शरी जगन्नाथ रायजके पास हाउ है तब धनको आश्चर्य भयो जे यह कहा हमतो धनको अवही घरदजी

आये हुते तब मनमे क्षिर जलनी जे दुसरी वाटहोछगी तहां होयके  
 आये होछगे परी मनमे संदेह ज्यो पाछे दर्शन करिके आये तब  
 देखे तो शरी आचार्यज महाप्रभु वैठे हे तब आयके दंडोत करीके  
 वैठे तब होठिबाध पिरमय जये आपुसमे मोहोडो देखन लागे यकत  
 होय रहे तब शरी आचार्यज महाप्रभुनने पुछो जे दर्शन करी आये  
 और जे तुम्हारे मनमे संदेह आयो हुतो सो निवर्त ज्यो तब छिन  
 होठिबाधनने कह्यो जे महाराज संदेह हुतो निवर्त ज्यो तब शरी  
 आचार्यज महाप्रभुनने कह्यो जे तुम्हारी माताने भेट मोहर पठाछहे  
 सो लायो तब लाईमे ते मोहर काढिके आगे राखी पाछे नाम निवे-  
 दन करवायो अपनो महात्म छिन होठिबाधनको आपनने ऐसे दिप्पा-  
 यो सो स्वर्पुपा शक्ति बध ता पाछे उहां कीतनेक दीन रहिके आग्या  
 मागिके यले सो मार्गमे शरी आचार्यज महाप्रभुनके स्वर्पुको विचार  
 करत जय ऐसे करत अपने घर आय पहुंचे तबमाता सों सवसमा  
 यार कहे तबमाता बहुत प्रसन्न भई पाछे शरी आचार्यज महाप्रभु  
 कीकृपाते जले जगवदीयजये ताते छनकीवार्ता अव कहांताछ लीजिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्रव ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक नरहर

जोसी जगन्नाथ जोशीके वडेभाई

तिनकी वार्ता लिख्यते.

सो अक सभे नरहर जेशी पुत्रोत्तमक्षेत्र श्री जगन्नाथरायज  
 के दर्शनको यले रो तहां मज्जल जय उतरे तब स्नान करिके रसोई  
 करि श्री हाकुरजको भोग समरप्यो तब देखे तो अक बालक वरस दसको  
 अक ३५ उपर ते उतरिके आय हाडो ज्यो तब वा बालकको देखिके  
 नरहर जेशीको आश्चर्य ज्यो जे यहां यह लरिका कहाते आयो तब  
 लरिका नरहर जेशी के आगे हाथ पसारके मांगन लाग्यो तब नरहर  
 जेशीने अपने मनमे विचारयो जे हय सुन्दर लरिका मेरे आगे  
 कहिके हाथ पसारयो तब नरहर जेशीने दू रोटी बीसों सुपरिके तिनके  
 उपर दार धरिके वा बालकके हाथमे दीनी तब यह बालक छमिबीके ३५  
 उपर आठ गयो पाछे इरि नरहर जेशी देखे तो यह बालक नाही  
 तब दुसरे दीन मज्जल जय उतरे स्नान करि शरी हाकुरजको भोग  
 समरप्ये तब तैसेही यह बालक छमिबीके ३५ उपरते उतरिके आयो तैसेही

હાથ પસાર્યો તવ નરહર જોશીકો ઐર સંદેહ બપો જો કોઈ છલિયે  
 કો આપો હોય તો કૈસે દેઉ ઐર જો બગવદ સ્વરૂપ હોય તો પ્રસાદી  
 મહાપ્રસાદ કૈસે દેઉ તવ યહ સંદેહ કરિ કે વા વાલકકો કધુ ન દીનો  
 તવ વહ વાલક રૂપ ઉપર ચઢિ ગયો પાછે નરહર જોશીને મહાપ્રસાદ  
 લીનો સો યહ વાત ખિરાલુમે જગનાથ જોશીસોં શરી ઠાકુરજીને કહી  
 જો આજમે નરહર જોશીકે પાસ ગયો હો તહાં મે હાથ પસાર કે  
 માંગ્યો પરિ મોકો કધુ ન દીયો તવ જગનાથ જોશીને વહ દિન વહ  
 મહીના વહ સંવત્ વહવાર લિખિ રાખ્યો જો નરહર જોશી આવેગે  
 તવ પૂછેગે તવ કિતનેકદિનપાછે નરહર જોશી અપને ધર આપ્યે તવ  
 માતાસો ભાઈસોં મિલે પાછે ફુસરે દિન દોઉ ભાઈ સેવામે ત્યારા તવ  
 જગનાથ જોશીને શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે કુશળ સમાચાર પૂછે  
 જો નીકે હે પાછે જગનાથ જોશીને નરહર જોશીસોં કહ્યો જો અમુ  
 કે સંવત્મે અમુક મહીનામે અમુકી તિથિ અમુકે વાર પટ નાતે આગે  
 મેરમે મજલ ઊતરે તવ રસોઈ કરિ કે શરી ઠાકુરજીકો ભોગ સમર્પ્યા  
 તહાં કોઈ વાલક હાથ પસારન દેખ્યો તવ નરહર જોશીને કહ્યો. જો  
 એક દિન તો મે સુન્દર વાલક દેખિકે દ્વે રોટી ધીસોં ચુપરિ તા ઉપર  
 દાર ધરિ કે દીની ઐર ફુસરે દિન તો મોકો સંદેહ બપો જો કોઈ છલિ-  
 વેકો આપો હોય તો કૈસે દેઉ તાતે ન દીની તવ જગનાથ જોશીને કહ્યો  
 જો તુમને વુરી કીની જો ન દીની વેતો શરી ઠાકુરજી આપ હુતે ઐર  
 જવ આપન દોઉભાઈ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શનકો ગએ  
 હુતે તવ હમારી માતાને મોહર ભેટ પઠાઈ હુતી સો આપન સંદેહ  
 કરી રાખ્યો હુતી તવ આપ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને માંગિ લીની  
 તાતે અપને માર્ગમે શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુન વિના શરી ઠાકુરજી  
 વિના ઐર સંદેહન કરનો અપને માર્ગમે શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે  
 વલપ્રતાપ તે ઉનવિના કધુ ન સંભવે તવ દોઉભાઈન કે મનમે યહ  
 નિશ્ચય બપો.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧

ઐર એક સમે નરહર જોશીકો જીજમાન અલિયાન ગામમે  
 રહતો તાકો નામ મહીધરજી હુતો તથા વાકી વહનિકો નામ ફુલવાઈ  
 હુતો તિનસોં નરહર જોશીને કહ્યો જો તુમ શરી ગુસાંઈજી કે પાસ  
 નામ પાવો વૈખનવ હોઉ તવ ઉન કહ્યો જો બલે અવરય તુમ શરી  
 ગુસાંઈજીકો પધરાવો તવ નરહર જોશી આગે આઈકે શરી ગુસાંઈજીકો  
 પધરાય કે અલિયાનમે ગએ તવ મહીધરજી તથા ફુલવાઈસોં કહ્યો  
 જો શરી ગુસાંઈજી પધારેઈ તવ દોઉભાઈ વહનિ અત્યંત પ્રસન્ન બએ

તવ મહીધરજીને નરહર જોશીસો કહ્યો જો મે શરી ગુસાંધજીકો  
 ખાત્રો હાથન કેસે પધરાઉ તવ મહીધરજીને નરહર જોશીસો રૂપીયા  
 મોહરનકી ખીચરી કરવાય કે ન્યોઢાવર કરિકે શરી ગુસાંધજીકો અ-  
 પને ઘરમે પધરાયતા પાછે મહીધરજી કુતવાઈ તથા સવવાલ ગોપાલ  
 સવ કુટુંબકો શરી ગુસાંધજીકે પાસ નામ દિવાયો નિવેદન કરવાયો ઝૈર  
 ભલી ભાંતિસો શરી ગુસાંધજીકી સેવા કરિકે વિદાકીએ પાછે શરી  
 ગુસાંધજી દ્વારકાકો પધારે તવ નરહર જોશી ખિરાલુ અપને ઘર આએ  
 તા પાછે કિતનેક દિનમે વા અલિયાન ગામમે આગિ લગી તા સમે  
 નરહર જોશી ખિરાલુ કે તજાવ કે ઉપર તે નિત્ય કર્મ કરિકે તુલસી  
 કુત્રકી ઝારી તથા મારો હાયમે લેકે ઘર આવત હુતે તા સમે નરહર  
 જોશી કે મનમે આઈ જો અલિયાન ગામમે આગ લગી તવ નરહર  
 જોશી પેડમે ઠાડે હોય કે તુલસી દલ વીચમે ધરોકે ઝારીમેતે જલ લેકે  
 અંગુલીસોં તુલસીદલકે પાસ પાનીકી ધારા કરોકે કુંડલિયાકીની  
 ઇતનેહીમે અલિયાનમે આગ બુત્રી ઝૈર મહીધરજીકી હવેલી ઘર સવ  
 વચ્ચો તા પાછે કિતનેક દીનમે નરહર જોશી અલિયાન ગામમે ગએ  
 તવ કુતવાઇને નરહર જોશી સો કહ્યો જો ઇહાં આગિકો ઉપદ્રવ વહુત  
 ભયોહૈ સો શરી ગુસાંધજીકી કૃપાતે અપને તો કહ્યાણુ ભયો નવ  
 નરહર જોશીને કહ્યો જો પ્રભુનકા કૃપાતે સદા કહ્યાણુહીહોય ઇતનો  
 કહીકે નરહર જોશી ખિરાલુ આએ તવ મહાપ્રસાદ લીયો પાછે દોઢિ-  
 ભાઈ એકાંત વૈકે તવ નરહર જોશીને જગન્નાથ જોશીસો કહ્યોજો મે  
 એક દિન નિત્ય કર્મ કરી કે તજાવ કે ઉપર તે આવત હુતો તુલસી કુ-  
 લકો ઝારો તથા ઝારો મેરે હાયમે હુતી ઝૈર અલિયાન ગામમે  
 આગી લગી સો સવ વાત કહી તવ નરહર જોશી સો જગન્નાથ જો-  
 શીને કહ્યોજો આપનકો ઇતનો હઠ કીયો ન આહિયે જો શરી ઠાકુરજી  
 કો શરમ કરવાયો યહ અપને માર્ગકો રીતિ નાહી તવ નરહર જોશીને  
 કહ્યો જો મે તો હઠ નાહી કીયો પરીમેરે મનમે એસી આઈ જોયે  
 અવહી વૈખવ ભયે હે ઝૈર આગિ લગી તાતે મને એસો કિમો તપ  
 દોઢિભાઈ હંસી મુસિકાયા ચુપ કરી રહે પાછે કહ્યો જો પ્રભુવડેકૌતિ  
 કોહૈ ઇતની કૃપાતે સવભલો હોય આપન હઠનકીન્તે યહ અપનો ધર્મ  
 નાહી તાતે શરી વલ્લભરાજ કુમારકી અદ્ભુત લીલાહૈ સરણુ આએ  
 તિનકો અતિહી કહ્યાણુ હોય સોયે નરહર જોશી તથા જગન્નાથ જોશી  
 તથા ઇતકી માતા એસે કૃપાપાત્ર ભગવદીયહૈ જો પરમાર્થકે લીએ  
 એસો કીયો તાતે ઇતકી વાર્તાકો પાર નાહી સો અવ કહાંતાંઈ લિખીયે  
 વાર્તા પ્રસંગ ૧૨૧૧ વૈશ્ણવ ૧૨૨૧

## અવ ય્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક રાંણાં વ્યાસ સંચોરા બ્રાહ્મણ ગોધરાકે વાસી તિનકી વાર્તા લિખ્યતે.

સો જગન્નાથ જોશીને પ્રથમ રાંણાં વ્યાસ પાસ નામ પાપોહુ-  
તો ફિરિ શી આચાર્યજી મહાપ્રભુન પાસ નામ પાપો વરી જગન્નાથ  
જોશી રાંણાં વ્યાસકે પાસ બહુત રહેતે સો એક સંમે રાંણાં વ્યાસ  
ભગવદ ઇચ્છા તે ગોધરાકી વેસ્થાને ધનસો સંગ કીયો સો વાત રાજદ્વારમે  
સુની તવ હાકીમકે પ્યારે રાંણાં વ્યાસકો લેન આએ તવ જગન્નાથ જોશીને  
રાંણાં વ્યાસકો ઐર ગાંભમે કરી દીનો પાછે જગન્નાથ જોશી તહાં અકેલે  
રહે ઐર વે પ્યારે આએ હુતેસો રાંણાં વ્યાસકો હુદન લાગે તવ જગન્નાથ  
જોશીને કહયો જો રાંણાં વ્યાસતો ધહાં નાહી ચતોહો ઉતર દેડોગો તવ જગ-  
ન્નાથ જોશીકો લાઈકે હાકિમ કે આગે ડાડો કીયો તવ હાકીમને કહયો જો  
રાંણાં વ્યાસ કહાહો ઉતને પાએઘ ઝીઓ અન્યાવ કીયોહૈ તાતે વાકો  
લાવો ઐર મેનો જગન્નાથ જોશીકો નીકે જતતહો જો જાકો નામ  
જગન્નાથ જોશીસો કમહુ અન્યાવ ન કરે યહનો રાંણાં વ્યાસને અન્યાવ  
કીયોહૈ તાતે ઉતનો લાવો તવ જગન્નાથ જોશીને કહયો જો મેરી કહી  
સુનોમે મે કહું તવ હાકિમને કહયો જો કહો તવ જગન્નાથ જોશીને  
કહયો જો રાંણાં વ્યાસને અન્યાવ નાહી કીયો રાંણાં વ્યાસ એસોકામ  
કમહુ ન કરે તવ હાકિમને કહયો જો ક્યોં જનનિયે તવ જગન્નાથ જો-  
શીને કહયો જો મેરી કહી માનોતો મે કહું જો રાંણાં વ્યાસકે બદલે  
જો કધુ કહોસો મે કરૂ તવ હાકિમને એક રૂપધ્યાકો મુગદલ મગાપો  
સો અગ્નિમે મેત્રી કેતાનો કીયો તવ જગન્નાથ જોશી સ્તાન કરિકે આપો ત-  
વ જગન્નાથ જોશીને ડાડો હોય કહયો જો રાંણાં વ્યાસને અન્યાવ કીયો  
હોય તો મોત્રો અગ્નિ ઝરાઈકે ભરમ કરો ડારિયો ઐર નાહી અન્યાવ  
કીયો હોય તો મુગદલ સીતલ હોય જહયો પાછે યહ મુગદલ અગ્નિમે  
સુ કોઠકે દોઢે હાથનસો ઉડાય અપને ગરેમે મધ્યો સો ઘડી એકધ્યો  
રાખ્યો સમ જતે આલે જો જોશીતુ કાકો તવ જગન્નાથ જોશીને ક-  
હયો જોહું કાઠિકે કોનકે ગરેમે ડાડું તવ હાકિમને કહયો જો મેરે ગરેમે  
ડારો પાછે જોશીને ભુમિમે ડારિ દીનો તવ ભુમિ જરમઈ તવ સમ-  
જને કહન લાગે જો જગન્નાથ જોશી તુમ ધનહો તુમ સાંચેહો તુમકો  
તુમારે ધનાકો એસો સાચહો મો કહિકે જગન્નાથ જોશીકો સમાધાન

કરિકે કહ્યો જે જોશી તુમ કધુ માંગો મેં તેરે ઉપર પ્રસન્ન બયોહો।  
તવ જોશીને કહ્યો જે મનનો માંગતહો જે મનને યહ યુગલી કરીહો  
તાસો કધુ મતિ કહિયો તવ યહ સુનિકે હાકિમ તથા ઐર સખતને  
બહુત પ્રસન્ન ભયે પાછે જગન્નાથ જોશી અપને ધર આયે વઝ્યેસે  
ભગવદી યહૈ જે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી કૃપાને કહા ન હોય.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧

ઐર પહેલે રાણાં બ્યાસને માંધાદાસ આસ્તવકે પાસ નામ  
પાયો હુતો પાછે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક ભયે તવ પરમ વધ-  
બન ભયે સોવે રાણાંબ્યાસ સિદ્ધપુરમે રહતે સો રાણાંબ્યાસ ઐર જગ  
નાથ જોશી સરસ્વતીમે જ્ઞાન કરત હુતે તા સમે એક રજપૂતાની  
સતી હોઈ વેકો આઈ તવ રાણાં બ્યાસકે પાસ જગન્નાથ જોશી હુતે  
તિનને પૂછો જે સતીહોતહે તાકો પ્રકાર કહા તવ રાણાં બ્યાસને કહ્યો  
જે પ્રેરકે સંગ વથા એસો શરિર જરાવતહે સો રાણાં બ્યાસને મૂડ  
હજાઈકે કહ્યો જે યહ રજપૂતાની સતી હોન આઈ હુતી તાને દેખ્યો  
તવ વા રજપૂતાનીને સાયકે મનુષ્યન સો કહ્યો જે હુંતો ન જરૂંગો  
મોકો સત નાંહીહો તાતે મેરી હત્યા એઠગી એસે કહાકે બહુત હંશિ  
દીની ઐર જરી નાહી તવ વે લોગ મૃતકકો જરાયકે વા સ્ત્રીકો ગામકે  
બાહિર જેપરી કરીદીની તવ સ્ત્રી ઉહાં રહી તા પાછે રાણાં બ્યાસ  
નાહાઈ વેકો આયે તવ વા સ્ત્રીને આયકે રાણા બ્યાસસો પૂછો જે  
તુમને મૂડ હજાઈકે કહાં વાત કહી તા વાતકે દેખે તેહો નજરી તાતે  
મોસો વહવાત કહેા તવ રાણાં બ્યાસને કહ્યો જે હમતો આપુસમે  
હસત વાત કરત હુતે તવ સ્ત્રીને કહ્યો જે હમસો કહિયો દુરાવતહેા  
જે વાત હોયસો કહેા ઐર બહુત આગ્રહ કીયો તવ રાણાં બ્યાસને  
કહ્યો જે હમ આપુસમે હંસત હુતે જે યહ ઐસિ કિતમ દેહ પાયકે  
નાહક પરતકે સાય જરાવતહે યા દેહ સો ઓ ઠાકુરજીક સેવા ન કીની  
ન ભજન કીયો એસો કિતમ દેહ ધરિકે ઓ ઠાકુરજીકો ન ભજ્યો તવ  
વા સ્ત્રીને રાણાં બ્યાસસો કહ્યો જે હુંતો તુમહારી સરણહેા જે જા  
બાંતો યહ દેહ ઓ ઠાકુરજીકે કાંમ આવે સો કરો તવ યહ વાત સુનિ  
કે રાણાં બ્યાસને કહ્યો જે અખતો તોકો સુતરહે સુતક ઉતરેગો તવ સ્ત્રી  
અપને સ્થલકો ગઈ પરિ વાંકો બહુત વિરહ ઉત્પન બયો જે દીન  
પ્રતી આવે સો રાણાં બ્યાસકો દર્શન કરી જાય એથે કરત સુતક  
ઉતરયો તવ સુદ્ધ હોય કે રાણા બ્યાસ કે પાસ આઈ તવ  
રાણા બ્યાસને કહ્યો જે તુ સવારે આઈ યો સો વા સ્ત્રી  
ને વા દિન કધુ આપો નાહીં પહેસે ચના ચવાય કે રહતી સો વા



दिन जाने जलपान हु नाही कियो पाछे प्रातःकाळ भयो जब राधा व्यास के आस वेको समो भयो तव आस के वैठि रही तव राधा व्यास आये और स्नान करि के भगवद समरन करन लागे तव वा स्त्री सों कछो जे तु स्नान करि के वैठि रही पाछे राधा व्यासने श्री आचार्यज महाप्रभुन को ध्यान धरि के वाके कानमे नाम सुनायो तव नाम सुनत ही वा स्त्रीको भगवदभाव उपज्य भयो तव वा स्त्री ने राधा व्यास सो पूछ्यो जे अब में कहा कर तव राधा व्यासने कछो जे अब तु भगवद सेवा करी तव वा स्त्रीने कछो जे भरि स्थिति तो ऐसी है जे तुम कछु ठहल देव सो में कर पाछे राधा व्यास उपरना परदनी घोष वेकों देते सो घोष के सिद्धि करि के पुहु यावती प्रसाद राधा व्यास के घर लेती ऐसे करत राधा व्यास के घरको कामकाज करन लागी पाछे भगवद सेवाको साथ कामकाज करतो सो कितनेक दिन पाछे राधा व्यास के घर श्री आचार्यज महाप्रभु पधारे तव राधा व्यासने वा स्त्री को श्री आचार्यज महाप्रभुन पास नाम निवेदन करवायो तव वह स्त्री परम वैरनव लक्ष्मी राधा व्यास श्री आचार्यज महाप्रभुन के ऐसे परम भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहा तांछ जिजिये वार्ता प्रसंग ॥२॥ वैरनव ॥३॥

**अव श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक रामदास**

**सारस्वत ब्राह्मण राजनगरमे रहते**

**तिनकी वार्ता.**

सो रामदासजके माथे नगरे गोपालज श्री आचार्यज महाप्रभुनने और अपनी पादुकाज सेवाको लीये पधराय दीनी सो से वा सदैव करे ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो रामदास विवाह करी के प्रथी परिक्रमा को गले सो कितनेक दिनमे प्रथी परिक्रमा करि के अपने घर आये परि रामदास स्त्रीको अंगीकार न करते तव दिन है बार रहि के दूरिका को गले तव रामदासकी स्त्री हु साथ यनी परि रामदास स्त्री को साथ न आवन देहि छतसों मारे परि रामदासकी स्त्रीतो दुरि लक्ष्मी साथ लक्ष्मी और रामदास के पातरिमें इतिन उरने सो आस नहीं तो योंहीं परी रहै पति के साथ रहे तव अक दिन श्री रणजोडजने रामदास सों कही जे तु अपनी स्त्री को अंगीकार करी त्याग कहाँ करत है तव रामदासने कछो जे में विरक्त हों वै

रागी हों मेरी स्त्री सों कहा काम है तव श्री रणछोडणुने कछो न्हे तेने विवाह काहे के कीयो न्हे तु श्री आचार्यणु महाप्रभुनको सेवक ह तो कों जैसी निदुरता न सहिये न्हे श्री आचार्यणु महाप्रभुनको सेवक ननि कछु कहत नाहि अब हों कहत हों तु अपनी स्त्री को अंगीकार करि तव रामदासने अपनी स्त्री सों कछो न्हे तु मेरे साथ खली आउ तव मार्गमे रामदास के साथ खली जन लागी तव मनन नय ठतरे तव रामदासने अपनी स्त्री सों कही न्हे तु वस्त्र साज लेके उरासे बैठा रहियो और मैं उपरा वीनि लाउ पाछे आप शान करि रसाध करी श्री ढाकुरणुको भाग समर्थो भाग साराय पाछे प्रसाद दीयो और स्त्री को प्रसाद दीयो सो कितनेक दिन मार्गमे खले आये पाछे ओक दीन श्री रणछोडणुने रामदासको आग्या दी नी न्हे तु अपनी स्त्रीको नाम दे तव रामदासने कछो न्हे हु नाम कैसे देउ तव श्री रणछोडणुने कछो न्हे तु नाम दे मेरी आग्या है तव श्री आचार्यणु महाप्रभुनको नाम ले श्री रणछोडणुकी आग्या ते स्त्रीको नाम दीयो तव स्त्री के हाथ को महाप्रसाद लेन लागे पाछे की तनेक दिनमे श्री आचार्यणु महाप्रभु राजनगर पधारे तव रामदास ने आय के श्री आचार्यणु महाप्रभुनके दरसन कीये तव रामदासने कछो न्हे महाराज मेरी स्त्री कों नाम समर्पण करवाछये तव आपने कछो न्हे अवतो तेने नाम दीयो है केरि कहा तव रामदासने कछो महाराज मैं तो श्री रणछोडणुकी आग्या ते नाम दीयो है और मैं को श्री रणछोडणुकी आग्या है न्हे श्री आचार्य महाप्रभुनके पास नाम निवेदन करवाछयो तव यह सुनि के श्री आचार्यणु महाप्रभुनने नाम निवेदन करवायो पाछे घर आय ग्रहस्थाश्रम करन लागे वे रामदास श्री आचार्यणु महाप्रभुनके जैसे कृपापात्र भगवदी है ताते धनकी वार्ता कहां तांछ लिप्पिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ ११॥ मेशनवा ॥ ३४॥

**अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक**

**गोविंद दुवे साचोरा ब्राह्मण**

**तिनकी वार्ता.**

सो गोविंददुवे श्री ढाकुरणुकी सेवा नीकी लातिसों करो परि म नमे बहुत विग्रह हुतो तव गोविंददुवेने श्री आचार्यणु महाप्रभुनको वीनती पत्र लिप्पि पढायो न्हे महाराज मेरे मनमे विग्रह बहुत

रहत है ताते मैं कहा कई तप आचार्यजी महाप्रभुनने नव रत्न ग्रंथ प्रगट करी गोविंददुखेको लिपि पढायो और पत्रमे लिख्यो जे या ग्रंथको पाठ तु नित्य करियो सो तेरी विग्रहता सब मिटि जायगी सो कृपा पत्र आयो तप गोविंददुखे नवरत्नको पाठ करन लागे सो पाठ करत गोविंददुखेकी विग्रहता सब मिटि गइ तप आचार्यजीकी सेवा नोकी बातिसे करन लागे ॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥

और एक सभ गोविंददुखे भीरांभाध के घर हुने तहां भीरांभाध सों जगज्ज जाता करत अटके तप आचार्यजी सुसांछलने सुनी जे गोविंददुखे भीरांभाधके घर उतरे हे सो अटके है तप आचार्यजी सुसांछलने एक श्लोक लिपि पढायो सो एक वृजवासी के हाथ पढायो तप वह वृजवासी बल्यो सो उहां जय पहुंच्यो ता सभ गोविंददुखे संध्या वंदन करत हुते तप वृजवासीने आय के वह पत्र दीनो सो पत्र पांय के गोविंददुखे तत्काल उठे तप भीरांभाधने बहुत समाधान कीनो परि गोविंददुखेने फिर पाछे न देख्यो ॥ वार्ता प्रसंग ॥२॥

और एक सभ आचार्यजी महाप्रभु आप द्वारिका पधारे तप गोविंददुखे और जगननाथ जेथी और पांय सात वैभव हुते सो आपके साथ हे तप आचार्यजी महाप्रभुन से द्वारिकामे विनती कीनी जे महाराज कछु कथा कहिये तप आचार्यजी महाप्रभुनने गोविंददुखे सों कह्यो जे अवही तो मोको अवकास नाही तप गोविंददुखे ने विनती कीनी जे महाराज थोरी सीही कहिये तप आचार्यजी महाप्रभुनने कथा कहियेको पोथी ओझी तप धनमे गोविंददुखे सो आचार्यजी वाते करन लागे तप अपने गोविंददुखे सों कह्यो जे पोथी जुनाय के वाते कोन सों करत है तप आचार्यजी महाप्रभुनने फिर देख्यो जे आचार्यजी सों वाते करत हे तप अपने पोथी पांघो और आप पेटे ॥ वार्ता प्रसंग ॥३॥

और सब वैभव आचार्यजी महाप्रभुनके थारको महाप्रसाद पावते तप एक दिन आचार्यजी महाप्रभुनने जवांससों कह्यो जे तुम धन वैभवनको थारमे महाप्रसाद मति देहु सो तादीन आचार्यजी महाप्रभु भोजन करि के उठे हुते सो उतही जवांसने थार छुछ के मांछु धन्यो तर आचार्यजी महाप्रभुन के थार कों महाप्रसाद न मिल्यो सो तादीन सब वैभवनने उपवास करयो तप आचार्यजी महाप्रभुनसे कह्यो जे तुम धन वैभवनको थार नित्य दैत हो तैसे धनको नित्य दीछ्यो तप दुसरे दिन आचार्यजी महाप्रभुनने गोविंददुखे और जगननाथ जेसो सों कह्यो

जो तुमने काज महाप्रसाद क्यों न लीनो तब वैष्णवने कछो जे  
महाराज कालि आपके धारको महाप्रसाद न मिल्यो तबभी आया-  
र्यं महाप्रभुनने कछो जे तुमको अपने धारको महाप्रसाद ते न  
देतो परि तुमारी सिपारस वडी दौर ते लक्ष है ताते अबदेनो पर्यो  
पाछे जे नित्य धारको महाप्रसाद देत हुते तेसैंध देत लागे तब ये  
वैष्णव प्रसन्न होयके रसोई करन लागे तब तहां तांछित्री आचार्यं  
महाप्रभु द्वारिकामें विराने तहां तांछि वैष्णवपास रहे पासे श्री आ-  
चार्यं महाप्रभु श्री रघुछोखसों विदाय होय के अउज को पधारे  
तब सर्व वैष्णव श्री आचार्यं महाप्रभुनके साथ आपेसो श्री आ-  
चार्यं महाप्रभुनको अउज में पहुँचाय के ईरी अपने अपने घर  
आये पाछे श्री कानुरछुकी सेवा करन लागे सोये गोविंददुव श्री  
आचार्यं महाप्रभुनके ऐसे परम कृपा पात्र लगवरीय है ताते  
धनकी वार्ता कहां ताछ लिखिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥४॥ वैष्णव ॥३४

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

राजादुवे माधोदुवे दोउभाइ सांच्यो

रा ब्राह्मण तिनकी वार्ता है.

सो ता गाममें होय लाल सांच्योरा आदिल और रहते सो  
अक नाम हरिकृष्ण हुतो और अकको नाम रामकृष्ण हुतो सो वडो  
लाल रामकृष्ण पढो अहुत हुतो और छोटी लाल मुरम्प हुतो और  
वह वडो लाल पढो हुतो सो गाम के मोतरा उपर बैठिके पढेले आगे  
कथा कहतो और छोटी लाल मुरम्प हुतो सो अती रज्जवारी करले  
सब टहन करतो सो वह वडो लाल कछु गाम गयो हुतो दुसरे गाममें  
सो ता दिन छहंकी कथा रहि अछ पाछे अक दिन मेहकी वर्षा बहुत  
लक्ष सो वह छोटी लाल अतते छठिके घर आयो तब लावने वासों  
कछो जे तुम रोटी न खेज तब वा देवरने कछो जे सीत अहुत  
लागतहै और मे अहुत लीज्योहुं ताते तु तातो करी परोसै तो मे  
नेज तब लावने कछो जे तु आय तो जाना तर मे लक्ष के सोय  
रहत हुं अथ तु कहा गामके मोतरा उपर बैठिके पढेले आगे कथा  
कह्यो के दारको गरास ईरेयो ताते जानो होय तो जाना तर हुं लक्षके  
पडि रहुंभी और नैसो है तैसो जाना तर कछु छलित तब वा देवरके

मनमे बहुत दुःख लाग्यो और अपने मनमे विचारयो नो हुं या  
 देसको त्याग करूं कहुं निकसि जऊ ता पाछे घरमे ते निकसिके मनमे  
 विचार करन लाग्यो नो राज् दुवे माघोदुवे जउ महा पुरुषहे ताते  
 छिनको नमस्कार करिके जऊ पाछे तहां गयो तव राज् दुवे माघोदुवे  
 होडि लाधनको नमस्कार कीयो और रोवन लाग्यो तय दुवेछने पूछो  
 नो तु कोन है पाछे देखिके पहचान्यो तय वासो कछो नो तुनो अमुके  
 को भेटाहै हरीजन तेरो नाम है और तु हमारा सातिओ है सो तोको  
 ऐसेओ कहा दुःख है तसो तु रोवन है तय याने कछो नो मेरे दुःखो  
 पार नाहो तय दुवेछने कछो नो तु अपने दुःख कहि तोको कहा  
 दुःख है तय याने कछो नो तुम मेरे दुःखो दुरि करो तो मे भुं तुम  
 जउहो महा पुरुष हो तव दुवेछने कछो नो श्री हृदयरत्न जउ हैं मे-  
 सयको दुःख दुरि करेगे तु अपनी दुःख कहि तय याने सय समायारे  
 कहे नो माको लावजत ऐसे र वयन कहे हैं सो मेरे हृदये अटक  
 है ताते मे तुम्हारे पास आयेहुं सोइमेरो दुःख तुमसों दुरि होयमे  
 पाछे दुवेछने वाको समाधान करिके वाको महा प्रसाद लायो पा-  
 छे रात्रिके सोय रख्यो तव प्रातःकाल ज्यो तव वासो दुवेछने कछो  
 नो तु स्नान करि आडि तव वड जलके देह धृत करि स्नान करिके  
 आयो तय माघोदुवे शुं राज्दुवेने कछो नो अय कहा करिये तुमही  
 जनो तुम्हारी जल यनी है नो कछु करेगे नाहीतो केसे छुटोये  
 जाड लग्यो है तव माघोदुवेने कछो नो अयतो तुम्हारी सगल आयो  
 है तुम श्री आयास्यछ महाप्रभुनके सेवक हो अयतो वाको कारेचकीयो  
 सहिये तव पहचनेतो वाको क्षार करवायो पाछे स्नान करवाय के मंदिरके  
 द्वारके आगे बैठायो तव माघोदुवेने राज्दुवेसों कछो नो अय वाको  
 कहनी होय सो कछो तव राज्दुवेने माघोदुवेसों कछो नो तुम्हारी  
 यह काम है मेरो काम नाही ताते तुमही कहो तय माघोदुवेने राज्-  
 दुवेसों कछो तुम वउहो ताते तुमही कहो तव राज्दुवेने माघोदुवेसो  
 कछो नो मेरी आग्या है ताते तुमही कहो तव माघोदुवेने वाकु उप-  
 देस दीयो अष्टाक्षर भंज कान्ति कछो पाछे वाकु अष्टोत्तरसत नामको  
 जप करवायो सो पक्षीयो सो अक २ मात्रा जप कीये पाछे संगृत  
 जोलन लाग्यो तव माघोदुवेने राज्दुवेसो हसिके कछो नो अय आ-  
 ग्या होय तो वाको अक वार इरि जप करवायये तव राज्दुवेने माघो  
 दुवेसो कछो नो अवश्य करवायये पाछे माघो दुवेने वाको दुसरी पेर  
 जप करवायो तव जगवदीय स्वरप रघुई ज्यो और पुराण छति हारव  
 मे ग्यान ज्यो तव माघोदुवेने राज्दुवेसों इरि हसिके कछो नो आ-

ગ્યા હોય તો અપ્પ કેરિ યાકો જપ કરવાઇયે તપ્પ રાજાફુવેને માધોફુવેસોં  
 કહ્યો ને અવ યહ ઇતનેહોકો પાત્ર હૈ અધિકી સમાય નાહી ઐર  
 કહ્યો ને તુમ કધુ મનમે મતિ લાઇયો ને હમેત ભયો હૈ તાતે યહ  
 કધુ ભયો હૈ સો સવ ઓ આચારચણ મહાપ્રબુતકી કૃપાતે ભયો હૈ  
 હમારો તુમહારો સ્વરૂપ તો વે જનતહે પાછે વાને ઉહાંઈ પ્રસાદ લીયો  
 પાછે ફુવેણકી આગ્યા માંગિકે અપને ગાંમકે ઓતરો ઉપર જય  
 ખકો ઐર કયા કહન લાગ્યો પહેલે વડો ભાઈ કયા કહતો સો વહ  
 ગાંમ ગતો જનતિકે કોઈ આવતો નાહી સો વાદિન કહુંતે વાકો સેવક  
 આયો તાને કયા કહન દેખ્યો તપ્પ વાને ગાંમકે પટેલસોં આપ કહી  
 ને તુમ કયા સુનિયે કો ક્યોં નાહી ગયે ભટ્ટજીતો કયા કહિ રહેહ  
 તવ પટેલ આયકે દેખેતો ભટ્ટજી કયા કહિ રહે હે તવ પટેલને કહ્યો  
 ને ભટ્ટજી અવ તાંઈ તુમ કયા કહનકો નાહી આયે તપ્પ ભટ્ટજીને  
 કહ્યો ને પહેલે ખડે ભાઈ કયા કહતે તાતે મે નાહી આવતો અપ્પ બે  
 ઐર ગાંમ ગયેહે તાતે મે કયા કહિ બેકો અવ આયો હું તપ્પ વે  
 ભટ્ટજી ભગવદ ઈચ્છા તે ભત્રી કહન લાગે તાતે સવકોડિ ખહુત પ્ર-  
 સન્ન ભયે ઐર સવકોડિ કહન લાગે ને હમારો વડો ભાગ્ય હૈ ને  
 અવકે એસો ખાત્તાણ મિલ્યો તવ કિતનેક દીનમે વહ કયા સંપૂર્ણ ભઈ  
 તવ સગને મિલિકે ભટ્ટજીકી પૂજા કરી ઐર કહ્યો ને અવતો તુમહી  
 કયા કહિયો કરોં કયાકો આઈયો પાછે વહ ખાત્તાણ માધોફુવેકે પાસ  
 આયો ઐર આયકે વીનતી કરી ને તુમહારી કૃપાતે મેને કહી રો  
 જાકી યહ પૂજા મિત્રાહૈં સો તુમ લેકિ યહ સવ દ્રવ્ય તુમહારો હૈ તુમ  
 મેરે ગુર હો તવ રાજાફુવે માધોફુવેને વાસો કહ્યો ને હમારે ઐર  
 ને તુમહારે ગુર ઓ આચારચણ હે તાતે યહ દ્રવ્ય સગ્ગ ઉનકો  
 હૈ હમારો યામે કધુ નાહી તાતે યહ દ્રવ્ય સગ્ગ ઉનકો હૈ હમારો યામે  
 કધુ નાહી તાતે યહ દ્રવ્ય સગ્ગ અડેજ પહુંચાવતો તવ વા ખાત્તાણને  
 સવ દ્રવ્ય અડેજ પહુંચાયો સો કિતનેક દિન પાંચ રામદાસ સાંચોરા  
 ખાત્તાણ ઐર જગજન્ય જ્ઞેશાયે વૈષ્ણવ ઓ આચારચણ મહાપ્રબુતકે  
 દર્શનકો અડેજ જનતહે તિનકે હાય વહ દ્રવ્ય અડેજ પહુંચાયદીયો તવ  
 કિતનેક દિનમે યાકો વડો ભાઈ આયો વહ ગાંમ ગયો હતાં સો આયો  
 તવ વાને રાજાફુવે માધો ફુવેસોં કહ્યો ને તુમ આગ્યા દેહ તો મેરે  
 પિતાકો ગ્રાસ હૈ સો કેરો તવ ફુવેજીને કહ્યો ને અવ કહા કધુ મેરેહ  
 હૈ તુ જા સગ્ગ સિદ્ધિ હોઇગો તવ વહ ફુવેજીસો આગ્યા લેકે વા ગાંમ  
 કો ચલ્યો સો જય પહુંચ્યો પાછે વા રાજાસોં મિલ્યો આસીર્વાદ દીયો  
 તવ વહ રજપૂત વા ભટ્ટકો દેખિકે વહુત પ્રસન્ન ભયે ઐર કહ્યો ને

હમારો વડો ભાગ્ય ને તુમ કૃપા કરિકે આમે ઐર કહ્યો તુમ ડેરા કરો તવ ઉન ડેરા કીયો પાછે રસોઈકી સામગ્રી ચલતી કરી પાછે સવ-જને બદ્દલકે પાસ આઈ જો તમ બદ્દલને એક શ્લોકો બાખ્યાન કરો તવ વે સમ જને બહુત પ્રસન્ન બએ ઐર કહ્યો ને તુમ પાંચ રાત્રિ કૃપા કરિકે રહો પાછે તુમ્હારી વિદા કરેગે એસે કહિકે વેતો અપને ઘરકો ગએ પાછે રસોઈ કરી શ્રી ઠાકુરજીકો ભાગ સમર્પો. ભાગ સરાયકે મહાપ્રસાદ લીયો તવ દુસરેદિન સવ મિલિકે ખિચાર કરન લાગે ને બદ્દલકી વિદા કમ કરિયે ઐર કહા કરિયે ઐર યહ બ્રાહ્મણ બહુત યોગ્ય હૈ ઐર બહુત દિનમે આપોહૈ તમ ઉન સમયનમે એક વૃદ્ધ હુતો તિનને કહ્યો ને યાકો ૧૦૦ મનતો અંબ દેઉ ઐર એક સત યાકો મુદ્રા દેઉ ઐર યાકે પિતાકો ગ્રાસ પુરાન ભુમિ હૈ સો એક ૧૦૦ વિદ્યા હૈ સો યાકો ત્રિપિ દેઉ ધતનો દેઉ ને હમ હું આ-છાણુ રિણુતે છુટે તમ સવને કહ્યો ને યહ ઠીક વાત કહે હૈ સો યાકો કહ્યો સવનકો કરનો ચહિયે પાછે સવને મિલિકે સીઠી લીખિ દીની ઐર કહ્યો ને યાકો અન્ન સિદ્ધિહૈ સો લે જલુ તમ બદ્દને કહ્યોને યહ સવ અન્ન મેરે ઘરે પહુંચાવો તમ વા અબકે માડા બરી દીને ઐર કહ્યો ને અપને સાથ લિવાય લે જલુ ઐર સવને મિલિકે અન્ન દીને ઐર ગાય ઐર એક ભૈસિ ઐર સત મુદ્રા ધતનો યાકો દીયો ઐર કહ્યો ને તુમ ધતનો પ્રતિવર્ષ આપકે લે જાપો કરો તવ બદ્દલ ઉન સવન સોં વિદા હોયકે અપને ગાંમકુ ચલે સો આપ પહુચે તમ અપને દારેકે આગે આપ પુકારયો ઐર પુકારિ કહ્યો ને બાબીકિ વાડ ખોલિહો પટેલકે ચોતરા ઉપર કયા કહિકે ઐર પિતા-કો ગ્રાસ ફેરિકે આપોહોં તાતે અવ તુ દાર ખોલિ તવ બાબીકિ વાડ ખોલિકે દેખેતો દેવર સાંચેહી ઠાડોહૈ તમ દેખિકે વાકો વડો બાઈ ઉઠિ આપો તમ દેખેતો છોટે બાઈકે ઉપર ભગવદ તેજ વિરાજત હૈ તવ યહ વડો બાઈ ડરખો ને મતિ યહ કછુ મનમે પુરી લાવે તવ યહ છોટો બાઈ બાબીકે પાય લાગ્યો ઐર કહ્યો ને તુમ્હારે વચનતે મોકો શ્રી ઠાકુરજીકી કૃપા ભઈ હૈ તવ વાકે વડે બાહને કહ્યો ને સ્નાન કરો મહા પ્રસાદ લેઉ તવ છોટે બાહને કહ્યો ને મેતો રાજાકુવે મા-ધોડુવેકો નમસ્કાર કીએ વિના જલ પાંન ન કરુંગો તવ વાકે ખડે બા-હને કહ્યો ને યહ કહા તમ છોટે બાહને કહ્યો ને યહ બપો હૈ સો સવ ઉનકી કૃપાતે બપોહૈ મોકો તો તુમ નીકે જનત હો ભૈસો હોં તૈસો તમ ખડે બાહને કહ્યો ને મે તુમ્હારે સાથ ચલુંગો તમ દોઢે બાઈ રાજાકુવે માધોડુવેકે ઘર ગએ તમ જમ કે ખડે બાહને

उनको नभस्कार कीयो और छोटे लाधने दंडोत करी तय राजकुवेने  
 भाषोदुवेसों कइयो जे तुमहारो सेवक आयोहै और यह प्रसंगाय के  
 अउ लाधके आगे भति कइयो तय कुवेजने कइयो आयो जैठो तय  
 वे होइ लाध जैठो ता पाछे कुवेजसों छोटे लाधने सय पार्ता नि-  
 वेदन करी तय कुवेजने कइयो जे तेरे उपर श्री आचार्यचण महा-  
 प्रभुनको श्री हस्त है ताते ऐसेो कयो न होय तय वाके अउ लाधने  
 कइयो जे हमतो श्री आचार्यचण महाप्रभुन के दर्शन नाही करे हमको  
 तुम दइओ और नसे याके उपर कृपा करिके याको कृतार्थ कीयो है ते-  
 से मोको हुं आप कृपा करिके कृतार्थ करो तय वाको हुं कुवेजने कृतार्थ  
 कीयो नाम सुतायो पाछे होइ लाधनको महा प्रसाद लिवायो पाछे  
 छोटे लाधने कुवेजसों कइयो जे आग्या होय तो अन्न ये मुद्रा गाय  
 बैसि कपडा सय उहासों लायोहों सो आप के मंदिरमे आवे तय  
 कुवेजने कइयो जे तुमतो जनतही हो जे या द्रव्य के धनी तो श्री  
 आचार्यचण महाप्रभु हैं तय वाने कइयो जे आपकी आग्या प्रमान  
 तय कुवेजने कइयो जे अन्न और गाय बैसि और सव द्रव्य छकोरो  
 करो पाछे कुवेजसों होइ लाध विदा होय के अपने धरे आये  
 तय सव द्रव्य हुतो सो छकोरो कीयो पाछे दिन थोरसेमे श्री आचा-  
 र्यचण महाप्रभु द्वारिका पधारे तय सिद्धपुरमे रांणु व्यासके घर उ-  
 तरे तय राजकुवे भाषोदुवे और यह सय द्रव्य लेके श्री आचार्यचण  
 महाप्रभुनके दर्शनको सिद्धपुरमे आये तय आयके श्री आचार्यचण  
 महाप्रभुनके दर्शन कीये पाछे धन होइ लाधनको श्री आचार्यचण  
 महाप्रभुन पास नाम निवेदन करवायो और यह द्रव्य हुतो सो सय  
 अउ कीयो तय दिन द्वै बारि रहिके आप आगे पधारे तय राजकुवे  
 भाषोदुवे और वे होइ लाध आंचलु श्री आचार्यचण महाप्रभुनसों  
 विदा होयके अपने धरे आये पाछे वे होइ लाध आंचलु राजकुवे  
 भाषोदुवे के संगते अउ भगवदीय भये ताते संग करने सो भगवदी-  
 यमे करने वे राजकुवे भाषोदुवे ऐसे कृपा पाव भगवदीय है ताते  
 धनकी पार्ता कहां ताध लिखिये।

प्रसंग ॥ ११ वै । ३५

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

उत्तिम श्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण



## तिनकी वार्ता लिखेंहै.

सो उत्तिम श्लोकदास श्री नाथजीके सेवकनकी रसोई करते और सचनकुं आप परोसते ताते सच सेवक उत्तिम श्लोकदास कु महतारी करी वोखते सेवनको प्रीति सों परोस, ताते श्री गुसांछि छनके छीपर बहुत प्रसन्न रहते वे उत्तिम श्लोकदास श्री आन्या-  
र्थ छ महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय छे ताते छनकी वार्ता कहां ताई लिखिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ३६ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

इश्वर दुवे सांभार<sup>१</sup> ब्राह्मण ए

## तिनकी वार्ता लिखते.

सो छधर दुवे श्री नाथजीके सेवकनकी रसोई करते और उत्तिम श्लोकदास छु श्री नाथजीके सेवकनकी रसोई करते सो तय उत्तिम श्लोकदासकी देह छुटी तय श्री गुसांछिने छधर दुवेको नाम उत्तिम श्लोकदास राख्यो सोवे श्री नाथजीके सेवकनकी रसोई करते सो अपनी गांठि ते धृत भगाय के सचनके नेगिते अधिक धृतपरो-  
सते ताते याहुसो सच सेवक महतारी कहि के वोखते सायह वात श्री गुसांछिने सुनी सो सुनिके बहुत प्रसन्न भये तय छधर दुवे सो श्री गुसांछिने पूछो जे तुम अपनी गांठि ते द्रव्यको धत भगायके कहेको परोसत तय छधर दुवेने कछो जे महाराज छनके सेवामे अम बहुत होतहै तययह सुनिके श्री गुसांछि बहुत प्रसन्न भये और कहै जे याको सच सेवक छीपर ऐसी वात्सल्य है तय छधर दुवेसों श्री गुसांछिने कछो जे तु मागिहों तेरे छीपर बहुत प्रसन्न भयोहों तय छधर दुवेने प्रसन्न होयके कहि जे महाराज मेरो मन तुम छीपर तेँ अप्रसन्न न होय तय श्री गुसांछि सुं वैश्वने कछो जे महाराज याने यहकहा मांग्यो तय श्री गुसांछि सुनिके खुप करी रहे तय श्री गुसांछि सुं हरिदासने पूछी जे मा-  
हाराज मेरे मनमें संदेह है जे उत्तिम श्लोकदासने यहकहा मांग्यो तय श्री गुसांछिने कछो जे यह संदेहतो उनहींसों भिटेगो तव उन वैश्वनने उत्तिम श्लोकदाससों पूछो जे तुमने श्री गुसांछि पास

કહા માગ્યો તખ ઉત્તિમ શ્લોકદાસને કહ્યો ને જ્ય ત્રી ગુસાંઈજી  
મોપર પ્રસન્ન હોયકે કહ્યો ને હું તેરે ઊપર પ્રસન્ન બનેહોં તાતે તુ કહ્યુ  
માંગિ તખ ત્રી ગુસાંઈજી મોકોં પ્યારે લાગે તવ મનમે વિચાર બયો  
ને આજ પ્રભૂજીકી પ્રસન્નતા! તે ખરો પ્યારો લાગતહોં ઐર મેં સેવક  
હોં ઐર ને કદાચત કોઝિ-અપરાધ તે મન પ્રસન્ન હોય જય તખ  
ખરો મન મતિ કહું વિગરે તાતે યહ માગ્યો ને સદા નિરંતરે તુમ્હારે  
ચરણારબિંદ પર મન રહેસો ઉતકે દીચ્છે તે રહે તખ યહ બાત સુનિ-  
કેં સગ પૈશ્વત ખહુત પ્રસન્ન બચ્છે તખ વિચારે ને સેવકકો એસોહી  
ધર્મ ચહિયે પાછોં ત્રી ગુસાંઈજી પ્રસન્ન હોયકે ત્રી અંગકી સેવા દીની  
સોવે મુખીયા ભીતરિયા બચ્છેવે ઉતિમ શ્લોકદાસ ત્રી આચાર્યજી  
મહાપ્રભૂનકે એસે પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીયકે તાતે ધનકી વાર્તાકો પાર  
નાહોં તાતે ધનકી ખાર્તા અખ કહાં તાંઈ લિખિયે.

॥ ખાર્તા પ્રસંગ ॥ ૧ ॥ એ. ૩૭

અવત્રી આચાર્યજી મહાપ્રભૂનકે સેવક વાસુદે

વદાસ છકડા સારસ્વતવ્રાંહ્યણ સીહનં

દકે તિનકી વાર્તા.

સો એક સમેં ત્રી આચાર્યજી મહાપ્રભૂનકે વડે પુત્ર ત્રી ગોપી-  
નાથજીસોં અડેતે આગરે પધારેસો આગરે મેં વૈશ્નવનને એકસો-  
એક મહોર ભટકીની પાછે આગરેતે ત્રી ગોપીનાથજી દાર પધારે  
સો સાચ સમગત વૈશ્નવ બચ્છે તવ ત્રી ગોપીનાથજીને આગ્યા કરી  
ને કોઉ એસો વૈશ્નવહે ને એકસોએક મોહર હમારે ઘર પહુંચાવે  
તવ વાસુદેવદાસને કહ્યો ને મહારાજ મોકોંદેઉ મેં પહુંચાઈગો તખ  
વે મોહર વાસુદેવદાસ છકડાકોં દીનો સો મોહર લાયમે મેલિકે ગોલા  
કયો સો ગોળાકી પૂજા કરત માર્ગમે ચલેગચે સોદીન પાંચમેં અડેજ  
જય પહુંચે સો ગામકે વાહિર ગોળા કોઈકે મોહર કાઢિ પાછે ત્રી  
ગુસાંઈજીકે ઘર જાઈકે મોહર ત્રી ગુસાંઈજીકોં દીની ઐર ત્રી ગોપીના-  
થજીકો પત્ર ત્રી ગુસાંઈજીકોં દીનો પાછે ત્રી ગુસાંઈજીને વહ પત્ર  
વાંચિકે મોહર સવગિનિ લોની પાછે ત્રી ગુસાંઈજીને વાસુદેવદાસકોં  
મહાપ્રસાદ લિવાયો વાસુદેવદાસને ત્રી ગુસાંઈજીસોં વીનતી કીની ને  
મહારાજ પત્રકો જીવાખ લિખિયે ઐર પત્રમ મોહર નકી પહુંચ  
લિખિયે ને હુંતો સવારે જાગીગો તવ ત્રી ગુસાંઈજીને વા પત્રકો જી-

વાળા લિખિ દીનાં ને મોહર પહુંચી તાકી પહુંચ લિખિકે પત્ર વીડ્યો  
 સો બીડકે વાસુદેવદાસકોં દીના પાછે વાસુદેવદાસ સોય રહે તખ રાત  
 ધડી એક રહી તવ વાસુદેવદાસ ઉઠિકે શ્રી ગુસાંઈજીકે પાસ આપકે  
 દંડોત કરિકે અડતેં ચલે દિનમેં શ્રીજી દ્વાર આપ્પે શ્રી ગોસાંઈજીકો  
 પત્ર હોસો શ્રી ગોપીનાથજીકો દીનો દીન દસમેં અડત આપ્પે ઐર  
 ગએસો પત્ર વાંચિકે શ્રી ગોપીનાથજી બહુત પ્રસન્ન ભએ ઐર પૂજો  
 ને વાસુદેવદાસ મોહરકોન ભાંતિસોં લે ગએ હુંતે તવ વાસુદેવદાસને  
 કહ્યો ને મહારાજ મોહરનકો ગોલા કરિકેવા ગોલાકી પૂજા કરત લે  
 મએ તવ શ્રી ગોપીનાથજીને કહ્યો ને યા ભાંતિ કબહુ નરખિયે ને  
 સ્વરૂપ કરિમાનિયે તાકોં યા ભાંતિ કૈસે કરિયે તવ વાસુદેવદાસને કહો  
 ને મહારાજ પ્રતિષ્ઠા તો નભઈ હતી.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥ ૧ ॥

બહુરિ એક સમે શ્રી ગુસાંઈજી શ્રી મથુરાજી મે વિરાજત હુતે  
 સો એક સમે શ્રી ગુસાંઈજી અંગાર કરિ સેવા તે પહુંચિકે બાહિર  
 બૈઠક મે વિરાજ સો બૈઠક મે બૈઠકિ રૂપ રૂપચંદ્રકોં પત્ર લિખ્યોતા  
 મે વસંતકોં સામગ્રી મગાઈ તખ વાસુદેવદાસસોં કહ્યો ને તુ ઈતની  
 સામગ્રી લેકે સંધ્યાકોં આપ્યો તવ ભંડારોકોં દેઉ તખ ભંડારીને એસે  
 રીછકો આહાર દીનો ટોકરામે તવશ્રી ગુસાંઈજીને વાસુદેવદાસકો આ-  
 આ દીના નેતોકોંપ નહીં પહરેકી કછુ ચિંતા નહો પેડમે પ્રસાદ ખાત  
 ચલ્યોજૈયો તવ વાસુદેવદાસ સોઈ કરત આપ્પે સોજળ્ય આગરે આપ  
 પહુંચે તખ તાંઈ પ્રસાદ ખાય ચુકે તખ ડોરી ડારિકે રૂપચંદ્રકોં  
 ધર ગએ તાસમે રૂપચંદ્રકા અપને ધરે પ્રસાદલે ચુક્યોહો ચલુલેકે  
 સીક કરત હો સોવાસુદેવદાસ પત્રલેકે આપ્પે તખ રૂપચંદ્રકાને હાથ  
 ધોય પોછિકે વહપત્રમાંયે ચઢાયકે લીનો ઐર ભાઈસો કહ્યો ને વા-  
 સુદેવદાસ આપ્પેહૈં સોં ધરમે કહોયે બુએ હોંઈગે તવ વાસુદેવદાસને  
 કહ્યો ને મોકોં તો મથુરાજનો હૈ તાસોં મોકોં સખડી મહાપ્રસાદ લેવેકો  
 અવકાસ નાહો તાતે સામગ્રી લે દેઉતો મે જલ હાલતો પ્રસાદ લેઉ-  
 ગો નાહી તવ રૂપચંદ્રકા વચ્ચ પહરીકે સામગ્રી લે ન ગએ તખ વા-  
 સુદેવદાસ સાથ ગએ તવ રૂપચંદ્રકાને છોટે ભાઈ ગોપાલદાસ સોં  
 કહ્યોને અપને ધરમે જીતનો પ્રસાદ હોય સો તુલેકે છાર છુદરવળે  
 બૈઠીયો હમ આપતહૈં તખ છોટેભાઈને જીતનો ધરમે પ્રસાદહો સો  
 સવ લેકે છારછુદરવાળે આપ બૈઠો ઐર રૂપચંદ્રકા બાજરમે  
 આપકે સવ સામગ્રી લીની તવ વાસુદેવદાસને કહ્યો ને મેરો અમ-

લો ધરતો પ્રસાદીહે તવ સવ સામગ્રી પિછીલી ઐર કટિસો દ્રઢ કરી  
 બાંધી પાછે રૂપચંદનદા ઐર વાસુદેવદાસ છાર છુદરવાળે આખે  
 તવ દેખે તો છોટોભાઈ વૈઠોહે પ્રસાદ લીખે સો સવ પ્રસાદ સોં વાસુદે-  
 વદાસકી ડોરી બરી ઐર વાસુદેવદાસ મથુરાકિં આખેસો તીસરે પહર  
 શ્રી ગુસાંધજી જ્ઞાંન કરી વેકોં પધારે હુતે તા સમે વાસુદેવદાસ સામગ્રી  
 લેકે આયેઠડો બયો તમ શ્રી ગુસાંધજી ઉઠિકે વાસુદેવદાસકી કટીતે સા-  
 મગ્રી ખોત્રા લીની ઐર શ્રી ગુસાંધજી વાસુદેવદાસકે ઉપર બહુત  
 પ્રસન્ન બખે ઐર આગ્યા દીની જે તોકોં મહાપ્રસાદકી સામગ્રી રા-  
 ખીહે સો જલકે પ્રસાદજે તમ વાસુદેવદાસ વિઆંતિ જ્ઞાંન કરિકે આ-  
 ખો તવ પ્રસાદ લીનો સો વાસુદેવદાસકી છુધા બહુત હુતી મણુ ડેઢ  
 ખાતે પરીત્રેસો બહુત ખાતો તૈસો બહુત પરાકૃમ હુતો મથુરા તે  
 દોષ પહરમે આગરે ગખે ઐર આખે એસે પરાકૃમી હુતે.

બહુરી નિત્ય પ્રતિ શ્રી ગુસાંધજી શ્રી ઠાકુરજીકી સેવા કરિ-  
 કે વાહિર આયકે ખવાસમે કહતે જે તુ ચૈલા પીઢા લેકે વિઆંતિ  
 જૈયો ઐર આપદર્શનાર્થ જન્મ સ્થાન પધારતે સો જન્મ સ્થંનદર્શન  
 કરિકે પાછે શ્રી ગુસાંધજી વિઆંતિ સ્નાંનકો પધારતે યા બાંતિસો શ્રી  
 ગુસાંધજી નિત્ય કરતેસો એક દિન મથુરિયા ચોવે સવ મિલિકે કાજીકે  
 પાસ જલકે ચુગલા કરી જે તુમ ઇનસો લાગા વાધી કરોતો ઇનકે સે-  
 વક આખેહે સો તુમકો દોષ ચારિહજર રૂપેયા યે દેઢગે તવ કાજી  
 મનુખ દોષ સૈ હથિયાર બાંધિકે જન્મસ્થાન આય ઠાડો બયો ઇતનમે  
 શ્રી ગુસાંધજી શ્રી કેસોરાયજીકે દર્શનકોં પધારે તવ દર્શન કરિકે વાહિર  
 આખે પાછે ધોરા ઉપર સવાર બખે તવ કાજીને કહ્યો જે અવતુમ  
 કહાં જલગે તમ વાસુદેવદાસને શ્રી ગુસાંધજીસો વીનતી કરી જે મ-  
 હારાજ માંકો પુરી નજર દીસતહે તવ શ્રી ગુસાંધજીને કહ્યો જે યે તેરો  
 કહા કરેગે તો સો હોયસો તુહુ કરિ તવ વાસુદેવદાસ દેખે તો એક કે  
 હાથમે ઢાલ ઐર ગુરજ દેખી સોતાકે વાસુદેવદાસને એક થપેડ મારી  
 સો થપેડ લગત માત્ર વહતો ગિરિ પર્ચો તવ વાકી ઢાલ ઐર ગુરજ  
 લેકે વાસુદેવદાસકે પાછે મનુખ વોસ પચ્ચીસ હુતે તવ યે બાજીકે  
 એક હવેલાંમે બેઠી દરવાળે દેકે છિપિ રહે તવ શ્રી ગુસાંધજી ધોખે  
 ઉપર સવાર બખે ઐર ઇનકે દરવાળે હોય કે પધારે તવ વાસુદેવદા-  
 સને શ્રી ગુસાંધજીસો કહ્યો જે મહારાજ અખ બલે ઇકઠારે બખે  
 હૈં જે આગ્યા હોય તો ઇન સવનકો દરવાળે તોરિકે મારો તવ શ્રી  
 ગુસાંધજીને નાહો કરી ઐર કહ્યો જે તેરો યે કહા લેત હૈં પાછે  
 શ્રી ગુસાંધજી વિઆંતિ પધારે તમ ફસરે દિન શ્રી ગુસાંધજી સ્નાંન

કો પધારે તવ વહ કાજી અપને મનુષ્યનકો સાથ લેકે ગરેમે પટુકા દેકે  
આપકે વીનતી કરી ને મહારાજ આજ હમ કહૈયા દેખે ઐર બીમ  
હું દેખે ને પ્રમુજકે પ્રાપતે સખ ડરે તવ શ્રી ગુમાંઈજીને કહ્યો  
ને વહ એસો હતો ને ફિર પાસોં બોલતે તો અકેલો વહ સવનકો  
મારતો તુમ સવ દોરે રહતે ઐર યાકે મનમે તો બહુત આઈ હતી  
પરિ હમકો એસો ન કરની હતી પાછે કાજીકો સમાધાન કરિકે ધરકો  
પહાવો સો શ્રી ગુમાંઈજીકી કૃપાતે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક  
એસે સામર્થયાંત હુતે.

### ॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥ ૩ ॥

ઐર સીહનંદમે ઉત્સવ હોતો તવ વાસુદેવ દાસકો બુઝાવતે ના-  
હી તખ એક સમે સીહનંદમે જૈસ્તવ મિત્રિકે શ્રી ગોકુલ શ્રી ગુમાંઈ-  
જીકે દર્શનકો આખે સેતિનકે સાથ વાસુદેવદાસ હુ આખે તવજૈશ્મ-  
વનને શ્રી ગુમાંઈજીકો દર્શનકલો પાછે ઉહાં રહિકે કોઈ સમે પાપકે  
વાસુદેવદાસને શ્રી ગુમાંઈજી સોં વીનતી કરીકે રહી ને મહારાજયે  
વૈશ્ના મોકો સીહનંદમે ઉત્સવ હોતહૈ તખ બુઝાવત નાહી તવશ્રી ગુ-  
માંઈજી ચુપ કરી રહે તખ પાછે ઉત વૈશ્નવનકો જવડાકો મિદાકીએ  
તખતિનમે તે ચારિ પાંચ મુખિયા રહે સેતિનકો શ્રી ગુમાંઈજીને રા-  
ખે ઐર સવ વૈસ્તવનકો ડરા પહાખે તખ શ્રી ગુમાંઈજીને ઉત જૈસ્તવન  
સોં પુછો ને તુમ વાસુદેવદાસકો ઉત્સવ કીર્તનમે ક્યો નાહી બુઝાવત  
હો તવ ઉત વૈસ્તવનને વીનતી કરીકે કહાંને મહારાજ વાસુદેવદાસકો  
વડે ઉત્સવમે તો બુઝાવતહૈ ઐર છોટે ઉત્સવમે તો નાહી બુઝાવત નેયે  
બુખે રહેતો દો લાગે તવ શ્રી ગુમાંઈજીને આગ્યાદીની ને તુમ બં-  
ધાન વાંધો ને ૧૦૦ વૈસ્તવનકો બુઝાવો તો પચાસ ૫૦ તો ઐર  
જૈસ્તવકો બુઝાવો ઐર જહાં પચાસ ૫૦ બુઝાવો તો પચીસ તો  
ઐર વૈસ્તવ બુઝાવો ઐર પચાસમે એક વાસુદેવદાસકુ બુઝાવો  
ઐર જહાં પચાસ ૨૫ બુઝાવો તહાં તેરહ ૧૩ તો ઐર વૈસ્તવ બુ-  
લાવો આર વાહર ૧૨ મે એક વાસુદેવદાસકો બુઝાવો એસે દસતાઈ  
શ્રી ગુમાંઈજીને વંધાન વાંધો એસે પાંચતાઈ બંધાન બાંધ્યો એસે  
જીતને બુઝાઉને હોય તિતને તો ઐર વૈસ્તવ બુઝાવો ઐર આધિનમે  
એક વાસુદેવદાસકો બુઝાવો તવ ઉત જૈસ્તવનને કહ્યો શ્રી ગુમાંઈ સોં  
ને મહારાજ યેતો બુખે રહૈયે તવ શ્રી ગુમાંઈજીને ઉત જૈસ્તવન સોં  
કહ્યો ને દસતાઈ તુમ આધિમે વાસુદેવદાસકો બુઝાવો તામે આહૈ  
સોહોકે તાકોં તુમ મહા કરોગે સોબહ પ્રદારમેને તુમકોં કરી દીનોહૈ સોમે-  
રી આગ્યા તે તુમકોં કછુ વાધા નાહી ને તુમ આધિમે વાસુદેવદાસકો

जुसी सो जुलावा पाछे जुओ रहैतो तुमको कछु देय नाही परीषद  
 श्री आचार्यजी महाप्रभुनको सेवकहै ताते वासुदेवदासको बुलाये वित  
 तुम उत्सव भति करीयो तब वैस्नवनने कह्यो जे महाराजकी आग्या  
 होधगी सोध करेगे तबजे छोड़ि दीन श्री गोकुल रहिके पाछे सब जे-  
 स्नव सीहनेदकी गये तबजे वैस्नव सोध करन लागे श्री गुसांईजी  
 वासुदेवदासको श्री आचार्यजी महाप्रभुनको सेवक जनिके ऐसीकृपा  
 करते सोवे वासुदेवदास श्री आचार्यजी महाप्रभुके ऐसे परमकृपा  
 पाव भगवदीयहै ताते धनकी वार्ता कोपार नाही सो अवधनकी वार्ता  
 कहाँतांछ जियये.

वार्ता प्रसंग ॥ ४ ॥ वै. ३८ सं. १०८

## अवधू आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक बाबाबेण और कृष्णदास बघरीया देवदास तिनकी वार्ताहै.

सो जे आचार्यजी -हृदयके नेत्रनमें देखते सो आचार्यजी और  
 छोटेभाई कृष्णदास जे छोटेभाई श्री देसायजीके आगे कर्तन करते  
 तहां यादवदासहु कर्तन करतमें साथ हुते तब कर्तन करन लागे सो  
 यह पद गावत हुते जे देवदारीनन गिरवरघरन साथह पद गावत  
 कृष्णदासने आपनी देह छोड़ी तब यादवदासने आवा वेष्टुसों हख्यो  
 जे कृष्णदासने यह पद गावत आपनी देह छोड़ी तब बाबा वेष्टुने  
 कख्यो जेह हमतो आपनी देह आनाथजी द्वारमें छोड़ैगे पाछे कृष्णदासको  
 संस्कार श्री देसायजीके पिछारे कीयो ता पाछे सुतउ उतरयो तब सुख  
 होयके आनाथजीद्वार यत्ने सो कितनेक दिनमे आनाथजीद्वार आय पहुँ-  
 चे तब पर्वत उपर जयके आवा वेष्टुने आनाथजीके द्यौत कीये पाछे  
 बाबा वेष्टुने कर्तन कीये तब आनाथजीके कंठमें कूल्की भाजागिरीसो  
 भाजा और एक बीड़ा रामदास भीतरीयाने बाबा वेष्टुंकुं दीनो सो  
 बाबा वेष्टुने भाये यहायके जानो तब रामदास भीतरीयाने बाबा वेष्टु-  
 सो कख्यो जे तुम्हारी विद्या आनाथजीने कीनी तब बाबा वेष्टुने  
 आनाथजीको दंडोत कीनी पाछे नीचे उतरे सो आचार्यको और उतरे  
 तब बाबा वेष्टुने यादवदाससों कख्यो जेहुं तो पर्वतते नीचे उतरिके  
 आपनी देह छोड़ुगो तू सावधान रहियो और तु वेगो आचर्यो जैसे  
 यादवदाससों कहिके बाबा वेष्टु पर्वत नीचे उतरिके आनाथजीको दंडोत

કરત માત્ર અપની દેહ છોડી પાંછે યાદવદાસને વાવા વેણુકો સંસ્કારે  
કીયો પાછે સુવક ઉતારો તવ સુદ્ધ હોયકે યાદવદાસ શ્રી ગુસાંઈજીકે  
પાસ આએ સો શ્રી ગુસાંઈજીકો દર્શન કીયો ઐર દંડોત કીની તખ  
શ્રી ગુસાંઈજી યાદવદાસકો પરમ ભગવદીય જનકે મનમે વિચારે ને  
કોઈકદિનમે યાદવદાસકી હુ સ્થિતિ હૈ તાકે લીએ શ્રી ગુસાંઈજી બિ-  
ચારે ને શ્રી નાયજીકી સેવામે યાદવદાસકો રાખિયે તો આજો હૈ તવ  
શ્રી ગુસાંઈજીને કહ્યો ને યાદવદાસ તુમ અકેલો હોતા તેં અવ શ્રી-  
નાયજીકી સેવા કરો તખ શ્રી ગુસાંઈજીકી આગ્યાતે યાદવદાસ શ્રીનાય-  
જીકી સેવાનીકી બાંતિસોં કરી સો સેવાસોં પહુંચિકે યાદવદાસ નીચે  
ઉતરે ઐરનીકી બાંતિસોં સેવા કરતે સો કહું વંગાજામે જાયકે યાદવદાસ  
લકડી પરી હોંય સોષકકોરી કરી પાછે જવ જાન્યો ને લકડી સિદ્ધિ  
બઈ તવ શ્રીનાયજી પાસ આગ્યા માંગિકે દંડોત કરિકે નીચે ઉતરે સે  
અગ્નિ લેકે જહાં લકડી ઇકકોરી કરી હુતી તહાં આપ આએ સો લક-  
ડીનકો શ્રીનાયજીકી ધ્વજનકે અગારો ચોતરા વનાયો સો ચોતરાકે ઉપર  
આપ પોઠે જ દિસાકો બ્યારિ ચલત હુતી તા દિસાકો અગ્નિ ધરિકે  
ધ્વજનમે પ્રનામ કરિકે શ્રીનાયજીકો સ્મરન કરિકે યાદવદાસને અપની  
દેહ છોડી પાછે બ્યારિને અગ્નિ જરિઉડી સો જરિકે ભસ્મ હોય ગઈ  
યાદવદાસને અપને હાથસોં અપનો સંસ્કાર કીયો તથા બાબાવેણુકો સંસ્કાર  
કીયો તાકો હેત યહ જો યાદવદાસને કુમ્મદાસકો સંસ્કાર કીયો તા તેં  
યાદવદાસને અપનો યહિ વિચાર કીયો ને સખ સેવકનકો મેરો સંસ્કાર  
કરિવમે કૃત હોયગો ઐર સેવામે વિરોધ હોયગો તોતેં યાદવદાસને અ-  
પનો સંસ્કાર અપને હાથનસોં કીયો ઐર પહેલે વાવા વેણુને યાદવદાસસોં  
કહ્યો હુતો ને તુ વેગો આઘયો વિલંબ મતિ કરિયો સો તો શ્રી ગુસાં-  
ઈજીને શ્રીનાયજીકી સેવા સોંપી તાતેં ઇતનેદિન વિલંબ બયો પાછે  
દિનદૈ બએ તખ શ્રી ગુસાંઈજીને પ્રજો ને યાદવદાસ દેખિયેત નાહી  
સો કહાં ગયો હૈ તખ સેવકનને કહ્યો ને મહારાજ યાદવદાસ કહું  
વનમે લકડી ઇકકોરી કરત હુતે તવ શ્રી ગુસાંઈજીને કહ્યો ને ઉહાં  
જાયકે દેખોતો તખ શ્રી ગુસાંઈજીકે કહત માત્ર વૈશ્વ જાયકે દેખે તો ઉહાં  
કહુ નાહી રાખકી ઢેરી પરી હૈ તખ વૈશ્વનને શ્રી ગુસાંઈજીસોં આપકે  
કહ્યો ને મહારાજ ઉહાં તો કહુ દેખિયત નાહી રાખકી ઢેરી પરી હૈ  
તખ શ્રી ગુસાંઈજી અપને શ્રી મુખસો કહ્યો ને એસો ભગવદ બજત  
ને કાહુકો દુખ ન દે તો વે યાદવદાસ શ્રી મહાપ્રમુનકે એસે પરમ  
ભગવદી યહ ને સ્વચ્છતિ અપની દેહ છોડી સો સવ ગ્વાનનને દેખ્યો

सो मकत होय रहे तातें वावा वेळु और कृमदास धधरी और यादव-  
दास अनियो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे तातें धनकी वार्ताको पार  
नाहीं सो अब कहांतांछ लिखिये.

वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ३८ ॥ संबंध ॥ १०८ ॥

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

जगतानंद सारस्वत ब्रह्मण थाने-

स्वरके वासी तिनकी वार्ता.

सो जगतानंद सारस्वती उपर कथा कहते तब एक सभे श्री  
आचार्यजी महाप्रभु थानेश्वर पधारे सो जगतानंद सारस्वती उपर  
कथा कहिरहे हुते सो तहां श्री आचार्यजी महाप्रभु नय विराने तब  
जगतानंदने एक श्लोकसे न्यारव्यान कीयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने  
कह्यो जे वाको न्यारव्यान भावतो अहुत है तब जगतानंदने कह्यो जे  
श्लोकको अर्थ है सोनो कह्यो जे श्री मुकदेवजीने कह्यो सोनो कह्यो तब  
श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे श्री मुकदेवजी लरिका है तब  
जगतानंदने कह्यो जे अधिकी न्यारव्यान होय तो तुमहीं आयके कहो  
तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे तुतो व्यास आसने जैओ  
है हम तेरो अतिक्रम क्यों करि करे तब धननो सुनत मात्र जगतानंद  
सोकी छोडि के छिड़ि छिड़ि जयो तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने सोकी  
उपर वस्त्र विछायके ताके उपर पोथी धरी और आप नीचे जैठे और  
या श्लोकसे भाव करि के वाको अर्थ कह्यो सो व्याख्यात करत २ तीन  
पहर बीते तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे या श्लोकसे व्या-  
ख्यानतो भास होय तीन खोंची तैगोपरि अब तुम बुझे होउगे ताते  
अब तुम छोकी तब जगतानंदने कह्यो जे महाराज आपतो धनर  
आपके भाव धटियेके नाहीं तहां तांछि यह्यो तहां तांछि कह्यो पाछे श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनने पोथी वांधी तब जगतानंदने साष्टांग दंडोत  
कीनी और कह्यो जे महाराज भरोधर पावन करिये तुमतो साक्षात  
पूरन पुरषोत्तम हो तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कह्यो जे तुतो अन्य  
मार्गी यहै हम तेरेधर कैसे पधारेंगे तब जगतानंद सारस्वतीने ज्ञान



करिके आष ढाडो बन्यो और वीनती करिके कल्लो जे महाराज ओं  
 कृपा करिके नाम दीलये तव श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कृपा करिके  
 नाम दीयो तव श्री आचार्यजी महाप्रभु वाके धर पधारे और जगता-  
 नंदके धर सेव्य ढाकुरजी हुते सो वे तुलसीभांड वैठिते तहां वे सदाओक  
 बोली श्री ढाकुरजीके उपर जारत तव श्री ढाकुरजीकुं श्री आचार्यजी  
 महाप्रभुनने तुलसीमे सुकाठिके पंथाभृतसे मान करवाय न्यारे बैठाये  
 पाछे अंगार करि राजभोग समर्प्यो पाछे जघतानंदको सेवाकी विधि  
 सिखाई और कल्लो जे नित्य याही भांतिसो सेवा करियो तव जग-  
 तानंद बल भगवदीय लये सो श्री ढाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसो  
 करन लागे सो वे जगतानंद श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र  
 भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहांताई लिप्पिये.

॥ प्रसंग ॥ १ । वै. ॥ ४० ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

आनंददास विस्वंबरदास दोउ भाई

क्षत्री हुते तिनकी वार्ता है.

सोवे दोड़ भाई अति कृपा पात्र भगवदीय है सोवे दोड़ भाई  
 ओकर बैठीके भगवद वारता करते तथा श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी  
 वार्ता अहर्निश करते कमहु वार्ता कहत छोटे भाईको निद्रा आयज-  
 ती तव श्री ढाकुरजी हुंकारी देते तब अउ भाई आनंददास सोतो  
 भगवद वार्ताके आवे समे जनते नाही जे हुंकारा के न देतहै जय  
 वार्ता कहि चुकते तब आनंददास विस्वंबरदाससो पृछते जे भेतो  
 सो वार्ता कही सो तु समज्यो तव विस्वंबरदासने कह्यो जे भेतो  
 छहां ताछ सुनी पाछे भोकोतो निद्रा आछ हुती तब आनंददासने  
 कह्यो जे तुतो अज ताछ हुंकारी देत हुतो तव विस्वंबरदासने कह्यो  
 जे भेतो हुंकारी दीनी नाही तव आनंददासने कह्यो जे श्री ढाकुरजी  
 ने हुंकारी दीनी होयगी तब दोड़ आनंददास विस्वंबरदास अपने म-  
 नमे अहुत प्रसन्न भये और कह्यो जे हमारो पड़ो भाग्य है श्री  
 श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी कृपाते श्री ढाकुरजीने हुंकारी दीनी हमारी  
 कही सब वारता सुनी ताते वे दोड़ भाई आनंददास विस्वंबरदास  
 आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते धनकी  
 वारता कहां ताई लिप्पिये.

॥ प्रसंग ॥ ११॥ वैभव ॥ ४१ ॥

## अव श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक एक ब्राह्मणी हुती तिनकी वार्ता है.

सो आद्वणी के माथे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री आलक्ष्मणजी की सेवा पधराय हुती सो वह आद्वणी श्री आलक्ष्मणजी की सेवा करती परि वह अपने घरमे निपट निरुन्धन हुती ताते श्री हादुरजी के आगे मांटीके कुंज बरि राखती और रसोयमे मांटीके पात्र और धरे निपट संकीर्ण छतनेहीमे सय रसोय मंदिर आचार्य हुतो और नेत्रन सों थोरो दीसे वृद्ध भय ताते ऐसे सेवा करती सो और जैशनव देजिके सेवा करत मेसो आपुसमे सव मरया करन लागे जे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने वा आद्वणीके माथे कहा जनि के सेवा पधरायहे यहतो कछु समजत नांही ऐसे सय जैशनव आपुसमे मरया वार्ता करन लागे सो एक दिन श्री आचार्यजी महाप्रभुनको कोस छपर गाम हुतो तहां पधारे हुते पाछे तहां ते किर तय तहां ते आद्वणी के द्वारेके आगे होय के निकसे तय साथके जैशनव हुते तिनने श्री आचार्यजी महाप्रभुनसे वीनती कीनी जे महाराज आपने वा आद्वणीके माथे श्री आलक्ष्मणजी की सेवा पधराय है ताको यह धरे है सो याके धरे पधारिके देजिये याको धरे याको आचार्य कैसो है तय श्री आचार्यजी महाप्रभु आप असरल सरल अंतरजमी वा आद्वणी के धरे पधारे सो ता सजे यह आद्वणी रसोय करत हुती रोटी करिके बांसों चुपरत जय और श्री हादुरजी आप आरोगत जय परि पाछेतो दीसत नाही हाथसों टटोरे कहै जे रोटी आगे दीसत नांही कहा भूसा पिलाय से जत है ऐसे कहै और रोटी करत जय और हादुरजी आरोगत जय सो श्री आचार्यजी महाप्रभु आप हाउ हाउ देजे पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने वा ओकरी सों कह्यो जे अरीयाय तेरो पडो बाग्य है जे तेरो करो रोटी श्री हादुरजी आप आरोगत हैं तव यह पाय श्री आचार्यजी महाप्रभुनको दंडोत करि पाछे जोली जे महाराज मे नाही जनी जे राज पधारे हैं मोकोतो कछु दीसति नाही परि तुम्हारी कानिते श्री हादुरजी मान लेत हैं तव श्री आचार्यजी महाप्रभुनने जैशनव सों कह्यो जे श्री हादुरजी तो केवल शनह के वस हैं ताते मेरी कानिसों श्री हादुरजी आरोगत हैं और इनकी भक्ति मान लेतहैं तय जैशनव मु-

सिकायके चुप करि रहे पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभु अपने घर पधारे वा वाघेके उपर बहुत प्रसन्न भये वह वाघ श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी ऐसी कृपा पात्र भगवदीय ही ताते छनकी आर्तिओ पार नाही सो कहां तार्छ लिप्पिये.

प्रसन्न ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ४२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके

सेवक एक क्षत्राणी ति

नकी वार्ता है.

सो वह क्षत्राणी आप यरभा कातनी सो सुतके पैसा द्योतीनि आवते सो ताकी जे सामग्री आवती सो ले आवती रसोई आल-भोग करि श्री हाकुरजीको भोग समर्पिती ऐसे निर्वाह करती सो अक दिन ऐसे विचार करयो जे सुत काते सो धीरोधीरो अधिक काते सो छकोरो करत जय सो टका दसवारहको बेला कोयो सो सुत बेचिके टका दसवारह आये सो बिनको धृत आंड लेआर्छ सो घर आयके मैदा छानी पाछे दुसरेदिन सेवके लकु वासिद्धि कीये और मनमे कही जे दिन दसवार हको सामग्री सिद्धि भर्छ है सो दिन दसवार हको निश्चंत भर्छ हों ता दीन श्री हाकुरजीको आरोगार्छ और वाकी सामग्री अक हांडीमे करिके मंदिरमे धरि राखी पाछे श्री हाकुरजीको राजभोग समर्प्यो भोग सराय आरती करीके आप महाप्रसाद लेके पाछे यरभा कातन पैडी तय श्री हाकुरजी आप सिंघासनते उतरिके सामग्रीकी हांडी लेके सिंघासन उपर आय बैठे सो हांडीमे ते लकुवा काढिके आप आरोगन लागे तव मंदिरमे हांडी अट्ठायन लागी तव वा क्षत्राणीने कह्यो जे कहामुसा विचार होय देखुंये सही कोन है तव वह क्षत्राणी कातत हुती सो तहां ते उठिके देखन गछ मंदिरके किवाड जालिके देखे तो श्री हाकुरजी सिंघासन उपर हांडी लेके बैठे हैं और वाने ते लकुवा काढिकाढिके आरोगते हैं तव वह क्षत्राणी देखिके छाती कुटन लागी और कहन लागी जे यह सामग्रीतो तुम्हारेही बीये दिन दस वारहको करी राखी हुती यह तुमने कहा कीयो जे आजहो आरोगे तय श्री हाकुरजीने कह्यो जे कहा तु बेजो करिके आजहो निवरी तेने आलसके बीये छकोरी करि राखी हुती सो कहा नित नर्छ न होती तव वह क्षत्राणी बोला जे महाराज मेरो अपनाय क्षमा करो

अथ ते नर्त्त सामग्री नित्य प्रति करिंके समर्पणी सो श्री ङादुरञ्ज याके  
 लीअे आरोगे जे यह दिन दसवारहको निश्चंत होती तो याको आरती  
 रहती नांही और जे नित्यकी नित्य सामग्री करे तो याको आरति  
 रहै जे मोको सागग्री करनी है ताते श्री ङादुरञ्जने ऐसी करी ताते  
 श्री ङादुरञ्जकी सामग्री दिन बार ते अधिकरी न करनी और या क्षत्रा-  
 णीने छाती कुटी जे श्री ङादुरञ्ज आरोगे ताके लीअे कुटी श्री ङादुर-  
 ञ्जतो प्रसन्न होय के आरोगे वाने छाती याके लीअे नाही कुटी जे  
 श्री आचार्यञ्ज महाप्रभुनके मार्गकी तो यह मर्यादा है जे श्री ङादुर-  
 ञ्जके आगे भाग धरिये सो आरोगे उदाय धरिये सो सामग्री होय  
 सो न आरोगे तो श्री ङादुरञ्जने आचार्यञ्ज महाप्रभुनके मार्गकी  
 मर्यादा छोडी तो कदाचित मोहुंको छोडे याके लीअे वा क्षत्राणीने छाती  
 कुटी तब श्री ङादुरञ्जने कछो जे तुतो आनही लेजो करि निवरी  
 नित्यनर्त्त कहा नहोती तब याको निश्चय ज्यो मार्गकी मर्यादातो श्री ङादुर-  
 ञ्जने नांही छोडी हें दसवारह दिनको निश्चंत होय बैठती ताके ली-  
 अे श्री ङादुरञ्ज आरोगे ताते यह क्षत्राणी ऐसी परम भगवदीयही  
 तिनको श्री ङादुरञ्ज सेवा ते ऐक क्षण हुं स्वास्थहें न देते नांही  
 सेवामे सदा आरति रहै सो कियो वा क्षत्राणी सों श्री ङादुरञ्ज ऐसे  
 सानुंभाव हुते जे यहिये सो मांगि लेते ऐसी कृपा पात्र भगवदीय  
 ही ताते धनकी वार्ता को पार नाही सो कहां तांछ लिजिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥११॥ वैष्णव ॥४३॥ सं० ॥ ११३ ॥

अवग्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक सास

वहू दोऊ क्षत्राणी सासको नांम गोरजा

वहूको नांम समराई सिंहनंदकी वासी

तिनकी वार्ता लिख्यते.

सो धनके मांये श्री आचार्यञ्ज महाप्रभुनने श्री दामोदरञ्ज-  
 की सेवा पधराई हुनी सो धनसास पाहुनते श्री ङादुरञ्ज बहुत सा-  
 नु भाव हुते सो ऐक समे श्री आचार्यञ्ज महाप्रभु आप याने  
 स्वर पधारे तब याने स्वरहंमि रहे परीसीहंनंदन पधारते जे कहते  
 जे याने स्वर और सीहंनंदके वीयसरस्वती नदीहै सो श्री आचार्य-  
 ञ्ज महाप्रभु सरस्वती उलंघन न करते कहते जे आप आचार्यहो  
 ताते आप यानेस्वरहंमि रहते सो श्री आचार्यञ्ज महाप्रभु आप

ધાનસ્વર પધારે તવ સાસને બહુસો કહ્યો નેમે શ્રી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુનકે દર્શનકો જાતહોં તુ શ્રી ઠાકુરજીકી સેવા નીકીબાંતિસાં કરિ  
 ખો સિંગાર કરિ રસોઈ કરિ કે ભાગ સમર્પીયો છતનો વહુસો સાસ  
 કહિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શનકો ગર્હ તવ બહુ-હાયકે સેવા  
 કરન લાગી જવ પાક સિદ્ધિ બયો તવ શ્રી ઠાકુરજીકો ભાગ સમર્પ્યો  
 તવ સમય બયો તખ ભાગ સરાવન ગર્હ તવ દેખે તો સામગ્રી સવ  
 યથાસ્થિતિ જ્યોકી તોહે તવ વહુને વીનતીકીના ને મહારાજને કછુ  
 જનત નાહી ઐર સાસને તોમો સોં કહ્યો નાહી ઐર તુમ આરો-  
 ગત નાહી સો કહે તે અવહે કહા કરૂં એસે વહુત વિલવિજાયકે એદ  
 કરન લાગી ને મોસો કછુ ચુક પરી હોઈગી રસોઈ આછીનબઈ હો-  
 ઈગી તથા પાત્રમાં જીવે મે શુદ્ધનબએ હોયગે કછુ તો બયો હોયગો  
 ને શ્રી ઠાકુરજી આરોગત નાહી પાછે બોગસરાય પાત્ર માંજે આછી  
 બાંતિ સોં ઘોય પોછિકે ફેરિ રસોઈ કરી દુસરીવાર જવ પાક સિદ્ધિ  
 બયો તખ શ્રી ઠાકુરજીકો ભાગ સમર્પ્યો ઐર મનમે કહન જય ને  
 મોતે કછુ ચુક પરિ હોયગી હોતો કછુ જનત નાહી કહા બયો તાતે  
 શ્રી ઠાકુરજી આરોગે ન હોયગે અખ આછા બાંસોં પાત્ર માંજીકે રસો-  
 ઈ કરીહૈ સો અખ શ્રી ઠાકુરજી આરોગેગે સો જવ સમય બયો તવ  
 દુસરી વેર ભાગ સરાવન ગર્હ તવ દેખે તો શ્રી ઠાકુરજીકે આગે સા-  
 મગ્રી યથાસ્થિતીહૈ તખ ફેરિ વિલવિજાયે રોવૈ ઐર વીનતી કરૈ ઐર  
 કહે ને મહારાજ હો કછુ જનત નાહી સોં તુમ કયોં નાંહી આરોગત  
 ઐર અપને મનમે વિચાર કરતી જય ને મોકો રસોઈ કરનો આ-  
 વત નાહી કે મેરી દેહકો કછુ દોષ હૈ એસે વિચાર કરત જય ઐર  
 ભાગ સરાવત જય ઐર છાતિ બરિ આવૈ ઐર કહે મેરો કોન અષ-  
 રાષ હોયગો ને શ્રી ઠાકુરજી આરોગત નાહી પાછે ફેરિ જવ પાત્ર  
 આછી બાંતિસોં માંજીકે ત્રીસરી વાર ભાગ સમર્પ્યો સમય બયો તવ  
 ભાગ સરાવન ગર્હ તખ ફેરિ સામગ્રી યથાસ્થિતિ હૈ તવ તો મહા એદ  
 બયો ને અખ હું કહા કરૂં શ્રી ઠાકુરજીબુજે રહેગે સાસને તો કછુ  
 મોસોં કહ્યો નાંહી એસે કહે તવ મૂંછા ખાયકે શ્રી ઠાકુરજીકે આગે બુ-  
 મિમે ગિરિ પરી ઐર બહુત દુખ કરન લાગી અમિત બહુત બઈ તાતે  
 વાકો તનક નિદ્રાહુ આઈ સવારેસોં જલહુ નાહી લીનો સો કંઠ જુદો  
 સુખે અતિ બ્યાકુલ હૈ કે પરિ તખ શ્રી ઠાકુરજીતે વાકો દુખ સહ્યો ન  
 મયો તવ સિંધાસનતે નીચે ઉતરી કે શ્રી ઠાકુરજીને વાસોં કહ્યો ને  
 તુ કાલેકો એદ કરત હૈહો તીન્યો વેર આરોગોહું તુ કછુ સંદેહ રૈમકિત

तब माने कह्यो जे मे कैसे जानुं तब श्री ढाकुरेणने कह्यो जे तु  
 भुज्जी है कछु आपसे तब कह्यो जे हुंतो न जाजिगी ज्य आपका  
 आरोगत देखुगी तब खेजगी तब श्री दामोदरुणने कह्यो परि यहतो  
 माने नाही तब आप जलकी ज़ारी लेके आये और कहे अरी तेरो  
 भयो सुयो जल है तुं तनक जल पानतो से तब श्री ढाकुरेण अप-  
 ने श्री हस्तसों वाके भुज्जमे जल बुझायो तब कह्यो जे सवारि तु दे-  
 जैगी सोमे आरोगुंगो तब उठि के सज्जडी महाप्रसाद सब गायनको  
 अवाय रसोच पोतके रसोचकी सामग्री सज्ज सिद्धि करि राजा रात्रिको  
 उरसाहसों सोय रही पाछे प्रातःकाल उठि के नित्यकर्म करी शनान करिके  
 तथा रसोच करि तब पाक सिद्धि भयो तब श्री ढाकुरेणको भाग सम-  
 र्प्यो. ज्य ठेरा सरकावत लागी तब श्री दामोदरुण जोसे जे तु अव  
 ठेरा कहिके सरकावत है अव तु देखि मे आरोगतहो और सब  
 सामग्री यथास्थिति रहैगी तब समराध तहां डाडी लध और श्री ढाकु-  
 रेण भोजन करत देखे तब श्री ढाकुरेण आप भोजन कीये पाछे  
 सब सामग्री थारमे ज्यों कीयों यथास्थिति रही तब श्री ढाकुरेणने  
 कही जे याही बातिसों तु नित्य जनि लीज्यो तब समराधने कही  
 जे महाराज होतो देखु तबही मानुं ता पाछे नित्य भाग धरे तब  
 श्री ढाकुरेणको भोजन करत देखे तब श्री ढाकुरेण हुं समराध के दे-  
 अत भोजन करे जे यहै सो भागि लेय पाछे हांसादिक करे पाछे  
 वाको सब रसको अनुभव करवायो सो समराध सकल रसको अनुभव  
 करन लागी तब यह जात श्री दामोदरुणने श्री आचार्यण महा  
 प्रभुनसो कह्यो तब श्री आचार्यण महाप्रभुनने समराधकी सास  
 गोरन सो कही जे श्री ढाकुरेण कछु सानुभाव जनावत हैं तब गोर-  
 न तो कछु भाली नाही पाछे गोरन श्री महाप्रभुनसों पिदा होयके  
 सीहनेंद अपने धर आध तब दुसरे दिन सासन सेवा करि रसोच  
 करिके श्री ढाकुरेणको भाग समर्प्यो ज्य भाग सरयो तब जहु ओकी  
 छी जे श्री ढाकुरेण आरोगे नाही तब सासन कह्यो जे सुनि वहु  
 श्री ढाकुरेणतो बरिका हैं ताते तोही सोही से होयगे ताते रसोच तु  
 भगि करि तब वहुने रसोच करी भाग समरपो तब श्री ढाकुरेणने  
 कह्यो जे भेतो अजही आरोगोहों तब वहुने कह्यो जे भेतो देखु  
 तब मानुं तब भाग समर्पि के कह्यो जे महाराज आरोगो तब स-  
 मराध के देअत श्री ढाकुरेण आरोगे सो जव सास रसोच करै तब  
 वहुको पुलावै जे थार से जल सो यह थार से जल के आरोगाव



દિન નીકો નાહો તવ પેટકી બ્યાધિ સમ દુરિ ભઈ પાછે દિન દોયનીન  
 વીતે તમ કૃશ્નાદાસીને વિચારયો ને અમ કૈરિ પૂછિયે ને આજ દિન  
 કેસો હે તવ કૃશ્નાદાસીને કૈરિ જયકે પૂછો ને આજ દિન કેસો હે તવ  
 વા નેતસીને કહ્યો ને આજ દિન અહુત નીકો હે તવ કૃશ્નાદાસીને  
 આપકે શ્રી રૂકિમન્દી અહુજસોં વીનતી કરિ કહ્યો ને મહારાજ અવ  
 પોઠિયે અવ વાલક પ્રગટ હોયતો બલો હૈ તવ અહુજમહારાજ પોઠો  
 તવ કૃશ્નાદાસીને અહુજમહારાજકે પેટપે હાથ ફેર્યો ઐર કહ્યો ને  
 મહારાજ અમ પધારિયે તવ શ્રી ગુસાંઈજી શ્રીનાથજીદ્વાર પધારે હુતે  
 તવ પેટમે બ્યા બઈ ઐર વાલકકો જન્મ બયો તમ તા સમે કૃશ્ના-  
 દાસીને શ્રી ગોકુલનાથજી નામ ધર્યો તા પાછે શ્રી ગુસાંઈજીકો વૈધ્યા  
 પડાયો તમ શ્રી ગુસાંઈજી અડેલકો પધારે તવ નામ કરણ કીયો તવ  
 શ્રીવલ્લભ નામ ધર્યો પરિ કૃશ્નાદાસીકી કાંનિતે શ્રી ગોકુલનાથજી નામ  
 રાખ્યો એસી કૃશ્નાકે ઉપર કૃપા ને જાકે કહેતે દોડિ નામ પ્રસિદ્ધિ ભાએ.

॥ વાર્તાપ્રસંગ ॥ ૧૧ ॥

પાછે શ્રી ધનશ્યામજીકો જન્મ બયો તવ નામ કરણ વિચારન  
 લાગે તવ શ્રી વલ્લભજીને કહ્યો ને શ્રી ગોકુલનાથજી નામ ધરો તવ  
 શ્રી ગુસાંઈજીને કહ્યો ને વહ નામતો તિહારો તવ દોડિ નામ પ્રમાણ  
 કીએ સો શ્રી વલ્લભકુન્દકે ત્રિપે સવકોડિ શ્રી વલ્લભનામ કહત હૈ ઐર  
 સવ જગતમે શ્રી ગોકુલનાથજી નામ પ્રસિદ્ધિ બયો ઐર જન્મપત્રમે  
 શ્રીકૃષ્ણ હૈ સો ગોપ્ય રાખ્યો. શ્રી ગુસાંઈજીને કહ્યો ને વહનામ ગોપ્ય  
 રહે તાતે કૃશ્નાદાસી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો એસી કૃપાપાત્ર હુતો  
 સો ધનકી વાર્તા કહાંતાંઈ લિખિયે.

॥ પ્રસંગ ॥ ૧૨ ॥ વૈશ્ણવ ॥ ૪૫ ॥

અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે

સેવક વુલામિશ્ર પંડિત તિ

નકી વાર્તાહૈ.

સો વુલામિશ્ર એક કપૂરક્ષત્રકે પ્રોહિત હુતે તાકી શ્રીકે સંતતિ ન  
 હુતી તવ વાને દુસરો વિચાર કિસે તાહુ શ્રીકે સંતતિ ન ભઈ તમ  
 અહુને વા ક્ષત્રીસોં કહ્યો ને તુમ હરિવંસપુરાણ સુનો તવ તુમહારે સંતતિ  
 હોયગી તમ વા ક્ષત્રીને જયકે વુલામિશ્રસો પ્રાચંતા કરી ને તુમ મોકો  
 હરિવંસ પુરાણ સુનાવો તમ વુલામિશ્રને કહ્યો ને અવતો મોકો અવ-



कास नाही ज्य अमकास होयगो तम तुम्हारे धर जयके सुनाउंगे  
तम वह क्षत्री अपने धर आपो ज्य अक महीना बीसो तम अक  
दिन अमानक जुलामिअ वा क्षत्र के धर पधारे तम जुलामिअको वा  
क्षत्रीने अहुत आदर सन्मान करयो तम जुलामिअने कछो ने गुम  
दोड स्त्री पुरुष श्नांत करिके आय जैठो तव दोड स्त्री पुरुष श्नांत करिके  
आय जैठे तव जुलामिअने देह सुद्ध होयवेके लीअके दान करवायो पाछे  
हरिवंस पुराणको अक श्लोक अंतको सुनायो सो.

**श्लोक ॥ इदं मयाते हरि कीर्तनं महत्**

**श्रीकृष्ण महात्म्या यपार मुदुतं**

**अव एयव स्त्री पुसमामुतफलै पच्यापि**

**लोके पुस दुर्लभं महत् १**

यह हरिवंस पुराणके अंतको श्लोक सो जुलामिअने वा क्षत्रीको  
सुनायो और आसीवाँद दीयो और भंताक्षत पढिके वा क्षत्रीकी वडी  
स्त्रीकी गोदमें दीअे तव वा क्षत्रीने कछो ने मिअ ७ गुमने यह कहा  
कीयो यहतो स्त्री धर्महुं नाही होतैहै तम जुलामिअने कछो ने ठाकुर ७  
सर्व सामर्थ्यांत हैं ने, देनहार होयगे तो याहीको पुत्र दधगे अवतो  
जेने याको अक्षत दीअे सोतो दीअे तव धतनो कहिके जुलामिअ अपने  
धरको अलन लागे तम उन स्त्रीने वहुत वीनती कीनी ने मोको संपू-  
रण हरिवंस पुराण सुनायो तम जुलामिअने कछो ने तोको श्री ठाकुर ७  
संपूरणको इल अकही श्लोकने दधगे असे कहिके जुलामिअतो अपने  
धरको आअे पाछे वा वडी स्त्रीको रिगु आअ पाछे गर्भवंत भअ तम  
कितनेक दिनने वाके पुत्र भयो वे जुलामिअ श्री महाप्रभुनके असे  
भगवदीय है तिनके अनुग्रहते वाके पुत्र भयो हरि वंस पुराणको अक  
श्लोक सुनेते संपूरण सुनेको इल भयो ताते जुलामिअ असे परम कृपा-  
पात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहांतांछ लिअिये.

आर्ता प्रसंग ॥१॥ अश्रव ॥४॥

**अव श्री आचार्यजी महाप्रभून के सेवक**

**मीरांवाड के प्रोहित रामदास**

**तिनकी वार्ता.**

सो अक दिन मीरांवाड के श्री ठाकुर ७ के आगे रामदास ७

कोतैन करत हुते सो रामदास७ श्री आचार्य७ महाप्रभुनके पदगा-  
 वत हुते तव भीरांया७ जोली जे दुसरो पद श्री ढाकुर७को गावे।  
 तव रामदास७ने कह्यो भीरांया७सों जे अरेदारी रांडप७को नको प-  
 दहै यह कहा तेरे असमको मुडहै जे न आनते तेरो मुहुंडो कव  
 हुनदे७जो तव तहांते सव कुट७को लेके रामदास७ छि असे तव  
 भीरांया७ने यह तेरो कह्यो परिरामदास७ रहे नाही पाछे किरिडे  
 वाको भुज न देख्यो ऐसे अपने प्रभुनसों अनुकृत हुते सोवादिन ते  
 भीरांया७को भुज न देख्यो वाकी वृत्ति छोडिदीनी इरि वाके आभके  
 आगे होय के निकसे नाही भीरांया७ने बहुत बुझाये परिवे रामदा-  
 स७ आये नाही तव धर जैठे मेठ पडा७ सोउ इरिदीनी और  
 कह्यो जे रांड तेरो श्री आचार्य७ महाप्रभुन उपर भगत नाही  
 जे हमको तेरी वृत्ति कहा करनीहै हमारे तो श्री आचार्य७ महाप्र-  
 भु सरवस्वहै हमतो उनरेछे उनविना हमारे सर्वस्व त्याग करनो उनके  
 यरेणारविदको आभय राखनो ऐसी वृत्ति यहतेरी हांछगीवे राम-  
 दास७श्री आचार्य७ महाप्रभुनके ऐसे परमकृपापाव भगवदीय हेता  
 ते धनकी वार्ता कहांता७ लिखिये।

॥ प्र १ ॥ अ ४७.

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक रा

मदास चोहांन तिनकी वार्ता

लिख्यते.

सो रामदास जोहांन श्री गोवर्द्धनकी कुंदराजे रहते सो प्रथम  
 जव श्री आचार्य७ महाप्रभु श्री नाथ७द्वार पधारे तव श्री गोव-  
 र्द्धननाथ७को पाठ जैठाये तव रामदास कुंदराजे शुं वाहिर आये त-  
 व श्री आचार्य७ महाप्रभुनने रामदास७ सो कह्यो जे रामदास-  
 ७ श्री गोवर्द्धनाथ७की सेवा सावधानी सों करियो तव रामदास७ने  
 अक भंदिरे छोटी सो छटनकी वनवाये तव श्री आचार्य७ महाप्र-  
 भुनने वा भंदिरे श्री नाथ७को पधराये सो पहले श्री गोवर्द्धनना-  
 थ७ श्री गोवर्द्धन पर्वत उपर गिरावते सो व्रज वासी लोगनने अक  
 दुसकी छानि करी राखी हुती ताछांनिमे वैडि तै और कयहु कयहु  
 दुष दही व्रज वासी समर्पि ते देवदमन यह नाम कहते सो दुष द-  
 ही भाखन सव आरोगते तथा श्री ओपाध बाज७ यह नाम कहते

( ११२ )

सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनने श्री गोवर्द्धननाथजीको मंदिरमे पध-  
राय पाछे श्री नाथजी नाम परगट भयो तथते सवकोडि श्री नाथजी  
कहत लागे वे रामदासजी श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे परम  
कृपापात्र भगवदी यहै ताते धनकी वार्ताको पार नाही सो अज कहां-  
तांछि क्षीयै.

प्रसंग ॥१॥ मैश्रव ॥४८॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

रामानंद पंडित सारस्वत ब्राह्मण

तिनकी वार्ता लिखियेतेहैं.

सो अेक सभे श्री आचार्यजी महाप्रभु थानेश्वर पधारे तहां रा-  
मानंद पंडित के धर उतरे सो रात्रिको उहां पोढे हुते सो जय  
पिछली रात्रि भठ तव रामानंद पंडितने अपनी स्त्रियों कछो जे  
भेगि उठि गोवर औरले सोकाको यहियेगो नातर सवारे ये वैष्णव  
उठेगे सो लेनयगे तय यह पात श्री आचार्यजी महाप्रभुनने सुनी  
ता सभे श्री आचार्यजी महाप्रभु हाथ पाव बोधयेको उठे हुते तय  
अति कोधवंत भये तव श्री आचार्यजी महाप्रभुनने रामानंद पंडितको  
बुझायो तव आप गडुवामे ते जल लेके वाडे हाथमे भेजि के मंत्र प  
ढि के यह जलसो वाडे छिरक्यो और अपने श्री मुण्डसों श्री आ-  
चार्यजी महाप्रभुनने कछो जे मे तेरो त्याग कीयो तेने मेरे सेव-  
कन सोपो कछो जे तुवेगि उठि गोवर और ले नातर जैभनव उठे  
गे तो ले जलगे तो तु सवारे रसोइको सामान कहांते करेगो ऐसे क-  
हि के तहाते उठि यले क्षण अेक रहे नाही सो थाने स्वरते अेक  
गामता उपर मही तथिहै तहां आयके आप रानां कीयो सो जयश्री  
आचार्यजी महाप्रभु रामानंद पंडितके धरते अजन लागे तय थाने  
स्वरके वैसनवने अहुत वीनती कीनी परीश्री आचार्यजी महाप्रभु रहे  
नाही और कछो जे मे छहां रहि के जलपांन न करेगो तापाछे  
काहुने रामानंद पंडित पास नाम पायोहो तिनसों श्री गुसांभजी गं-  
गोब्य कहेते तवश्री आचार्यजी महाप्रभु थानेश्वर पधारे पाछे  
रामानंदकी अवस्था विक्रमदवाद तय वज्रमे जे अस्तुहो तो सोआतो  
कछु मर्यादा नरही परिधतनी मर्यादातो करे जे आपसो समर्पिके आप यो  
कहैं जे श्री गोवरधननाथजी तुम आरोगियो छतनो कही के मुण मे  
लेमे सो अेक दिन हलवाइकी दुकान पै जखनी अहुत आछी दूनीसो

જલેવી વાગે તે લેકે કહ્યો જો શ્રી નાથજી તુમ આરોગિયો એસે કહિકે આંઘસો તાસમે શ્રી નાથજીને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુસો કહ્યો જો આજતો હમને જલેવી બહુત આઘી આરોગીહે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો કોને સમર્પિહે તવશ્રી નાથજીને કહ્યો જો તુમ્હારે સેવક રામાનંદને સમર્પિહે તવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો મહારાજમે તો વાકો ત્યાગ કીયો તુમ વાકે ઈહાં ક્યો આરોગીહે તવશ્રી નાથજીને કહ્યો જો તુમ મોકો કહિકો સોંપત- હો હમ તુમ્હારી કાનિતે અંગીકાર કરતહે તુમહમકો જાકો સોંપતહે તા- કો તુમ ત્યાગ કરતહો પરિહમ તુમ્હારે સોંપેકો નાહી છોડતહે તવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ચુપ કરી રહે તવ યહવાત શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદરદાસ હરસાની સો કહી તમ દમોદરદાસ હરસાનીની વીનતીકીની જો મહારાજ આપયકો અંગીકારક કરોગે તમ શ્રી આ- ચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદરદાસસો કહ્યો જોવાસો અવ વૈસ્નવકો અપરાધ પડોગો તો હમવાકો લક્ષ જન્મ પાછે અંગીકાર કરોગે શરી નાથજીને અંગીકાર કીયો તોહે પરિ ઇતનો અંતરાય બયો તાતે બૈસ્ન વ સો બોલનો સો વિચારીકે બોલનો વિના વિચારે સર્વથા બોલનો નાહી એસે બૈસ્નવકો રહેનો.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧ વૈશ્વવ ૧૪૮૫

અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભૂન કે સેવક

વિસ્નવદાસ છીપાતિનકી વાર્તા

લિપિયતે.

સો વિષ્ણુદાસ વૃદ્ધ બએ તમ શ્રી ગોકુલમે શ્રી ગુસાંઈજીકી એકક કે દ્વારેકી દ્વાર પાલકી કરતે એાર કોઈ પંડીત આવતો તાસોં વિષ્ણુદાસ પુછતે જો તુમ ક્યો આવેસો એાર કહાં જાતહો તવ ઉન પંડીતનને કહ્યો જો હમશ્રી ગુસાંઈજીકે પાસવાદ કરન આવેહે તવ વિષ્ણુદાસને ઉન પંડીતનસોં કહ્યો જો તુમ મોસો વાદ કરોલિડ તવ વિષ્ણુદાસ ઉન પંડીતન સો વાદ કરિકે નિરૂત્તર કરી દેતે વ્યાકરન સાસ્ત્ર પુરાંણ ઇતિહાસ સમ સાસ્ત્રનકે વચન લેકે નિરૂત્તર કરી દેતે તખવે પંડીત અપને મનમે સમાધાન કરીકે પાછે ફિરો જાતે એાર એ પંડીત અપને મનમે કહતે જો જીનકે દ્વાર પાલક એસેહે તો તિનકે ધનીકો કહા વાતહોયયો સો શ્રી ગુસાંઈજી લોંકાહુ પંડીતકોં ન જનદેતે ધર હીતેવે પંડીત નીરૂત્તર હોયકે ફિરો જાતે તમ એક દિન શ્રી ગુસાંઈ-

જીને કહ્યો જો કોઈ પંડીત અપવાદ કરેનકોં નાહી આવત સો કહેતે તમ વૈષ્ણવનને કહ્યો જો મહારાજ ઉન પંડીતનકોં વિષ્ણુદાસ નિરૂપર કરિ દેતહે તાતે પંડીત અપને મનમે સમાધાન કરીકે ફીરો જાતહે તમ શ્રી ગુસાંઈજી આ મુખસોં કહ્યો જો વીષ્ણુદાસ તુમકો તો શ્રી મહાપ્રભુનકી કૃપાતે એસી સામર્થ્યહે જો તુમ પંડીતનકોં જીતકે નિરૂપર કરે દેતહે પરોઢિત આદ્યજનકોં અતિક્રમ હોતહે તાતે અપ જો કોઈ પંડીતવાદ કરેનકોં આવે તાકોં હમારે પાસ આવતદીજો તમ ઉન પંડીતનકોં જનન દેતેવે વિષ્ણુદાસ આ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે એસે પરમકૃપાપાત્ર ભગવદીયહે ઉનકોં એમી સામર્થ્ય હુતી જો પંડીતનકોં નિરૂપર કરિ કૃપા ન કરેતે.

### વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧

ઐર એક ભટ્ટ હુતો સો શ્રી ગુસાંઈજી સોં કહ્યો જો તુમહારે સેવકનકોં મે જીમાંડિ તવ શ્રી ગુસાંઈજી ચુપ કરી રહેતે સો વહ શ્રી ગુસાંઈજીકો મુસર હુતે આધન સ્થાંમજીકો નાના હુતો સો એક દિનવા ભટ્ટને શ્રી ગુસાંઈજીકો નોત્યો તમશ્રી ગુસાંઈજી ઉનકે ઘર ભોજનકો પધારે તવ તહાં વિષ્ણુદાસ જનપાંનકો ગડુતા લેકે સાથ ગએ તમ શ્રી ગુસાંઈજી ભોજન કરિકે ઉઠે તવશ્રી ગુસાંઈજીકો વિષ્ણુદાસને શુદ્ધ આચમન કરવાયો પાછે શ્રી ગુસાંઈજી મંદીરમે પધારે તમ વિષ્ણુદાસ કો શ્રી ગુસાંઈજીને આગ્યાદીની જો તુમ પ્રસાદ લેકે વેગે આહયો સો જા ધારમે શ્રી ગુસાંઈજી ભોજનદીજો હુતે તા ધારમે તે પ્રસાદ અપની પાતરિમે ધરિકે ધાર લોચધર્યો પાછે આપ પ્રસાદ લેવેકોં બેઠે તમ ભટ્ટજી ઐર સામગ્રી લેકે આએ તમ વિષ્ણુદાસને કહ્યો જો મોકો નાહી અહિયત તમ ભટ્ટને કહ્યો જો મુંડિન કાલિકોં લેતહો નીકી સામગ્રી લેકે તમ વિષ્ણુદાસને કહ્યો જો મોકો નાહી અહિયત મેરીપા તરિમે ડારોગે તો મેરી પાતરી છુઠ જાગી તવ ભટ્ટજીકો ક્રોધ ભયો પાછે ઉન ભટ્ટનીને શ્રી ગુસાંઈજી સોં કહ્યો જો તુમહારે મુદ્રને મોસોં એસે કહ્યો જો મેરી પાતરામે મતિડારો ઐર ડારોગે તો મેરી પાતરી છુઠ જાગી તમ શ્રી ગુસાંઈજી ચુપ કરી રહે પાછે શ્રી ગુસાંઈજી મુસિકાયકે ભટ્ટજી સોં કહ્યો જો તુમ હમારે સેવકનકોં જીમાંવન કહત હુતે સો તુમસોં એક હમાસે મુદ્રન જીમાંયો ગયો ઐર સેવકનકોં કૈસે જીમાંવોગે તવ ભટ્ટજી મુસિકાયકે ચુપ કરિ રહેસો બે વિષ્ણુદાસ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે એસે પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીયહે તાતે હનકી વાર્તાકો પાર નાહી સો અપ કહાંતાંઈ લિખિયે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૨ ॥ વૈશ્ણવ ॥ ૫૦ ॥ સંબંધ.

अवधूती आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

जीवनदास क्षत्री कपूर सीहनंदके

बासी तिनकी वार्ता.

सो ऐकसमे सीहनंदके सव जैश्रव मिलिके श्री आचार्यजी महा-  
प्रभुनके दर्शनको अउर आगत हुते सो ऐकदिन मार्गमे मन्त्र जप  
उतरे तहां सय जैश्रव अपने अपने योका देत हुते ता समय मेह  
यदि आपो तव जैश्रवनने कखो जे वर्या आपो ऐसो कार्य भयो तव  
जवनदास जोखे जे तुम यिंतां मति करो तय जवनदासने श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनकी नाम लेके मेहको आनिदीनी जे तोको श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनकी आनि हें जे तु वर्ये मति तव यह मेह  
रहि गयो पाछे सव जैश्रवनने भोग समर्पि महाप्रसाद लीयो तहां रात्रिको  
सोअे ता पाछे सय जैश्रव अउर आअे तव श्री आचार्यजी महा-  
प्रभुनको दर्शन कीयो पाछे यह जात सवनने श्री गुसांईजीसों कही जे  
महाराज ऐक दिन हम सय जैश्रव पाक करत हुते ता सभे मेह यदि  
आपो तय जवनदासने आपकी आनिदेके ऐसे कहिके मेहको वरन्थो  
तय यह सुनिके जवनदाससों श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पूछो और  
कखो जे क्यारे तेने हमारी आनिदीनी और कदाचित वर्या होती  
तो तुं कहा करतो तय जवनदासने कखो जे महाराज यह क्षेत्र हें  
जे आपकी आनि दीअे उपरांत वर्ये यह छंदकी कहा सामर्थ्य हें  
तय यह जात जवनदासकी सुनिके श्री आचार्यजी महाप्रभु मुसिकापके  
मुप करिरहे उन जवनदासपै श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी ऐसी कृपा  
हुती उन जवनदासको श्री आचार्यजी महाप्रभुनके श्रवणको ऐसो ग्यान  
हुतो सो आनिदेके मेह वरन्थो तिनकी कहा कहिये तव जैश्रवनने कखो  
ये अउ भगवदीय हें ये जवनदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे  
परम कृपापात्र भगवदीय हे ताते छनकी वार्ता अय कहांताई लिअिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैश्रव ५१ ॥

अवधूती आचार्यजी महाप्रभूनके

सेवक भगवानदास सारस्वत

तिनकी वार्ता.

सो उन भगवानदासने श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी सेवा नीकी

भातिसों कीनी तव श्री आचार्य७ महाप्रभु भगवानदासके उपर पहु  
त प्रसन्न भये तव भगवानदासको श्री आचार्य७ महाप्रभुनने आप  
कृपा करिके अपनी श्री पादुका७की सेवा दीनी जे तु धनकी सेवा  
नीकी भातिसों करीये तव भगवानदास श्री पादुका७की सेवा नीकी  
भातिसो करते सो ऐसी भातिसों सेवा करते जे श्री ढाकुर७  
धनसों सानुभाव हुते वा ते करते सो ऐक सभ श्री आचार्य७ म-  
हाप्रभु भगवानदासके घर पधारे सो न ठोर श्री आचार्य७ महाप्रभु  
जिराजत हे ता ठोर नित्य छिड़के सवारे भगवानदास दंडोत करते सो  
याते वा ठोरपर कोउ पाव न धरतो ऐसो इनको भाव होसो वे भगवा-  
नदास श्री आचार्य७ महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते  
धनकी वार्ता कहंतांछ जिमिये.

॥ वार्ता ॥ १ ॥ वैश्रव ॥ पर ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

भगवानदास श्रीनाथजीके भीत-

रिया तिनकी वार्ता है.

सो ऐक सभ श्री नाथ७के आज्ञायोगकी सामग्री करत भगवानदास  
सों कछु सामग्री दाजी तव श्री गुसांछ७ भगवानदासके उपर पहुत  
जीजे और भगवान दासों सेवा ते भग्य ऐहारे सो भगवानदास  
गोविंद कुंड उपर आर्य अश्रुत दासके पास आव्ये पाछे श्री गु  
सांछ७ आपठानं करि वेको गोविंद कुंड उपर पधारे और भगवा-  
नदासतो पूछरीकी और अश्रुत दासके पास हुते सो भगवानदासने  
सभ समाचार कहे पाछे जय श्री गुसांछ७ गोविंद कुंड स्नान करि  
के अश्रुत दासको दर्शन देन पधारे तय श्री गुसांछ७के दर्शन करिके  
अश्रुत दासकी आंजनमिसु आंसुनको प्रवाह अहो सो दृष्टिके  
अश्रुत दासको श्री गुसांछ७ने अश्रुत दाससों पूछो जे अश्रुतदास  
तुमको ऐसो दुःख कहा है तव अश्रुत दासने श्री गुसांछ७सो कह्यो  
जे महाराज श्री आचार्य७ महाप्रभुनको तो श्री नाथ७ने आग्या  
दीनीहि जे तुम जवनको अन्नसंभंघ करावो सो साठलाख जवनको  
तुम द्वार अंगीकार करनो हैं और श्री आचार्य७ महाप्रभुनने तो  
तुमको सोपेहैं और तुम जवनको अपराध जेन लागे और जवतो  
सदा अपराध हाति भरयो है और जवनको अंगीकार करनो तुम्हारे

हाथ है ताते अय्य जवनको अंगीकार कैसे होयगो तय श्री गुसांईजी यह  
 वान सुनि के आप भगवानदासको हाथ पकरि के श्री गोवर्धन परवत उपर  
 ले अहे और श्रीगोवर्धननाथजीकी सेवा न रीतिसों करते ता रीतिसों सेवा  
 करनकी आग्या दीनी और कही ने अवत सावधानीसों सेवा करियो और  
 सामग्री आछी भांतिसो करियो तय भगवानदासने ता समय श्री गुसां-  
 ईजीके आगे नयो पद करि के गायो सो पद ॥ राग सारंग ॥ श्री विठ्ठलस  
 यरणु कमल ॥ सो यह पद गायो सो सुनि के श्री गुसांईजी बहुत  
 प्रसन्न भये पाछे भगवानदास सावधानीसों सेवा करन लागे ताते  
 भगवानदास श्री आचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपा पात्र भगवदी  
 यह सो धनकी वार्ता कहां तांछ लिखिये.

॥ प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥ ५३ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

अच्युतदास सनोडिया ब्राह्मण

तिनकी वार्ता है.

सोवे अच्युतदास मानसी गंगा उपर रहते तहां अकतीर्थ है  
 तहां रहते सो नित्य अंगार के समे श्री नाथजीके दर्शनको आवते  
 सो दर्शन करि के अपने शयनको आवते सो उन अच्युतदासने श्री  
 नाथजीकी तीनि परिकृमां दंडोति करि हुती तय श्री गुसांईजी अच्युत  
 दासके उपर बहुत प्रसन्न भये और श्री गुसांईजी अपने श्री भु-  
 न्सों कहते ने अच्युतदास जे भगवदीय है और जे महापुरुष  
 है सोवे अच्युतदास श्री आचार्यजी महाप्रभुनके तथा श्री गुसांई-  
 जी के ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहां  
 तांछ लिखिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥ ५४ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेव-

क अच्युतदास गोड ब्राह्मण

तिनकी वार्ता लिख्यते

सोवे अच्युतदास जे भगवदीय है और श्री आचार्यजी म-  
 हाप्रभुनके धनके माथे श्री मदनमोहनजीकी सेवा पधराई हुती और



આપકો પાઠ બૈઠારે હુતે સો અચ્યુતદાસ ઓ મદનમોહનજીકી સેવા નીકી બાંતિસોં કરતે તખ ઓ મદનમોહનજી આપ અચ્યુતદાસસોં સાનુભાવ હુતે વા તે કરતે ઐર અચ્યુતદાસ ઉપર ઓ ઠાકુરજી ઐસી કૃપા કરતે ઐર એક દિન અચ્યુતદાસ ઓ નાથજી કે દર્શનકો આંવત હુતે તખ ઓ ગોવર્ધન નાથજીકી એક દંડોતી પરિક્રમા કરતે ઐસે ભગવદીય હે ઐર જખ ઓ ગુસાંઈજીકે પાસ આવતે તવ ઓ ગુસાંઈજી અચ્યુતદાસકો દંડોત ન કરન દેતે ઐર કહતે જો ઐસે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે કૃપા પાવ ભગવદીય હે તાતે ઈનકો દંડોત ન કરન દીજીએ પાછે જખ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનને લૌકિક લીલા આસુરઆ મોહ લીલા દિખાઈ તખ અચ્યુતદાસને ઓ મદન મોહનજીકો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ઘર પધરાએ આપ ઓ વદ્રી-નાથજીકે દરશનકો ઉઠિ ગએ તવ ઉહાં જાયકે ઓ વદ્રી નાથજીકે દર્શન કરિકે અંબ જલકો ત્યાગ કરિ અપની દેહ છોડી પાછે ઓ મદનમોહનજીકો ઓ ગોપીનાથજીને ઓ ગોવર્દન નાથજીકે પાસ પધરાએ વે અચ્યુતદાસ ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે ઐસે ભગવદીય હે જીન ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સ્વરૂપ સાક્ષાત રરિ જાન્યો ઐર ઉતકી ઓ મહાપ્રભુનકે ઉપર બડો આસક્તિ હુતો જો પરોક્ષ બએ પાછે અંબ જલકો ત્યાગ કીયો તખ દેહ છોડી બક્તિ માર્ગકો સ્વરૂપ કેવલ વિરહાસક્તિ હે સોવે અચ્યુતદાસ ઐસે ભગવદીય હે તાતે ઈનકી વાર્તા કહાં તાંઈ જિખિયે.

વાર્તા ॥ ૧ ॥ વૈશ્ણવ ॥૫૫॥

અવઘ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભૂનકે સેવક

અચ્યુતદાસ સારસ્વત બ્રાહ્મણ તિ-

નકી વાર્તાહૈ

સો એક સન્ને ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સંગ અચ્યુતદાસને પ્રધ્વી પરિક્રમાં કીની હુતી સો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનને અચ્યુતદાસકો અપની પાડુકાજીકી સેવાદીની સો અચ્યુતદાસને અતિ ઉત્તિમરી તિસોં ઓ પાડુકાજીકી સેવાકીની તાતે ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુ અચ્યુતદાસકો નિત્ય દર્શન દેતે ઐર જો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનને સંન્યાસ ગ્રહણકીયો સો કેવલ બિનકે બાવાર્થ કીયો તવએક વૈશ્ણવ સો ઓ આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો એક ડોગી કાસીકો બાડે ક-

री लाठि तय वह यम्य उंगी भाउ करी लायो ताके उपर  
 श्री आचार्यजी महाप्रभु यदिके जनारस पधारे तहां संन्यास  
 उठ महीना तांछ राख्यो तय वह जैनव जे कासीमे गयो  
 होसो कासीमे कजाये आयो तय अम्युतदास तथा सय वैभव  
 सो कह्यो जे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने संन्यास ग्रहण कीयो करी  
 कासी पधारे सो उहां उठ महीना तांछ रहे पाछे असुरेया मोहलीजा  
 दिपावतय अम्युतदासने वा वैभव सो कह्यो जे तोको भूम भयो  
 होयगो तय वा वैभवने कह्यो जे मे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके  
 साथ हुतो सोकासी ते दिके अमही हो आयोहो तय अम्युतदासने  
 कह्यो जे ऐसी प्रभु कयहु न करे जे जवनको आसुरेया मोहलीजा  
 दिपावतहैं तय अम्युतदासने मंदिरके किवाड जोतके वा जैस्तवको श्री  
 आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शन करवाये तय देखे तो श्री महाप्रभुजी  
 वरान्हें और पोथा देखतहैं तय वा वैभवने दंडोतकीनी तय श्री म-  
 हाप्रभुजीने कह्यो तुम कछु संदेह मति करो यह प्रागट्य लौकिक रीती  
 सो देह धरेकी लीलाहै और निवासन जैठिके अलौकिक लीला नित्य  
 है ताते यहलीला अमदसा अवतार प्रगट है ताते तहां आयेहै ताते  
 संदेह न करनो यह आसुरेया मोहलीजाहै सो श्री गुसांभजी सर्वोत्त-  
 मने लिजेहैं जे प्राकृतानु कृति व्याज मोहितायुरे मानुषः मनुष्य देह  
 धरे ताकी यहलीलाहै सो अम्युतदास ऐसे स्वरूप नेष्टिके जनको श्री  
 आचार्यजी महाप्रभुनके स्वरूपको ऐसे द्रढ विस्वासहोवे अम्युतदास  
 शरी आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीयहै ताते जनकी  
 वार्ता कहांतांछ लिप्पीये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ५६ ॥ संबंध ॥ १२८

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

नारायणदास अंवालयके वासी

तिनकी वार्ताहै.

सो ये नारायणदास दसाधिपतिके याकर हुते तिनको राजद्वारको  
 काम बहुत हुतो ताते श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनको आय सकते  
 नाहीं परि अंतःकरनमे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनकी आतुरता  
 बहुत जे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनको कय जगजग पर आय  
 सकते नाहीं ताते नारायणदासने एक याकर राज्यो ताको महीना

आरि इपैयाको कीनो और वासो कछो ने तेरो यह काम है ने मोको छिनु छिनु मे सुरति दियायो करि ने बैयाछु श्री आचार्यछु महा-प्रभुनके दर्शनको क्य सत्तोगे यह कहिके सुनाउ ने हमको श्री आचार्यछु महाप्रभुनके दर्शनकी सुधि रहे सो यह आकर योही कछो करे तय नारायणदास अपने कार्यमे बैठे तय आगे आये हाजे होयके अकधडी उपरांतक है ने बैयाछु श्री आचार्यछु महाप्रभुनके दर्शनको क्य नहुंगे ऐसे नित्य दिनप्रति कहै और नारायणदास श्री आचार्यछु महाप्रभुनको भेट बहुत पडावते नारायणदास ऐसे भगवदीय है सो उनको चित्त सदा श्री आचार्यछु महाप्रभुनके स्मरणविंदमे रहतो ताते श्री आचार्यछु महाप्रभु उनके उपर बहुत प्रसन्न रहते वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहांतां लिखिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ५७ ॥ संवत् १२८

## अवधू आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

नारायणदास भाट मथुरामें रहते

तिनकी वार्ता.

सो नारायणदासको श्री मदनमोहनछुने याग्या दीनी हुती ने वृंदावनमे अमुकी डार है। सो उहांसों काढिके मोको वाहिर पधराउ तय नारायणदास तहां नयके श्री मदनमोहनछुको वाहिर पधरायके पाछे नव श्री गोपीनाथछुने श्री मदनमोहनछुको सिंघासन पाट बैडारे तय दिननेकदिन तांछि नारायणदासने सेवा कीनी तय उनके पाछे उनको कोउ न हुतो ताते अंगाजी गोडिया सेवा करन लागे श्री गोपीनाथछुने पाट बैडारे ताते सय कोउ दर्शनको नत है वे नारायणदास ऐसे भगवदीय है तिनको श्री मदनमोहनछु आप कृपा करिके वृंदावन पधारे श्री मदनमोहनछुने श्री आचार्यछु महाप्रभुनको सेवक बनिके नारायणदासके उपर कृपा कीनी ताते वे नारायणदास श्री आचार्यछु महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहांतां लिखिये.

॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वैश्व ॥ ५८ ॥

## अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

### नारायणदास चौहान ठठेके

#### तिनकी वार्ता.

सो वे नारायणदास ठठेके पात्साहडे दीवान कुलकुलाना हुते जे नारायणदास दीवान करे सो कछु होय पाछे दिनके दिनमे वह पात्साह नारायणदासके उपर कोणो तय नारायणदासको पकरयो तय बहुत भारयो और बंदीजानेमे दे दीयो पाछे पयासजाय रूपाको दंड बाडेमाये कीयो सो दिनप्रति पांचहत्तर बरने और न दिन रूपा न बरे ता दिन नारायणदासके पांचसे कोरडा मारने पात्साहने ऐसे बंधान कीयो तय ऐसेमे श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक होइ बाध आह्वण तिनने अपने मनमे विचार कीयो जे ठठेमे नारायणदास दीवान है सो हम उनकेपास अले हमको अपनी कन्याको विवाह करनी है ताने जे वे कछु दयतो कन्याको विवाह करे सो ऐसे विचारिके वे होइ बाध अपने धरते ठठेको अले सो ठठेमे जय पहुंचे तय उहां जयके सुन्यो जे नारायणदासतो बंदीजानेमे परयो है तय वे होइ बाध अपने मनमे बहुतही विचार करन लागे जे अय कहा करीये तय ऐसे विचार धन होइ बाधने कीयो जे अय उहांसो अलिसे तय प्रातःकाल यह वान नारायणदासने सुनी जे वे होइ बाध श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक गाममे आये हैं सो उनने सुनी जे नारायणदासतो बंदीजानेमे पडे हैं ताते अय उहांसो प्रातःकाल अलेगे तय नारायणदासने उनकेपास मनुश्य पड़ायो और कहबाध पड़ाधने तुम आये सो मेरो पडा लाग्य है मेरेपास तुम प्रातःकाल होयके दर्शन अपने मोक्ष देके लैयो तय वे होइ बाध प्रातःकाल उठि देहकृति करी तिलक मुद्रा करि नित्य कर्मसो पहुंचिके श्री आचार्यजी महाप्रभुनका अरुणामृत और महाप्रसाद लेके जहां नारायणदास बंदीजानेमे हुते तहां होइ बाध नारायणदासके पास जय मिले तय नारायणदासके उनको देखिके परम आनंद लयो और बहुत प्रसन्न लये तय उन होइ बाधने अरुणामृत और महाप्रसाद नारायणदासको दीनो तय नारायणदासने लीनो और कछो जे मोक्ष बंदीजानेमे भिन्नको दर्शन लयो तय नारायणदासने श्री आचार्यजी महाप्रभुनके कुसल सभायार पूछे पाछे भगवद्वार्ताके प्रसंग करन लागे धननेमे नारायणदासके धरते

પાંચહજ્જર રૂપેયાનકી થેલી આઈ સો દારપાલનને થેલીનકે ઉપર મોહર  
 છાપ કરિકે નારાયણદાસકે પાસ પઠાઈ તવ નારાયણદાસને વે પાંચો થેલી  
 ઉન દોઝે બાહનદોસો પિ દોની ઝૌર દંડોત કીની ઝૌર કલ્હો ને અમ તુમ  
 વેગિ પધારો ઝૌર શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનકો મેરો દંડોત કરીયો ઝૌર તુ-  
 મ અપની કંન્યાકો વિવાહ યા દ્રવ્યતે બલીભાંતિસોં કરિયો તવ વે દોઢે ભાઈ  
 અલ્હણુ નારાયણદાસતે વિદાય હોયકે ચલે તવ ઇતનેમે પાત્સા બોલ્યો  
 ને પાંચો થેલી નારાયણદાસવારી લાયો તવ દરવાન બોલ્યો ને પાંચો  
 થેલીન ઉપર મોહરછાપ કરિકે નિત્ય નારાયણદાસકે પાસ પઠાવત હૈ ત્યોહીં  
 પઠાઈ હૈ તમ પાત્સા બોલ્યો ને અનનસીકો વુજાવોં તવ મનુષ્ય  
 જનયકે અનનસીકો બુજાય લાએ તવ અનનસી આગે આય ઠાડો બયો  
 તવ પાત્સાહને અનનસીસો પૂછો ને કયોરે તેરે પાસ નારાયણદાસકે  
 પાસ તે પાંચો થેલી આઈ હૈ તવ અનનસીને કહી ને સાહ્ય મેરે  
 પાસનો નાહીં આઈ તવ પાત્સાહકો બહુત ક્રોધ બયો ઝૌર કલ્હો ને  
 નારાયણદાસકો બુલાવો તવ નારાયણદાસકો વંદીઆનેમે તે વુજાએ સો  
 લાયકે પાત્સાહકે આગે ઠાડો કીયો તમ નારાયણદાસતે પાત્સાહને પૂછો  
 ને નારાયણદાસ આજ થેલી કયોં નાહીં આઈ પાછે થોરોસો ગાડો  
 કોરડા કરિકે કોરડા વારો વુલાયો ઝૌર પાત્સાહને પાંચસૈ કોરડાકો  
 હુકમ દીયો ઝૌર પાત્સાહ બોલ્યો ને નારાયણદાસ સાંચ કહિ ને આજ  
 થેલી કયોં નાહીં આઈ દ્વાર પાલનનેતો મોહરછાપ કરિકે તેરે હવાલે  
 કીની ઝૌર તેને યહ કહા કીયો તુ સાચ કહી નાહીં કોરડા લાગત હૈ  
 તવ નારાયણદાસ સક્ષામ કરિકે બોલ્યો ને હજ્જરત આજ મેરે ગુરુભાઈ  
 આએ હુતે સો વે પાંચો થેલી ઉનકો દીની ઝૌર મેને અપને મનમે  
 કલ્હો ને મે આજ માર આઈ રહુંગો પરિ યહ ઘડી કહાં હે તવ પા-  
 ત્સાહ ચુપ કરી રહ્યો પાછે એક ઘડી વિચારકે કલ્હો ને મ્યાવામતુ  
 અપને ગુરુકે માર્ગમે એમો સાચો હૈ સો મે તેરે ઉપર વહુત પ્રસન્ન  
 બયો તવ પાત્સાહને વાહી સમય વેડી કટવાનકે ઘોડાસિરો પાઉ મગપકે  
 નારાયણદાસકો પહરાયો ઘોડા દીયો ઝૌર નિવાળ્યો તવ ફેરિકે અપનો  
 કુત્રકુલ્હાં દીમાંત રાખ્યો જૈસો પહલે હુતો તૈસોઈ કીયો કામ સવ  
 સોંખ્યો ઝૌર નારાયણદાસકે માથે દંડ કીયો હુતો સો સવ માફ કરિકે  
 સિરો પાવ પહરાયકે કલ્હો ને જા ધર હોય આઉ સો સિરો પાવ પહ-  
 રિકે ઘોડા ઉપર ચઢિકે નારાયણદાસ ધરકો ગએ સો વે દોઢે ભાઈ  
 વૈશ્વન ગામમેહીં હુતે સો વે દોઢે ભાઈ વૈશ્વનવ સુનિકે નારાયણદાસયોં  
 મિલિયકો આએ તવ નારાયણદાસ ઉનસોં મિલે ભેટે ઝૌર કલ્હો ને  
 મેરે ગુરુકે સેવક આએ તો મૈ છુટ્યો તમ ઉન વૈશ્વનને કલ્હો ને શ્રી

आचार्यजी महाप्रभुनकी कृपाते कयों न छुटे तब नारायणदासने हजर मोहरनकी ओक घेनी वैश्नवके हाथ श्री आचार्यजी महाप्रभुनको भेट पठाई पाछे वे दोड़ बाधे उहांसों बले सो कितनेक दिनमे श्री गोकुल आये तब श्री आचार्यजी महाप्रभु श्री गोकुलमे हुते सो उन दोड़ बाधे वैश्नवनने आये श्री आचार्यजी महाप्रभुनको दर्शन कीयो और नारायणदासकी हजर मोहरनकी घेनी आगे राखी तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने नारायणदासके कुसल समाचार पूछे तब उन वैश्नवनने सब समाचार कहे तब श्री आचार्यजी महाप्रभु अपने श्री मुअसों कहे जे नन्दा वैश्नव उपर ऐसे दोढ़ रहे है तांको कष्ट कयों रहे पाछे वे वैश्नव ब्राह्मण श्री आचार्यजी महाप्रभुनने विदा होयके अपने घरको गये सो वेठोका विवाह आछी बातिसों कीयो और पहले उनको नाम नरिया हुनो सो सेवक बने पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने नारायणदास नाम घरयो नन्दा ऐसे मन होय तापै श्री हाकुरेजी ऐसी कृपा करे प्रभुजीको नाम लकतवत्सल है सो अपनेको थोरेहीमे कृपा करत है सो वे नारायणदास ऐसे कृपापात्र हुते इनकी वार्ता कहांतांई लिखिये.

वार्ता ॥१॥ वैश्नव ॥५६॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुन के सेवक एक

क्षत्रांणी अकेली सीहनंदमे रहती

तिनकी वार्ता.

सो वा क्षत्रांणीके शरी नयनीन प्रियाजी निरजैके शरी हाकुरेजी सानु भावले सोचहवाधे अकिंयन सेवा नय करी पहुंचे तब सुकाते तांमे जे कछु वढती आवै तासों निर्वाह करे सो घरके द्वारे काछिन तरकारी भेयन आवे तब श्री हाकुरेजी मंदीरमे ते पुकारके कहे अरी अमुकीतरकारी विकन आहै तु ले ऐसे शरी हाकुरेजी कहे तब वह क्षत्रांणी सबबांतिकी तरकारी लेहिसो डेतिकनो कायों समर्थ डेतिक रसोअ मे छिके समर्थ और कणहुं काछिनको शब्द शरी हाकुरेजी न सुने और वह काछिन आगे निकसिजय तब वह बाधे सामग्री कछु लेन सके तब शरी हाकुरेजी वासो अहुत रास करे जैसे लौकिक लरिका राखि करे तैसे शरी हाकुरेजी वा क्षत्रांणी सों अगरो करे और ओक दिन कछु पकवान वाल जोगको होयन आपो तब रोटी बीसो सुपरकि

रात्रिके लीये हांकी राप्ती सो ज्वरात्री आधी लभ तय शरी हाकुरल  
 पोसे वा क्षत्राणी वाहकी जगार्ध और कहे नोहो लुप्पो हुं तयवा  
 वाधने कल्यो नो लाजल पक्वान तो कष्टु नाहीहै और रोटी धृतसें  
 चुपरी धरीहै तय शरी हाकुरल कहे नो लो रोटी हीजाउ तय वाधने  
 रोटी आगे आनि राप्ती तय शरी हाकुरलने वापासों कल्यो नो  
 तु मोको रोटीकी तुतरी करके दे तय वहवाध शरी हाकुरल के हस्तमे  
 लेके कतरि कतरी आरोगत नय पाछे जय पांन करके पोढे परीवा  
 क्षत्राणीके मनमे अहुत क्षीर्ध लयो और कल्योने सवारे उधारे लायके  
 पक्वान करी धरोगी नो रात्रिके शरी हाकुरलने कीकी अकेली रोटी  
 आरोगी पाछे दुसरे दिन पक्वान करी धरयो तय रात्रिके शरी हा-  
 कुरलने माग्यो तय पक्वान लेके आगे धरयो तयशरी हाकुरल  
 आरोगे तय कल्यो नो अमुकी तेने पक्वान तो धरयो परी मोको  
 पक्वान वीयरोंकीकी तुतरी अति अदभुत स्वाद लागी तय वा क्षत्रा-  
 णुनि कल्यो नो महाराजमे कहा कइ मेरे कांछ कमावानहारो तो है  
 नाही मे तो अकेलीहो मोते लोक वहु कष्टु होय आवत नाही तय शरी  
 हाकुरलने वा क्षत्राणी सों कल्यो नो तु नित्य पक्वान काहेको करतहै  
 तु मोको रोटी चुपरी के धरि राप्पो करी मोको तो तेरी रोटी अहुत र-  
 चीतहै ताते तु संकायमति करे हमको तो तेरी रोटी चुपरी अहुत  
 स्वाद लागतहै पाछे वह रोटी करी राप्ती सो शरी हाकुरल आरों-  
 गते वह क्षत्राणी शरी आचार्यल महाप्रभुतकी ऐसी कृपापात्र  
 भगवदीयही ताते धनकी वार्ता कहांतांछ लीर्षीये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्रव ॥ २० ॥

अवग्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

दामोदरदास कायस्थ सेरगढके

वासी तिनकी वार्ताहै.

सो तिनके सेव्य हाकुर शरी कपुररायलसो बहुत गौरस्वरूप हुतो  
 तिनके पास शरी नवनितप्रियाल बैडिते सो अक सभे दामोदरदासकी  
 स्त्री वीदयाध ताके उभा रहयो पाछे प्रसुत लभ सो पुत्र जन्म लयो  
 सो धरकी वहु भेरी सय प्रसुतके कामकाज करन लागी सो शरी हाकुरल  
 की सेवामां विजय लयो तय वीरवाध प्रसुतके ते बहुत कहै नो कोउ  
 सेवामे नहाउ शो हाकुरलकी सेवामे आवेर होत है परि काउ नहाय

नाही तब श्री हापुरजीने वीरवाधसों कइयो जे तु श्रानं करिसे सेवा  
 ज्यों नाही करत है तब वीरवाध प्रसुतकमे ते उठिसे श्री हापुरजीसों  
 कइयो जे महाराज मेरीनो यह विवस्था है ताते मोक्षतो सेवामे आ-  
 वनो नाही प्रसुतकमे हुं अपरस छुई जयगी तब श्री हापुरजीने  
 वीरवाधसों कइयो जे मोक्षतो सेवामे विद्वान् होतछे मोक्षो धननी अवार  
 भइहै औरको इन्हात नाही ताते तुही न्हाव तब यह वीरवाध श्री  
 हापुरजीके आग्रहने उठि के प्रसुतकमे ते न्हाइके काछ देके श्री हापुरजी  
 को सेवा करिसे पाछे भाग समर्थो पाछे समयानुसार भाग सरायके  
 अनोसार करिसे आप भोजन करिसे आपमे सोय रही श्री हापुरजी  
 की आग्या सों सेवा कीनीसो ऐसे यात्रीस दिनतांछ नित्य करती तब  
 श्री हापुरजीने कइयो जे तेने मेरी आग्या हु मानी और निद मार्गकी  
 रीतिहु राखी ताते श्री हापुरजी बहुत प्रसन्न भये तब यात्रीसदिन  
 बीते तब सुद्ध ज्ञान करिसे सेवा करने लागी पहिले के पात्र वस्त्र सब  
 अपरस दुरि कीने और दूसरे सब नये भगवाये पाछे भव्नीभांति-  
 सों सेवा करने लागी ताते पहवार आध श्री आचार्यजी महाप्रभु-  
 नकी ऐसी कृपा पात्र भगवदीयही ताते धनकी वार्ता अब कहां तांछ  
 न्तिजिये.

॥ प्रसंग ॥१॥ वैश्व ६१ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

स्त्री पुरुष दोउ क्षत्री हुते

तिनकी वार्ता.

सोचै स्त्री पुरुष दोउजने सोइन्दमे आय रहे सो यह घर निषट  
 छोटी हुनो ताते श्री हापुरजी ता सभे पैकि ते सो आधी कोठरीमे तो  
 रसोध करते और आधी कोठरीमे रहते और सैयाऊँ ठौर न हुती  
 ताते जेक वांसको भेडा करि राख्यो हुनो ताके उपर श्री हापुरजी पोह-  
 ते और आप स्त्री पुरुष दोउजने रात्रिके आगनमे सोय रहते अ-  
 से करत तब आतुरमासके दिन आय्ये तब जेह परसतो तोछ वे  
 आगनमे सोय रहते परि भीतर न सोवते तब श्री हापुरजी भीतरसों  
 पोहत जे अरे अमुका अमुकी हो तुम भोजन क्यों हो भीतर क्यों  
 नाहीं सोवत हो बाहिर कइके पोहो भोजन हो ताते तुम भीतर  
 आवो और हमनो जेये भेडापर हैं तुम नाये ज्यों नाही सोवतहो  
 तब वा क्षत्रांजुनि कइयो जे महाराज तुमतो जेये भेडा जपर



पोहतहो और मे नाचे कैसे सोख तब श्री गुरुजी प्रसन्न होय के कहें जे कुछ बाधक नाही तुम कुछ संकोच भति करो हम तुम तें प्रसन्न होयके कहत हैं वाते तुम भीतर प्युथीसों सोयरहो पाछे तब वे होउजने भीतर सोवन लागे परि ऐसी बातिसों सोवते भति कुहुं स्वास वाने ऐसे सावधानीसों सोवते सोवे श्री प्रभु श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे कृपा पात्र भगवदीय हे ताते इनकी वार्ता कहां तांछ लिखिये.

॥ प्रसंग ॥१॥ पैग ६२ ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

सुतार कारीगर अडेलमें रहते

तिनकी वार्ता है.

सो उन सुतार उपर श्री आचार्यजी महाप्रभु बहुत कृपा करते वा सुतार के ऐसों नेम हुतो जे श्री आचार्यजी महाप्रभुन के दर्शनविना ओकदिना नरहतो ताते वह सुतार सभ धरके कामकाज छोडके नित्य श्री आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनको आवतो तब धरके मनुष्य धरके बहुत दुःख पावते तकिजीऐ श्री आचार्यजी महाप्रभु आप वा सुतार के घर पधारते वासों श्री आचार्यजी महाप्रभु बहुत वार्ता करते और श्री आचार्यजी महाप्रभुनकी माता छलामा-गाइजी सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनसे बहुत भीजती और कहें जे तुम ऐसे अनुग्रहित क्यों करतहो ऐसे उचित नाही ऐसे कहके छत्रमागाइजी बहुत रिस करती परी श्री आचार्यजी महाप्रभु सोये पांचमे दिन तो पधार ते ऐसी कृपा श्री आचार्यजी महाप्रभु वा सुतार के उपर करते सो वह सुतार श्री आचार्यजी महाप्रभुनको ऐ-सो कृपा पात्र भगवदीयहे ताते इनकी वार्ता कहांतांछ लिखिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ पैक्ष ॥६३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

एक क्षत्री हुतो ताको अन्य मार्गी

यकोसनेह हुतो.

सो वा क्षत्रीसों अन्य मार्गीको स्नेह हुतो सो ओकदिन वहक्ष-

ત્રી અન્ય માર્ગીયકે ધર ગયો તમવા ક્ષત્રીસોં કહ્યો ને તુમ આન  
 હહાંઈ પાક કરિયો તવ વાકે આગ્રહતે વાક્ષત્રી જૈશ્વને પાક હહાંઈ  
 કીયો તમ પાક કરાકે વા અન્ય માર્ગીય ઠાકુરકે આગે શરી નાયજીકો નામ  
 લોકે ભાગ સમર્પ્યો પાછે સમયાનુ સારે ભોગસરાય વાકો પ્રસાદ દીયો  
 પાછે આપને બીયો પાછે વહાંઈ વિશ્વાંમ કીયો સો નિદ્રાવસ બચ્ચે  
 તવવા અન્ય માર્ગીયકે સેવ્ય સ્વરૂપને સ્વપ્નમે કહ્યો ને આન તો હમ  
 ભુખે રહે તમ વા અન્ય માર્ગીયને કહ્યો ને તુમકો તો વા વૈસ્નવને  
 પાક ભોગ સમર્પ્યોહો ઐરે તુમ ભુખેકેસે રહે ગચ્ચે તવ ઉનકે સેવ્ય  
 ઓ ઠાકુરજીને કહ્યો ને વહનો શી નાયજી આપ આરોગેહો હમકો તો  
 શી નાયજીને હહાં તે દુરી કીયો તમ વહ અન્ય માર્ગીયકો મિત્ર સો-  
 પ્યોહો તાકો જગાયો તમ વહ જગ્યો તમ સમ સમાચાર કહે તમ વા  
 ક્ષત્રીને કહ્યોનિ મે તો સોં કેતીકવાર કહ્યો ને તુ શી આચાર્યજી મ-  
 હાપ્રભુનકો સેવક હોઉ સોપાહીક લાંચે હમારે પ્રભુજી શી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુનકો કૃપાતે સેવક કે હાયકો આરોગરહે પાછે વહ અન્ય  
 માર્ગીયસવ દુર્દય સહિત શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી સરણ આપો  
 સવ સેવક બચ્ચે પાછે વાકે સ્વરૂપકો શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને  
 પંચામૃત સોં જ્ઞાન કરવાયો પાછે પાટ બેઠારેતા પાછે ભાગ સમર્પ્યો  
 સમયાનુ સારે ભોગસરાયકે સવ વૈસ્નવનકો પુજાય મહાપ્રસાદ જિવાયો  
 પાછે વહ અન્ય માર્ગીય શી ઠાકુરજીકી સેવા બલીભાંતિ સોં કરન  
 લાયકો પાછે વહ ક્ષત્રી બલો વૈસ્નવ ભગવદીય બયો વા ક્ષત્રી વૈસ્નવકે  
 સંગતે બલો ભગવદીય બયો તાતે સંગ કરનો તો ભગવદીયકા કરનો વહ  
 ક્ષત્રી વૈસ્નવ શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકા એસો કૃપાપાત્ર ભગવદીયહો  
 તાતે ઈનકી વાર્તા કહાંતાંઈ જિનિયે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧ જૈશ્વ ૧૧૬૪૧

અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક

લઘુ પુરુષોત્તમદાસ ક્ષત્રી તિનકી

વાર્તાહે.

સો વે લઘુ પુરુષોત્તમદાસ શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો તથા  
 શી નાયજીકો એક સારજનતે શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સ્વરૂપ  
 સાક્ષાત પુરુષોત્તમ કરી જનતે લઘુ પુરુષોત્તમદાસકી શી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુનકે ઉપર વડી આ શક્તિ હતી તાતે શી મહાપ્રભુજી લઘુ પુરુ-  
 શોત્તમદાસકે ઉપર વહુત પ્રસન્ન રહેતે લઘુ પુરુષોત્તમદાસ દુસરાં સ્વરૂ-

प जनते नाही शरी ढाडुरेणुको तथा शरी महाप्रभुणुकों अेक जनते  
वे लघु पुरषोत्तमदास अेसे कृपापात्र भगवदीये ते ताते धनको वार्ता  
कहांतांछ जिप्पिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥६५॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

कविराज भाट तिनकी

वार्ताहै.

सो वे कविराज भाट आंछणु हुते सोतीनीभाछ हुते सोती-  
न्यो भाछ श्री आचार्यणु महाप्रभुनके अेसे परम कृपापात्र भगवदी  
यमये उनको नाम समर्पण करवायो पाछे शरी नार्थणुके सनिधान  
बहुत कवित पढे नये नये कवित करि के शरी नाथणुके सनिधान कवित  
सुनावते पाछे शरी आचार्यणु महाप्रभुनके कवित बहुत कीअे ताते  
शरी आचार्यणु महाप्रभु कविराज भाट के उपर बहुत प्रसन्न रहते  
सो वे कविराज भाट शरी आचार्यणु महाप्रभुनके अेसे परम कृपा  
पात्र भगवदीये ते ताते धनकी वार्ता कहांतांछ जिप्पिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥ ६६ ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

गोपालदास टोराके वासी

तिनकी वार्ताहै.

सोगोपालदासके कीअे छंद अहुतहै सो गोपालदासकी श्री आ-  
चार्यणु महाप्रभुनके उपर बहुत आसक्ति हुती सो अेक समे गोपा-  
लदास अउेल आये सो दुसरे दिन श्री आचार्यणु महाप्रभुनके  
जन्म उत्सव हुतो सो श्री आचार्यणु महाप्रभु भाँडे पूजनको अेढे  
हुते ता समे गोपालदासने अेक नयो छंद करि के गायो सो पद ॥ राग  
विजावल ॥ माझ भास भरि वैशाख श्री जल्ल हरि जन्म ज.यो ॥  
यह सुनि के श्री आचार्यणु महाप्रभु अहुत प्रसन्न भये पाछे गोपा-  
लदासने अहुत छंद कये सोये गोपालदास श्री आचार्यणु महाप्र-  
भुनके अेसे कृपा पात्र भगवदीय है ताते धनकी वार्ता कहां ताछ  
जिप्पिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥ ६७ ॥

## अवधूती आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक जनार्दनदास चोपडा क्षत्री तिनकी वार्ता लिख्यते.

ऐक सभे श्री आचार्यछ महाप्रभु शरी नाथछ द्वार पधारे हुते पाछे शरी गोकुल आये तय जनार्दन दासने शरी महाप्रभुनको दर्शन कीयो तव कछो जे ये साक्षात पुरन पुरषोत्तम हैं छत्तर हे तव जनार्दन दासने वीनती कीनी जे महाराज मोक्षो सरलु लीछये तव शरी आचार्यछ महाप्रभुनने जनार्दन दासको आग्या दिनी जे स्नान करिके आछि तव जनार्दनदास स्नान करि के आयो और दंडोत कीनी और वीनती कीनी जे महाराज मोक्षो नाम समर्पण करवाछये तव आचार्यछ महाप्रभुनने शरी नाथछके सन्निधान जनार्दनदासको समर्पण करवायो पाछे शरी आचार्यछ महाप्रभुनकी कृपा पात्र ते जनार्दनदास जेसो जगवदीय ज्यो सो श्री आचार्यछ महाप्रभु जनार्दनदासके उपर बहुत कृपा पात्र करते ये जनार्दनदास शरी आचार्यछ महाप्रभुनके ऐसे कृपा पात्र जगवदीय हे सो जनकी वारता कहां ताछ लिखिये.

॥ वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैश्व ॥ १८ ॥

## अवधूती आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक गडुस्वामी सनोडिया ब्राह्मण तिनकी वार्ताहै.

सोये गडुस्वामी आप स्वामी कहावते सो ऐक सभे शरी आचार्यछ महाप्रभु वंदावनमे पधारे हुते तय गडुस्वामीको आग्या जेसो श्री ठाकुरछने कृपा करिके रात्रिके स्वप्नमे जनायो जे सवारे शरी आचार्यछ महाप्रभु कहां पधारेगे सोतु जनकी सरलु ज्यो तू सेवक हुज्यो तव शरी आचार्यछ महाप्रभु आप सवारे पधारे तव गडुस्वामी स्नान करिके जहां शरी आचार्यछ पधारे हुते तहां जये तव जयके गडुस्वामीने दंडोत कीनी और वीनती करि के कछो जे महाराज मोक्षो सरलु लीछये तव शरी आचार्यछ महाप्रभु मुसकाय के कछे जे तुमको आप स्वामीहो तुमको सेवक कैसे करिये तय गडुस्वामीने शरी आचार्यछ महाप्रभुनसे वीनती कीनी जे महाराज मोक्षो जगवद आग्या जेसो जे तू शरी आचार्यछ महाप्रभुनकी स-

રણુ બધાઓ તાતે મહારાજ મોકો સરણ લીજીએ તખ શરી આચર્ય  
જી મહાપ્રભુનને ગુસ્તામીકો નામ દીયો પાછે નિવેદન કરવાયો તખ  
પાછે ગુસ્તામીને જો શેવક કીએ હુતે તિન સવનકો શરી આચાર્ય  
જી મહાપ્રભુન પાસ નાંમ દિવાયો પાછે વે ગુસ્તામી વડે બગવદીય  
બએ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આય ગુસ્તામી કે ઊપર વહુત પ્ર-  
સન્ન રહતે શાયે ગુસ્તામી એશે બગવદીય હે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥૧૧॥ વૈશ્નવ ॥ ૬૯ ॥

## અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક કનૈયાં સાલક્ષત્રી તિનકી વાર્તાહૈ.

સો ઉન કનૈયા સાલક્ષત્રકે ઉપર શી આચાર્યજી મહાપ્રભુ વહુત  
પ્રસન્ન રહતે બી કૃપા કરતે શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને આપ કૃપા  
કરિકે અપને ગ્રંથ કનૈયા સાલકો પઠાએ સોઈ ગ્રંથ કનૈયા સાલકે પાસતે  
શી ગુસાંઈજીને પઠે સો શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી કૃપાતે સવસ્કુદ  
૩૫ બએ સો વે કનૈયા સાલક્ષત્રી શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે એસે  
પરમ કૃપાપાત્ર બગવદીય હે તાતે ઇનકી વાર્તા કહાંતાંઈ જિખિયે.

॥ વાર્તાપ્રસંગ ॥ ૧ ॥ વૈશ્નવ ॥ ૭૦ ॥

## અવશ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક નરહરદાસ ગોડીયા તિનકી વાર્તાહૈ.

સો એકદિન શી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને નરહરદાસકે ઘર શરી  
મદનમોહનજી પાટ વૈઠારે હુતે સો શરી મદનમોહનજીકી સેવા નરહર-  
દાસને નીકી બાંતિસોં કીની પાછે સરીર જવ પરચો તખ સેવા ન હોય  
આઈ તખ નરહરદાસને શરી ઠાકુરજી શરી ગુસાંઈજીકે ઘર પધરાએ  
ઓ શરી ગુસાંઈજી શરી રઘુનાયજીકે ઘર પધરાએ સો શરી ગોકુલચંદ્ર  
માજીકે પાસ જુદે પૈઠત હે ન્યારે સિંગાસન ઉપર વિરાજતે સો શરી  
ગુસાંઈજી નરહરદાસકે ઉપર વહુત પ્રસન્ન બએ વે એસે બગવદીય હે  
આર નરહરદાસને અપને મનમે ત્રિચારી જો શી ઠાકુરજી કહું ન  
સુખ પાવેંગે શી ગુસાંઈજીકે ઘર સુખ પાવેંગે શી ગુસાંઈજીકે એસે  
પરમકૃપાપાત્ર બગવદીય હે સો ઇનકી વાર્તા કહાંતાંઈ જિખિયે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥ ૧ ॥ વૈશ્નવ ॥ ૭૧ ॥

## अवश्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

### वाढरायणदास तिनकी वार्ता

#### लिख्यते.

सो वाढरायणदास और उनकी स्त्री मोरवीमि रहते सो वाढरायणदासको पहिलो नाम आता हुतो सो एक सभे आछे भट्ट द्वारिका शरी रणछोडण्डके दर्शनको जत हुते सो मोरवीमि रात्रिको वसे सो वाढरायणदासने उनको रात्रे तय वाढरायणदासने उनपास नाम पायो पाछे आछे भट्टकेपास शरी भागवत भवसु कीयो तय शरी भागवत संपूरण करिके वाढरायणदासते विद्या होयके आछे भट्टद्वारिका शरी रणछोडण्डके दर्शनको गये तय कितनेदिन पाछे शरी आचार्यण महाप्रभु आप द्वारिका शरी रणछोडण्डके दर्शनको पधारे हुते तय मोरवीमि उतरे सो वाढरायणदास और उनकी स्त्री होठि जनने शरी आचार्यण महाप्रभुनके पासकेरिके नामपायो पाछे समर्पण कीयो पा. ३ श्रीआचार्यण महाप्रभु आप मोरवीमिदिन होय रहेता पाछे शरी आचार्यण महाप्रभु आप श्री रणछोडण्डके दर्शनको पधारे तय वाढरायणदास और उनकी स्त्री शरी आचार्यण महाप्रभुनके संग गये तय होठि स्त्रीपुत्रय शरी आचार्यण महाप्रभुनकी सेवामे रहे सो उन होठिने ऐसी सेवा कीनी जे शरी आचार्यण महाप्रभु उनके उपर बहुत प्रसन्न भये तय पात्रो नाम पहिले वाढा हुतो सो शरी आचार्यण महाप्रभुनने पात्रो नाम वाढरायणदास धरयो ता पाछे शरी आचार्यण महाप्रभु द्वारिका सां गये तय वे होठि होनांजने शरी आचार्यण महाप्रभुनके साथ गये सो मोरवीमि साथ आये पाछे शरी आचार्यण महाप्रभुते आग्या मांगिके मोरवीमि रहे पाछे शरी आचार्यण महाप्रभु आप शरी गोकुल पधारे वे वाढरायणदास शरी आचार्यण महाप्रभुनके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते उनकी वार्ता कहांतांछि जियिये.

॥ प्रसंग ॥ १ ॥ वै० ७२

## अवश्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

### सदुपांडेमानिक चंदपांडे इनकी स्त्री

#### तथा नरोवेटी आन्योरमे रहत हुते.

सो जब शरी आचार्यण महाप्रभु प्रभु परीकृमा करत आर अंजने पधारे तय शरी नाथणने शरी आचार्यण महाप्रभुन सां क-

છો જો તુમ મેરી સેવાકો અન્નાવેઃ વજ્રમે શરી ગોવર્દન પર્વતહે તહાં  
 હમતીન દમનહે દેવ દમન નાગદમન ધૈં દમનતિનકે મધ્યમે હમ દેવ  
 દમનહે સો દેવદમન મેરો નામહે સદુપાંડેકો વડોભાઈ માનિકચંદ  
 પાંડેહે તહાં હમ પ્રગટ બએહે તવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પરીક્રમા  
 ઝારખંડમે રાખીકે વૃજકો પાઉ ધારેસો સેવક હુ પાંચસાત સાથહે દામો-  
 દરદાસ હરેસાંની કૃત્નદાસ મેધન રામદાસજી માધોદાસ પ્રમુત ધત્યાદિક  
 શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક સખ આપ્યોરમે આએસો સંધ્યા  
 સમે શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ સદુપાંડેકે ધર પાઉ ધારેસો એક  
 ખડો ચોંતરા સદુ પાંડેકે ધરકે દ્વારે હુતો તાકે ઉપર શરી આચાર્ય-  
 જી મહાપ્રભુ વીરાજે તવ સદુપંડેને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ  
 નસોકહ્યો જો રૂયામી કધ્ધુ ખાડિગે તવ શરી આચાર્યજી મ-  
 હાપ્રભુનને કહ્યો જો હમ તો કધ્ધુ ન ખાંઈગે તવ કૃત્નદાસ મેધનને  
 કહ્યો જોયેતો અપને સેવક કે હાથકો લેતહે વિના સેવક તોયે કાહુકે હાથ  
 કો લેત નાહી ધનનેમે શરી ગોવર્દન પર્વતતે શરી નાથજી પુકારે જો નરો  
 મેરો દુધ લાઉ તવનરોને કહી જો મહારાજ આજ તો હમારે પાહુને  
 આએહે તાતે દુધ નાહી તખ શરી નાથજીને કહીજો તેરે પાહુને આ-  
 એહે સોતોભલી બઈ હમ કહા કરે પરિમેરો દુધતો લાઉ તવનરો ખોલી  
 જો વારી લાલભાઈ તવનરો કઠોરા બરંકિ લે ગઈ શરી નાથજીકો પાપો  
 તવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદરદાસ સો પૂછોજો દમલાને  
 કધ્ધુ સુખો તવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જો યહ શબ્દ  
 ઐર ઝારખંડકો શબ્દ એક મિલતહે સોએસો જાતપો પરતહે જો ઇલાંઈ  
 પ્રગટેહે સતારે ચલેગે તવ ધતનેમે નરો દુધ પાયકે આઈ તવ શરી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુનને નરોસો પુછો જો તુ કહાં ગઈ ઐર કહાલે  
 ગઈ હુતી તવનરો ખોલીજો રાજ દેવદમનકો દુધ પાય આઈહો તવ-  
 નરોપે માંખો જોયામે દુધહે તવનરોને કહ્યો જો રંચકહે તવ શરી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો જોયામે તે અમ્યોહે સો હમકોદે તવનરો  
 ખોલી જો મહારાજ ધરમે વહુત દુધહે તવ સહુ પાંડેને શરી આચાર્ય-  
 રજી મહાપ્રભુનસોં વીનતી કીની જો મહારાજ મહારે આપજીતે અવ  
 હમકો નામ દીજીયે તવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે માનિકચંદ તથા  
 સદુ પાંડે તથા ધનકી સ્ત્રી તથા નરોયે સવ સેવક બએ ઉનકે ઉપર  
 આપને હાથ ફેર્યો ઐર નાંમ દાયો તાપાછે યહ દુધ લીયો પાછે ઉ-  
 નકે હુ ધરકો દુધ દહી સવ અંગીકાર કરો સો વે બલે ભગવદીયહે તવ  
 શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને સદુ પાંડેસો પુછો જો કહો પાંડે ઇલાં  
 ઉપર દેવદમન પ્રગટ બએહે સો કોન બાંતિસોં પ્રગટ બએહે તિનકો પ્રા-  
 ગથ તુમ હમસોં કહોસો શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ તો આપ સાક્ષાત

ઈશ્વરહે આપહી કરતહે ઐર આપહી યુક્તહે સો કહેતે જો આપજીને ઉપર કૃપા કરી વેકે લીએ તવ સદુપાડેને શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુન સો કહ્યોજો મહારાજ એક દમારે ગાંમકો વાજ હુતો સો સવ ગાંમકી યાવનકી ચરાવતો સો સવ પ્રકાર સદુપાડેને શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે આગે કહ્યો સો સવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ નને સુત્રો સા શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપતો પુરેન પુરુષોત્તમહે આપહી કરતહે સો વે સદુપાડે તથા માનિકચંદ પાડે ઐર સવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે એથે પરમ કૃપાપાત્ર ભગવદીયહે જીનકે પાસ-તે શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ તથા શરી નાયજી જો ચહિયેસો માંગિ-લે તે ઐર આપજીનકે ઘર પધારતે.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧

ઐર એકદીન શરી નાયજી જીનકે ઘર દુધ પીવનકો સોનેકો કટોરાલે આએ તવ શરી નાયજીને નરોસો કહ્યો જો દુધ લાઉ તવ નરોતો વા કટોરામે દુધ ડારત જાય ઐર શરી નાયજી આપ આરોગત જાય સો દુધ પીકે શરી નાયજી આપતો પધારે ઐર કટોરા ઉહાંઈ બુલિ આએ તવ સવારે ભએ પાછે મંગલા આરતી કે સમે બીતરિયા ને દખોતો મંદિરમે કટોરા નાહી તવ ઇતનમે નરો કટોરા લે આઈ ઐર ક્લેા જો વહ કટોરા લેઉ રાત્રિકો લરિકા બુતી આયોહે તમ સવજને બહુત પ્રસન્ન ભએ વહ નરે એસો ભગવદીયહી.

૧૧૧૨ વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૨૧

ઐર એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસો શ્રીનાથજીને કહ્યો જો મોકો ગાય મગાય દેઉ તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને દામોદર દાસ હરસાંતી સો કહ્યો જો શ્રી નાયજીને ગાયન કે લીએ આચાર્ય દીની હૈ સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને અપને હસ્તયો છલ્લા સુવર્ણકો દીનો ઐર દામોદરદાસ હરસાંતીસો કહ્યો યાકે દાંમનકી ગાય લે આવો તમ દામોદરદાસને વહ છલ્લા સદુપાડેકો દીનો ઐર કહ્યો જો યાકો વેચિકે યાકે દાંમનકી ગાય લે દેઉ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને ગાય મગાઈહે તમ સદુપાડેને કહ્યો જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ ગાયનકો કહા કરગે તવ દામોદરદાસને કહ્યો જો શ્રી નાયજીને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન સો ગાય મગાઈહે તાકે લીએ ઉતને ડહી તવ સદુપાડેને કહ્યો જો ઝેરે ઇહાં ગાયહે સોકો નકહે વે ઉતો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકાહે જો ચહિયે સો લીજીયે તવ દામોદરદાસને કહ્યો જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકી એસી નાહી આગ્યાહે તાતે યાકો વેચિકે ગાય લે દેઉ તવ સદુપાડેને વહ છલ્લા વેચિકે તાકી ગાય દે-યલે દીનો સોદોઉ ગાય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને શ્રી નાયજીકો સ-



मर्पी पाछे दस गाय सटुपाउने श्रीनाथजी की बेट कीनी पाछे सय वै-  
स्नवनको अन्तराध ने श्री नाथजी ने गायनके लीये श्री आचार्यजी  
महाप्रभुनसें आग्या करे है सो वैस्नवनने गाय पठाई काहुने दाय  
काहुने बारिकाहुने दस पठाई ऐसे करत होकसै के आसरे गाय बि-  
बी बध सो श्री नाथजीको गाय बहुत प्रियेहे तब ते श्री नाथजीको  
नाम गोपाल श्री आचार्यजी महाप्रभुनने धर्यो तब श्री गुसांईजी-  
ने गोपाल नामसें गोपाल पुरगाम वसायो ताहीते सुरदासजी ने श्री  
आचार्यजी महाप्रभुनके प्रगट गोपाल नामकी ओहे प्रथम गायसुर गा-  
यो सो वे सटुपाउ तथा नरोसवकीउ श्री आचार्यजी महाप्रभुनके ऐसे  
परम कृपापात्र भगवदीयहे सो धनकी वार्ताको पार नाही ताते धनकी  
वार्ता कहां तांछ लिखिये.

वार्ता प्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥७३॥ संबंध ॥१४६॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके

सेवक नरहरदास सन्यासी

निनकी वार्ता है.

सो ओक बेता कोठारी हुनो ताने प्रथम नरहरदास सन्यासी के  
पास नाम पायो हुनो सो ओक समे शरी आचार्यजी महाप्रभु आप  
द्वारिका पधारे हुने तब नरहरदास सन्यासी और बेता कोठारी शरी  
आचार्यजी महाप्रभुन के साथ हे सो द्वारिका गये तब शरी आचार्यजी  
महाप्रभुन आप नरहरदास सन्यासी के उपर बहुत प्रसन्न भये तब  
नरहरदास सन्यासीने जीनती कीनी ने महाराज मेरे उपर कृपा क-  
रिये तो मैं प्रार्थना करतहे तब शरी आचार्यजी महाप्रभु मुसिकायके  
बुध कर रहे पाछे कहे ने कहा प्रार्थना करत है तब नरहरदास स-  
न्यासी ने कछां ने महाराज बेता कोठारी को सरल लीजिये तब श-  
री आचार्यजी महाप्रभुनने कृपा करि के नाम सुनायो निवेदन करवा  
यो पाछे वे नरहरदास सन्यासी के उपर बहुत प्रसन्न भये सो वे न-  
रहरदास सन्यासी शरी आचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भ-  
गवदीय हे ताते धनकी वार्ता कहां तांछ लिखिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥१  
वैष्णव ॥ ७४ ॥ संबंध ॥ १४७ ॥

अथ श्री आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

गोपालदास जटाधारी श्रीनाथजी

## की खवासी करत हुते.

सो भीनाथल उनसो सानुभाव हुते और भरभी के दीनमे भीनाथलको भाग आनतो तय गोपालदास आप नेत्र मुदी के पंजा करते तय रात्रिको भीनाथल जगमोहनमे पोहते तहां गोपालदास ढांडे होय के आंखिमुंदिके पंजा करते आरि पहर ढांडे रहते परि देह आ लस कछु पाध न करतो रात्रि के विशे भीठापुरल के श्री स्वाभिल के अयन सुनतो तय आप श्री मुज्जते कहते जे गोपालदास आंखि जो ल देह तरो परदा कैसो तय गोपालदास कहते जे महाराज भोको श्री आचार्यल महाप्रभुनकी आग्या नाहि ताते में क्यो करी जोतो तय कवहु भीनाथल अपने श्री हस्त सों गोपालदास के मुज्जमें भेजते औ सी कृपा करते तय औशे करत कितनेक दिन वांते तय ओक दिन गोपालदासने विनती करी के कखो जे महाराज भोको प्रथमी परिक्रमा करि पेकी आग्या दीनमे भरो मनोरथ प्रथमी परिक्रमा करवैको है तय श्री आचार्यल महाप्रभुनने कखो जे अवग्य करिये पाछे गोपालदास आग्या भांगि के प्रथमी परिक्रमाको गये तय और वैष्णवनने कखो जे महाराज औशे कृपावको औशे मनक्यो कर होय तय श्री आचार्यल महाप्रभुनने कखो जे यह जयो ते है परिजय शोगो नाहि मज्जलि होय आरि जयगो तय पाको विरह होयगो ताविरह करि के याकी देह छुटेगी तय सय वैष्णवनने श्री आचार्यल महाप्रभुनसो विनती कीनी जे महाराज धनकी देह या भांति क्यो पडे तय श्री आचार्यल महाप्रभुनने कखो जे महद अपराध धन श्री ठापुरलसों विगाडी ताको नाम महद अपराध कहिये धनसों ओक महद अपराध पड्यो है तासों धनकी यह गति लभ तय सय वैष्णवनने पुछी जे महाराज धनकी देह या भांतिसों पडे तो सही परि महद अपराध कहिसों कहियतु है तय श्री आचार्यल महाप्रभुनने कही जे यह गोपाल पहले भीनाथल के आभकी रज्जवारी करतो सों ओक श्री ठापुरलको सेवक आबलुको जरिका हुतो सो रात्रि को वा आगमे ते डुल सुराय के ले जतो सो ओकदिन गोपालदासने वाको पकथो सो यह आनयो सो अपने मंदिरमे डुवक्यो सो गोपालदासने जय के वांके मुक्री मारी सो वात अय श्री ठापुरल को सुधि लभ जे वाको महद अपराध परयो है ताते प्रथमी परिक्रमाकी छच्छा लभ है सो गोपालदास पांय आरि मज्ज गयो पाछे विरह जयो सो विरह करि के गोपालदासने देह छोडि तय यह वात श्री आचार्यल महाप्रभुनने सुनी तय अपने श्री मुज्जते कहे जे गोपालदास के परसोकमे तो हानि नाही जे यह भीनाथल के अरुण पास पहुंच्यो ताते भगवदायको सर्वथा विगाड न करेनो भगवदीयको विगाड करे तो या भांतिसों होय भगवदी

य के विगाडे ते गोपालदास की यह शक्ति बहुत वे गोपालदास श्री  
आचार्यजी महाप्रभुन के जैसे परमकृपापात्र भगवदीय है ताते धनकी  
वार्ता अग्य कहां तांछ लिखिये ॥ वार्ता प्रसंग ॥ १॥ वैष्णव ७५

## अवधूती आचार्यजी महाप्रभुनके

### सेवक कृष्णदास ब्राह्मण

#### तिनकी वार्ता

श्री वे कृष्णदास एक गांममे रहते परि अस्किन्त्यन रहते श्री  
एक सभे वैष्णव दस पंद्रह मिलके शरी आचार्यजी महाप्रभुनके दर्शनको  
अउज नत हुते श्री न गांममे कृष्णदास रहते ता गांममे आये सो  
कृष्णदास के धर आये तव कृष्णदासतो धर हुते नाही कछु कार्यार्थके लीये  
कोस तीन उपर, गये हुते और कृष्णदासकी स्त्री धर हुती तव वा स्त्रीने  
दिन वैष्णवनको साष्टांग दंडोत कीनी शरी कृष्ण स्मरन कहि बहुत आदर  
सन्मान करि के अपने धरमे मेकारे पाछे मनमे चियारे ने अग्य  
कहा करिये तव सुधि आर्ध ने वह बनिया नित्य टोक करत है ने तु  
मोशों मिलि तु मांगेगी श्री दंडो गो श्री आन वाशो सीधो सामग्री  
लाज ऐसे चियार के स्त्री यकी श्री ॥ बनियांको हाठपै गछ तय वा  
बनियाने टोकी तव वा बनियांश्री स्त्रीने कही ने भेतो शों कानि मिछांगी  
तु मेको आन शोदा अहियतहै शोदे तय वा बनियाने कछो ने तु  
मोशों कोन करे तो मे मानुं तव वा स्त्रीने वाशों कोन करि दीनो तव  
वा स्त्रीको सीधो सामग्री अहियत हुतो श्री दीनो तव लेके धर आर्ध  
तव धर आय के रेशार्ध करो शरी ठाकुरजीको भोग समर्थो समयानुं  
सार भाग सराय अनोसर करि के पाछे वैष्णवनको महाप्रसाद लिवाये  
तव वैष्णवनने महाप्रसाद लकी लातिशो लीनो पाछे कृष्णदास धर  
आये तव सभ वैष्णवनशों मिले दंडोत करी के भीतर गये तय स्त्री  
शों कछो ने कहा अवरिहै वैष्णवनको प्रसाद लिवाये तव स्त्रीने कछो  
ने प्रसादतो लिवायो है तव कृष्णदासने कछो ने सीधो सामग्री कहां  
ते लाई कहा प्रकार कीयो तय ने प्रकार कीयो हुतो श्री सव कछो और  
कछो ने यह अनियां मोशों नित्य टोको करतो ने तु मोशों एक दिन  
मिलि तु कहैगी श्री दंडो गो तय आन वाशो कोन करि के सीधो सामग्री  
लाईहो तव कृष्णदास वा स्त्रीके उपर बहुत प्रसन्न लये पाछे स्त्री  
पुत्र्य दंडोनेनने सीरो महाप्रसाद लीयो पाछे कृष्णदास वैष्णवके  
पास आय जैठे सवरी रात्र भगवद वारता करत वीता नव सवारो  
बायो तव सभ वैष्णव विदा होय के अले तव कृष्णदास धोरोसी दूर प-

હુંઆવન ગયો પાછે આપ ધર આપ સ્નાન કરિ શરી ઠાકુરજીકી શેવા  
કરિ કે બ્યાવ્રતકો ગયે પાછે વા સ્ત્રીને રજાઈ કરિ મો ઠાકુરજીકો  
ભાગ સમર્પ્યો ભાગ સરાય અનોસર કરિ મહાપ્રસાદ ઢાંકી ધયો તપ  
કૃષ્નદાસ ધર સાંઝકો આએ તપ વહી સારો મહાપ્રસાદ દોઉઝનેનને  
લીયો તપ કૃષ્નદાસને અપની સ્ત્રીશિં કહી ને તુમને કાલિ વા વનિયાં  
શો કોલ કીયો હુનો શો વહ વનિયાં એડો દેખત હોયગો તાને વાકો કોલ  
પૂરો કરિયે તો ભગોહૈ તપ વહ સ્ત્રી ઉવટનો કરી નહાયકે સ્ત્રી જનકે  
સિંગાર હોત હૈ શો સવ કરિ કે વહ સ્ત્રી ચડી શો વર્ષકે દિન હુતે શો  
મેહ બરસી ગયો હુનો શો માર્ગમે કિય ભઈ હુની તાકે લીએ કૃષ્નદા-  
સને અપની સ્ત્રીશિં કહી ને તુ મેરે કાંધેપૈ વૈઠલે મે પહુંચાય આઝી  
માર્ગમે કીય બહુત ભઈહૈ તેરે પાય કીચમે ભરિ જાયમે તો વહ વનિ-  
યાં દેખિકે તેરો આનાદર કરેગો તપ વા સ્ત્રીકો અપને કાંધે ઉપર ચઢાય  
કે લે ચલે શો વા વનિયાંકી હાઠકે આગે ઉતાર દીની તપ વા સ્ત્રીને  
વા બનિયાંકો હેલા પારિકે કહ્યો ને કિવાડ ખોલી તપ વા વનિયાંને  
કિવાડ ખોલી દીને ઝોર વા સ્ત્રીકો બીતર લીની તપ વહ વનિયાં પાય  
ધાય પેઝો પાંની લે આયો ઝોર કહ્યો ને પાય ધાય તપ વા સ્ત્રીને ક-  
હ્યો ને મેરે પાય કીચશિં ભરે નાંહી તપ વા વનિયાંને કહી ને મા-  
ર્ગમેતો કીચ વહુત ભઈ હૈ ઝોર તેરે પાય કોરે કેશ રહે તપ વા સ્ત્રીને  
કહ્યો ને તુ પુછિકે કહા કરેગો તુ તેરો કામ કરિ તપ વા વનિયાંને  
કહ્યો ને વહતો વાત કહી ચહિયે તપ વા સ્ત્રીને કહ્યો ને મેરો ભર-  
તાર મોકો કાંધે ઉપર ચઢાય કે લાયોહૈ તપ વહ વાત સુનિકે વા વનિયાં  
કો બડો આશ્ચર્ય બયો ઝોર સવ વૃતાંતહે શો પૂજે ને વહ કહા  
કારન હૈ શો સવ મેરે આગે કહિ તપ વા સ્ત્રીને ને પ્રકાર બયોહે  
શો સવ કહ્યો શો સુનિકે વહ વનિયાં અપને મનમે વિકાર કરન બા-  
ગ્યો ઝોર કહ્યો ને ધન્ય જન્મ તુમ્હારો ને જીતકો એશા મન સાં-  
ચ્યોહૈ ઝોર પ્રકાર જન્મ મેરો હૈ તપ દોઉ હાય જોરિકે દંડોત કીની  
ઝોર કહ્યો ને મેરો અપરાધ ક્ષમા કરિયે ઝોર મેરે ઉપર કપા રા-  
ખાયે મેરી તુમ વહનિ હો એશ કહિ વા વનિયાંને વહુત દુખ માન્યો  
પાછે વા વનિયાંને સ્ત્રીકો કપડા પહરાયકે વાંકે ધર પહુંચાય દીની ઝોર  
કૃષ્નદાસ શો વા વનિયાંને વહુત વીનતી કીની ને તુમ મેરો અપરાધ  
ક્ષમા કરો વહ મેરી બહનિહૈ ઝોર તુમ મેરે પૂજ્યહો તપ કૃષ્નદાસને  
કહી ને તેરો કહા અપરાધ હૈ તુ સંકોચ મતિ કરે ફેરિ વહ વનિયાં  
કિતનેક દિન પાછે શરી આચારચજી મહાપ્રભુતકો શેવક બયો નાંમ  
સમર્પણ કીયો તપ વા વનિયાંકો નાંમ શરી આચારચજી મહાપ્રભુતને  
ગ્યાંત ચંદ ધરયો પાછે વહ વનિયાં બડો ભગવદીય ગયો શો કૃષ્નદાસકે

संग ते भयो ताते संग करनो तो भगवदीय को करनो भयो। भगवदभक्ति उत्पन्न होय पाछे वह वनिषां सदा कृष्णदासश्यां नभत रहतो उनकी श्यां वहनि कहनो श्या भ्येशा संभध राखतो श्याये कृष्णदास शरी आया-स्थल महाप्रभुनके भ्येश कृपा पात्र भगवदीय हे ताते धनकी वारता कहां तांछ जिअये.

प्रसंग ॥ १ ॥ वैश्रव ॥ ७६ ॥

## अवधू आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक संतदास चौपडा क्षत्री आगरेके तिनकी वार्ता है.

सो जे संतदास पहले बहुत संपतवान हुते ओपार बहुत हुतो जायनको ओपार करते सो द्रव्य समय ओपारहोमि ओयो पाछेसे छिडे जायनमे कोडी वेयन लागे टका २४ की पुंछ हुतो सो जयतांछ पैसा राख कमावते तयतांछ कहां बैठे रहते कोडीनकी टेरी पैसाकी करी राखन सो गाहक पैसा धरीके कोडीनकी टेरी लेवते और संतदास आप पोथी वांयते मार्गमे काहुसो वेलते नाहीं भगवदरसमे छीके रहते और जे कोर्ष भगवद भक्ति आवतो तासो अउ भगवदवार्ता करते और सो संभासन करते रसोछको टका ओक लगावते और येनाको यमिनी आनी धरते सो रात्रिको वैश्रव आयके बैठते भगवदवार्ता कीर्तन करते सो जय यमिनी महाप्रसाद वांछि देते सो वैश्रव लडे छिडते ओसे ठाछ पैसामे निर्या करते ओसे करत दिनकेदिन वांते तव नारायणदास गोड देसकेने सुनी जे संतदासके द्रव्यको बहुत संकोच है ताते नारायणदासने संतदासको पत्र लिख्यो और ओक मोहिरनकी येनी पठाछ सो हुंडी कासीदे लडे आपो तय संतदासको पत्र दीनो तय वह पत्र संतदासने वांय्यो और तामे हुंडी हांसो वांय्यो तय हुंडीही सोतो शरी गुसांछलको पठाछ और ओकटका कासीदेको दीनो और संतदासने नारायणदासको पत्र लिख्यो तामे लिख्यो जे तुमने हुंडी पठाछही सोतो अउल शरी गुसांछलको पढाय दीनी और तुम्हारी प्रभु तामे हमारे ओक दिनकी रसोछ न भछ ता दिनकी कमाछ कासीदेको दीनी जय हुंडी पहुँची तय भंडारीने शरी गुसांछलको जयाछ सो ओकसो मोहिरनकी है सो नारायणदासने गोड देसने संतदासको पठाछ सो संतदासने छहां पठाछ है तय शरी गुसांछलने कबो जे संतदासतो शरी आयास्थल महाप्रभुनके वडेही कृपापात्र भगवदीय हे ताते वैश्रवको द्रव्य काछेको राखेगे.

## ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ॥ १ ॥

जहुरे कितनेक दिन पाछे शरी गुसांछलने शरी गोकुल वास कीयो तम संतदास विसवके दिन आगरेते दर्शनको आवते और शरी गुसांछल आप आगरे पधारते तव संतदासके घर विना पुलाये पधारते आप श्री गुसांछल श्री आचार्यल महाप्रभुनके सेवक नानी ऐसी कृपा करते तव कितनेकदिन पाछे संतदासका देह थकी ता श्री गोकुलने आपाबाधको लुकायो सो आपाबाध श्री गुसांछलकी आग्यामांनिके आगरे आये तम संतदासने आपाबाधसो कल्यो ने यह घर तुम्हारे है जनोतो मोक्षमेकदिन श्रीको रहन दील्यो और जनोतो महने धरी दील्यो अथवा अथके दाम जे नडि ऐसे कहिके धरके अतपत्र आपाबाधकोसोपि दीने तम आपाबाध अतपत्र लेके श्री गोकुल आये तम श्री गुसांछलसो सम समाचार कहे पाछे संतदास जहुत आसक्ति अये तम वैश्नव स्वयं आयजुरे तव संतदाससो कल्यो ने तुम कहो तो रंलुकास्थल अथवा मथुरा जहां कहो तहां लेयलै तव संतदासने कल्यो ने मोको कहा रंलुकास्थल कृतार्थ करेगो तम वैश्नवनने कल्यो ने श्री गोकुल लेलय तम संतदासने कल्यो ने श्री गोकुल नयके कहा राम-अर्जुनो ऐसे कहिके आगरेहीन देह छोडी पाछे वैश्नवन कृत्य उहां कीयो पाछे यह वात वैश्नवनने श्री गुसांछलके आगे कही तव श्री गुसांछल अपने श्री मुपते कहे ने वे संतदास ऐसे भगवदीव हे ताने धनकी वार्ता कहांतां लिखिये.

वार्ताप्रसंग ॥२॥ वैश्व ॥७७॥ संबंध ॥

अवश्री आचार्यजी महाप्रभू के सेवक

सुंदरदास श्री जगन्नाथरायजीके दसको

सपरें एक गांममे रहते तिनकी वार्ता.

सो सुंदरदास उहां रहते तहां कृष्ण चैतन्यको सेवक भाषोदाससो उहां रहतो सो सुंदरदासके और भाषोदासके परस्पर स्नेह बहुत हुतो सो सुंदरदास जम श्री आचार्यल महाप्रभुनकी सराहना करतो तम भाषोदास कहतो ने मेरे ने कछु है सो सब कृष्ण चैतन्यको है सो जहां मेकसमे श्री आचार्यल महाप्रभु पाडि धारे हुते तम सुंदरदासने अपने घर पधारये तम श्री आचार्यल महाप्रभुनने उहां रसोई करिके श्री हाकुरलको भोग समर्प्यो पाछे भोग सरायो तव भाषोदासने थार आवत देख्यो ता पाछे श्री आचार्यल महाप्रभु आपनो भोजन करिके पोढे तव भाषोदासने सुंदरदाससो कही ने तेरे

ગુરૂકે હાથતે શ્રી ઠાકુરજી આરોગે નાહીં ઝૈર મે ને અપને ઠાકુરજીકો  
 આરોગાવત હેં સોતો એકહુ ઘાસ રહત નાહીં તમ સુંદરદાસને શ્રી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુસોં કહી તમ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને માધોદાસકોબુલા-  
 ચકે પૂજો તમ માધોદાસને ને વ્રતાત હુનો સો સમ કહ્યો તમ શ્રી આચાર્ય-  
 જી મહાપ્રભુનને માધોદાસસોં કહ્યો ને કાલિહ હમ તેરે ધર આવેગે સો  
 દેખેગે મેરે આગે શ્રી ઠાકુરજી આરોગેગે તવ જનનુંગો તવ દુસરેદિન  
 શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ માધોદાસકે ધર પધારે ઝૈર કહ્યો ને  
 અમથાર શ્રી ઠાકુરજીકે આગે આંનિ રાખિ તમ માધોદાસ ધાર લે  
 ગયો શ્રી ઠાકુરજીકે આગે ભોગ ધરિકે બાહિર આપો તમ શ્રી આચાર્ય-  
 જી મહાપ્રભુ મંદિરકેદાર ઉપર વૈઠે રહે સો ઉહાં એક પ્રેતનિત્ય  
 આપકે શ્રી ઠાકુરજીકે આગે તે આપ જતો સો વહ પ્રેત વાહુદિન આપો  
 તવ દેખેતો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ વિરાજે હૈ તમ વહ પ્રેત ખિસ્વાનો  
 ઝૈર કહ્યો ને રાજ અપહું બુખો રહુંગો તવ શ્રી આચાર્યજી મહા-  
 પ્રભુનને કહ્યો ને તેને અવતઃઈ આપો સોતો આપો પરિ અવનખાન  
 પાવેગો તાતે અમ છહાં સોંજ તમ વહ પ્રેત ફિરિ ગયો તમ માધોદાસ  
 ભોગ સરાવન ગયો તમ દેખે તો ધાર નેકો તો બરચો હૈ તવ માધોદા-  
 સને કહ્યો ને તુમહારે આગે મેરે શ્રી ઠાકુરજી આરોગે નાહીં એસે  
 સમાન્ય બચન બહુત વોલે પરિ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ  
 ચુપ કરિ રહે કહ્યુ વોલે નાહીં તમ માધોદાસ રાત્રિકો સોયો તવ શ્રી  
 ઠાકુરજીકે અનુચર આએ સો બહુત મારયો ઝૈર ખાટતે એધો મારયો  
 તમ માધોદાસને ઉનસોં કહ્યો ને તુમ મોકો કાહેમે મારત હો તમ  
 શ્રી જગબાથ રાયજીને કહ્યો ને તુ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં  
 એસો સમાન્ય બચન ક્યોં બોલ્યો મે તેરે છહાં કમ આરોગત હો ને તુ  
 ભોગ ધરતો સોનો પ્રેત ખાખનત હો આજ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્ર-  
 ભુજી દાર ઉપર વૈઠે હુતે તાતે ન આપ સમ્યો તુ ઉનસોંકે વુરો બોલ્યો  
 વેનો મેરો સ્વરૂપ હૈ તવ માધોદાસને ઉનસોં કહ્યો ને મે સવારે શ્રી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં અપરાધ ક્ષમા કરાય આજગો મેને એસે  
 ન જાપો તવ માધોદાસ પ્રાતઃકાલ ઉઠિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે  
 પાસે આપો ઝૈર સાષ્ટાંગ દંડવત કીની ઝૈર વીનતી કરિકે કહ્યો ને  
 મહારાજ મેરો અપરાધ ક્ષમા કરિયે સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ  
 આપતો પરમચાલ હે તવ પ્રસન્ન હોયકે કહે ને તેરો કહા અપરાધ હૈ  
 હમ તેરે ઉપર જહુત પ્રસન્ન હૈ તવ માધોદાસને વીનતી કીની ને  
 મહારાજ મેરે ધર પાવધારિયે તવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ માધોદા-  
 સકે ધર પાવધારે ઝૈર પ્રસન્ન હોયકે માધોદાસકે નામ સુતાખે  
 તા પાહે માધોદાસકો નીવેદન કરવાખે તા પાંચ શ્રી આચાર્ય-

त्यञ्ज महाप्रभुनने माघोदासदे ढादुरको पंचामृतसो अंन कर-  
वायो तापाछे शी ढादुरको सिंगार करिके सिंघासन पाठ जै-  
ढारे पाछे शी आचार्यञ्ज महाप्रभुनने पाठ करिके भाग समरप्यो  
तव समयानुसार भाग सराय अनोसर करिके पाछे श्री आचार्यञ्ज  
महाप्रभुनने माघोदाससो कह्यो जे तु वैष्णवको पुजाय लाडि तय मा  
घोदासने कह्यो जे महाराज पांचसात वैष्णव पुजाय लाडि तव श्री  
आचार्यञ्ज महाप्रभुनने कह्यो जे पांचसातकी कहा है जतने तेरे  
मनमे आवे तितने वैष्णव पुजाय लाडि तय माघोदासने श्री महाप्र-  
भुञ्जसो कह्यो जे महाराज प्रसादतो धोरो है और वैष्णव बहुत  
आवेगे तो कैसे होयगी तय श्री आचार्यञ्ज महाप्रभुनने माघोदाससो  
यह कह्यो जे अरे तेरी अकल गर्भ है प्रसाद कमहुं न धटे तेरे या  
गाममे जतने वैष्णव होय सो पुजाय लाडि पाछे जतने वैष्णव हे  
तिन सवनको पुजाय जायो तव समयनमे महाप्रसाद जियायो त्रेहुं यह  
धारभरयोही रह्यो तय माघोदाससो श्री आचार्यञ्ज महाप्रभुनने  
कह्यो जे वैष्णवके विशे विश्वास यहिये जे भगवदप्रसाद सदा अटुट  
रहै या भातिसो माघोदाससे श्री महाप्रभुञ्जने अंगीकार करयो सो  
सुंदरदासके संगते जयो ताते संग करनो तो भगवदीयको करनो सो वे  
सुंदरदास श्री आचार्यञ्ज महाप्रभुनने ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ताते  
धनकी वार्ता कहातांछ दिजिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥१॥ वैष्णव ॥७८॥

अवधूती आचार्यजी महाप्रभुनके सेवक

मावजी पटेल तथा इनकी स्त्री

विरजो तिनकी वार्ता.

सो वे मावञ्ज पटेल तथा धनकी स्त्री विरजो वरस दिनमे  
दोय घेर ओ गोकुल आवते श्री नाथञ्जके दर्शनको तथा श्री गुसांभञ्जके  
दर्शनको आवते सो श्री गुसांभञ्ज धनके उपर बहुत प्रसन्न रहते ज  
हुन कृपा करते पाछे धनको कृष्णभट्टको संग जयो तय विरजोने कृष्ण-  
भट्ट सो कह्यो जे तुम हमारे मांघे सेवा पधिरावो तो भलीहै तव  
कृष्णभट्टने श्री गुसांभञ्ज सो वोनती करिके कह्यो और धनके मांघे सेवा-  
पधिरावसो श्री गुसांभञ्जने श्री ढादुरको पाठ वैढारयो सो स्नेह पु-  
र्वक सेवा करते सामग्री जली भातिसो करते श्री महाप्रभुञ्जके सेवक द-  
स भोसके उपर रहते तिनको प्रसाद जियावते ऐसे जली भातिसो  
सेवा करी कृष्णभट्ट आदिद्वैके करी.

वार्ता प्रसंग ॥१॥



ઐર એક સત્ર વૈશ્ણવ સંવ પ્રસાદ સેનકો ઉત્સવકે દિન વૈરો હુતે  
 તમ વિરજ્જિને વૈશ્ણવનકો અન સખડી મહાપ્રસાદ પોરોતો તવ વિરજ્જિ  
 ને કર્તબદ્ધ સોં વીનતીકીની જો મોકો એસો મનોરથહૈ જો સવ વૈશ્ણવ  
 મંડલી વૈડી હોય ઐર એ સખડી મહાપ્રસાદ સવનકો લિવાઉ તમ  
 કૃષ્ણબદ્ધને કહ્યો જો યહ મનોરથહૈ સોતો બકિત બાવસોં હોય પરિચહ  
 દ્રવ્ય સાધ્યહૈ તમ વિરજ્જિને પુછી જો દ્રવ્ય સાધ્યસો કહા તાકો અર્થ  
 મોકો સમજાવકે કહો તમ કૃષ્ણબદ્ધને કહ્યો જો યહ વૈશ્ણવ મંડલી લેકે  
 શ્રી ગોકુલ શ્રી ગુસાંધજી કે પાસ જાયે પાછે શ્રી ગુસાંધજી આસા  
 દેવસો કરીયે જો શ્રી ગુસાંધજી આસા દેવતો સખડી મહાપ્રસાદ લી-  
 યો જાય તાતે યહ દ્રવ્ય સાધ્યહૈ જો માર્ગમે સમ ખરચ કરીયે ઐર  
 વૈશ્ણવનકી આસા લેનો તમ વિરજ્જિને માવજી પટેલ સોં કહ્યો જો  
 મોકો યહ મનોરથહૈ સો મનોરથ કીયો ચાહિયે તમ માવજી પટેલને ક-  
 હ્યો જો મેરે પાસદૈ લક્ષ મુદ્રાહૈ ઇનસોં કામ હોયતો બલેઈ કરીયે ત-  
 વ કર્તબદ્ધને કહ્યો જો ઇનસો કામ અવચય હોયગો આપન શ્રી ગુ-  
 સાંધજી પાસ ચલે તમ શ્રી ગુસાંધજી આગ્યા દેવસો કરીયે સો માવ-  
 જીકી માંડિમે દ્રવ્ય બહુત હુતો સો સખ લેકે ઉજ્જિનેન આએ પાંચ  
 કમ્મમદ્ધને વૈશ્ણવ સવ ઇકઠારે કરીકે શ્રી ગોકુલ શ્રી ગુસાંધજીકે દરશન  
 કો આએસો શ્રી ગોકુલ આયકે શ્રી ગુસાંધજીકે દરશન કીએ પાછે  
 કમ્મમદ્ધને શ્રી ગુસાંધજી સો વીનતીકીની જો મહારાજ વિરજ્જિકો એસો  
 મનોરથહૈ જો સખડી મહાપ્રસાદ મેરે હાથસોં સવ વૈશ્ણવનકી મંડલી  
 બૈડી હોય તિનકો મે પોરોસોં તવ શ્રી ગુસાંધજીને કહીજો યહ મનોરથ  
 તો પુરોત્તમ ક્ષેત્ર વિનાન હોય તવ સવ વૈશ્ણવનકી મંડલી લેકે વિરજ્જિ  
 ચલી શ્રી જગન્નાથ રાયજીકું સો કિતનેક દિનમે જાય પહુંચી તવ ઓ  
 જગન્નાથજીકે દરશન કીએ પાછે જો મનોરથ હુતો સો સવનાના પ્રકાર  
 કી સામગ્રી કરવાયકે શ્રી જગન્નાથરાયજીકો ભોગ સમર્પ્યો પાછે વહપ્ર-  
 સાદ સખડી અન સખડી સવ વૈશ્ણવનકો વિરજ્જિને અપને હાથ  
 સો પોરોસિકે લિવાયો વિરજ્જિને સવ મનોરથ પૂરનકીયો પાછે વિરજ્જિ ઉહાં  
 કબુક દિન રહિકે સવ વૈશ્ણવન સહિત શ્રી ગોકુલ આઈ તમ શ્રી ગુ-  
 સાંધજીકો દરશન કીયો દ્વોતકીની તા પાછે જો વાત કરી સો સવ શ્રી  
 ગુસાંધજીકે આગે કહી પાછે ઐર જો દ્રવ્ય વચો સો સખ શ્રી ગુ-  
 સાંધજીકી ભેટકીનો તમ શ્રી ગુસાંધજી વિરજ્જિકો બાવ દેખાકે વાકે  
 ઉપર બહુત પ્રસન્ન બએ પાછે સવ વૈશ્ણવનકો મહાપ્રસાદ લિવાયો  
 તવ શ્રી ગુસાંધજીને આપ પ્રસાદ લીયો તાપાછે વિરજ્જિ તથા સખ વૈ-  
 શ્ણવ શરી ગુસાંધજીકે સાથ શરી નાયજીદ્વાર આએ તમ શરી નાયજીકે  
 દર્શન કીએ તમ વિરજ્જિ તથા શરી ગુસાંધજી સવ વૈશ્ણવ શરી નાયજી

ते विदाहोयके अपने देसको गये वह विरन्ने ऐसी भगवदीयही.

वार्ता प्रसंग ॥२॥

और विरन्ने परस दिनमें दोयवेर शरी गोकुल आवती तम अक गाजातो गुडको भरि लावती और अक गाजा धूतने भरि लावती सो अक महीनाको रहती ताके १५ दिनतो शरी गोकुल रहती और १५ दिन शरी नाथजीद्वार रहती या जातिसों विरन्ने रहती तम सामग्री करिके भोग समर्पि भोग सरायके सब ढांकि धरे जब गायनके गान आवते तब महासाद दुध अंगीकार करते और फिरकने लीवावती और आवती जबदोछ पधरावती करतीसो वह विरन्ने ऐसी भगवदीयही सो पद्म रावजके संगते ताते संग करने लो भगवदीयको करने सो छनकी वार्ताको पार नाही ताते अम कहांतांछ लीजिये.

वार्ता प्रसंग ॥३॥ संमंथ १४५.

अव श्री आचार्यजी महाप्रभुनकेसेवक

गोपालदास रोडामें रहते

तिनकी वार्ता.

सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनने उनको आत्तादीनी हुती ने गुम समनको नाम दीज्यो ताते वे गोपालदास नाम देते सो अक समे श्री आचार्यजी रोडामे पधारे हुते तम गोपालदास तो धर न हुते गोपालदास के पेडा धर हुते गोपालदास कहु व्यापतिको गये हुते तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने गोपालदास के पेदानसे पूछो ने गोपालदास कहां गये है तब गोपालदास के पेदानने कबो ने कहु श्री सादुरजी के काम गयो है तब यह सुनि के श्री आचार्यजी महाप्रभुनको मन अ प्रसन्न भयो ने गोपालदास के पेडा ऐसे कैमे भोजन है तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कबो ने अैसे वैष्णव है तब श्री आचार्यजी महाप्रभुनने कबो ने कहां रहनो इच्छित नाहि है तब फिर अपने मनमें विचार ने गोपालदास को तो आवन दीज्ये यह ऐसे बोधत है तब पाछे संंध्या समे गोपालदास आये तब गोपालदासने श्री आचार्यजी महाप्रभुनको दरशन दीयो तब गोपालदाससें श्री आचार्यजी महाप्रभुनने पूछो ने गोपालदास गुम कहां गये हुते तम गोपालदासने कहां ने महाराज पेडा लायो है ताते व्यापतिको गयो हुतो तम यह सुनि के गोपालदास के उपर बहुत प्रसन्न भये और आप श्री भुजसें कहे ने यह वैष्णवको ल

ક્ષણ હૈ જો વ્યાવૃત્તિએ શ્રી ઠાકુરજીએ નામ ન લેય

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥ ૧ ॥

ઐસર એક સમે ગોપાલદાસ શ્રી નાથજી કે દરસનકો આએ સો સાથ એક શેવક હતો તહાં જ્યાર ચઢિ આયો સો લંધન દે આરિ કાએ તમ રાત્ર કો ગોપાલદાસકો પ્યાસ લાગી સો વા શેવક કે પાસ જલ માંગ્યો સો શેવક તો સોયો હતો સો શેવકને તો સુની ન હતી તવ શ્રી ઠાકુરજી જલપાનકી ઝારી લે કે આએ સો ગોપાલદાસકો જલ પિ વાયો ઐસર વહ ઝારી ઉહાંધ ધરી આએ શ્રીનાથજીકો -હદો અતિ કો મલ હૈ તાતે બકતીકી આર્તિ સહિ ન શકે

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥ ૨ ॥

ઐસર એક સમે ગોપાલદાસને ચોખરા વિરહ કરી કે આયો સો ચોખરા વેકી સિખંડી રયામધન સખી કંઠ મનોહર હાર ધવ્ય દિન જો નો દેખસુ નયનનંદ કુમાર એક એસે ચોખરાવહુતકાએ.

વાર્તા પ્રસંગ ॥૩॥.

ઐસર એક સમે શ્રી ગુસાંધજી આપરોડાએ પધારે તમ વાહિર ડેરા કીએહુતે પાછે જમ ગોપાલદાસ ઉત્થાપનકે સમે શ્રી ગુસાંધજીકે દર્શનકો આએ તવદેવૈશ્ણવનને કહ્યો જો હમકો શ્રી ગુસાંધજીકે પાસ નાંમદિવા વા તમ ગોપાલદાસને કહ્યો જો હમનાંમ દેતહૈં સો નામ શ્રી ગુસાંધજી દેતહૈં તાતે તુમકો ધર ચલિકે નાંમ દેયગે પરિઉત વૈશ્ણવનકો મન શ્રી ગુસાંધજી પાસ નાંમ પાયવેકો સોનીનિવેર ઉત વૈશ્ણવનને કહ્યો સોતાનોવાર ગોપાલદાસને વૈસેહી કહ્યો જો તુમકો ધર ચલિકે નાંમ દેયગે સોયહ વાત શ્રી ગુસાંધજીને અપને કાંનસો સુની પાછે ઉત વૈશ્ણવન સો શ્રી ગુસાંધજીને કહીજો તુમ કહા કહતહો તવઉત વૈશ્ણવનને કહ્યો જો મહારાજ હમકો નામ દીજીયે તવ શ્રી ગુસાંધજીને ઉતકો નામ સુનાયો ઉતકો કૃતાર્થ કરે પાછે ગોપાલદાસ સુ શ્રી ગુસાંધજીયો કહીજો ગોપાલદાસ તુમ્હારો અંગીકાર શ્રી આઆર્યજી મહાપ્રભુનને કીયોહૈં સોતો દ્રઢ બયોહૈં પરિજીતને તુમ્હારે પાસનાંમ પાએહૈં સોતો હમારે કવહુત હોયગે સો શ્રી ગુસાંધજીને ક્ષોભ કરકે ગોપાલદાસ સો કહ્યો પાછે ગોપાલદાસને જીતનેનકો નાંમ દીયો હતો તિનસવનકો ફિરિકે શ્રી ગુસાંધજીકે પાસ નામદિવાયો તવ વે સર્વ કૃતાર્થ ભએ તિનસો શ્રી ગુસાંધજી ગંગોજવ કહતે ઉત ગોપાલદાસકો ર્યામિતવ આયો તાતે ધનજીવનકો અકાજ બયો તાતે વે ગોપાલદાસ શ્રી આઆર્યજી મહાપ્રભુનકે એસે પરમકૃપાપાત્ર બગવદીયહે સો ધનકી વાર્તા કહાંતાંધજીખયે.

વાર્તા પ્રસંગ ૪ વૈશ્ણવ ૮૦ સંબંધ.

## અવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુને સેવક સૂરદાસજી ગઝઘાટ ઉપર રહતે તિનકી વાર્તા હૈ.

સો એક સમે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ અડેન તે વૃજકો પા-  
વધારે સો કિતકદિનમેં ગઝઘાટ આએ સો ગઝઘાટ આગરેકે ઐર  
મથુરકે વીચાવીચ હૈ તહાં શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પાંચ ધારેસો  
ગઝઘાટ ઉપરથી આચાર્યજી મહા પ્રભુ ઉતરે તહાં શ્રી આચાર્યજી  
મહા પ્રભુ આપ જ્ઞાન કરિકે સંધ્યા વંદન કરિકે પાક કરનમેં બૈઠે ઐર  
શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક નકો સમાજ વહુત હુતો ઐર  
સેવકહુ અપને અપને શ્રી ડાકુરજીકી રસોઇ કરન લાગે સો ગઝઘાટ  
ઉપર સુરદાસજીકો સ્થલ હુતો સો સુરદાસજીકો સ્થલ હુતો સો સુરદા-  
સજી રવામી હૈ આપ સેવક કરતે સુરદાસજી ભગવદીયંકે ગાન વહુત  
આહો કરતે તાતે બહુત લોક સુરદાસજીકે સેવક બએ હુતે સો શ્રી આ-  
ચાર્યજી મહાપ્રભુ ગઝઘાટ ઉપર ઉતરે સો સુરદાસજી કે સેવક દેખિકે સુ-  
રદાસજીસોં જય કહી ને આજ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ  
પધારે હૈ જનને દક્ષણમેં દિગ્વિજયે કીયોહો સવ પંડિતનકો જતે હે  
બકિત માર્ગ સ્થાપન કીયોહો સો શ્રી બલ્લભાચાર્યજી હંહાં પધારેહૈ  
તખ સુરદાસજીને અપને સેવકનસો કહ્યો ને તુ જયકે દુરિ વૈઠિ  
જય આપ ભેજન કરિકે ચિરાનૈ તવ ખરિ કરિયો હમ શ્રી આચાર્ય-  
જી મહાપ્રભુનકે દર્શનકો જયગે સો વહ તનક દુરિ જય બૈઠો તવ  
શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ પાક કરાહે સો પાક સિદ્ધિ ભયો તવ  
શ્રી ડાકુરજીકો ભોગ સમયો પાછે સમયાનુસાર ભોગ સરાય અનો-  
સર કરિકે મહા પ્રસાદ લેકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ગાદી ઉપર  
ચિરાનૈ તહાં સવ સેવકહુ પહુચિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે  
આસપાસ આય બૈઠે તવ વહ સુરદાસકો સેવક આયો સો સુરદાસકોં કહી  
ને શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ ચિરાનૈ હૈ તવ સુરદાસ અપને સ્થલતે  
આયક શ્રી આચાર્યજી મહા પ્રભુનકે દર્શનકો આએ તખ શ્રી આ-  
ચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો ને સુર આયો બૈઠો તખ સુરદાસજી શ્રી  
આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો દર્શન કરિકે આગે આય બૈઠે તખ શ્રી આ-  
ચાર્યજી મહાપ્રભુનને કહ્યો ને સુર કહ્યુ ભગવદ જસ વર્ણન કરો  
તખ સુરદાસને કહી ને આગ્યાસો સુરદાસને શ્રી આચાર્યજી મહા-  
પ્રભુનકે આગે એક પદ ગાયો સો પદ ॥ રાગ ધનાસરી ॥ હો હરો

सय पतितनको नायक ॥ को करि सके अरोपरि मेरी छते मानको लायक  
 ॥१॥ जे तुम अन्नमेलसों कीनीजे पाती निगि पाज ॥ होय वि-  
 सास लक्षे छय अपने और पतित जुलाज ॥२॥ सिमिष्ट जहां ते  
 सयकोडि आय गुरे छकैर ॥ अचरे छनते आनि मित्राजि परे दुस-  
 री और ॥३॥ होय होडी मन दुहास करि करे पाप करि पेट ॥ स-  
 अहित नै पायननरि परि होयहै हमारो मित्र ॥४॥ ऐसी कितनीक व-  
 नाडि प्रांतपतिमु मिरनहै लयो आओ ॥ अवकी परे निवार लेछ प्रभु  
 सुर पतितको टाडो ॥५॥ और पद गायो ॥ राग धनासरी ॥ प्रभु  
 मे सय पति तन कोटि ॥ और पतित सुवद्यो सयारिके भेतो न-  
 न्म तहिकी ॥६॥ अधिक अन्न मिलि गनिका तारी और पूत नांहीको  
 ॥ मोहिछांडी तुम और उधारे भिटे सुलि केसे लक्ष ॥७॥ को उन  
 समरथ सेव करन को ऐवि कहत होत्रिकी ॥ मरियत लाज सुरपति  
 तनमे कहत सयन मे निको ॥८॥ ऐसी पद श्री आचार्य ॥ महा-  
 प्रभुनके आगे सुरदासछने गायो सो सुनि के श्री आचार्य ॥ महा-  
 प्रभुनने कबो जे सुरहै के ऐसी धिधियात कहिको है कछु भगवद  
 लीला वर्णन करि तव सुरदासने कबो जे महाराज होनो समजत  
 नांही तव श्री आचार्य ॥ महाप्रभुनने कबो जे न जान करि आडि  
 हम तोको समजवगे तव सुरदासछ नान करि आये तव श्री महा-  
 प्रभुछने प्रथम सुरदासको नाम सुनायो पाछे समर्पण करवायो और  
 दसमस्कंधकी अनुक्रमणीका कही सो ताते सय होय दुरि लये ताते  
 सुरदासछां नयनो भक्ति सिद्धि लखत तव सुरदासछने भगवद लीला  
 वर्णन करी अनुक्रमणीका ते संपूर्ण लीला दुरी सो कबो ननिधे जे  
 दसमस्कंधकी सुभाषनी छमे भगजा अरुकी प्रथम कारिका कीयेहै सो  
 यह श्लोक सुरदासछने कह्यो सो

श्लोक. नमामिहृदयेसेखेलीलाक्षराविसायिनं ॥

लक्ष्मीसहस्रलीस्माभीः सेव्यमानंकलानिधि ॥१॥

और ताही सभ श्री महाप्रभुनके सन्निधान पद कीये सो पद  
 ॥ राग विधावज ॥ एक छरी यलि अरु सरोवरि जहां प्रेम  
 वियोग ॥ यह पद संपूर्ण करि के सुरदासछने गायो ॥ सो यह पद  
 दसमस्कंध भगजा अरुकी कारि काके अनुसार कीयो सो यात्रे कबो  
 है जे तहां श्री सहस्र सहित नित किउत सोबित सुरदास या  
 जाति पद कीये ताते ननी जे सुरदासका संपूर्ण सुभाषनी श्रुतीसो

श्री आचार्यजी महाप्रभुनने जन्मो लीलाको अभ्यास ज्यो पाछे सुरदासजीने नंदमहोत्सव कीयो सो श्री आचार्यजी महाप्रभुनके आगे गायो सो पद ॥ रामदेवजंधार ॥ वृन्ज ज्योम हरिके पूत नव यह प सुनी ॥ सो यह श्री आचार्यजी महाप्रभुनके आगे गायो सो सुनि के श्री आचार्यजी महाप्रभु अहुत प्रसन्न ज्यो और अपने श्री मुष्पते कहै जे सुरदासमानो निकट हुते ॥ पाछे सुरदासजीने अपने सेवक कीज्ये हुते तिन सवनको नाम दीयायो पाछे सुरदासजीने अहुत पद कीज्ये पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभुनने सुरदासजीको प्रसूतोत्तम सहस्र नाम सुनायो तय सुरदासजीने संपूर्ण भागवत श्रुत नाम भज पाछे जे पद कीज्ये सो श्री भागवत प्रथमस्कंध ते द्वादशस्कंध पर्यंत कीज्ये ताते ये सुरदासजी श्री महाप्रभुन के जैसे परम भगवदी-यह पाछे श्री आचार्यजी महाप्रभु गड घाट उपर दिन होय तीनि विरान्ते पाछे किर वृन्जको पाव धारे तय सुरदासजी हु श्री आचार्य-जी महा प्रभुनके साथ वृन्जको आये.

॥ वार्ता प्रसंग १ ॥

अब जे श्री आचार्यजी महाप्रभु वृन्जको पाव धारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे तय श्री आचार्यजी महाप्रभुके साथ सुरदास जीहु आये तय श्री महाप्रभुजी अपने श्री मुष्पसों कही जे सुरदास श्री गोकुलको दर्शन करो सो सुरदासने श्री गोकुलको दंडवत करी सो दंडवत करत भाव श्री गोकुलकी वाज लीला सुरदासजी के -हृदये पुरी और सुरदासजीके -हृदये प्रथम श्री आचार्यजी महाप्रभुनने सकल लीला श्री भगवतकी स्थापी है ताते दर्शन करत भाव सुरदास जीको श्री गोकुलकी वाज लीला श्रुत नाम भज तय सुरदासजीने मनमे विचारयो जे श्री गोकुलकी वाज लीलाको वरएन करि के श्री आचार्यजी महाप्रभुनके आये सुनाय्ये जन्म लीलाको पदतो प्रथम सुनाय्ये अब श्री गोकुलकी वाजलीलाको पद गायो सो पद ॥ विज्ञा वल ॥ सोभाव करन वनीत लीज्ये ॥ धुदुरवन यलत रेणु तनमंडित मुष्प लेप कीये ॥१॥ आरु कपोल लोल लोचन छवि गोरों मनको तिलक दिये ॥ लार लटकन मानो मत मधुप गन माधुरी मधुर पिये ॥२॥ कटुना इंड वृन्जके हरिनम्प राजत है सज्जो इमहिये । धन्य सुर ज्योको पल यह सुष्प कहा ज्यो सत कलप ज्यो ॥३॥ यह पद सुरदासने गायो सो सुनि के आप अहुत प्रसन्न ज्यो पाछे और हुं पद गाये तय श्री महाप्रभुजी अपने मनमे विचार जे श्री नाथजीके यहां और तो सब सेवाको भंडान ज्योहै ॥ और कीर्तनको भंडान नाही

कीजैहे ताते अथ सुरदासजीको दीजिये तब आप श्रीजु द्वार पधारि  
 सो सुरदासजीको साथ कीजैहीं सो श्री नाथजीद्वार जय पहुँच्ये तब  
 आप ज्ञान करिके मंदिरमे पधारि तब सुरदासजीसों कब्यो जे सुरदास  
 वपर आउ ज्ञान करिके श्री नाथजीको दर्शन करि तब सुरदास पर्वत  
 वपर जयके श्री नाथजीको दर्शन कीयो तब आपने कब्यो जे सुरदास  
 कछु श्री नाथजीको सुनायो तब सुरदासने प्रथम विष्णुको पद गायो  
 सो पद ॥ राग धनासरी ॥ अमल्लो नार्यो बहुत गुणाला ॥ यह  
 पद संपूरण करिके श्री नाथजीके आगे गायो तब श्री महाप्रभुजने  
 कब्यो जे सुरदास अवतौ तुममे कछु अ विद्या रही नांही तुम्हारी  
 अ विद्यातो प्रभुनने दुरी कीनी ताते कछु भगवद जस वरदान करो  
 तब सुरदासने महात्म और बीजा ऐसो जस करीकें गाय सुनायो  
 सो पद ॥ राग जौरी ॥ मोन सुकत छन वृज वासिनको यह पद  
 संपूरण करिके गायो सो सुनिके श्री महाप्रभुज वहुत प्र-  
 सन्न भये सो ऐसो श्री आचार्यजी महाप्रभुनते मार्ग प्रकाश कीयो  
 हो ताके अनुसार सुरदासजने पद कीये श्री आचार्यजी महाप्रभुनके  
 मार्गको कहा स्वरूपहै महात्म ज्ञान पूरेवकसु द्रष्टेहकतो परम काष्टहि  
 और स्नेह आगे भगवानको महात्म रहत नांही ताते भगवान परेपर  
 महात्म जनावत हे नाम प्रकरनमे पूतना करि सकट वनावृत करि  
 गर्गाचार्य करि यमलाजुन करि वल्लुङ्क दर्शन करि ऐश करिके भगवा-  
 नके वहुत महात्म जनाये परि छन वृज भक्तनको स्नेह परम काष्टा  
 यनहे ताते ताही सजे तो महात्म रहे पाछे विभूत होय जय.

॥ वार्ताप्रसंग ॥२॥

और सुरदासजने सहस्रविधो पद कीये है ताको सागर कहिये  
 सो सब जगनमे प्रसिद्धि भये सो सुरदासजीके पद दसाधितने सुन  
 सो सुनिके यह विचारो जे सुरदासजी काहु रीतिसों मिले तो भयो सो  
 भगवद उच्छाते सुरदासजी मिले सो सुरदासजीसों कब्यो दसाधितने  
 जे सुरदासजी मे सुन्यो है जे तुमने विसनपद बहुत कीये है जे  
 मोको पनमेस्वरने राज दीयो है सो सब युनीजन भरो जस गावतहे  
 ताते तुमहुं कछु गायो तब सुरदासजने दसाधिपनके आगे कीर्तन  
 गायो सो पद ॥ राग विश्वावसा ॥ मनारे तु करि भाषेसों प्रीति ॥ यह  
 पद दसाधिपनके आगे संपूरण करिके सुरदासजने गायो सो यह पद  
 कैसो है जे या पदको अहर्निश ध्यान रहै तो भगवद अनुग्रहकी सदा  
 रक्षति रहै और संसारते सदा वैराग्य रहै और दुसंगको भदा भय रहै

और भगवदीयके संगकी सदायाह रहै और श्री ढाकुरण्डके अरणाविंद  
 उपर सदा स्नेह रहै देहाधिक उपर आसक्तिन होय ऐसो पद देसा-  
 धिपतकी सुनायो सो सुनिके देसाधिपत बहुत प्रसन्न भयो और कबो  
 नो सुरदासण मोको पनमेश्वरने राज दीनो है सो सब गुनीजनमे रो-  
 नस गावत है ताते भरो नस कछु गायो तय सुरदासणने यह पद  
 गायो सो पद ॥ राग केदारो ॥ नाहि न रह्यो मनमे ठोर ॥ यह पद  
 संपूरण करिके सुरदासणने गायो सो सुनिके देसाधिपत अकवर पा-  
 त्साह अपने मनमे विचार्यो नो ये भरो नस कहेको भावेगे नो  
 धनको भरो काहुवातको लालछ होय तो गाये येतो पनमेश्वरके जन है  
 और सुरदासणने या पदके समाप्तमे गाओ हो नो सुर ऐसे दसके  
 अमरत लोयन प्यास यह गायो हो सो देसाधिपतने पूछो नो सुरदा-  
 सण तुम्हारे लोयनतो दप्पियत नाही सो प्यासे कैसे भरत है और  
 विनदमे तुम उपमाओ देत हो सो तुम कैसे देतहो तय सुरदासण कछु  
 बोले नाही तय इरि देसाधिपत बोध्यो नो धनके लोयन है सोतो  
 पनमेश्वरके पास हैं सो उहां दप्पत है सो वरनत करत है तय देसाधि-  
 पतने सुरदासणके समाधानकी मनमे विचारी नो धनको कछु दीयो  
 यहिये परि येतो भगवदीय हैं धनको काहु वातकी छच्छा नाही पाछे  
 सुरदासण देसाधिपतसों विदा होयके श्रीनाथण्डार आये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ३ ॥

ऐकसमे सुरदासण भार्गमे यले नतले सो कोउ यौपड जेलत  
 है सो वा यौपडके जेलमे ऐसे लोन है नो कोउ आवते नतकी सुधी  
 नाही ऐसे जेलमे मग्न है सो दप्पिके सुरदासणके संग भगवदीय है  
 तिनसों सुरदासणने कह्यो नो दप्पो वह प्रानी कैसो अपनो जन्मभरो  
 जोवत है भगवाननेतो अनुष्य देह दीनी है सोतो अपनी सेवा भजनके  
 लीये दीनी है सो येतो या देहसों हाउ कुटे हैं यामे यह जैकिक सिद्ध  
 नाहि सो काहेते नो या लोकमेतो अपनस और पर लोकमे भगवानने  
 वहिर्भूयता ताते श्री ढाकुरण्डने धनको अनुष्य देह दीनी है तिनको  
 यौपड ऐसी जेलनी यहिये सो ता सभे ऐक पद सुरदासणने अपने  
 संगडेनसों कह्यो सो पद ॥ राग केदारो ॥ मनतु सभजि सोय विचारी ॥  
 भक्तविन भगवान दुर्लभ कहत निगम प्रहारी ॥ १ ॥ साधसंगति जार  
 दासा इरि रसना सारि ॥ दाव अवके परयो पुरो उतरी पहली पारि  
 ॥ २ ॥ पाकसत्रे सुनी अठारे पंचहीको मारि ॥ दुरिते तण तीनकाने  
 मभकी ओकि विचारी ॥ ३ ॥ काम मोघ नंजन लुख्यो ङयो ङनी नारी ॥  
 सुर हरिके पद भजनविनु यल्यो होइ करि जारि ॥ ४ ॥ यह पद सुरदासण



અપને સંગકે ભગવદીયનસાં કહ્યો સોયા પદમે સુરદાસજીને કહા  
કહ્યો. મનવુ સમજિ સોચ વિચારી યે તીન્યો વસ્ત યોપડમે ચહિયે સો  
ધતીનો અસ્ત ભગવાનકે બજનમે ચહિયે કાહિતે જો સમજિન હોય તે  
મયણ કહા કરેગો તાતે પહલેતો સમજિ ચહિયે ઐર સોચ કહે ચિંતાસો  
ભગવાનકે પ્રાપ્તિકી ચિંતા ન હોયતો સંસાર ઉપર વૈરાગ્ય કેસે આવે તાતે  
સોચ ચહિયે ઐર વિચાર જોયા જીવકો વિચારહી નહીં તો સંગ કુસં-  
ગમે કહા કરેગો તાતે વિચાર ચહિયે જો યે તીન્યો અસ્ત હોય તો  
ભગવદીય હોય તાતે યે તીન્યો અસ્ત ભગવદીયકો અવસ્થ ચહિયે ઐર  
યોપડમેહું યે તીન્યો વસ્ત ચહિયે સમજિ કહે ગનાવોન આવૈ તો ગોટ  
કેસે ચલે ઐર સોચ અગમ જો મરે મહદામ પડે તો મહ ગોટ ચલું  
વિચારજો વાહોમે તખત જો યે તીન્યો વસ્ત હોય તો યોપડ ખેલી જાય  
સો યે સુરદાસજી આ આચારજી મહાપ્રભુનકે એસે પરમ ભગવદિય હૈ.

વાર્તા પ્રસંગ ૧૪૧

બહુરી સુરદાસજી આ નાયજીદાર આપકે બહુત દિનનાઈ આ  
નાયજીકી સેવા કાની વીચવીચમે આગોકુલ આ નવનીત પ્રિયાજીકે દર-  
શનકો આવતે સો એક સમે સુરદાસજી આગોકુલ આએ આ નવનીત  
પ્રિયાજીકે દર્શન કીએ ઐર વાલજીલાકે પદવહુત સુનાએ સો આગુસાં  
મજી સુનિકે વહુત પ્રસન્ન બએ પાંચ આ ગુસાંધજીને એક પાલના  
સંસ્કૃતમે કીયો સો પાલના સુરદાસજીકો સિખાયો સો પાલના સુરદાસ  
જીને આ નવનીત પ્રિયાજી જીવતહુતે તાસમે ગાયો સોપદ ॥ રાગ  
રામકૃષ્ણી ॥ પ્રપ્ત પર્વકે સયને ॥ ૫૬ ૫૬ સુરદાસજીને સંપૂરણ કરીકે  
ગાય સુનાયો આ નવનીત પ્રિયાજીકો પાછે યાપદકે બાવકે અ-  
નુસાર બહુત ૫૬ કીએ સોસુનિકે આ ગુસાંધજી બહુત પ્રસન્ન બએ  
પાલના કે બાવ અનુસાર ૫૬ ગાયે સોપદ ॥ રાગ વિસાવજ ॥ વાલ  
વિનોદ આંગનમે કીડોજનિ મણિમય ભુમિ સુભમનંદાલય વણિ વણિ  
મધંતો તરો વાલનિ ॥ ૧ ॥ કુકુત કંઠ રચિરકે હરિનખ વ્રજમાલ  
બહુલધ અમોલનિ ॥ વદન સરોજનિલક ગોરોચન ભરજટકનિ મધુ પ-  
ગનલોલનિ ॥ રાગ લોખો કરપરસત આનન પરકધુ લગ્યો કપોત્તની ॥ કહે  
જનસુરે કહાણો વરનો વન્યનંદજીવન જગતોલનિ ॥ ૩ ॥ ગોપાલકુરે  
માંખન ખાત ॥ દેખી સખી સોબાજીબદી અતિસ્માં મનોહર ગાત ॥ ૧ ॥  
ઉઠ અવલોક આટાઠાઠી બહે જીહિ વિધિ નહિ લખસેત ॥ અતતનેન  
ચહુંદિસિચીતવત ઐર સખનકો દેત ॥ ૨ ॥ સુંદરકર આનન સમો  
પહરિ રાગત યહઅકાર ॥ જનુજલ રહતજીવેર વિધિસોંલીએ મિત્રતઉ  
પહાર ॥ ૩ ॥ ગીરી ગીરી પરતવદન તે ઉપર દ્વૈધિસુતકે વિદુ ॥ ૫ ॥

नहु सुधाकन ओरवत पिय जन दहु ॥ ४ ॥ वालवीनोद विसोकसुर प्रभु  
 वित जळ वृन्कीनारी ॥ दुरतन वयन वरजुपेकोमन रही विचारी  
 विचारी ॥ ५ ॥ राग नैत श्री ॥ कहां जगि वरनो सुंदरताछ ॥ जे-  
 लत दुमरे कतिक आंगनमे नेन निरप्पसुप्प पाछ ॥ कुलहै लसत रयाम  
 सुंदरके जहु विधिरंग पि जनाछ ॥ मानहु नवधन छपर राजत मधु  
 वा धनुष अढाछ ॥ २ ॥ सेतपीत अरु असित लालमझि लटकनभाल  
 रराछ ॥ मानहु असुर देव गुइसोमिनी भुमिजसो समुदाछ ॥ ३ ॥  
 अतिसुंदर मृदु मिहुर हरत मनमोहन मुप्प वगराछ मानहु भंगुल  
 कुंज छपर वर अलि आवलिझिरी आछ ॥ दुध दंतछवि कही न गत  
 छहु अलीपल लपड लकाछ ॥ किलकत हंसत दुरीत प्रगत मानो वि-  
 धुमे विपुलताछ ॥ ५ ॥ अंडीत वयन रेत पूरेन सुप्प अदभुत यहछ  
 पमाछ ॥ धुइरनुं अलतडहन प्रमुदित मनसुरदास वलिगतछ ॥ ६ ॥  
 राग रामकसी ॥ देजो सप्पी ओक अदभुत ३५ ॥ ओक अंजुज  
 मध्य दप्पियत बीस दधि सुत गुप ॥ ३॥ ओक अयली दोष जलयर  
 छमे अर्क अनूप ॥ पंचवार अदि गहि दप्पियत कहे कहरवइ ॥ २  
 सिसुगनमे जळ सोभा करो कोठ विचार ॥ सुरभी गोपालकी छपि  
 राप्पो यह निरधार ॥ ३॥ जैसे पद सुरदासछने गाये ॥ पाछे इरि  
 श्री नाथछ द्वार आये.

### वार्ता प्रसंग. ५

अप्य सुरदासछने श्रीनाथछकी सेवा जहुत कीनी जहुत दिन  
 नांछ ता छपरंत जगवद छच्छा जनानी अप्य प्रभुनकी छच्छा बुझाय  
 ओकीहै यह विचारि के जे नित्य लीला इलात्मक रास लीला जे न  
 हां करे हें जैसे जे परासोली तहां सुरदासछ आये श्रीनाथछ-  
 काप्पयनको दंडोत करि के प्यनके सामे सन्मुख करि के सुरदाछ सोये  
 परिअंत करनमें यह जे श्रीआचार्यछ महाप्रभु दर्शन देयगे  
 अययहदेहतो यकी ताते अप्य या देहसो श्रीनाथछकी दर्शन होयतो  
 जननिये परम भाग्य है. श्रीगुसांछछको नाम कृपा सिंधु है भक्तनके  
 मनोरथ पूरन करता है जैसे पियारि के सुरदासछ श्रीगुसांछछको  
 अंतयन करते है और श्री गुसांछछ जैसे कृपासिंधु है जैसे सुरदा-  
 सछ जहां रमन करत है तैसे श्री गुसांछछ धनको छिनहु नाहि  
 भुगत है श्रीनाथछको सिंघार होतो ता सभ सुरदासछ भझि कोहा-  
 मे हाउ ॥ २॥ कीर्तन करते सोना दिन श्री गुसांछछ श्रीनाथछके  
 सिंगार करत हुते और सुरदासछको कीर्तन करत न देजो तप श्री  
 गुसांछछने पूछो सुरदासछ नाही दप्पियत सो कहिते तव काहु वै-

બનવને કહ્યો ને મહારાજ સુરદાસજી તો આજ પરાસોલીકી ઓડી  
 જાત દેખેહે તખ્ત શ્રી ગુસાંઈજીને જાણ્યો ને બગવદ ઇચ્છા તે અવશ  
 ન સમ્મિ હૈ તાતે સુરદાસજી પરાસોલી ગયે હૈ તખ્ત શ્રી ગુસાંઈજીને  
 અપને સેવકનસો કહ્યો ને પુષ્ટિ માર્ગકો જીહાજી જાત હૈ જાકો કધુ  
 જૈનો હોયસો લેઉ ઐર ને બગવત ઇચ્છાતે રાજભોગ આરતી પાઝે  
 રહત હૈ તો મહુ આવતહોં પાઝે શ્રી ગુસાંઈજી વેર વેર સુરદાસ-  
 જીકી ખબર મગાયો કરે ને આવૈ સોઈ કહે ને મહારાજ સુરદાસજી-  
 તો અચેત હૈ કધુ ખોલત નાહીં એશે કરત શ્રી નાથજીકે રાજભોગકો  
 સમય બયોશો રાજ ભોગ આરતી કરિકે શ્રી ગુસાંઈજી ઓગિરરાજતે  
 નાચે ઉતરે સો આપ પરાસોલી પધારે ભીતરકે સેવક રામદાસજી પ્રભુ  
 ત ઐર કુંબનદાસજી ઐર શ્રીગુસાંઈજીકે શેવક ગોવિંદ સ્વામી અમ-  
 બુજદાસ પ્રભુત ઐર સખ શ્રી ગુસાંઈજીકે સાથ આવૈ સો આવત-  
 હી સુરદાસજીસોં શ્રીગુસાંઈજીને પૂછો ને સુરદાસજી કેસે હો તખ્ત  
 સુરદાસજીને શ્રી ગુસાંઈજીને દંડોત કરિ કે કહ્યો ને મહારાજ આવૈ  
 હો મહારાજકી વાટ દેખત હુનો, યહ કહિકે સુરદાસજીને એક પદ ક-  
 હ્યો સો પદ ॥ રાગ સારંગ ॥ દેખો દેખો હરિજીમે એક સુભાય ॥  
 અતિ ગંભીર ઉદાર ઉદધિ પ્રભુ જાનિ સિરો મનરા ॥૧॥ રાઈ જીત-  
 ની સેવાકો ફલ માનત મેરૂ સમાન ॥ સમઝિદાસ અપરાધિ સિંધુસમ  
 પુંદન એકો જાનિ ॥૨॥ વદન પ્રસન કમલ પદ સનમુખ દેખતહી હૈ  
 એશ વિમુખહુ બયે કૃપાયા મુખકી જાણ દેખો તખ્ત તૈશ ॥ ૩ ॥ બક્ત  
 વિરહ કરત કરૂણામય ડોલત પાછે લાગે ॥ સુરદાસ એશ પ્રભુકો ક-  
 ત દીજે પીઠ અભાગે ॥૪॥ યહ પદ સુરદાસજીને કહ્યો શાસુનિકે શ્રી  
 ગુસાંઈજી બહુત પ્રથન બાયે ઐર કહ્યો જોશો દૈત્ય પ્રભુ અપને શે-  
 વકનકો દેહિ યા દૈત્યકે પાત્ર એહી હૈ તખ્ત વાવેર શ્રીગુસાંઈજીકે પાશ  
 ઠાડે હુતે ઐર અત્રબુજદાસહુ ઠાડે હુતે તખ્ત અત્રબુજદાસને કહ્યો ને  
 સુરદાસજીને બહુત બગવદ જય વર્ણન કીયો પરિ શ્રી આચાર્યજી મ-  
 હાપ્રભુતકે જસ વર્ણન નાંહી કીનો તખ્ત યહ અચત સુનિકે સુરદાસજી  
 બોલે ને મેતો સવ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુન કોહી જસ વરણન  
 કીયો હૈ કધુ ત્યાસે દેખુ તો ત્યારો કરૂં પરિ તેરે સાથ કહતહો યા  
 બાંતિ કહિકે સુરદાસજીને એક પદ કહ્યો ॥ સો પદ ॥  
 ॥રાગ વિહાગરો ॥ બરોસો દ્રઢ ઇન અરણનકેસો ॥ શ્રીવલ્લભ નખ  
 ચંદ્ર છટા વિનુ સખ જગમાંડ અંધિરો ॥૧॥ સાધન ઐર નાહીં યા  
 કલિમે જસો હોત નિવેરો ॥ સુર કહા કહે દુર્વિધિઆં ધરો વિના  
 મેલકો ચેરો ॥ યહ પદ કહ્યો પાઝે સુરદાસજીકો મૂર્છા આઈ તખ્ત શ્રી

गुसांछलु कहे जे सुरदासलु चितकी वृत्ति कहाँ है तव सुरदासलुने  
 ओक पद और कह्यो सो पद ॥ राग बिहागरो ॥ वलि वलि बलि  
 हो। कुमर राधिका नंद सुवन नसो रतिमानी ॥ वे अति अतुर तुम य-  
 तुर सिसेमनि प्रीति करी कैसे होतहै जानी ॥ वे शुध रत तन इनक  
 पीत पट सोतो सव तेरी गति हानी ॥ ते पुनीस्याम सहजवे सोभा  
 अंयरमिस अपने डर आनी ॥२॥ पुलकित अंग अजही न्है  
 आयो निरखि देखि निज देह सियांनी ॥ सुर सुजन सज्जिके पुडे प्रेम  
 प्रकास ज्यो विह सानी ॥३॥ यह पद कह्यो छतनो कहिके सुरदासलुको  
 चित श्री हाकुरलुको श्री भुज्जतामे करुणारसके भरे नेत्र देखे तब श्री  
 गुसांछलु पूछो जे सुरदासलु नेत्रकी वृत्ति कहाँ है तव सुरदासलुने  
 ओक पद और कह्यो ॥ सो पद ॥ राग बिहागरो ॥ अंजन नेन ३ प  
 रस माते ॥ अतिसे याइ यफल अनियारे पल पिंजरान समाते ॥१॥  
 अलियली नत निकट अवलुनके डलटि पुलटिताटं कहुंदाते ॥ सुरदास  
 अंजन गुणु अठके नातर अवडिउ नते ॥२॥ छतनो कहतही सुरदा-  
 लुने वासरारको त्याग कीयो सो भगवद लीलामे प्राप्ति भये पाछे श्री  
 गुसांछलु सवसेवकन सहित श्री गोवर्द्धन आये ताते सुरदासलु श्री  
 आचार्यलु महाप्रभुनके परम कृपापात्र भगवदीयहे सो धनकी वार्ता  
 कोपार नाही ताते धनकी वार्ता कहाँतांछ लिप्पिये।

॥ वार्ताप्रसंग ॥ ६ ॥ वैश्व ८१ संबंध ॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभूनके सेवक

परमानंददास कनोजिया ब्राह्मण

तिनकी वार्ता.

सो परमानंददासलु परम भगवद लीला मध्ययात्री श्री हाकुरलु  
 के परम सज्जिके सोज्ज्य श्री आचार्यलु महाप्रभु आप भुतल पर  
 प्रगट भये तव श्री गोवर्द्धन नाथलुकी आग्या ते दैवीलुवनके उखा-  
 रार्थ और तैसेही श्री आचार्यलु महाप्रभुनको श्री हाकुरलुको सव  
 परकार प्रगट ज्यो और आय श्री गोवर्द्धन पर्वतमे प्रगट भये सो  
 गोपात्रदासलु वल्लभाप्यानमे गायेहैं जे अनेक लुव कृपाकरे वादे  
 सातर परवेस ताते परमानंददासलुको जन्म कनोजमेहैं कनौलया  
 आबलु के घर ज्यो सो वे परमानंददासलु बहुत भोग्य भये और  
 भवि भये भगवद कृपाके पात्र भये कीर्तन बहुत आछे गावते ताते

પરમાનંદદાસજીકે સંગ સમાજ બહુત રહતો આપ સ્વામી કહાવતે આપ સેવક કરતે સો ભગવદ ઇચ્છા તે એક સમે પરમાનંદદાસજી કનોજ તે આપ પ્રાગકો આપ્તે સો પ્રાગમે ઉતરે સો ઉહાં કીર્તન બહુત આછે ગાયતે તાતે બહુત લોગ કીર્તન સુનિવેકો આવતે ઐર અડેલ તે કાર્યાર્થ લોગ બહુત આવતે સો ઇનકે કીર્તન સુનિકે પાર અડેલમે જાણ કહતે જો પરમાનંદદાસજી ઇહાં પ્રાગમે આપ્તે હૈ સો કીર્તન બહુત આછે ગાયત હૈ સો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક જલધરિયા ક્ષત્રી કપૂરસો ઇનકે રાગ ઉપર બહુત આસક્તિ પરિ જો અવકાસ નાહો પાવે જો પરમાનંદદાસજીકે કીર્તન સુનિવેકો આવે સેવામે અવકાસ નાહો જો પ્રાગ જાઈશકે સો એક દિન એક વૈશ્નવ પ્રાગતે અડે. લમે આપો સો વાને કહ્યો જો આજ એકાદસી હૈ સો પરમાનંદદાસજી આજી જાગરન કરેગે સો યહ સુનિકે વા જલધરિયાને અપને મનમે વિચાર્યો જો આજી પરમાનંદદાસજીકે કીર્તન સુનિ વેકો ચલનો સો વે ક્ષત્રી કપૂર જલધરિયા અપની સેવાસોં પહુંચકે રાત્રીકો અપને ઘર આપ્તે સો ઘર આપકે અપને મનમે વિચાર કીયો જોવાવેરનાવતો મિલેગી નાહો તાતે કહા કર્તવ્ય પરિવે પૈરિવે મે બધે નિપૂન હુતે સો મનમે વિચારી જો પૈરિકૈ પાર જૈયે પાછે અપને ઘરતે ચલેસો શ્રી યમુનાજીકે તીર ઉપર આપ ડાડે ભામે તવ પરદની પહરિકે વચ્ચ સવ માંથે સો વાધિકે શ્રી યમુનાજીમે પૈરિકે પાર આગમે આપ્તે પાછે વચ્ચ પહરિકે જાડૈર પરમાનંદ સ્વામી ઉતરે હુતે તહાં આપ્તે સો ઇનકો કછુ મિત્રાપતો પરમાનંદ સ્વામીસોં હુતો નાહો જહાં ઐર સવ જનેવૈઠે હુતે તહાં એઉ જાણવૈઠે પારે એજી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક હે સોસવ કોઉ જનતહે તાતે સવનને ઇનકો આદર કરીકે વૈઠાપ્તે સોપ્તે વૈઠેતા પાછે પરમાનંદ સ્વામીને કીર્તનકો આરંભકીયો સો પરમાનંદ સ્વામીને વિરહકે પદ ગાપ્તે સો વિરહકે પદ કાહેસો ગાપ્તે જો પ્રથમ ઇનકો સ્વરૂપ કહિ આપ્તેહૈ કહી જોયેલીલા મધ્યપાતી શ્રી ઠાકુરજીકે પરમાનંદ સ્વામી પરમસખાહિ સો ઉહાંસોં વિધુરે ઐર ઇહાંતો અવહી શ્રી ઠાકુરજીકો દર્શન નાહો બપો ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો દર્શન આપ હોયગો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે માર્ગકીયહ સિદ્ધાંતેહ જો ભગવદીયનકો સંગ હોયતો શ્રી ઠાકુરજી કૃપા કરે તાહીકે લીપ્તે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને પરમાનંદ સ્વામીકે ઉપર અનુગ્રહ કરીકે અપને કૃપાપાત્ર ભગવદીયકે અંતકરનમે પેરીના કરકે પરમાનંદ સ્વામીકે ઇહાં પઠાપ્તે સોપ્તે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક કેસેહૈ જોજીનકો શ્રી ઠાકુરજી એક ક્ષણ હું નાહો જોડત ઇનકે

સંગહી રહતે કહિતે સુરદાસજી ગાએહૈં જો બંકત વિરહ કરત કર-  
 ના મયડોલત પાછે પાછે ઐર જગનાથ જોશીકી હુ વાર્તામે લિ-  
 ખ્યોહૈં જો જવ રજપૂતને તરવાર ચલાઈ તવ શ્રી હાકુરજીને વાકો  
 હાથ પકર્યો તાતે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવકનકે સદા શ્રીહા-  
 કુરજી નિકટહી રહતેહૈં તાતે પરમાનંદસ્વામીને વિરહકે પદ ગાએ ॥  
 સોપદ ॥ રાગ વિહાગરો વ્રજકે વિરહી લોગ વિચારે ॥ વિન ગોપા-  
 લ હોગે સેઠાડે અતિદુર્બલ તનહારે ॥૧॥ માતજ સોદા પંથ નિહારત  
 નિરખત સાંઝ સકારે ॥ જો કોઈ કાન્હર કહી બોલત અપ્પિયન વહત  
 પનારે ॥ ૨ ॥ યહમથુરા કાન્હર કીરેખાને નિકસેતે કારે ॥ પરમાનંદ  
 સ્વામી વિનુ એસે જૈસે ચંદાવિનુ તારે ॥ ૩ ॥ ઐર પદ ગાએ ॥  
 સોપદ ॥ રાગ વિહાગરો સખ ગોકુલ ગોપાલ ઉપાસી ॥ જો ગાહક  
 સાધનકે ઉષોસો સખ વચન હસિ પૂરકાસી ॥૧॥ જદ પિહરી હમત-  
 જી અનાથ કરી અવ છાંડતિ ક્યો રતિજસી ॥ અપની સીતલતા તહાં  
 છાંડતિ જદ પવિત્રરાહૈ આસી ॥ગા કિહિ અપ રાધજો ગલિખી પ-  
 ઠાપો પ્રેમ ભગ્ન તે કરત ઉદાસી ॥ પરમાનંદ એસીકો વિરહન માંગે  
 મુક્ત ગુનરાસી ॥ ૩ ॥ રાગ કાન્હરો કોન રસિકહૈં ધન વાતનકો ॥  
 નંદ નંદ નવિનુ કાસો કહિયે સુનિરી સખી મેરે દુઃખ યામનકો ॥૧ ॥  
 કહાં વે જમુના પુલિન મનોહરે કહાં વહચંદ સરદ રાતિનકે ॥ કહાં વે  
 મંદસુંગધ અનલ રસ કહાંવે ખટ પદજન જતનકો ॥૨॥ કહાં વે  
 સેજ પોઢિવો વનકો ડૂંગ વિજોના મૃદુ પાતનકો ॥ કહાં વેદ  
 રસ પરસ પરમાનંદ કામલતન કામલ ગાતનકો ॥ ૩ ॥ ॥ રાગ  
 કાન્હરો ॥ માઈકો મિલિવે નંદકિશોરે ॥ એક વારકો નેન  
 દિખાવે મેરે મનકે ઐરે ॥૧॥ જગત જન મગન ત નહીં ખુટત કયોં  
 પાઉંગી મોરે ॥ સુનિરી સખી અવ કેસે જીજે સુનિતમ ચરખ ગરોરે  
 ॥૨॥ જો યહ પ્રીતિ સખ અંતર ગતિ જીન કાહુ બન હોરે ॥ પરમાનંદ  
 પ્રભુ આંન મિલેગે સખી સીસ જીન ટોરે ॥૩॥ ઇત્યાદીક પદ વિરહકે  
 એસે પરમાનંદસ્વામીને સગરી રાતિ ગાએ પાછીલી ઘડી ચારી રાત્રી  
 રહી તવ જો જો જગરનમે આએ હુતે સો સવ અપને ધરકો ગએ  
 તૈસેહી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક એ જલ ધરિયા કપૂરહુ પર-  
 માનંદસ્વામીસાં જૈ શ્રી કૃષ્ણસ્મરન કહિકે ચલે ઐરે પરમાનંદસ્વામીકે  
 કીર્તન સુનિકે વહુત પ્રસન્ન બએ ઐરે પરમાનંદસ્વામીસાં કહ્યો જો  
 જૈસે હમને સુને હુતે તાતે અધિક દેખે તુમ પરમ ભગવદ અનુગ્રહ  
 પૂરન હોયે જલધરિયા ક્ષત્રી કપૂર શ્રી મહાપ્રભુનકે પરમ ભગવદીય હૈં  
 સો એ ચલિઆએ સો પરમાનંદસ્વામીકે ઉપર અનુગ્રહ કરિવેકો આએ

હું નાતરે ભગવદીય કાહેકો કાહેકે ધર જાય ઐર યહ ઉપર કહિઆએ  
 હું જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે નિકટ હીરહત હું સોયાકો હેત યહ  
 જો નિકટ રહત હું તો ઇત જલધરિયા ક્ષત્રી કપૂરકી ગોદમે વૈઠિકે  
 શ્રી નવનીતપ્રિયાજીને પરમાનંદસ્વામીકે પદ સુને જો શ્રી આચાર્યજી  
 મહાપ્રભુનકે માર્ગકી મર્યાદા હૈ જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે અનુગ્રહ  
 વિના શ્રી ઠાકુરજી કૃપા ન કરે સો ઇત જલધરિયા ક્ષત્રી કપૂર ઉપર  
 શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો પરમ અનુગ્રહ હૈ તાતે શ્રી નવ નીત  
 પ્રિયાજી ઇતકો ગોદમે વૈઠિકે પરમાનંદસ્વામીકે પદ કાહેકો સુનને પડે  
 સો તાકો હેત યહ જો ભગવદીય પરમાનંદસ્વામીકે ઉપર શ્રી નવનીત  
 પ્રિયાજી અનુગ્રહ કરીવેકો આપ પધારે હું તાતે સુને સો શ્રી આચાર્ય-  
 યજી મહાપ્રભુનકે સેવક જલધરિયા ક્ષત્રી પરમાનંદસ્વામીસોં જોસો કૃમ  
 કહિકે ચલે સો શ્રી યમુનાજીકે તીર ઉપર આએ સો ઉહાં આપકે  
 વિચાર કીયો જો નાવકી વાટ દેખે તો અવાર હોય ઐર સેવા છુટે  
 ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનહીંતો ખીનિંગે તાતે જોસે પૈરિકે આએ  
 હુતે તેસે ચલે સો પૈરિકે પાર ગએ સો પાર આવતહીં જ્ઞાન કરીકે  
 અપની સેવામે તત્પર બએ પાછે ઉહાં પ્રાગમે પરમાનંદસ્વામીકી  
 રાત્રિકે જગરનકે અમિતસોં આંખિ લગી નીદ્રા આઈ સો ઇતનેમે  
 સ્વપ્ન આપો સો સ્વપ્નમે દેખે જો જોસે રાત્રિકે જગરનમે શ્રી આચાર્ય-  
 યજી મહાપ્રભુનકે સેવક જલધરિયા ક્ષત્રી ઐઠે હું ઐર ઉતકી ગોદમે  
 શ્રી નવનીત પ્રિયાજીકેદરસન બએ ઐર સ્વપ્નમે શ્રી નવનીત પ્રિયાજી  
 પરમાનંદસ્વામીસોં કહે ઐર પરમાનંદસ્વામીકી નિદ્રા ખુલી સો વા શ્રી  
 મુખકો કોઉ સૌંદર્ય કોટિક દર્પણાવ એય પરમાનંદસ્વામીને દેખ્યો સો  
 સ્વપ્નમેતો -હદમે ધરિ લીએ ઐર મનમે ચટપટી લગી જો યહ દર્શન  
 ફેરી કય હોયગો તવ યહ મનમે વિચાર્યો જો યહ દર્શન ઉત શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવક ક્ષત્રી જલધરિયા વિનાન હોયગો તાતે હોય  
 તો ઉતકે પાસ જૈયે જો ઉતસોં મિજે તખ કાર્ય સિદ્ધિ હોય એસો  
 પરમાનંદસ્વામીને અપને મનમે વિચાર કીયો સો તત્કાલ પ્રાગતે અડેલકુ  
 ચલે સો શ્રી જમનાજીકેતીર ઉપર આપ ઠાડે બએ સો પ્રાતઃકાલકો  
 સમય બપો સો પ્રથમ નાવ ચલી તાપર વૈઠિકે પાર ઉતરે તવ આગે  
 જનકે દેખે તો શ્રી આચાર્યજી હમાપ્રભુ જ્ઞાનસંધ્યા વંદન કરત હૈસો  
 પરમાનંદસ્વામીકી શ્રી મહાપ્રભુજીકા કેસો દર્શન બપો સાક્ષાત પૂરણ  
 પુરૂષોત્તમ શ્રી કૃમચંદ્રસો શ્રી શુસાંઈજી બલ્લભાજીકે લિખે હૈ સો  
 વસ્તુત કૃમએવચ એસો દર્શન બપો જો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે  
 સેવક જલધરિયા ક્ષત્રી કપૂરકી ગોદમે શ્રી ઠાકુરજી કાહેસોં વેઠે યહ

करन छनके मांथे ऐसे प्रभु भिराजत हैं परि परमानंदस्वामीके मनने  
 यह जे क्षत्री कपूर भिले तो आछो सो कहिते जे छनके मांथे ऐसे  
 प्रभु और छनके दर्शनते श्री आचार्यछ महाप्रभुनको दर्शन भयो  
 ता पाछे श्री आचार्यछ महाप्रभुनने अपने श्री भुज्जसों कछो जे  
 परमानंद कछु लगवद नस वलुन करि तव परमानंदस्वामीने विरहके  
 पद गाये ॥ सो पद ॥ राग स रंग ॥ कोन मेर बछ मखरी गोपालो  
 हो नन सार भछ हीन्यो ते वार वार वुंरत अज वासि ॥ १ ॥ तेरे तनको  
 ३५ कहां गयो बामिनी अरु भुज्ज कमलसु आर २६ ॥ सव सौ-  
 भाग भयो हरिके संग हृदसों कमल विरह दहयो ॥ २ ॥ को वो लको  
 नैन उधारे को प्रतिउतर देहि निकल मना ॥ जे सर्व सुअकर गुराओ  
 परमानंदस्वामी छवन धन ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥ छयकी साधन  
 छयही रहरी अहुरी गोपाल दयन नहीं पाये विलपति कुज  
 अहरी ॥ १ ॥ अक दिन सोन सभोप यह मारग वेयन न तद  
 हीरी ॥ प्रीतिके बीये दान भिस मोहन मेरी वांह गहीरी ॥ २ ॥  
 विन दये धटीआं न्यां लप सभ विरहा मनलद हरी ॥ परमा-  
 नंद स्वामी विन दर्शन नैन ननीद वहीरी ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥  
 यह वात कमल दल नैनकी वारवार सुधि आवत सजनी अहु  
 दुरि देनी सेन सेनकी ॥ यह बीजा यह रास सरदसे गोरनर  
 नत अपनि अरु यह अयो रेर मनोहर निसकरी मोहि सुनावनि  
 ॥ १ ॥ वसन कुंजमे रास मिलायो विधा गमाछ मनकी परमानंद प्रभु-  
 सों क्यों छवे न पोषी भुज्जमेनकी ॥ ३ ॥ या भांति परमानंद स्वांमिनि  
 विरह के पद गाये सो सुनि के परमानंद स्वांमिसों कछो जे कछु  
 वाजलीला वरछुन करी तय परमानंद स्वांमिनि कछो जे महाजमे  
 कछु समजत नाही तव श्री महाप्रभुनने कछो जे स्नान करि आउ  
 हम तोकि समजवेगे । तव परमानंद स्वांमिनि श्री महाप्रभुनने पूछो  
 जे महाराज आपकी सेवक विरक्त कहाँ है तव श्री आचार्यछ महा  
 प्रभुनने कछो जे कछु टहल करत होयगो तव परमानंद स्वांमा  
 स्नानके गये सो तव परमानंद स्वामी आगे नयके दये तो नमुनां  
 नलकी गागर लेके यह कपूर क्षत्री आवत हे तय निकट आये सो  
 सांभे भिले सो उनको देखिके परमानंद स्वामी अहुत प्रसन्न भये  
 और परमानंद स्वांमिनि उनको नमस्कार कयो और कछो जे रात्रिको  
 नगरनमे आप पधारे हुने सो श्री हापुरछने आपकी गोदमे बैठिके  
 भरे कीर्तन सुने सो आपकी कृपाते श्री हापुरछने मेसों कछो जे मे  
 श्री आचार्यछ महाप्रभुनके सेवक नलधरिया क्षत्रीकी गोदमे बैठिके



તરે કીર્તન સુતૈઐ ઐર આપકી કૃપાતે મેરો ભાગ્ય સિદ્ધિ ભયો હૈ  
 સો આવતહી તુમહારી કૃપાતે મોકો દર્શન ભયો ધનની ખાત સુનિકે  
 હન જલધરિયાને કહ્યો ને એસે મતિ કહો ને શ્રી આચારચંદ્ર મહા  
 પ્રભુ સુનેગે તો ખીન્નગે ને સેવા છોડકે ક્યાં ગયો તાતે યહ વાત  
 મતિ કહો તખ ધનનો સુનિકે પરમાનંદસ્વામીકો વહુત આશ્ચર્ય ભયો  
 ઐર કહ્યો ને એ ધન્યહૈ જન ઉપર શરી ઠાકુરજીકો એસો અનુગ્રહ  
 હૈ ઐર યે અપનો સ્વરૂપ છિપાવત હૈ પાછે પરમાનંદ સ્વામીતો સ્નાં-  
 નકો ગએ ઐર જલધરિયા જલકી ગાગરિ લેકે મંદિરમે ગયો પાછે  
 ગરમાનંદ સ્વામી શરી જમુનાજીમે સ્નાંત કરિ કે તત્કાલ આપ શરી  
 આચારચંદ્ર મહાપ્રભુને આગે આય ઠાડે ભએ તખ શરી આચારચ  
 ંદ્ર મહાપ્રભુનને કહ્યો ને પરમાનંદ સ્વામીકે આગે આડિ બૈઠિ તવ  
 પરમાનંદ સ્વામી આપ આગે આય બૈઠે તવ શી આચારચંદ્ર મહા-  
 પ્રભુનને પરમાનંદ સ્વામીકો નામ સુનાયો પાછે મંદિરમે પધારિકે શરી  
 નવનીત પ્રિયાજીકે સનિધાન પરમાનંદ સ્વામીકો પ્રભુ સંબંધ કરવાયો  
 પાછે અનુગ્રહ કરિકે પરમાનંદ સ્વામીકો અનુકમનિકા સુનાઇ કાહેતે  
 ને પ્રથમ પરમાનંદ સ્વામીસો શરી આચારચંદ્ર મહાપ્રભુનને અપને  
 શરી મુખસોં કહ્યો ને ભગવદ જસ વરણન કરિ સો પરમાનંદ સ્વાં-  
 મીને વિરહકો પદ ગાયો તવ શરી આચારચંદ્ર મહાપ્રભુનને કહ્યો ને  
 પરમાનંદ સ્વામી વાલ લીલા ગાડિ તવ પરમાનંદ સ્વામીને કહ્યો ને  
 રાજ મે કછુ સમજત નાંહી સો પરમાનંદ સ્વામીને કાહે તે કહ્યો ને  
 હર કહિ આએ હૈ ને યે શરી ઠાકુરજીસોં વિધુરે હૈ સો વિધુકે દુઃખ  
 કીતો સ્ફુર્તિ રહી ઐર સંયોગ ને સુઃખ હુયો તાકો વિસ્મરન ભયો  
 ને કાહે તે ને સવ લીલા વિસિષ્ટ પૂરણ પુરષોત્તમ તો શરી આચારચ  
 ંદ્ર મહાપ્રભુને ધર પધારે હૈ સો પરમાનંદ દાસકો શરી આચારચંદ્ર  
 મહાપ્રભુનને અનુકમણિકા સુનાઈ તખ સવ લીલાકી સ્ફુર્તિ ભઈ ઐર  
 અનુકમણિકા સુનાઈ તાકો કારન કહા ને શરી આચારચંદ્ર મહાપ્રભુ  
 નકો નામ હૈ શરી ભાગવત પીપ્પલ સમુદ્ર મયન ક્ષમઃ સો શરી મદ-  
 ભાગવતકો શરી ગુસાંઇજી અમૃતકો સમુદ્ર કરિકે વરણન કીએ હૈ સો  
 અનુકમણિકા દારા શી ભાગવત રૂપી સમુદ્ર શરી આચારચંદ્ર મહા-  
 પ્રભુનને પરમાનંદ સ્વામીકે -હૃદયમે ધરયો તાતે વાંણીતો સખ અષ્ટ  
 કાચકી સમાંત હૈ ઐર યે દોડિ પરમાનંદ સ્વામી ઐર સુરદાસજી  
 સાગર ભએ સો યાતે ને શરી ભાગવત રૂપી અમૃતકો સ્વરૂપ ધનિકે  
 -હૃદયમે શરી આચારચંદ્ર મહાપ્રભુનને ધરયો સો કાહેતે ને સખકોડિ  
 સુરસાગર ઐર પરમાનંદ સાગર કહને અવ પરમાનંદ દાસસો શરી

આચાર્યજી મહા પ્રભુ શરી મુખ સોં કહે જો વાલ લીલા  
 વર્ણન કરિ સો પરમાનંદ દાસજીને તત્કાલ વાલ લીલાકે પદ  
 કરિ કે શરી નવનીત પ્રિયાજી કે સન્નિ ધાન ગાએ ॥ સો પદ  
 રાગ સામેરી માઈરી કમલનેન ર્યાંમ સુંદર જીલતહૈં પલન ॥ વાલ  
 લીલા ગાયત સવ ગોકુલકે લલના ॥ ૧ ॥ અરણ તરણ કમલ નખ  
 મનિજસ જોતી ॥ કુંચિત કચબરાકત લટકત ગજ મોતી ॥૨॥ અં-  
 મુકા ગાહિ કમલ પાંન મેલત મુખ માહી ॥ અપનો પ્રતિવિંદ દેખિ  
 દુનિ દુનિ મુસિકાહી ॥૩॥ જમુમનિકે પુન્ય પુંજ વારંવાર લાવે ॥ પ-  
 રમાનંદ સ્વામી ગોપાલ સુતસનેહપાવે ॥૪॥ યહ પદ સુનિકે શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુ વહુત પ્રસન્ન બએ કેરિ ઐર પદ ગાયો સોપદ ॥  
 રાગ વિલાવલ જસોદા તેરે બાગ્યકી કહી ન જાય ॥ જો મુરતિ પ્રદ્ધા-  
 દિક ફુલેબ સો પ્રગટે હૈ આય ॥૧॥ સિત નારદ સનકાદિક મહા મુનિ-  
 મિલયે કરત ઉપાય ॥ તે નંદલાલ ધુરી ધુસરવપુરહત ગોદલપટાય ॥૨॥  
 રતન જટિત પોઠાય પાઝને વદન દેખિ મુસિકાઈ ॥ જીસી મોરે લાલ  
 વલિહારી પરમાનંદ જસગાઈ ॥ ૩ ॥ રાગ વિલાવલ ॥ મણિમય  
 આંગનનંદ કે ખેલત દોઢ બઘયા ॥ સો એસે વાજ લીલાકે પદ પરમા-  
 નંદદાસને ગાએ શ્રી સુનિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ બહુત પ્રસન્ન  
 બએ સો પરમાનંદદાસજી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે પાસહે સો  
 પરમાનંદદાસકો આપને કીર્તનનકો સેવાદીની સો પરમાનંદદાસજી શ્રી  
 નવનીત પ્રિયાજીકો નિય નએ પદ કરાકે બાંતિભનિકે સુનાવતે જવ  
 અનોસરહોતો તવ પરમાનંદદાસજી શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે આ-  
 મે પદ કીર્તન કરે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ નિત્ય કથા કહેતે સો પર-  
 માનંદદાસજી નિત્ય સુનતે સો તાહી પ્રસંગે કીર્તન કરિકે પરમાનંદ-  
 દાસજી સુનાવતે સો એકદિન પરમાનંદદાસજીને શ્રી ઠાકુરજીકે ચરણા  
 વિંદકો મહાત્મ સુન્યો સો ચરણાવિંદ કે મહાત્મકો કીર્તન કરી શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનકો સુનાયો સુનિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ વહુત  
 પ્રસન્ન બએ સો પદ રાગ કાન્હરો ચરણ કમલવંદો જમદંસ ગોધનકે  
 સંગઘાએ ॥ જેપદ કમલ ધુરી લપટાને કરગાહિ ઝોપીનેકે ઉર લાએ ॥  
 ૧ ॥ યહ પદ સંપૂરણ કરાકે પરમાનંદદાસજીને ગાયો ઐર શ્રી આ-  
 ચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સ્વરૂપકો ઐર પ્રાર્થનાકો પદ ગાયો સો પદ  
 રાગ કાન્હરો ॥ યહ માંગો ગોષી જન વલ્લભ યહ પરમાનંદદાસ સ્વા-  
 મીનિ સંપૂરણ કરાકે ગાયો સો સુનિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ અપને  
 મનમે જનને જો યહ મિસ કરાકે પરમાનંદદાસ યાપદકો સુનાયેકે વૃજ  
 કે દર્શનકો પ્રાર્થના કીનિહૈ તાતે વજ્રકો અવસ્થ ચલનો.

## વાર્તા પ્રસંગ ૧૧૧૧

અવગ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ પદ વિચાર કરે જો વૃજ્ઞો પધારીવેકો ઉદ્ધમ કીયો સો દામોદરદાસ હરસાંની કૃષ્ણદાસ મેધન, પરમાનંદદાસ ઝોર વાદવાસ હલવાઈ તથા રસોઇકી સામગ્રી સંગલેકે ચલે ઝોર સવ વૈરનવ સંગ લે આપ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ વૃજ્ઞો પધારે સો વૃજ્ઞો આવત પરમાનંદ દાસકો ગાંમ કનૌજ આપો તવ પરમાનંદ દાસતે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનસોં વીનતી કીની જો મહારાજ મેરે ઘર પધારીયે આપકે અનુગ્રહ તે મેરો ભાગ્ય સિદ્ધિ ભયો હૈ અપ્ય મેરો ધરહુ પાવન કરિયે તવ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ અંતરજામી કૃપાનિધાન ભક્ત મનોરથ પૂરવક આપ કૃપા કરિકે પધારે સો પદમાનંદ દાસકે ઘર આજી ભાતિસો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનને રસોઈ કરી શરી ઠાકુરજીકો ભાગ સમર્પ્યો પાછે ભાગ સરાયકે આપ પ્રસાદ લીવાયો પાછે આપ આદી તકીયાનકે ઉપર વિરાજે તવ પરમાનંદ દાસસો કહ્યો જો કહ્યુ ભગવદ જસ ગાયો તખ પરમાનંદ દાસને મનમે ખિચારી જો યા સમય શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો મનતો વૃજ્ઞમે શરી ગોવર્દન નાયજીકે પાસ હૈ તાતે વિરહકે પદ ગાઉ સો વિરહકો પદ ઝેરો ગાયો જામે છિનહું કલપ સમાન જાય સો પદ ॥ રાગ સોરઠ ॥ હરિ તેરી લીલાકી સુધિ આવે ॥ કમલ નેન મન મોહતી મુરતો મનમન ચિત્ત બનાવે ॥૧॥ એક વાર જાય મિલત માયા કરિ સો કૈસે વિસરાવૈ ॥ મુખ્ય મુસિકયા નિવંક અવિ લોકની ચાલ મનોહર ભાવૈ ॥૨॥ કમલુક નીવડ તિમર આલિંગન કપહુ કપિષ્ઠ સુરે ગાયે ॥ કમલુ કસંભ મકવા સિકતા સિક હિસંમ હિન કહિ ધાવે ॥૩॥ કમલુક નેન મુંદિ અંતર ગતિ મણિ માલા પહિરાવૈ ॥ પરમાનંદ ર્યાંમધ્યાન કરી એસે વિરહ જમાવૈ ॥ ૪ ॥ પદ પદ પરમાનંદદાસને ગાયો સોસુનિકે શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો મુઝા આઠ સો જલ્લીલાકો પદ પરમાનંદદાસજીને આપો ॥ તાલીલાવિએ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ માનભયે સોદેહાનુ સંધાન ન રહ્યો સોતીનતદિનજો શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો મુઝા રહી સો સવરે સેવક દામોદરદાસ હરસાંની પ્રભુતિ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે દર્શન કરે સો પૈસેહી બેઠે રહે ચતુર્થ દિનકે પ્રાતઃકાલ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુ સાવધાન ભયે તવ સવ વૈષ્ણવ પ્રસન્ન ભયે તવ પરમાનંદદાસજી મનમે ડરપેજો ફેરી એસો પદ ન ગાઉ ફેરી સુધિ પદ આમે સો પદ ॥ રાગ વિભાગ ॥ માછરીહો આનંદ યુનગાઉ ॥ ગોકુલકી ચિંતા મણિ માવોજો માંગો સો પાઉ ॥૧॥ જવ તે કમલનેન વ્રજ આમે સકલ સંપ-

दा बाढो ॥ नंदरायके द्वारे दृष्टो अष्ट महासिद्धि डाढी ॥ २ ॥ कुलैकुले  
 सदावृंदावन कामधेनु दुहिदीन्ते ॥ भारगमेग छंद वरसावै कृष्ण  
 कृपा सुख लीजै ॥ ३ ॥ कहत नृसिंहा सज्जियत आगे हरि उ-  
 त कर्षणनावै ॥ परमानंददासको डाढ़ी मुरली मनोहर लावै ॥ ४ ॥  
 और हु पद गायो सो पद ॥ राग गौरी ॥ निमज नृस पृंदावनके  
 संद्रको ॥ यह पद संपूरण करिके गायो इरी और आयो सो पद ॥  
 ॥ राग सारंग ॥ अलिरी नंद गाम नय वसिये ॥ यह पद संपूरण  
 करिके गायो सो या पदमे यह कह्यो जे अलिरी नंद गाम नय वसिये  
 सो श्री महाप्रभु उ मुनि वृंदाको पधारे सो प्रथम श्री गोकुल पधारे  
 सो श्री गोकुल आवतही श्री आचार्य उ महाप्रभु श्री यमुनाछके तीर  
 उपर छां करिके नीचे पैडकमे तहां श्री आचार्य उ महाप्रभु विराजै  
 और ऐक पैडक श्री द्वारिकानाथछके मंदिरके पास है सो भीतरकी पैडक  
 हे सो राजिके निशाम तथा रसोक्तकी ओर हे उहां श्री आचार्य उ म-  
 हाप्रभुनकी घर हुतो नृस आप श्री गोकुल पधारेते तब उहां छ उतरते  
 सो यह भीतरकी पैडक हे पाछे सग ऐश्वर्यनने श्री यमुनाछ आन  
 कीमे और परमानंददासछहु श्री यमुनाछके नृस वर्णन कीमे सो  
 पद ॥ राग रामकली ॥ श्री यमुनाछ यह प्रसादहो पाछे ॥ तिहारे  
 निकट रहो निसवासर रामकृष्ण गुन गाओ ॥ १ ॥ मंजन निमज पावन  
 नृस शिंताकु लज्जवहाओ ॥ तिहारो कृपाभांनकी तनया हरिपदप्रति अडाओ  
 ॥ २ ॥ वीनता करो यही वर मांगो अधम संग विसराओ ॥ परमानंद-  
 दास इल दाता मदनगोपाल जडाओ ॥ ३ ॥ राग रामकली ॥ श्री यमुनाछ  
 दान नानि माहि दीन्ते ॥ सो ऐसे पद संपूरण करिके श्री यमुनाछके  
 परमानंददासछने अहुत गाये श्री आचार्यछके आगे तारविजे  
 गाये ता उपरांत श्री महाप्रभुछने परमानंददासको आजलीला विसिष्ट  
 श्री गोकुलके दर्शन करवाये सो परमानंददासको ऐसे दर्शन लयो जे  
 सब वृंदावत श्री यमुना नृलकी गागरी भरि ले नतहै और श्री डाढ़-  
 रछ मार्गमे ऐलत है और वृंदावतनकी नृलकी गागरी छांय दैत है  
 और उनकी कंसुकी तोरे हे या भांतिसो दर्शन लये सो तैसो छ पद अ  
 आचार्य उ महाप्रभुनके आगे गायो सो पद ॥ राग बिलावल ॥  
 नृमुना नृल घर भरि अली संद्रावली नारी ॥ भारग ऐलत मिले धन-  
 श्याम मुरारी ॥ १ ॥ नेननसो नेता मिले मन रह्यो है लुभाछ ॥ मोहन  
 भूरी छ वसी पग धरो न नछ ॥ २ ॥ तयकी प्रति प्रगट लछ यह  
 पहली भिष्ट ॥ परमानंद ऐसी मिली जैसे गुडमे चेट ॥ ३ ॥ राग सारंग ॥  
 लावने कटोको मेरी पैयां ॥ ओ छट छट अक्षयो नहीं नछ ॥ रपटतहो  
 डाढ़ीद्री महीयां ॥ १ ॥ यह पद संपूरन करी ऐसे पद गाये ता पाछे

પરમાનંદદાસને આજલીબાકે પદ બહુત ગાએ ઐર શ્રી ગોકુલકો સ્વરૂપ  
જન્મે આપે એસો પદ ગાયો સો પદ ॥ રાગ કાન્હરો ॥ ગાયત ગોપી  
મધુ વૃજ વાંની ॥ જનકે જુવન મતિ રાજ નંદ જસોદા રાની ॥૧॥  
માહત વેદ બારતી ગાયત ગાયત નારદાદીમુનિ આંની ॥ ગાયત યુન  
ગંધર્વકાલ સિ ગોકુલનાથ મહાત્મ જની ॥૨॥ ગાયત ચતુરોં નન જડુ  
નાથક ગાયત સેખ સહજ મુખ રાસ ॥ મનકર્મ વચન પ્રીતિ યહ  
અંબુજ અવ ગાયત પરમાનંદદાસ ॥૩॥ યહ પદ પરમાનંદદાસને ગાયો  
પાછે ઐર પદ ગાયો સો પદ ॥ રાગ કાન્હરો ॥ જસુ મતિઅહ  
આવત ગોપીજન ॥ વા સર તાપ નિવારન કારન વારંવાર કમલસુખ  
નિરખન ॥૧॥ આહત પકરિ દેહરી ઉલંઘન કિલકિલ કહુલ સત મનહી  
મન ॥ લોન કિતારી દોહ કર વારિ ફેરી ડારત તન મન ધન ॥૨॥ લેત  
કિઠાય આંપત હીપો ભરિ પ્રેમ વિખ સત્રાગે દગ ટરકન ॥ ચક્ષી લે  
ચલના પોઠાવનકો અર કસાપ પોઠે સુંદરધન ॥૩॥ દેત અસીસ સકલ  
ગોપીજન ચિરંજીવો લોમ ગજમુન પરમાનંદદાસકો ઠાકુર બકતવછલ  
બકતન મન રંજન ॥૪॥ રાગ હમીર ॥ ચિતૈ ચિતૈ ચિત ચોરોચોરી માર્ઠ  
॥ યહ પદ સંપૂર્ણ કરિકે ગાયો સો એસે પદ પરમાનંદદાસને બહુત ગાએ  
તા પીછે શ્રી ગોકુલનાથજીકે દર્શન કરિકે પરમાનંદદાસ શ્રી ગોકુલ ઉપર બ-  
હુત આસકિત બએ તખ એસે પદ ગાએ જો જન્મે શ્રી આચાર્યજી મહા  
પ્રજુનકી પ્રાર્થના કીની સો કહા પ્રાર્થના કીની જો મોકો શ્રી ગોકુલમે આ-  
યકે ચરણાવિંદકે નીચે રાખો નિત પ્રતિ પ્રજુનકે દર્શન કરો સર્વ બીલા  
વિસિષ્ટ પૂરન પુરષોત્તમ હૈં ઐર યહ પદ ગાયો સો પદ ॥ રાગ કાન્હરો  
યહ માંગો જસોદા નંદન ॥ ચરણ કમલ મનમન મધુકર વા છવિ નેનન  
પાગે દર્શન ॥૧॥ ચરણ કમલકો સેવા દોહિ તન રાજત વિજૈલતા ધન  
નંદન ॥ વૃષભાંન નંદની ઝેરે સર્વસુ પ્રાંતજીવન ધન ॥૨॥ અજ વસિષો  
જમુનાજલ અગિયો શ્રી વલ્લભકો દાસ યહી પન ॥ મહા પ્રસાદ પાઝે  
હરીચુન ગાગે પરમાનંદદાસ જીવન ધન ॥૩॥ રાગ કાન્હરો ॥ જખ  
લગ જમુના ગાય ગોવર્દન તખલગ ગોકુલગાંમ યુસાંઈ ॥ યહ પદ સંપૂ-  
રન કરિકે પ્રાર્થનાકે પદ ગાએ ॥ તવ કિતેક દીન શ્રી આચાર્યજી  
મહાપ્રજુ શ્રી ગોકુલમે વિરાજે તા પાછે સખ વૈખનવનકો સંગ લેકે શ્રી  
ગોવર્દનનાથજીકે દર્શનકો પધારે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥૩॥

અખ શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રજુ આંન કરિકે પર્વત ઉપર પધારે  
સો આવતહી પરમાનંદદાસને શ્રીનાથકો શ્રીમુખ દેખિકે વહાકે વહાં  
રહે તવ શ્રી મહાપ્રજુજીને શ્રીમુખસોં કહો જો પરમાનંદદાસ કહુ  
બગવતબીલા ગાયો તવ પરમાનંદદાસ અપને મનમે વિચારે જો કહા

गाँठ तब जैसे विचारो गे जेमे प्रथम अवतारलीला पाछे अरुणा-  
 विंदकी वंदना पाछे भगवदवल्लभको स्तव ३५ ता पाछे आलकीडा ता पाछे  
 श्री हाकुरेजीको महात्म जैसे पद परमानंददासने गायो ॥ सो पद  
 ॥ राग कान्हुरो ॥ मोहन नंदराय कुमार प्रभु प्रह्लाद निरंजन नायक  
 भक्तहित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम अरुण सरोज वंदो स्याम धन गोपाला  
 मंकर कुंडल गंड मंडित आइ नेन बिसास ॥ २ ॥ अलिशम  
 सहित विनोद लीलासे कर हेत ॥ दास परमानंद प्रभु हरि नागम  
 बोलत नेत ॥ ३ ॥ और आसक्ति को गायो ॥ राग धुरवी ॥ जेरो  
 माछ भाषीसों मन मान्यो ॥ जेरो नेन और कमल नेनको छठ  
 ठोरो करि सान्यो ॥ १ ॥ लोक भेदकी कान्तजीमे न्योती अपने  
 सान्यो अक गोविंद अरुणके करत और सवन सों दान्यो ॥ २ ॥ अथ  
 क्यों भिन्न होय जेरो सजनी दुख भिन्नो जैसे पान्यो ॥ परमानंद  
 मिली गिरधरसों है पहली पहचान्यो ॥ ३ ॥ जैसे पद परमानं-  
 ददासने गाये ॥ ता पीछे श्री आचार्यजी महाप्रभु सेन आर-  
 ती करि आनाथजी कों पोढाये तब अनोसर करि आप नीचे पधारे  
 तब परमानंददासहु नीचे आथ जेठे तब रामदास जीतरियाने परमा-  
 नंददासको महाप्रसाद दुध पढायो सो दुध सो दुध परनंददासजी लेवे  
 बाजे ॥ तब तातो लायो. तब परमानंददासजीने सीरो करिके लीयो  
 ता पाछे रामदासने पुछे गे तुमको महाप्रसाद दुध पढायेसो आ-  
 यो तब परमानंददासने कही गे हां आयो परि दुध बहुत तातो हुतो  
 सो जैसे दुध श्री हाकुरेजी कैसे आरोग्य है ताते दुधवो सुहातो भ-  
 सो तब रामदासने कही गे बहुत आछो आप भगवदीयहो जैसे  
 आग्या करोगे तैसे करेगे तब सकारे सब सेवक स्नान करि के शरीगोव-  
 र्धननाथजीकी सेवामे तत्पर भये तब शरी आचार्यजी महाप्रभुनने  
 स्नान करिके शरीगिरिराज उपर पधारे तब शरीगोवर्धननाथजीको न-  
 गाओ तब या सभ परमानंददासजी नन्हेके शरी हाकुरेजीके नगायेको  
 पद गायो ॥ सोपद ॥ रागभिलास ॥ जगोगोपालजान मुष्प देजों ते  
 रो ॥ पाछे गृहकाज करो नित्य नेम जेरो ॥ १ ॥ विगसनिसा अरुण  
 दिसा उदित भ ॥ भान ॥ गुंजत अंग पंकज वन जमिजे भगवान ॥ २ ॥  
 छारे हाउ वंदीजन करत है पुकारे ॥ वंसप्रसंग गावत हरिलीला सार ॥ ३ ॥  
 परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल ३५ ॥ जेद पूराण पढत महमा  
 लीला अनुप ॥ ५ ॥ यह पद परमानंददासने गायो क्षिरिकेलेको पद गा-  
 यो सो पद ॥ राग रामकली ॥ पिछपारे है ग्वालन डेर सुनायो ॥ क-  
 मल नेन प्यारो करत कलेउ कोटन मुष्पलौं आयो ॥ १ ॥ अरी मैषा  
 गैया अक वन ब्याछ रहौ है वछरा उहांछ वसायो ॥ भुरली लछ नल

कुटियाल लीनी अम्भ रायको उसम्भान पुत्रायो ॥ सकत भध नंदकुडी  
 रानी सत्य आय कीचो अपनो पायो ॥ कुलिन अंग समानरसर  
 त्रभुवन पति सिर छत्र ने छायो ॥ ३॥ मिलि जेउ संकेत सधन वन  
 विविधि भांति कीयो मन लायो ॥ परमानंद सयानी ग्वालनि उल्लसि  
 अंभ गिरधर पिय पायो ॥ ४॥ जैसे पद परमानंददासने गायो तापाछे  
 शरी गोवर्धन ॥ यछुके मंगलाछे दर्शन भुखे तव परमानंददासने शरी  
 गोवर्धननाथछुसो पूछो ने आप तातो दुध क्यो आरोगत है तय  
 शरीनाथछुने कछो न मे हमको समर्पत है सो आरोगत है तापा-  
 छे परमानंददासछु नित्य कर्तन करि के सुनावते तय ता समय जेक  
 राज दर्शनको आयो सो शरी गोवर्धननाथछुके दर्शन करे तव केरि  
 आयेके रानीसो कही ने शरी गोवर्धननाथछु डाकुरे बहुत सुंदर है ताते  
 तु जयके दर्शन करि आउतव रानीने कही ने जेहे हमारी रीति है सो  
 होय तो दर्शन करे तय राजने कही ने शरी गोवर्धननाथछुके दर्शन  
 मे कछेको परदा ह तव रानीने मांजी नाही तय राजने शरी आ-  
 सार्यछु महाप्रभुनशे चीनती कोनी ने महाराज भेतो रानीसो बहुत  
 कहत होपरि वह आवत नाहो ताते आप कृपा करिक दर्शन करवावो  
 तो वह करे तव शरी आसार्यछु महाप्रभुनने कही ने छहां आवो ने  
 प्रथम वाको अकान्तमे दर्शन करवावेगे तापाछे और लोग दर्शन करेगे  
 तव राज अपनी रानीको जियायके शरी गोवर्धननाथछुके दर्शन करवाये  
 सो समय लोग सरकि गये तय रानी दर्शन करवेलगा तय धननेमे शरी  
 गोवर्धननाथछुने सिंध पोरिके विवाड भोजी दामे सो समय भीर होरिके  
 रानीके उपर परी सो रानीके समवस्त्र निकरी परे और बहुत लज्जित  
 भध तव राजने रानीसो कही ने मेने तोसो पहलेहो कछो हुतो ने  
 शरी डाकुरछुके दर्शनमे कछेको परदाहै मे वृज्जे डाकुर है धनने काहुको  
 परदा राख्यो नाही तव वा समे परमानंददासछुने पद गायो सो पद  
 ॥ राग देवगंधार ॥ केन यह भेजि वेका आनि ॥ मदन गोपाल  
 लाल काहुको राखत नाहि नकांनि ॥ १॥ यह जेक तुक परमानंददास  
 छुने गाछ तय श्री आसार्यछु महाप्रभुनने कछो ने परमानंददास  
 जैसे कही ने भजी यह भेजिवेकी वांती तव परमानंददासने जैसेही  
 पद गायो सो पद ॥ राग देवगंधार ॥ भजी यह भेजिवेका आनि ॥  
 मदन गोपाललाल काहुको नाहिन राखत कांनि ॥ २॥ अपने हाथ ले  
 देतहै मनवर दुध चही धृत सांती ॥ ने वरनेतो आंभि दिय्यावेपर  
 धनको दिन दानि ॥ ३॥ सुनिरी जसोदा सुनके करतम पड़ेले मांठ मथानि  
 ॥ होरि होरि दधिदार आगरमें कोन सहै नित हानि ॥ डाढ़ी देवत नंद  
 कुडी रानी मुंदि कमल मुख हानि ॥ परमानंददास जनतहै वांजी पु-

अधौआनि ॥४॥ यह पद परमानंददासने गायो ता पाछे कितेक पद गा-  
 ये न्ने न्ने लीला श्री ङादुरल्लने करी सो ताता लीलाके पद परमानंद  
 दासने गाये सो ओके दिन भगवदीय रामदासल्ल और कृष्णदासल्ल  
 कुंभनदासल्ल सब पैश्रव मिलिके परमानंददासल्ल जहां रहत हुते तहां  
 आये सो भगवदीय आये देखिके परमानंददासल्ल बहुत प्रसन्न भ-  
 ये न्ने आन भरे धर भगवदीय आयेहै सो भरो वडो भाग्यहै  
 और आन भरो भाग्य सिद्धि भयोहै सोकाहेते न्ने श्री ङादुरल्ल भ-  
 गवदायके -हरेमे सदा सर्वदा विराजतहै ताते भगवदीयनरी कृपा होय  
 तो श्री ङादुरल्ल अनुग्रह करे न्ने ये सब भगवदाय भरे धर पधारै  
 है सो प्रथम भगवदायकी न्योछावरी करी यहिये न्ने ऐसो तो कछु  
 नाही सो न्योछावरी करो तय यह विचारै परमानंद दासने ऐसेही  
 पद कही सो पद ॥ राग हज्जूर ॥ आये भरे नंद नंदनके प्यारे ॥  
 माला तोलक मनोहर वानो त्रिगुनके उल्लयारे ॥१॥ प्रेम सहित वसन  
 मन मोहनन कहु टरत नटारे ॥ -हरे कमलके मध्य विराजत श्री वृ-  
 ङ राज दुलारे ॥२॥ कहा जनो कौन पुन्य प्रगट भयो भरे धर न्ने  
 पधारै परमानंद प्रभु करी न्योछावरि वारि वारि हो वारे ॥३॥ यहपद  
 भगवदीयनकी भेट करी अपने आये भगवदीयनके विदाय कीये ता  
 पाछे ऐसी रातिसो परमानंद दासने श्री नाथल्लका भला भातिसो सो  
 सेवा कीनी सो वे परमानंददासल्ल आ आचार्यल्ल महाप्रभुनके ऐसे  
 द्रपापात्र भगवदीयहै ताते मनकी आर्ता कहां तांछे लिजिये आर्ता प्र-  
 संग ॥५॥ संबंध १६६॥ वैभव ॥६२॥

अवधू आचार्यजी महाप्रभुनके

सेवक कुंभनदास गोरवा

तिनकी वार्ताहै.

सो वे कुंभनदासल्ल श्री गोवर्द्धन पर्वनके पास जमुनावती गांभै  
 नामे रहते सो जमुनावती नामका गांभके कहिते हैं न्ने श्री जमुना-  
 ल्लको प्रवाह सारस्वत कल्पमे याके निकट हुतो ताते जमुनावती नाम  
 वा गांभकेहैं तामे कुंभनदासल्ल रहते और परा सोलीयंत्र सरोवरिके  
 छपर कुंभनदासल्लकी धरती हुती सो वहां भेती करते सो कुंभनदासल्ल  
 श्री गोवर्द्धननाथल्लके परम आ हुते और कृपापात्र हुते सो अय  
 ही श्री गोवर्द्धननाथल्ल प्रगट होयके आ महाप्रभुल्लको पुसायेगे तयवे  
 भगवदीय प्रसिद्धि होयगे सो ओके सभे श्री आचार्यल्ल महाप्रभु प्र-



ધ્વી પરીક્રમા કરત ઝારખંડમે પધારે સોં ઝાડખંડમે શ્રી ગોવર્દનના-  
 થજીને આસાદીની જો હમ ગોવર્દનમે તીનિ દમનહૈ નામદમન ૧ ઇંદ્ર  
 દમન ૨ દેવદમન ૩ તિનકે મધ્યમે હમદેવદમનહૈ સોમેરો નામહૈ તાતે  
 તુમ આયકે હમકો પધરાયો ઐર હમારી સેવાકો પ્રકાર પ્રગટ કરો તખ  
 શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને પ્રથવી પરીક્રમા ઉહાંછ રાખિકે વેગ પ-  
 ધારે તવ દામોદરદાસ હરસાંની કરનદાસ મેધન ગોવિંદ દુવે જગન્નાથ  
 જોશી રામદાસ એ પાંચ વૈષ્ણવ સંગ હુતે સો શ્રી આચારચજી મહાપ્ર-  
 ભુ શ્રી ગોવર્દનકી તરહડી આયકે સદુપાંડકે ચોતરા ઉપર બિરાજો સો  
 આમે શ્રી ગોવર્દનનાથજીકે પ્રાગટ્યમે યહ સદુપાંડે ભમાંનીનરો શ્રી  
 આચારચજી મહાપ્રભુનકે સેવક બએ હુતે તિનકો શ્રી આચારચજી  
 મહાપ્રભુનને શ્રી ગોવર્દનનાથજીકી સેવા સોપી ઐર વૃજવાસી વૃજમે  
 શરી આચારચજી મહાપ્રભુનકે સેવક બહુત બએ ઐર કુંભનદાસજી  
 શરી આચારચજી મહાપ્રભુનકી સરણ આએસો શરી આચારચજી  
 મહાપ્રભુનને શરી ગોવર્દનનાથજીકો એક છોટો સો મંદીરસિદ્ધિ કરવાયો  
 તામે શરી નાથજીકો પધિરાયે ઐર રામદાસ મોહાંનકું સેવાકી આસા  
 દીની ઐર સખ વૃજવાસી લોગ દુધદહી માંખન લાવતે સો શરી ગોવ-  
 ર્દનનાથજી આરોગત હુતે ઐર રામદાસકો જો ભગવદ હસ્થાને જો  
 આય પ્રાપ્તિ હોય સો બોમ ધરતે ઐર આપ પ્રસાદ લેતે ઐર જો  
 વૃજવાસી લોગ શરી આચારચજી મહાપ્રભુનકે શેવક બયે હુતે  
 તીનકો શ્રી આચારચજી મહાપ્રભુનને આગ્યા દીની જો યહ મેરો  
 સર્વસ્વહૈ સો તુમ સખ વાતન સોં યજ રાખિયો ઐર સેવામે  
 તપર રહિયો ઐર કુંભનદાસકો ઐર. સવ સેવકનકો શરી આચારચ-  
 જી મહાપ્રભુનને આગ્યાદીની જો તુમદેવ દમન કે દર્શનકીએ વિના મ-  
 હાપ્રસાદ મતિઝીજીયો તખ યા ભોંતિસો આગ્યા કરિકે શરી આચારચજી  
 મહાપ્રભુનને પૃથ્વી પરીક્રમા ઝાડખંડમે રાખી હુતી અખ કુંભનદાસ-  
 જી નિત્ય શરી આચારચજી મહાપ્રભુનકી કૃપાતે શરી ગોવર્દનનાથજી  
 કે દર્શનકો આવતે સો કુંભનદાસજી કીર્તન વહુતનાંકે ગાવતે જો શરી  
 આચારચજી મહાપ્રભુનને કુંભનદાસજીકો નામ સુનાયો ઐર બ્રહ્મ સં-  
 બંધ કરવાયો તવ કુંભનદાસજી નિત્ય નએ પદ કરિકે શરી નાથજીકો  
 કો સુનાવતે ઐર શરી નાથજી કુંભનદાસજીકે ધર પધારતે ઐર બહુત  
 ક્રીડા કરતે ખેલતે બાર્તા કરતે ઐર બહુત કૃપા કુંભનદાસજીકે ઉપર  
 કરતે અખ રામદાસજી શ્રી ગોવર્દનનાથજીકી શેવા કરન લાગે સાએ  
 ક સમે મણેજી ઉપદ્રવ બયો સો ઈહાં માંનિકચંદ પાંડે તથા સદુપાંડે  
 રામદાસ મોહાંન કુંભનદાસ સખ મિલિકે વિચાર કીખે જો યહ મણેજી  
 આયોહૈ સો ધર્મકો દેસીહૈ સોકહા કર્તવ્યહૈ તખ સવને ઠહીજો યામે

કહા કર્તવ્ય કહા પુછનો અપનો વિચારયો કહા હોતહૈ તાતે શરી નાથ-  
જીએ પુછે ને મહારાજ કહા કરે તવ શરી નાથજીને આઆદીની ને  
હમશે ઇલાં તે સે ચલો હમ ઇલાંતે ઉઠેગે તમ સવનને પૂછે ને મહા-  
રાજ કહાં પધારોગે તવ આપને શરી મુખસો કહ્યો ને ટોડકે ધનેમે  
ચલેમે તવ એક મૈસામ ગાયે તાપર શરી ગોવર્દનનાથજીએ વૈઠાએ તવ  
એક ઐર તેલો રામદાસ પકરે રહે ઐર એક ઐર તે કુંભનદાસજી  
પકરે રહે ઐર સવ સેવક સંગ ચલે જાતહૈ તહાં ધનેમે કાંટે બહુત  
હુતે સો ઉહાં કાંટેનમે જૈઠે સો વસ્ત્ર સવનકે ફિટ ગએ ઐર સરીરમે  
કાંટે લગે દુખ બહુત પાયો સોધનેમે એક તજાવ હુતો તહાં રૂપનકો  
એક ચૌકહે તહાં બડે રૂપનાથે શરી નાથજી વિરાજે સો કહ્યુક સામ-  
ગ્રી સંગે હુતી સોં રામદાસને બોગ ધરીકે જગજે કરવા બરીકે આગે  
ધરીકે સખ જૈભુવ જૈઠે તમ શરી ગોવર્દનનાથજીને કુંભનદાસ સોં કહ્યો  
ને કુંભનદાસજી કહ્યુ ગાયો તમ કુંભનદાસજી તો મનમે કુટિ રહે  
હુતે તવ એક પદનખા કરીકે ગાયો સોપદ ॥ રાગ સારંગ ॥ બાવ  
તહે તોઈ ટોડકો ધનો ॥ કાંટે લગે ગોખુરે પુઠે કટ્યો જાવ યહતનો ॥૧॥  
સિંહે કહા લોકટીકો ડર વહ કહાવાંતક જાપો ॥ કુંભનદાસ પ્રમુ તુમ ગો-  
વર્દનધરે વહજોત રાંડેડીકો જાપો ॥૨॥ યહ પદ કુંભનદાસને ગાયો  
સો સુનિકે શરી નાથજી મુસિ કયાયકે ચુપ કરો રહે ઇતને મે શરી ગો-  
વર્દન તે સમાચાર આએ ને વહ મલેક્ષકી ફોજ આઈ હુતી સો  
પાછી ફિરી ગઈ તમ શરી ગોવર્દનનાથજી પર્વત ઉપર મંદીરમે પધારે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ॥૧॥

અવ શ્રી નાથજી પર્વત ઉપર મંદિરમે વિરાજે સો વનકે લોગ-  
નકો વહુત હરખિ બપો ને ધન્યદે વહ મન ને એસો ઉપદ્રવ આપે  
હુતો સો ઇનકે પ્રતાપતે સવ મિટિ ગયો તમ કુંભનદાસજી પ્રસન્ન  
હોંય કે પદ ગાએ સો પદ શ્રી ગોવર્દન નાથજીએ સુનાયે ॥ રાગશ્રી  
ચર્યરી ॥ જ્યતિ જ્યતિ હરોદાસ સર્મ ધરને ॥ યહ પદ સંપૂરન કરિ  
કે ગાયો ॥ પાછે ઐર પદ ગાએ સો પદ ॥ રાગ સારંગ ॥ કુંભ-  
ન તરવાતીરે યહું પદ સંપૂરન કરિકે કુંભનાદસને ગાયો પાછે નિત્ય  
એસે પદ કુંભનદાસજી દેવ દમનકો સુનાવતે તમ કુંભનદાસજીકે  
પદ સખ જગતમે પ્રસિદ્ધ બએ સો સખ લોગ ઇનકે પદ ગાવતે તવ  
ઇનકો પદ કાહુ કજામતને સોખ્યો સો રૂતે પુરસી કરી મે દેસાધિ પતિ  
કે આમે કુંભન દાસજીકો કીયો પદ વા કજામતને ગાયો સો સુનિકે  
દેસાધિપતિકો મિત વા પદમે ગડિ ગયો ઐર માંઘ્યો ધુખ્યો ને એસે  
હું મહા પુરુષ હૈ મએ હૈ જિતકો એસે દર્શન પરમેશ્વરકે હોતહે તમ  
વા કજામતને કહ્યો ને અજી સાહિબ અવહું હૈ સો સુનિકે દેસાધિ

पति अहुत प्रसन्न भयो और वा कलामतसों कछो न्ने वे कहाँ है तव  
 वा कलामतने कही न्ने श्री गोवरधनके पास नम्रनायतो नाम है तहां  
 वे रयत है तय देसाधिपतिने कही न्ने छहां बुझायो हम उनसों मि-  
 लेगे तय देसाधिपतिने मुनुष्य और असवारी कुंभन दासछुके पुत्राय  
 वे को भिन्ने तय कुंभन दासछुतो घर हुते नांही परासोलीमैं बैठे हुते  
 सो मनुष्यनने उहां अताय दीअे तय कुंभन दाससों कछो न्ने तुम  
 को पात्साहने यादि कियेहो तय कुंभन दासने कही न्ने लैयामे कछु दे-  
 साधिपतिको आकरतो नांही मेसे देसापतिसों कहा काम है तव देसा-  
 धिपतिने मनुष्यनने कही न्ने वाता साहिब हम तो काममे कछु समज-  
 त नांही परि हमको देसाधिपतिंको हुकम है न्ने कुंभनदासको ले आ-  
 वो ताते यह पावकी है यह घोडा है न्न परे आहो ता पर जैठिके  
 यलिये हमनो आगेले सो आपको ले न्नछेगे तव कुंभनदासने मनमे  
 विचार कियो न्ने विना न्नअे तो निर्वाह न होयगो शे कुंभन दासछु  
 तत्काज उहांते पतहो पहणके यत्रे तय कुंभन दासछुको न्ने लेये गो  
 आअे हुते तिनने कही न्ने वाता असवारामे बैठिये तय कुंभनदास  
 ने कछो न्ने मैया मेतो कछु पेख्यो नांही पाछे अेशहो अले शे इते  
 पुरसी करी आय पहुंये शे देसाधिपति के उरा हुते तहां गअे तव  
 मनुष्यनने देसाधिपतिसों कछो न्ने कुंभनदासछु आगेले तव देसा-  
 धिपतिने कछो न्ने कुंभनदासछु आवां भेडा सो आय बैठे सो यह  
 मयल डैरो है न्ने न्नमे न्नडावका राखीतामे मोतीनका मान रिजगो है  
 अेसो मयल हो तामे बैठे तय मनमे अहुत दुःख लाग्यो और कछो  
 न्ने यासो तो हमारे वज्रके हीसनेके रुप आछे है सो छुनमे श्री  
 गोवरधन नाथछु अेजतहो तव छतनेमे देसाधिपति पेख्यो न्ने कुंभन  
 दासछु तुमने विसन पद अहुत कीअेहै सो मैने तुमको बुझायो है ता-  
 ते तुम कछु विसन पद गायो तव कुंभनदासछुतो मनमे क्रुद हुते सो  
 विचार न्ने कहा गाछ मेरो पाण्डे भक्ता तो म गोवरधन धरहैं और  
 कछु गाअे विनातो मेरो काम अयेगो नाहो ताते अेसो गाछ न्ने क-  
 णहु मेरो नाम न लेछ कछिते न्नेयाके संगते मेरे प्रभु छुटेहै ताते  
 कछु कठारे वयन डहुं न्ने छुरो मानेगो तो कहा करेगो तव यह मनमे  
 आअे न्ने न्नका मन भैहन संग करे अेको के सवसे नहीं सिरतेन्ने  
 वैर परे यह विचारकि तासमय कुंभनदासछुने अेक नयो पद करिके  
 गायो सो पद ॥ राग सारंग ॥ भक्तनको कहासी करी काम अयत  
 न्नत पहैयां टूरी विसरी गयो हरि नाम ॥१॥ न्नको मुअ देअे दुःख  
 लागे ताकिं करे परी परनाम कुंभनदास लाज गीरधर विन यह सय  
 न्नको धाम ॥२॥ यह पद गायो सो सुनिके देसाधिपति अपने मनमे

बहुत कुछो और कुछो जे छनको कहु आनको जात्रय होयतो जे मेरो  
 नस गवै छनकोओ अपने परमेस्वरसो सांख्यो सनेह है छनको कहिके  
 देसाधिपतिने कुंभनदासने सीज्य दीनो तव कुंभनदासजु कहान्ते यखे  
 सो मार्गमे आवत अति कलिसगि कयहो प्रभुनको श्रीमुख देखो सो  
 जैसे विचारिके कुंभनदासजु आवतहै ता सवय पद गायो सो पद ॥  
 ॥ राग धनाश्री ॥ कतहु देखि होछन नेतनु ॥ सुंदर स्त्रांम मनोहर  
 मुरत अंग अंग सुख देननु ॥ वृंदावनविहार दिनदिन प्रति गोप वंद  
 संग लेननु ॥ हसि हंसि हरषी पतौवन पावन वाटि वाटि पय ई-  
 ननु ॥ राग कुंभनदास किते दिन वाते कीये देखु सुख सेननु ॥ अ-  
 न गिरधर पित निस अर वासर मनन रहत कयो येननु ॥ ३॥ यह  
 पद मार्गमे गावत आये सो आयके श्री गोवर्धनायजु के दर्शनकी-  
 जे और होयदान सो दशन न लये सो कुंभनदासजुको होय ज्युगप्री  
 अरावर वर नीति सो आ मुख देखतही समय कृष्ण विसरा गये तव  
 ओके पद गायो सो पद ॥ राग धनाश्री ॥ नेन लरी देखो नंद कुमार ॥  
 तादीन ते सव जुलि गयोहो विसरयो परिवार ॥ १॥ विनुदेभुदु विकल  
 लयोहो अंग अंग सहर ॥ ताते सुधि है सांवर ॥ मुरतिका लोयन  
 भरि भरि वार ॥ २॥ ३५ रासिपर भित नही मानो कैसे मिलोक नहाछ  
 ॥ कुंभनदास प्रभु गोवरधन धर मिलाये वहुनरी रीमाछ ॥ ३ ॥  
 ॥ राग धनाश्री ॥ हलिगत कठिन है या मनका ॥ लके लिये देखी  
 मेरी सज्जन्त जात्र अछि सव तनका ॥ १॥ धर्म लडि अर लोग हंसो  
 सव अर गायो कुन गारो ॥ सांख्यो रहे ताहि विन देखे जे लको  
 हीतकारी ॥ २॥ रत्न लुब्धकनी मयत छांडत ज्यों आधीन भूग गानो ॥  
 कुंभनदास सनेह परम आ गोवर्द्धन धर लनो ॥ ३॥ जैसे पद बहुत  
 कुंभनदासजुने गाये सो सुनिके आनंदयजु बहुत प्रसन्न लये और  
 कुछो जे मोचित रहत नाहीं.

### ॥ वार्ताप्रसंग ॥ २ ॥

और ओके सभे गज मानसिंध सभ डोरते दिग्वी नय करिके  
 अपने हेमकु यखे तव मनमे विचारे जे बहुत दिनमे आये है ताते  
 मथुरा भीद्रायन होयके यजनो सो यह विचारोके आगेरेते यखे सो  
 मथुरा आये तव विआति आंत करिके श्री केसरायजुके दर्शन करिके  
 भीद्रायन यखे सो विम्वालके दिन हुने तव भीद्रायनके सव महतनने  
 लनी जे आन छहो राज मानसिंध दर्शनको आवेगो सो यह  
 लनिके श्री हापुरजुको आछे आछे नराके वागे बहुत आभरन पह-  
 राये पीछवाछि मंदोवा समय नरानके पाधि छतनेमे राज मानसिंध  
 दर्शनको आयो सो भीतर मंदारमे आयके श्री हापुरजुके दर्शन कीजे

सो छद्मकालके दिन हुते सो बहुत गरभी पडे सो ता सभे राज मान-  
 सिंधपे ढाढो न रह्यो गयो ॥ जे ऐसे दर्शन यारी पंथी अउ हुते सो  
 तहां सभ ठारे दर्शन करि सभ ठारेते बिदा होयके अपने उरा मे आये  
 सो उरा आयेके मन मे विचारि जे अगही दुंय करे सो उहांसो  
 असवार होयके यले सो तीसरे पहर गोवर्धनगाम आये सो मानसी  
 गंगा उपर उरा कीये सो तहां श्री हरदेवजीके दर्शन कीये सो उहां  
 वृंदावनके महंतनने अउ ढाढ वनायेहे तेसोई छहां ढाढ वनायराव्यो हुतो  
 सो राज मानसिंह तहांते दर्शन करिके यले तम काहुने कही जे  
 महाराज छहां श्री गोवर्धननाथजी अहुत सुंदर ठकुर हे तहां आप  
 दर्शनको यजो तम राज मानसिंधने कही जे छहांतो वर अययजनो  
 जे ठाकुर सव वृंजके राज हें ताते छनके दर्शनतो अवश्य करने तव  
 उहांते यले सो भोपाजपुर गांम आये तम आयेके पूछी जे दर्शनको  
 कहा समय है तम काहुने कही जे उत्थापनके दर्शन तो होय युके हें  
 अम्य भागके दर्शन होयगे तम यह सुनिके राज मानसिंध श्री गोवर्धन  
 नाथजीके दर्शनको गिरराज उपर आये सो छद्मकालके दिन मार्गके  
 अमित दुरिके यले आये सो गरभीमे राज अहुत व्याकुल भयो हुतो  
 छतनेमे भोगके किताड जुले सो राज मानसिंधको मछि कोठामे ले  
 गये तिन दिनमे आनाथजीकी सेवा जैभवसों होती हुती वडो मंदिर  
 सिद्धि भयो हुतो श्री गोवर्धननाथजीके आगे युजावज्जको सिंगार भयो  
 हुतो निजमंदार मछी कोठानीवारी सव जलमय होय रहे हुते सो ता  
 समय राज मानसिंध दर्शनको गये हुते सो श्री गोवर्धननाथजीके  
 दर्शन करिके साष्टांग दंडवत कानी और गरभीमे राज व्याकुल भयो  
 हुतो सो सीतलताई बर्ष अउ येन भयो और श्री गोवर्धननाथजीको  
 श्री मुष्म दृष्टिके राज अहुत प्रसन्न भयो और कही जे साक्षात  
 श्री कृष्ण श्री श्रीधरामनचंद श्री गोवर्धननाथजी हें आमे आभासवतमे  
 सुन्यो हुतो सो आज दृष्टे आजदिन है सो धन्य है और आज मेरो  
 वडो भाग्य है और मनमे कह्यो जे यह भोगको समय है सो लो  
 प्रभुनकी राजधानीको समय है सो ये प्रभु विराने हें आगे ताल  
 भुंदंग वाजत हें कीर्तन होत हें सो कुंभनदासजी ढाउ ढाउ मछि कोठामे  
 दर्शन करत है और कीर्तन गावत हें सो राज मानसिंधको मनवा  
 पदमे गठि भयो हुतो तेसोई कटिक दर्पणाव एवम स्वरूप और  
 तेसोई कीर्तन कुंभनदासजी करत हुते सो पद ॥ राग नट ॥ ३५  
 दृष्टिने नापज लागे नहो ॥ गोवर्धनके अंग अंग प्रति गिरणी  
 नेन मन रहत तही ॥ १ ॥ कहा कही कछु कहत न आवे यिन योरेया  
 भांग जेहो ॥ कुंभनदास प्रभुके मिलनकी सुंदर बात सज्जीवनको

કહી ॥૨૧॥ ॥ રાજ ધનાઝી ॥ આવત ઓહન મન જીહૃષ્ણો હો ॥  
 સો ગ્રહ અપને મનસચુસો વૈઠી નિરખી બદગ અચરા વિસર્પો હો  
 ॥ ૧ ॥ ૩૫ નિધાન રસિક નંદનંદનિરખિ વદન ધીરજ ન ધર્મોહો ॥  
 કુંભનદાસ પ્રભુ ગોવર્દનધર અંગ અંગ પ્રેમ પિયુષ બર્ષો હો ॥૨૧॥  
 એસં પદ કુંભનદાસજી ગાયતહે ઇતનેમે રાજભાગકે દર્શન હોય ચુકે તખ  
 રાજ માનસિંઘ દંડોત કરિકે અપને ડોરમે બપો તખ કુંભનદાસજી સંઘા  
 આરતાકે દર્શન કરિકે અપની સેવા સો પહુંચિકે અપને ધરકો ગએ તવ  
 રાજ માનસિંઘ અપને ડોરમે જયકે અપને પાસકે મનુષ્ય હુતે તિ-  
 નમે શરી ગોવર્દનનાથજીકે સિંગારકી વાર્તા કરન લાગે ઐર કહો જો  
 યહ શરી ગોવર્દનનાથજીકે આગેકોન ગાયત હુતે ઇતનેમે એથે વિસન  
 પદ ગાએહે જો કષ્ટ કહિ પેમે નાહી આવત તખ કાહુને કહી જો મ-  
 હારાજ એક વૃજાસીહૈ કુંભનદાસ નામહૈ સો આપ સુનેહી હોયગે દે-  
 સાધિપતી સો મિલે હુતે સોહૈ તખ રાજ માનસિંઘને કહી જો હમ હું  
 ઇતસો મિલે તો આજો તખ રાજ માનસિંઘ સવારે ઉઠે સો શરી ગિ-  
 રરાજકી પરિક્રમાકો નિકસેસો પરાસોલી આએ સો પરાસોલમે કુંભન-  
 દાસજી નહાયકે બૈઠે ઇતનેમે શરી ગોવર્દનનાથજી પધારે સો શરી મુખ-  
 સો કહેજો કુંભનદાસજી હોંતોગિ એકવાત કહું ગોતવ ઇતનેમે રાજ  
 માનસિંઘ આપો સો કુંભનદાસજીકો પ્રનામ કરકે બૈઠો ઐર શરી ના-  
 થજી તો ઉહાંતે દુરિ જય કાઠે બએ સો શરી નાથજી તો એક કુંભ-  
 નદાસજીકો દેખેહૈ ઐર ઇતકી બતીજીકો દેખેહૈ તખ કુંભનદાસજીકી  
 દ્રષ્ટિતો શરી નાથજીકે સંગહી ગઈ સો શરી નાથજી બૈઠેહૈ તહાં કુંભ-  
 નદાસજી દેખી વો કરે તખ બતીજી બોલીજો વાવા રાજ બૈઠેહૈ તખ  
 કુંભનદાસજીને કહોજો મે કહાં કંઝે જો બૈઠેહૈ તો જો વાત કહત હુતે  
 સો તો બાજી ગાએસો અખ કહેગે તવ દુરી તે શરી નાથજી કહ જો  
 કુંભનદાસમે બાત કહુંગો તખ કુંભનદાસજી પ્રસન્ન બએ ઐર બતી-  
 જી સો કહો જો અમુકી આરસી લાડનિત્રક કરો તખ બતીજીને કહી  
 જો વાવા આરસી તો પડિયા પીગઈ તખ રાજને કુંભનદાસજીકી બ-  
 તીજીસો કહ્યો જો અરીછોરી પડિયા કહાપીગઈ તખ વહ કઠોકીમે  
 પાની લાયકે કુંભનદાસજીકે આગે ધરચો તવ કુંભનદાસજીવામે દેખી  
 કે તિલક કરન લાગે ઇતનેમે રાજ માનસિંઘને અપની સોનેકી આરસી  
 કુંભનદાસજીકે આગે ધરી ઐર કહો જો વાવા યામે દેખીકે તિલક ક-  
 રાયે તવ કુંભનદાસજીવો લેજો અરે મૈયાયા કાંહો કહા કંઝો હમારે તો  
 હહાં જાનિકે ધરેહૈ તાતે કોપાકે પીછે હમારો જીવ લેઇઓ તાતે હમે  
 તો યહ નાહો અહિયતહે તવ રાજ માનસિંઘને ઇતકે આગે સોનેકી  
 ધેત્રી ધરી તવ કુંભનદાસને કહ્યો જો મૈયાહમકો તોયહ નાહો અહિયત

हमारे तोषह जेतीहै ताको धन आवतहै सोआतहै तब राज मानसिं-  
धने कह्यो जे भवो आपको आमहै ताको लिज्योहो करी दह तब कुं-  
भनदासने कह्यो जे मैयाहो तो आछाए नही जे तेरो उदकसेउ तब  
इरी राज मानसिंधने कह्यो जे पैयावा साहिब कछु तो आग्या करो  
तब कुंभनदासने कह्यो जे हमारो कह्यो करैगो तब राज मानसिंह-  
ने हायि जेरी कह्यो जे आव कहैगे सो कइंगो तब कुंभनदासने क-  
ह्यो जे इरी मेरे पास तुम भति आछयो तब राज मानसिंधने क-  
ह्यो जे जे धनह मायाके भक्त तो सगरी प्रथी मे इस्थो सो अहुत  
देजे परी भगवद भक्त तो जेक जेही देजे यह कहैके राज मानसिंध  
कुंभनदासको दंडात करीके उठि गेल्यो तब इरी आपके कुंभनदास सो श्री  
नाथजने पहवात कही और अहुत प्रसन्न भये तब इरी कुंभनदास-  
ज श्री गिरराज उपर आपके श्री नाथजकी सेवामे तत्पर भये.

वार्ता प्रसंग ॥३॥

और जेक सभे कुंभनदासजको मिलियेको वृंदावनके महंत हरी  
वंस भूत आयेसो यह जनिके आये जे महा पुरुषह धनसो श्री  
हाकुरज भोजतहै पाते करतहै और कान्य धनकी सुनसो कीर्तन बहुत  
सुंदर कोये ताते जैसे पद श्री हाकुरजके साक्षातकार चितान होय  
यह जनिके कुंभनदासज सो मित्रिये आये सो कुंभनदासज सो मि-  
त्रिके बहुत प्रसन्न भये और कह्यो जे कुंभनदासज तुमने विसन  
पद बहुत कीयेहैं सो हमने आपके सुनेहैं और आपको पद श्री स्वा-  
मीनीजकी नाही सुन्यो ताते आप कोछ श्री स्वामीनीको पद सु  
नावो तब कुंभनदासजने श्री स्वामीनीको पद करीके गायो सो पद ॥  
राग रामकली. ॥ ताज अरुंगी ॥ कुवर राधिके तुव सकल सौभाग्य  
कीवा अदनपर कोटि संत यदवारो ॥ अंगन कुरंग सत कोटि नंधन उ  
पर सिंह सत कोटि उपन्यो छावरि उतारो मत सत कोटि आलि पर  
कुंभ सतकोटि मन कुननपर वारि डारे ॥१॥ कीर दसकोटि दसननपर  
कहि नवारो पंकज दुर वंदक सत कोटि अधरन उपर वारि इचिरगर्भ  
डारो ॥ नाग सत कोटि जेनी उपर कपोत सत कोटि कर गुगल  
परिवारने नाहिन कोउ लोक उपमा गुधारो ॥२॥ दास कुंभन स्वामि  
नी सुन असिअ अति अदभुत सुकान कहां लागि सभारो ॥ लाल-  
गिरधर कहत मोहि तोहि लोणवहइप छिन छिन निहारो ॥३॥ यहपद  
कुंभनदासने गायो सो सुनिके महंत अहुतहैं रोजे और कहे जे हमने  
श्रीस्वामिनीजके पद अहुत कीयेहै परि उहां उपमा दीनाहै और वा  
रि इरी डारी ताते कुंभनदासज आपवडे महा पूरष हो आपकी सराह  
ना कहांतांछ करिये आमहंतने कुंभनदासजकी अहुत अडाछ करी अहुत

શક્તિ તા પાછે વે મહંત આદિ સવ કુંભનદાસજીસોં બિદા હોય કે અ  
પને ધરમે ગમે ॥

### ॥ વાર્તા પ્રસંગ ૪

ઐર એક સમે શ્રી ગુસાંધજી શ્રીગોકુલમે અપને ધરતે શ્રી નવ-  
નીત પ્રિયાજીસોં આસાં માંગિકે વિદે સાર્પદારિકાકો પધારે સો શ્રીગુસાં-  
ધજી શ્રીનાથજી દ્વારય પધારે સો શ્રીનાથજીકો સેવા સિંગાર કીએ તા  
પાછે આપ ભોજન કરિકે ગાદી ઉપર વિરાજે તખ સખ સેવક દર્શનકો  
આએ તખ બાત ચલતમે કુંભનદાસજીકો વાત ચલી તખ કાહુ વૈશ્વવ-  
ને કહો જો મહારાજ કુંભનદાસજીકો દ્રવ્યકો વહુત સંકોચ હૈ સાત બે-  
ટા હુદે ઐર ઉપજત તો એક ખેતી કંઠૈ તાકો ધન આવત હૈ તાસોં  
નિર્વાહ કરતે હૈ સો યહ વાત શ્રી ગુસાંધજીને અપને મનમે રાખી તા  
પાછે ઉત્થાપન કે સમે કુંભનદાસજી દર્શનકો આએ તખ શ્રી ગુસાંધ-  
જી અપને શ્રી મૂખસોં કહે જો કુંભનદાસ હમ શ્રી દ્વારિકા મણુછોડ-  
જી કે દર્શનકો પધારેગે ઐર બિદેમહુ હોયગો વૈરનવનને બહુત કરકે  
જિખ્યોહૈ તાતે જોતુમ સંગ ચલો તો વિદેશમે ભગવદીયકો ગ્રહ કાલવા-  
ધાન હોય તખ ભગવદીયકો કાલ ચિતીત હો જાય કધુ જાન્યો ન પરે  
ઐર મે સુન્યો હો જો કધુ તુમ્હારે દ્રવ્યકો સંકોચ હૈ સો હેઠાં સિદ્ધિ  
હોયગો તાતે સર્વથા તુમકો ચલ્યો ચલિયે તખ કુંભનદાસને કહો જો  
આસા ઇતનનેમે દર્શનકો સમય બયો સો શ્રીગુસાંધજી આપ સ્નાન  
કરિકે શ્રીનાથજીકે મંદિરમે પધારે શ્રી નાથજીકો સેવાસોં પહુચકે શ્રી  
નાથજીકો પોઢાયકે બૈઠકમે પધારે ઐર કુંભનદાસજીકો સીખ દીનીજો  
કુંભનદાસજી જો તુમ સેવા તે પહુંચિકે બેગે આપયો હમ કાલી આ-  
રતી કરિકે આપછરા કુંડ ઉપર જાય રહેગે તખ કુંભનદાસજી શ્રી ગુ-  
સાંધજીકો દંડોત કરિકે અપને ધરકો આએ સવારે સેવાસો પહુંચિકેશ્રી  
નાથજીકે દરશન કરિકે અપછરા કુંડ ઉપર આએ ઐર શ્રી ગુસાંધજી  
શ્રીનાથજીસોં સીખ માંગિકે આપ નાચે આએ પાછે આપ ભોજન કી  
યે ઐર સવસેવકનકોં મહાપ્રસાદ જિવાયો તા પાછે તાહી સમયકો મુહુર્ત  
હૂતો સો શ્રી ગુસાંધજી આપ પર્વત નીચે આએ સો અપછરા કુંડ ઉ-  
પર આયે સો તહાં અપછરા કુંડ ઉપર ઊરા કરે હુતે સવ સેવક અગાઉ  
સો ઠાડે હુતે સો શ્રી ગુસાંધજી ઊગા પધારિ કે પોઢે ઇતનમે સવ સેવ  
ક સામાન લેકે બેઠ આએસો કુંભનદાસજી હેઠાં બૈઠી કે વિચારત હુ  
તે કહિયે જો કહિયેકી હોય પ્રાંનનાથ વિધુરનકી વિરિયા જાનતિ નાહિ  
ન કોઈ યહ બિચાર કરત કરત ઉત્થાપનકો સમય બયો તખ શ્રીગુસાં-  
ધજી આપ બીતર ઊરામે જાયે ઐર કુંભનદાસજીકું દર્શનકી સુધિ  
આઈ સો ઉઠાપૂજરીકી ઐર કોનેમે જાય કે વૈઠી કીર્તન આવતેહે ઐર



आंखिनमे ते जलको प्रवाह वहत है। सो कुंभनदासने एक पद गायो  
 सो पद ॥ राग सारंग ॥ केतेहुँ गये बिन देखे ॥ तइ लुं किशोर  
 नंद नंदन कछु क डित मुअरेजे ॥३॥ यह शोभा यह कानि वदनकी मे-  
 टिक बंद बिसेजे ॥ यह बितवन यह हास्य मनोहर यह नटवर वपु  
 मेजे ॥२॥ स्थांभ सुंदर संग मिलि भेलनकी आवत लय अपेजे  
 कुंभनदास लाल गिरधर बिन लवन जन्म अलेजे ॥३॥ यह पद ॥  
 कुंभनदासने गायो सो श्री गुसांछल आप उरा के भीतर सुनो सो कुं  
 भनदासलुकी कलेश श्रीगुसांछलसों सखो न गयो सो श्रीगुसांछल  
 आय उरके बाहिर पधारे और श्री मुअते कखो ने कुंभनदास अप  
 तुम वेगि नठ तुमारो निदेश होय सुखो और ने तुमारी अवस्था  
 है ऐसी उनकी अवस्था है सो कैसे ननिजे ॥ ने श्री अकवालने  
 गजन धावनको पान लेवेको पढायो सो गजन धावनको तो भगवद आ  
 शक्ति देखे बिना एक क्षण हूं न रह्यो नय सोगजन धावन पान  
 लेवेको बाहिर गये सो थोरीसी दुरि भये और नवर अठि आयो सो  
 मुँहा आयके गिरे और श्री अकवालने श्री नवनीत प्रियालुको भाग  
 समर्थो तय भीनवनीत प्रियालुने गजन धावनको जोल न सुये  
 तय भीनवनीत प्रियालुने अपने श्रीमुखसो कखो ने भरो गजन  
 कहा है तय श्री अकवालने कखो ने वहतो पान लेवेको गयो है तय  
 भीनवनीत प्रियालुने कखो ने भरो गजन आवेगो तय आरोउओ  
 सो श्री हस्त जेयिके पैठि रहे तय वेगि गजन धावनको बुझायो  
 तय गजनने कही ने वावा आरोगो तय श्री नवनीत प्रियालु आ-  
 रोगे है यह श्री आचार्यल महाप्रभुनकी मर्मादा है ने लतनो श्रव-  
 को स्वामी उपर रनेह होय और भगवदगीतामे भगवान कहे है॥

॥ श्लोक ॥

॥ येयथामांप्रपद्यन्तेस्तांस्तथैवभजाम्यहं ॥

यह आधो श्लोक कखो ताते श्री मुखसो कहै नेछहा तुमारी विवस्था  
 है और वहां उनकी विवस्था है सो ऐसो कुंभनदासको और शरीना  
 यलुको बिरह हुतो ताते शरीगुसांछलने कुंभनदासकुं सीख दीनी तय  
 कुंभनदासने शरी नाथलुके दर्शन कीजे तय कुंभनदासने एक पद गायो  
 सो पद ॥ राग सारंग ॥ जेये ओप मिलनकी होय ॥ तो क्यों रहे  
 ताहि बिन देखे लाय करो निनकोछ ॥३॥ जेये बिरह परेपर व्यापे  
 ने कछु लवन यने ॥ लोक लज कुलकी मर्मादा ऐको बितनगने ॥२॥  
 कुंभनदास प्रभु नहिगत लागी और कछु न सुहाय ॥ गिरधरलाल तो  
 हि बिन देखे छिनछिन कलय विहाय ॥३॥ सो यह पद कुंभनदासने

शरीनाथछुके सैनिका गावो सो सुनिके शरीनाथछु अहुत प्रसन्न भये  
सो कुंभनदास शरी नाथछुको प्रसन देखिके प्रसन भये ॥

॥ वार्ता प्रसंग ॥ ५ ॥

और एक सभे कुंभनदासछु शरी गुसांछुके पास बैठे हुते  
तब कुंभनदासने शरी गुसांछु सो कह्यो न्ने महाराज पेठा उठे हे  
और हेतो सात तब शरी गुसांछुने कह्यो न्ने कुंभनदासछु उठ्यो  
कारन कहा तब ईरि कुंभनदासछु कह न्ने महाराज आपो पेठा तो  
अत्रभुजदास हे और आपो पेठा कुंभदास है सो भीनाथछुकी गायन  
की सेवा करत है तासो आपो है कुंभनदासछु कृष्णदासको आपो  
क्यों कह्यो ताको हेत यह न्ने श्री आचार्यछुमहाप्रभु पुष्टि मार्ग प्र-  
गट कीयो है सो पुष्टि मार्ग कहा है न्ने वृज भक्तनके हेत यह मार्ग  
प्रगट कीयो है सो भगवदीय गाये है न्ने सेवा रीति प्रीति वृज न-  
नकी वनहित न्ग प्रगटाई सो वृज भक्तनकी कहा रीति है श्रीहृदय-  
छुके सन्निधान तो सेवा करे और श्रीहृदयछु वनमे पधारे तब गुण  
गांछु करे न्ने ये वस्तु होय तो आपो और धनमे ते एक होय तो  
आपोताते अत्रभुजदास सेवा और गुण गांछु हैं ताते आपो और  
कृष्णदासमे एक सेवा है सो आपो तब श्री गुसांछु श्रीभुजने कहे  
न्ने भगवदीय तेछु पेठा है और अहुत भये तो कान काभके यह अत्र-  
भुजदासकी वार्ता मे लिखे हे ॥

### अब कृष्णदासकी वार्ता.

सो वे कृष्णदास भीनाथछुकी गायनके ग्वाल हुते श्री गुसांछुने  
धनको गायनकी सेवा दीनी हुती सो कृष्णदास भीनाथछुकी गायनकी  
सेवा करते सवारे फिरक सेवासो पड़्योके ईरी गाय अरायके नते  
सो सगरेछिन कृष्णदास सेवा गायनकी करते सो एकदिन गाय अरायके  
पुंछरीकी और कृष्णदास गायनके संग आवत हुते सो सगरी गायतो  
फिरकमे आछ और एक गाय जडी हुती ताको येन बहुत भारी हुतो  
सो वह गाय बहुत हरेवे हरेवे चलती सो वा गायको आवत अधि-  
आरो परि गये सो तहां पर्वतके नीचे अधिआरेमे एक नाहर  
नीकरयो सो गायपे दोखो तब कृष्णदास कहे न्ने अरे अधर्मी यह  
भीनाथछुकी गाय है तु भुजो होय तो मेरे उपर आदि तब धनमे  
गायतो बाछ फिरकमे गछ और नाहरने कृष्णदासको अपराध कीयो  
और उपर कहि आये हैं न्ने गाय सवफिरकमे आछ तब भीना-  
थछु आय गाय दुहिमेको आये सो सव गाय ग्वाल हुत है और  
वह जडी गाय फिरकमे आछ सो वा गायको श्रीछु दुहिमेको ओ

ઐર કુંભદાસ બૂછરા યાત્રે હૈ ઐર વહ માય ખછરાકો ચાટત હૈ  
 સો એસે દર્શન કુંભનદાસજીકો ભયે તા પાછે ગો દોહન કરંકે શ્રીના-  
 થજી ગિરરાજ ઉપર મંદીરમે પધારે તખ શ્રી ગુસાંધજી ભોગ સમર્પો  
 ઐર કુંભનદાસજી ખિરકમેસોં આયે સો દંડોતી સીલાપાસ ઠાડે ભયે  
 ઇતનેમે સમાચાર આયે ને કુંભદાસજી નાહરને મારચો સો સુનાકે  
 કુંભનદાસજી મૂર્છા ખાયકે ગિરે સો એસે ગીરે ને દહાનુ સંધાન બુજિ  
 ગયે તખ કુંભનદાસજીકો સવ કોઉ બુલાવે પલિ ખોલે નાહી તખ એ  
 સમાચાર કાહુને શ્રી ગુસાંધજીસોં કહે ને મહારાજ કુંભદાસજી નાહ-  
 રને મારચો ઐર ગાયકો કુંભદાસને વચાઈ સો કુંભદાસ ઉહાઈ પરેહે  
 તખ શ્રી ગુસાંધજી કહે ને ગાય કમહુ ન છોડી આવે અંત રાત્રે  
 ગાય સંકલ્પ કરત હૈ તાકો માય ઉતિમ લોકમે લેખત હૈ ઐર કમ્પદાસ  
 નેતો શ્રીનાથજીકી ગાય વચાઈ હૈ તાતે કમ્પદાસકો ગાય કેસે છોડી  
 આવેગી ઐર શ્રી ગુસાંધને કહ્યો ને કુંભનદાસજી કહાં હૈ તખ કાહુ  
 વૈશ્ણવને કહી ને મહારાજ કુંભનદાસજીકો કલેસ બહુત વાધા કીયો હૈ  
 ને કુંભનદાસજી ઉપર આવત હુને સો કુંભનદાસજીકે આગે કહ્યુને  
 કમ્પદાસકે સમાચાર કહે સો સુનતહી કુંભનદાસજી મૂર્છા ખાયકે ગિરે  
 સો લોગ બહુતહી બુલાવત હૈ પરિ આવત નાહી તખ શ્રી ગુસાંધજીને  
 અપને શ્રીમુખસોં કહ્યો ને ફિરિ કુંભનદાસજીકી ખવરી લાવો ને  
 કુંભનદાસજીકી દેહ ને કેસે હૈ સો વે આયકે કુંભનદાસજીકો પુકારે તખ  
 એ સમાચાર શ્રી ગુસાંધજીસોં કહે ને મહારાજ કુંભનદાસજીતો કહ્યુ  
 સમજત નાહોં તખ શ્રી ગુસાંધજી આપ સેનભોગેકે દર્શન કરંકે શ્રીના-  
 થજીકો પોઠાયકે આપ નીચે પધારે સો દેખેતો મારંકે સાંઘે કુંભનદાસજી  
 પરે હૈ ઐર લોગ ચાલ્યો ઐર ઠાડે હૈ સો કહત હૈ ને કુંભનદાસજી  
 કેસે ભગવદીય હૈ પરી પુત્રકો સોક વહુત યુરો હોતહે યા પીરાસો કોઈ  
 વચ્યો નાહોં કાહિતે ને અપની આત્મા હૈ તખ વહ વાત લોગનકી સુનાકે  
 શ્રી ગુસાંધજી મનમે વિચારે ને ઇહાંતો કારણ કહ્યુ ઐર હૈ ઐર  
 લોગનકોતો કહ્યુ ઐર ભાખત હૈ તાતે ભગવદીયકો સ્વરૂપ કિરિવેકે  
 લીએ શ્રી ગુસાંધજી અપને શ્રી મુખસો કહે ને કુંભનદાસજી સવારે  
 તુમ બેગે આહ્યો તુમકો શ્રી ગોવર્દનનાથજીકે દર્શન કરાવેગે તુમ  
 મનમે ખેદ મતિ કરો ઇતનો શ્રી ગુસાંધજી શ્રીમુખસોં કહે તખ કુંભ-  
 નદાસજી હડ ઠાડે ભયે ઐર પ્રસન્ન ભયે તખ શ્રી ગુસાંધજીકો  
 દંડોત કરંકે કુંભનદાસજી ને કાર્ય કરનો હૈ સો સમ કીયો પાછે સવારે  
 કુંભનદાસજી દર્શનકો આયે શ્રીનાથજીકો સિંગાર કરંકે શ્રી ગુસાંધજીને  
 કહ્યો ને પ્રથમ કુંભનદાસજીકો દર્શન કરાય રૂઢે સો કુંભનદાસજી

वैष्णवके उपर पहकार कीयो जे कहते सुतकीओ जेन भगवतमंदीरमे  
 जन देतो सो कुंभनदासलुके अनुग्रहते सवको उद्देश्य करत हे सो  
 कुंभनदासलु नीत्य अेकवेर दर्शन करिके परासोदीमे नय जैहते सो  
 उहां जैठे जैठे बिरहके पद गावते सो पद ॥ राग धनाश्री ॥ तुम्हारे  
 मिलनविन दुष्प्रित गुपाल ॥ अति आनुराज्य सुंदर पारे बिरही  
 जेहास ॥१॥ सीतल अंद तपन भयो दाहत किरण कमल जनु जल ॥  
 अंदन कुसुम मुहाय धन सार लगत अठी ज्वाल ॥२॥ कुंभनदास  
 प्रभु नवधन तुमजिन कनक कलता मानो सुरजी जवमाकाला ॥ अध-  
 राभूत वंसी अलिउ तुम गिरी गोमर्धन लाल ॥ ३ ॥ राग धनाश्री ॥  
 अय दीन रात्री पहरीसे भये ॥ तय तेनी धरत नाही न जवते हरी  
 मधुपुरी गये ॥१॥ यह जनीयत विधाता ज्युग समझीने जल नये ॥  
 जमत जग विहा तनके अेश प्रीति डरा ॥२॥ वृजवासी अती पर-  
 मदीन भये व्याकुल सोय लये ॥ उन प्रांण दुष्प्रित जल रहगत  
 दाइल हेम पल कुंभनदास विधुरत नंद नंदन अहुत संताप करे ॥  
 अय गिरधरविन रहत निरंतर नौतन नीर छये ॥४॥ राग केदारो  
 औरनको समीप विछरनो आयो मेरी हिसा ॥ सव कोउ सोवे सुख  
 अपने आजी मोक्ष आहत रिसा ॥२॥ ना जनो यह विधाताकी गती  
 मेरे ॥ आंक लिमे ऐसो को नरीसा ॥ कुंभनदास प्रभु गिरधर कहत  
 निसदीन रहि ज्यो यात्रकधन तसा ॥२॥ अेश पद कुंभनदासलुने  
 गाय गाय सुतते पद कीये पाछे सुई होयके कुंभनदासलु भगवद श्रवामे  
 आये ऐसी लुनको दर्शनकी आरतिसो वे कुंभनदासलु श्री आया-  
 र्यलु महाप्रभुनके अेश परमकृपापात्र भगवदीय हे ताते धनकी वार्ताको  
 पार नाही ताते धनकी वार्ता कहांनाछ लिखिये.

॥ वार्ताप्रसंग ॥२॥ संबंध ॥१७७॥ वैष्णव ॥८३॥

अब श्री आचार्यजी महाप्रभुनके से-

वक कृष्णदास अधिकारी ति-

नकी वार्ता.

सो वे कृष्णदास सुद्ध अेक वेर द्वारीका गये हुते सो श्री रण-  
 छोडलुके दर्शन करिके तहां ते अलेख आधन भीरांभाषको गांभ  
 आयो सो वे कृष्णदास भीरांभाषके धर गये तहां हरीवंसबास आ-  
 दिते विशेष सह जैष्णव हुने सो काहुको आये आदिन काहुको आ-

એ દસદિન કાહુકો આએ પંદ્રહદિન ભએ હુતે તિનકો વિદાનભઈ  
 હુતો ઔર કરનદાસને તો આવતહી કહ્યો જે હુંતો ચલુંગો તવ મી-  
 રાંખાધને કહ્યો જે વૈઠો તમ કિતનીક મહોર મી નાયજીકી દેન લા-  
 ગી સો કૃષ્ણદાસને નક્કીની ઔર કહ્યો જે તુ મી આચારચજી મહા-  
 પ્રમુનકી સેવક નાહી હોત તાતે તેરી ભેટ હમહાયતે ન છુવેગે સો એસે  
 કહાંકે કરનદાસ ઉહાં તે ઉઠી ચલે સોજબ આગે આએ તવ એક વૈ-  
 જુવને કહ્યો જે તુમને મી નાયજીકી ભેટ નાહી લીની તમ કરન-  
 દાસને કહ્યો જે ભેટકી કહાંકે પરી મીરાંખાધકે ધહાં જીતને શેવક વૈ-  
 ઠે હુતે તિન સવનકી નાકની ચીકરીકે ભેટ ફેરીહૈ ધતને ધક ઠોરેકહાં  
 મિલતે પેહુ જનનેગે જે એકવેર મુદ્ર મી આચારચજી મહાપ્રમુનકો  
 શેવક આપો હુતો તાને ભેટ ન લીનો તોતિનકે ગુરૂકી કહા વાત હોયગી.

વાર્તા પ્રસંગ ॥૧॥

ઔર પ્રથમ શેવા મીનાયજીકી વંગાલી કરતે જે મી આચા-  
 રચજી મહાપ્રમુનને મુકટ કાઢિની ઔર હીરકે આભરન ભરાયદીનેહે  
 શા નિત્ય ધરતે શા ભેટ આવતી શો ખરચ હોતી કછુ સંગ્રહ ન રા-  
 ખતે સમ ખરચ હોય જતો ઔર બંગાલી શેવા કરતે પાછે મી  
 આચારચજી મહાપ્રમુનને કૃષ્ણદાસકો આગ્યાદીની જે તુમ મી ગો-  
 વરધન રહેા શેવા ટહલ કરો તવ કૃષ્ણદાસ અધિકારી ભએ અધિકાર  
 કરન લાગે પાછે એકદિન મથુરાકો ચલન લાગે શા અંડીગલી પહુંચે તવ  
 પેડેમે અવ ધુતદાસ મિલે મહાપૂરૂપ હુતે વૃજમે ફિરચો કરતે સો ક-  
 ૃષ્ણદાસકો મિલે તવ અખધુતદાસને કહ્યો જે કૃષ્ણદાસ તુમ કહાં  
 ચલે તમ કૃષ્ણદાસને કહી જે મથુરા જતહો કછુ કામહૈ તમ અ-  
 ખધુતદાસને પૂછો જે મી નાયજી શેવાકોન કરતહૈ તવ કૃષ્ણદાસને  
 કહી જે વંગારી કરતહૈ તમ અખધુતદાસને કહી જે મી નાયજીકો  
 અપનો વૈભવ વઢાવનોહૈ તાતે તુમ બંગાલીનકો દુરી ક્યો નાહી કરત  
 સો અખધુતદાસ સો મી નાયજીને કહ્યો જે મોકો બંગાલી વહુત દુ-  
 ખ દેતહૈ શા તમ બંગાલી મી નાયજીકો ભોગ ધરતે સો ઉતકી સુ-  
 ટીયામે છોટો સો રચપ હુતો દેવીકો સો સામ્હે વૈઠાવતે જય ભોગ  
 સંરાવ તેજા દેવીકો અપની સુટીયામે ધર લેતે એશે સદાં કરતે સો વાત  
 અખધુતદાસકો મી નાયજીને જતાઈ તાતે અખધુતદાસને કૃષ્ણદાસ  
 સો કહ્યો જે તુમ બંગાલીનકો દુરી કરો તમ કૃષ્ણદાસને કહીજે મી  
 ગુસાંધજીકી આસાવિના કૈશે કાઢે તમ અખધુતદાસને કહ્યો જે તુમ  
 અડલમે ભયકે મી ગુસાંધજીકી આસાલે આવો જૈશે વને તૈશે ધન

अंगालीनकुं कदो तय कृष्णदास अंगीगशा किरै सो शरी गोवरधन  
 आये तय अंगालीन सो कह्यो ने हुंतो शरी गुसांछुके पास अ-  
 उल नतहो तुम शरी नाथलुको शेवा सावधानी शो करीयो और  
 सब शेवक हुते तिनसो कृष्णदासने कह्यो ने हुंतो अउल नतहो शरी  
 गुसांछुके पास कछु कामहै तुम सावधान रहियो तापाछे शरी नाथ-  
 लु सो विदाहोवके अउलको यले सो दिन पंद्रहमे शरी गुसांछुके  
 पास आय पहुंचे सो आयेके शरी गुसांछुको दंडेत कीये तय शरी  
 गुसांछुने पूछो ने कृष्णदास तुम क्यो आये तय कृष्णदासने क-  
 ह्योने श्री नाथलुको अपनो बैभववढावनोहैं और अंगालीनने बहुत  
 माथो उड़ायोहै ने भेट आवतहै सोले नतहैं सो समय अपने गुर-  
 नको देतहैं तय श्री गुसांछु कहे ने श्री आचार्यलु महाप्रभु अ-  
 सुरया मोहनीया दिआध तापाछे श्री गोपीनाथलु पूरवकोपर देस दीयो  
 सो अेक लक्षकी भेटभई पाछे अउल आये तय श्री गोपीनाथलुने क-  
 हीने यह पहलो पर देसहै ताते यामे आयोसो सब श्री नाथलुकोहै  
 श्री नाथलुको वितयोग कीयो यहिअे ता पाछे श्री गोपीनाथलु दिन  
 बारह रहिके पाछे श्री नाथलु द्वार पधारे सो जय पहुंचे तय श्री  
 गोपीनाथलुने दर्शन कीयो पाछे ने आये हुते सो सब भेट कीनो आ-  
 बुधन समय नडावके समराअे थार कठोरा उवरा यमया लष्टी प्रभृत  
 सब सोना रूपांक कीये समय करिके श्री नाथलुसो विदा होयके श्री  
 गोपीनाथलु अउल आये ता पाछे अंगाली वरस अेके नीतर समय  
 ले गये आपने गुरके महां नयके दीयो यहयात श्री गुसांछुने कृष्ण  
 दास सो कही और कह्यो ने अंगालीनने माथो उड़ायो हैं परि ने श्री  
 आचार्यलु महाप्रभुनके रामे है सो कैसे निकसगे तय कृष्णदासने  
 श्री गुसांछुसो कह्यो ने महाराज श्री नाथलुकी मरछा है ने अं-  
 गाली नको निकासो ताते आप या वातमे कछु मति बोझो भोको आ-  
 प आत्मा करो तो अपनो आप करि लेउगो जैसे अंगाली निकसगे तैसे  
 काढूगो तय श्री गुसांछुने कह्यो ने अवश्य तय कृष्णदासने कह्यो  
 ने महाराज दाय पत्र लिखिये अेक राजा टोडलमल के नामको अेक  
 बीरवलके नामको तय श्री गुसांछुने दाय पत्र लिखि दीन राजा टो-  
 डलमलको और बीरवलके नामको लिखो ने कृष्णदासको श्री नाथलु  
 द्वार भेटहै ने तुमशो कृष्णदास कहे सो करि देउगे सो पत्र लेके श्री  
 नाथलु द्वारको यले सो आगरे आये तहां टोडलमल राजा बीरमल  
 सो मिले पत्र श्री गुसांछुके हुते सो दीये तय उन पत्र वांच्यो

કૃષ્ણદાસો કહ્યો જો તુમ કહો નૈથે કરે તવ કૃષ્ણ દાસને કહ્યો જો અખ  
તો મેતો મથુરા જનહો અંગાલીનકો કાઢવેકો તો પાછે કૃષ્ણદાસ રા-  
જા ટોડરમલસો વિદા હોયકે શ્રી નાથજી દ્વારકો ચલે સો મથુરા આખે  
તવ માર્ગમે અવધુતદાસ મિલે તવ કૃષ્ણદાસસો અવધુતદાસને કહ્યો  
જો કૃષ્ણદાસજી ઢીલ કહા કરી રાખીહું અંગાલીનકો કાઢો શ્રી નાથજી  
કો એસી ઇચ્છાહૈ શ્રી નાથજીકો અપનો બૈભવ વઢાવનો હૈ તવ કૃષ્ણ-  
દાસને કહ્યો જો શ્રી ગુસાંઈજીકો આસા લેકે આયો હો અખ જાયકે  
અંગાલીનકો કાઢતહોં ઇતનો કહિકે કૃષ્ણદાસ ચલે સો શ્રી નાથજી દ્વાર  
આખે સો વે અંગાલી સવ રૂદ્રકુંડ ઉપર રહતે સો ઉનકી ઓપરી કુતી  
સો કૃષ્ણદાસને જરાય દીની તખ સોર ભયો તખ અંગાલી શેવા છોડિ  
કે પર્વતકે નાચે આખે તખ કૃષ્ણદાસને પર્વત ઉપર અપને  
મનુખ્ય પકાય દીએ તવ અંગાલી દેખેતો કૃષ્ણદાસને ઓપરીમે  
આગિ લગાય દીની હૈ તવસખ અંગાલી કૃષ્ણદાસસોં જરેન લાગે તખ  
કૃષ્ણદાસને દે દેચારી લોંડી સવનમે દીની તવ વે અંગાલી તહાં તે  
ભાજે સો મથુરાં આખે તવ રૂપ સનાતન કે પાસ આયકે સવવાત  
કહી તખ ઇતને મે કૃષ્ણદાસ હુ આય ઠાડે ભએ તખ રૂપ સનાતનને  
કૃષ્ણદાસકે ઉપર ખીજકે કહ્યો જો ક્યોરે સુદ્ર વુ કોન જો ઇન પ્રદ્મ  
જીનકો મારે તવ કૃષ્ણદાસને કહી જો હુંતો સુદ્રહો પરિ તુમહુંતો અગ્નિ  
હોતી નાંહી તુમહુંતો કાયસ્થ હો તખ સનાતન કહયો જો મહ વાત  
ધાદશાહ સુનેગો તો તુ કહા જીવાવ દેઇગો તવ કૃષ્ણદાસને કહયો જો  
હોતો નાંકે જીવાવ દેઇગો પરિ તુમકો જીવાવ દેતમે બહુત દુખ હોય  
ગો ઐર તુમકો જીવાવ આવેગો જો તુમ કાયસ્થ હોયકે ઇન પ્રાદ્મ-  
જીસોં દેડાત કરાવતહો તવ રૂપ સનાતન તો ચુપૈ રહે ઐર અંગાલી-  
નસોં કહયો જો તુમ જાનોએ જાનો તવ અંગાલી મથુરાકે હાકિમ પાસ  
ગએ તખ કૃષ્ણદાસ જાય ઠાડે ભએ તખ હાકિમને કહયો જો ભયોસો  
તો ભયો પરી અવ ઇનકો રાખો તવ કૃષ્ણદાસને કહયો જો અવતો  
ઇનકો ન રાખેગે એતો હમારે ચાકર હુતે સો હમને ઇનકો સેવા સોપી  
હુતી સો એ સેવા છોડિકે ક્યો આખે જો ઇનકી ઓપરી જરી જરી  
ગઈ હુતી તો હમન ઇજવાય દેતે તાતે અવતો હમ ન રાખેગે તાઉપર  
તુમ કહત હોજો હમ શ્રી ગુસાંઈજીકો લિખેગે વે કહેગે તેસે કરેગે  
તુમ શ્રી ગુસાંઈજીકો લિખો પાછે કૃષ્ણદાસ શ્રી નાથજીદ્વાર આખે  
ઐર અંગાલી સખ અપને શ્રી કુંડ આખે તવ કૃષ્ણદાસને શ્રી ગુસાં-  
ઈજીકો પત્ર લિખ્યો તામે અંગાલી કાઢે સો સવ સમાચાર વિસ્તાર ક-

રીકે બીજે ઐર લિખ્યો જો અવ પધારોયે તો બસોહૈ સો પત્ર ઓ  
 ગુસાંઈજીકે પાસ અડલ આપો તાપાછે ઓ ગુસાંઈજી અડલ તે ચલે  
 સો ઓ નાથજીદ્વાર આપે તવ વે અંગાલી સવ આપે તવ ઓ ગુસાં-  
 ઈજીસોં કહ્યો જો હમકો ઓ આચારચજી મહાપ્રભુનને સેવામે રાખે  
 હુતે સો કૃષ્ણદાસને હમકો કોટે તમ ઓ ગુસાંઈજીને કહ્યોજો તુમ  
 સેવા છોડીકે ક્યો ગએ દોષ તુમહારોહૈ તાતે અવતે સેવામે ન રા-  
 ખેગે તમ વે અંગાલી વહુત ખીનતી કરન લાગે જો મહારાજ અમ  
 હમખાયગે કહા તમ ઓ ગુસાંઈજીને હનકો ઓ નાથજીકે બદલે ઓ  
 મદન મોહનજીકી સેવા દીના ઐર કહ્યો જો હનકી સેવા તુમ કરીયો  
 જો આપેસો ખાધયો તમ વે અંગાલી ઓ મદનમોહનજીકી સેવા કરન  
 લાગે તાતે ઉન અંગારીનને ઓ ગોચરધન રહિવો છોડ દીયો તાપાછે  
 ઓ નાથજીકી સેવામે ગુજરાતી ખાન્નાણુ ભીતરિયા રાખે ઓ નાથજીકો  
 અપનો વૈભવ બદાવનોહોં સો સવ ભીતરીયાનકોનેગ ઐર સવ સેવક-  
 નકોનેગ જોજી ભાંતિ ઓ નાથજીને કહ્યો તાભાંતિ ઓ ગુસાંઈજીને  
 વાંધ્યો તવ તે ઓ નાથજીકી સેવા પ્રતાલિકા તે હોન લાગી ઐર ક-  
 ર્ણદાસ અધિકાર કરન લાગે.

॥ વાર્તાપ્રસંગ ॥ ૨ ॥

બહુર ઓનાથજીને કૃષ્ણદાસકો આત્મા દીની જો સ્યામકુમરકો  
 લેકે તાલ પખાવજ લેકે તુપરાસોલીને આહમ્મો સો સ્યામકુમર આહો  
 મદંગ બજવતે સો ઓનાથજીકી સેત આરતી ઉપરાંત અનોસર બયો  
 તમ કૃષ્ણદાસ સ્યામકુમરકે ઘર ગએ તમ કૃષ્ણદાસને સ્યામકુમરસોં  
 કહી જો ઓનાથજીને આત્મા કરી હૈ સો મદંગ લેકે પરાસોલી ચજો  
 તવ સ્યામકુમરને કહ્યો જો મોહુકું ઓનાથજીને આત્મા ઠરી હૈ તાતે  
 ચલિયે તમ સ્યામકુમર મદંગ લેકે આપો તમ કૃષ્ણદાસ ઐર  
 સ્યામકુમર એ દોડ જને પરા સો બીઆપે સો દેમેનો ઓ નાથજી  
 સ્વામિની જીસહીત વીરાજેહૈ તમ ઓ નાથજીને સ્યામકુમારસો કહ્યો  
 જો તુનો મદંગ વજય ઐર કૃષ્ણદાસસો કહ્યો તુ કીર્તન કરિ ઐર  
 ઓ નાથજી ઐર ઓ સ્વામિનીજી નૃત્ય કરીયો તહાં કૃષ્ણદાસને પદ  
 ગાયો સો પદ ॥ રાગ કેદારો ॥ ઓ ખખખાંત નંદની નાચત ગિર-  
 ધર-સંગ લાગ ડાટ ઝરપતિ રપરાસ રંગ રાખ્યો ॥ ૩૫ તાલ મિલ્યો  
 રાગ કેદારો સમ સુરન અવધરતાન રંગ રાખ્યો ॥૧॥ પાઈ સુખ સિદ્ધિ  
 બરત કાંમ વિવિધિરિદ્ધ અભિનવ દનસત સુહાગ હુલાસ રંગ રાખ્યો  
 વનિતા સતજ્યુય સંગ લિએ નિરખિ થકચો સંઘન મંદ વલિહારી કંઠ



દાસ સુધરંગ રાખ્યો ॥૨॥ યહ પદ કમ્પદાસને ગાયો ર્યાંમ કુમરને  
મદંગ બજાઈ શીનાથજી ઐર શી શ્વામિનીજી નૃત્ય કીએ તાને શી  
મહાપ્રભુજીકી કાનીતે શીનાથજી કમ્પદાસકે ઉપર એસી કૃપા કરત હુતે.

॥ વાર્તાપ્રસંગ ॥ ૩ ॥

ઐર કમ્પદાસને બહુત પદ કીએ તવ એક સમે સુરદાસજીને  
કમ્પદાસસોં પૂછો જો એ તુમ પદ કરત હો તામે મેરી છાયા હૈ તવ  
કમ્પદાસને સુરદાસજીસોં કહ્યો જો અવકે એસો પદ કરું જો જનમે  
ગુમહારી છાયા ન આપે તવ કમ્પદાસ એકાંતમે બૈઠકે એકાગ્રચિત  
કરીકે નયો પદ કરન લાગે સો જનમે તીનીતુકનો કાંપો ઐર ઐથી તુક  
બને નાહી તવ ઘડી દોહલોં વિચારે જો આગે તુક ચલત નાહી તો  
બલો ફેરી પ્રસાદ લેકે વિચારેગે સો જન પત્રમે લિખત હુતે સો પત્ર તથા  
દ્વાર્ત લેખની ઉહાંઈ ધરિકે પ્રસાદ લેવેકો ઉઠે જવ કમ્પદાસ પ્રસાદ  
લેવેકો બૈઠે તવ શીનાથજીને આપ તીન તુક વા પત્રમે અપને શી  
હસ્તસોં લિખ દીએ કમ્પદાસને આપો પદ કીયો હુતો તાકો આપ શી-  
નાથજી પૂરો કરીકે આપતો પધારે તા પાછે કમ્પદાસ પ્રસાદ લેકે આએ  
તવ દેખેતો શીનાથજી પદ પૂરો કરીકે શી હસ્તસોં લિખ ગયે હૈ સો  
દેખિકે કમ્પદાસ બહુત પ્રસન્ન બએ ઐર કહે જો સુરદાસજી આપે  
તો પદ સુનાવે તવ ઉત્થાપનકે સમે સુરદાસજી દર્શનકો આએ તવકમ્પદા-  
સને કહ્યો જો સુરદાસજી નયો પદ એક મેને કીયો હૈ તામે ગુમહારી છાયા  
નાહી ધરી તવ સુરદાસજીને કહ્યો જો કહેાં સુનો તવ જનો તવ પદ કહ્યો  
સો પદ ॥૨૧૦ ગૌરી॥ આવ તવને કાનહગોપવાલ કસગને ચુકી ખુરેલુ  
છુરીત અલકાવલી ॥ મોહ મનમય ચાપવક લોચનવાન સીસ સોભિત  
મત મધુચંદ્રાવલી ॥૧॥ ઉદિત ઉકુરાજ સુંદર સિરોમણી વદન નારખી  
ફલીનવલ જીવતી કુમુદાવલી ॥ અપુણ સદુચ અધર બિંવ ફલહ સાત  
કહત કછુક પ્રકટીત હોય કુંદ દસનાવલી ॥૨॥ અવણ કુંડલભાજ તિલક  
બેસરીનાક કંઠ ગૈરતમ મણીસુભ ગત્રી વલાવલી ॥૨૧૬૮૬ અચિતપૂર  
સિપદીક નિપાંતી વીચરાજત સુખ ઉલક મુક્તાવલી ॥૩॥ અથ શીના-  
થજી કતા ॥ વલય કંકણ બાજુબંદ ૨ ॥ જનુમુજ મુદ્રિકા કરે દલ  
ચિરાજ તનખાવલી ॥ કંચણિતરે મુરલિકા મોહિત અખિજ બિંધગોપીના  
જન મસીગ્રસચિત પ્રેમાવલી ॥૪॥ કંઠ છુદ્રધંટિકા જટિત હીરામણ નાભિ  
અંબુજવલિત મંગ રોમાવલી ધાય કવહુક ચલત ભકતહિત જાની પીવ  
ગંડમંડલ રમીર અમ જલકણાવલી ॥૫॥ પીતકો સય પરિધાને સુંદર  
અંગ ચરણુ પૂરવાદગી તસવદાવલી ॥ હૃદય કમ્પદાસ ગીરિવરધરણાજકી

अरुण नभ्य . मंद्रीका हरतती मिरावली ॥६॥ यह पद कृष्णदासने सुर-  
दासजुके आगे कह्योसो सुरदासजु तीन तुक तांछतो पावे नाही और  
तीन तुकके आगे कहन लागे तय सुरदासजुने कृष्णदाससें कह्यो नो  
कृष्णदास मेरे तुमसो वाद है और प्रभुनसें वाद नाही मे प्रभुनकी  
पान्ती पहचानत हों तव कृष्णदास सुप करी रहे ताते कृष्णदास ऐसे  
भगवदीय हैं.

### ॥ वार्ताप्रसंग ॥ ४ ॥

और ऐकसमे श्रीनाथजुके अंगारमे कुछ सामग्री यहिये हुती  
सो कृष्णदास गाऊलके आगरेके आये सो आगरेके अन्तरमे ऐक  
पेस्या नृत्य करत हुती प्यालटपा गावत हुती और भीरहुती सब  
क्षेग तमासो देखत हुते सो कृष्णदास अन्तरमे तमासेमे नय हाउ  
अये तव भीर सरकी गछ तव यह पेस्या कृष्णदासके आगे नृत्य करन  
लागी सो यह पेस्या बहुत सुंदर और गावे बहुत आछो नृत्य हुते  
सोछ करे सो कृष्णदास वा पेस्याके उपर रीन्हे और मनमे कहे नो  
यहतो श्रीनाथजुके लापक है ता पाछे वा पेस्याको दसमुद्रातो उहांछ  
दीये और कही नो रात्रीको समान सहित आछयो ता पाछे कृष्ण-  
दास उहां हवेलीमे उतरे सो सामग्री यहियत हुती सो समय लेके  
गाऊ लदाय सिद्धि करवायो ता पाछे रात्रि पहरि गछ तव पेस्या  
समान सहित आछ ता पाछे नृत्य भयो गांन भयो बापे कृष्णदास  
बहुत रीन्हे सो रूपैया सनयेक दीये तय वा पेस्याते कह्यो नो तेरो  
गानहु आछो और नृत्यहु आछो परि हमारो सेठ है सो तेरे प्या-  
लटपान उपर रीन्हेगो नाही तातेहों कहां सो गाछयो ता पाछे  
कृष्णदासने ऐक पुरवी रागमे पद करीके सिज्जायो ता पाछे दुसरेदीन  
वा पेस्याको साथ लेके अले सो आगरे आये पाछे तीसरेदीन श्रीना-  
थजुद्वार आये सामग्री समय अंगारमे धराछ ता पाछे नव उत्थापनके  
समय भयो तव कीर्त्तनीया कालुको वागे लेज्जन न दीये तय वा पेस्याको  
समान सहित ले गये शरी गुसांछजु मंदीरमे हाउ शरीनाथजुके  
मूढा करत है और मल्लिकार्जुन पेस्या नृत्य करन लागी और यह  
पद गायो सो पद ॥ राग पूरबी ॥ मो मन गिरधर छविपर अटक्यो ॥  
लजित त्रभंगो अंगनपर अलि गयो तहांछ ठक्यो ॥ १ ॥ सज्जन स्थाप-  
धन वरषु नीलहै किरिमित मनतन अटक्यो ॥ कृष्णदास कियो प्रांशु  
न्योछावरी यह तन नगसिरे पटक्यो ॥ २ ॥ यह पद वा पेस्याने गायो  
सो नव गावत गावत पीछेली तुक आछ नो कृष्णदास कियो प्रांशुन्यो

છાવરિ યહ તન જગસીર પટકયો ઇતનો કહતમાત્ર વા વેસ્યાકે પ્રાંન તત્કાલ નીકસી ગયે ઐર દિવ્યશ્વરૂપ ધરિકે ઓનાથજીકી લીલામે પ્રામ બધ ઐર વા વેસ્યાકે સમાજી હુતે સો મરન લાગે ને હમારીતો વા તે જીવના હુતો અવ હમ કહા આઈગે તમ કૃષ્નદાસને કહ્યો ને તુમ ક્યોં રોવત હો અહો નાચે આઈવેકો દેઉ તવ ઉન સમાજીનકો નાચે લાઇકે કૃષ્નદાસને સહજ રૂપેયા દે વિદા કીયે કૃષ્નદાસને અપને મનતે સમર્પી તાકો બીનાથજીને વા વેસ્યાકો અંગીકાર કરી તાતે શરી આઆ-યજી મહાપ્રભુનકી કાનીતે શ્રવકકી સમર્પી વરતુ વા બાંતીસો અંગીકાર કરત હૈ.

### વાર્તા પ્રસંગ. ૫

ઐર કૃષ્નદાસકો ગંગાઆઈસોં બહુત રનેહ હતો સો ત્રીગુ-સાંઈજી કોન સુહાવતે સો એક દિન ત્રીગુસાંઈજી બીનાથજીકો ભા-ગ સમર્પત હતો સો સામગ્રી ઉપર ગંગા વાઈકી દ્રષ્ટિ પરી તાતે ત્રી નાથજી આરોગે નાહી પરિ ભાગતો સમર્પ્યો તા પાછે સમય બપો તવ ભામ સરાપો તમ આરતી કરિ અનોસર કરિકે ત્રી ગુસાંઈજી આપ નીચે પધારે તમ સેવક આદિ બીતરિયા સવનને મહાપ્રસાદ લીધો તમ ત્રી ગુસાંઈજી આપતો બોજન કરિકે પોઠે તમ બીનાથજીને બીતરિ-યાકોં સોજતેમે લાત મારિકે જગાઓ ઐર વાસું કહે ને હુંતો બુખોહોં તવ વા બીતરિયાને કહ્યો ને મહારાજ ત્રી ગુસાંઈજીને બોગ સમ-ર્પ્યોહો ઐર તુમ બુખે ક્યો રહે તવ બીનાથજીને કહી ને રાજભા-જમે તો અંગામ્પાઈકી દ્રષ્ટિ પરી હતી તાતે રાજભોગ આરોગ્યો નાહિ તવ વહ બીતરિયા જીઠિ ત્રી ગુસાંઈજીકે પાસ આપો સો ત્રીગુસાંઈજી બોજન કરિકે પોઠે હતો તમ બીતરિને આપકે ત્રીગુસાંઈજીકે ચરણદા વે તવ ત્રી ગુસાંઈજી ચોકિ ઉઠે તવ દેખે તો બીનાથજીકો બીતરિયાહૈ તવ વા બીતરિયાસોં પૂજો ને ઇહાં ઇતની વેર કહાં આયોહૈં તમ વા બીતરિ-યાને કહીને મહારાજ આજુ બીનાથજી બુખેહૈ મોકોં લાત મારિકે જગાસે ઐર કહ્યો ને આજુતો મે બુખોહોં તવ મેને ત્રી નાથજીસો કહ્યો ને મહારાજ ભામતો ત્રીગુસાંઈજીને સમર્પ્યોહો તુમ બુખે ક્યો રહે તમ ત્રી નાથજીને કહી ને સામગ્રી પૈ તો ગંગાવાઈકી દ્રષ્ટિ પરી તાતે મે નાહી આરોગ્યો તમ ત્રી ગુસાંઈજી વહ સુનતહી તત્કાલ બાંન કરિ પર્બત ઉપર પધારે સો વહ બીતરિયાહુ શનાંન કરિકે ત્રી ગુસાંઈજી કે સાયહો આપો તમ ત્રી ગુસાંઈજીને વા બીતરિયા સો કહીને બાત ઐર વડી કરો ને તત્કાલ સિદ્ધિ હોય આવે તવ બાત ઐર વડી કરી સો તત્કાલ સિદ્ધી બસે તવ ત્રી નાથજીકો ભાંમ સમર્પ્યો પાછે બીતરિયા

રસોઇ કરિકે શનાંન કરિ પર્વત ઉપર આંખે તપ્પ ઓ યુસાંઈજીની આત્મા બધ ને રાજભાગડી સામગ્રી તો બઈ સિદ્ધતા પાછે રાજભાગ સેન ભાગ ઇકે ઠેરો સમર્પ્યો તા પાછે સમય બપો તવ ભાગ સરાય સેન આરતી કરી તવ ઓ નાયજીકો પૌઠાંખે ભાગ સસ્યોહો સો પ્રસાદ એક ઉવરામિ ઉહાંઈ રહિ ગયો તવ રામદાસ બીતરિયાને કહ્યો ને પ-હ્યો ભાગ સમર્પ્યો હુતો સો ઉહાંઈ રહી ગયો હૈ તવ ઓ યુસાંઈજી ઉવરામિ તેટલાય કેલેત ઉવરે તાપાછે સવ સેવકનકો વહ વડી ભાતમે મહાપ્રસાદ રચક રચક બાંટી દીનો તા પાછે ઓ યુસાંઈજી આપકુ આરોગે સોવહ વડી ભાતકો પ્રસાદ અતિ અદ્ભુત બપો અતિ અસો-કીક સ્વાદ બપો સો ઓ યુસાંઈજી આપ સરાયો તવ કશ્નદાસ ઠાડે હુતે તપ્પ કશ્નદાસને કહી ને મહારાજ આપહી કરેન હારે આપહી આરોયન હારે તો કયો નડતિમ હોય તપ્પ ઓ યુસાંઈજીને હંસિકે કહ્યો ને એ તુમારેહી કીએ ભાગતહે ॥

॥ પ્રસંગ ૧૧૫ ॥

અપ્પ ને યહ વાત ઓ યુસાંઈજીને કહી ને એ તુમારેહી કીએ ફક્ત ભાગતહે સો યહ વાત સુનિકે કશ્નદાસને ઓ યુસાંઈજીસો બિગા-ડી તપ્પ ઓ યુસાંઈજીસો કશ્નદાસને કહ્યો ને તુમ પર્વત ઉપર મતી ચઢો તવ ઓ યુસાંઈજી આપનો તહાંતે ફિરે સો પરાસો લીમે આપ રહે તપ્પ મનમે વિચારે ને કશ્નદાસ કહાં મને કરોગો પરિ ઓ નાય-થજીકી ઇચ્છા એસીહૈ સો ઓ નાયજીકી ઇચ્છા જનનકે કહુ વાલે નાહી સો આપ પરાસોનીમે રહે સો પરાસોનીમે ધ્વજનકે સામે બેઠિકે વિ-ગ્યમકી એઝૈર ઓ યુસાંઈજી તીનીદીનતો ઓ ગોવરધન રહતે ઝૈર તીનીદીન ઓ ગોકુજ રહતે તવ તે પરાસોની આપ રહે તવ ઓ યુસાંઈજી ઓ નાયજીકે મંદિરકી ખીરકી પરાસોલીકી ઝૈર પડતી તાકે સાગ્રહે બેઠતે તપ્પ ઓ નાયજી આપ ખીરકીમે આપ દર્શન દેતે તવ યહ જનનકે કશ્નદાસને પરાસોનીકી ઝૈરકી ખીરકી વનવામ દીની તવને ઓ યુસાં-ઈજી ગોકુજતે જમ પરાસોની આજતે તપ્પ રામદાસજી સવ સેવક આદે ઓ નાયજીકી રાજ ભાગ આરતી કરકે અસોસર કરી ઓ યુ-સાંઈજીકે દર્શનકો પરાસોની આવતે સો આપકે અરણોદિક લેડ પાછે પ્રસાદ લેતે સો કશ્નદાસકો સુઝાવનો નાંહી ઝૈર સમ સેવક ઓ યુસાં-ઈજીકે દર્શન વિના મહાપ્રસાદ કેસે લેઈ પરિ સેવકન સો કશ્નદાસકી અલે નાંહી ઝૈર ઓ યુસાંઈજી એક પત્ર ત્રિપિંકે રામદાસ બીતરીયા કો દેતે ઝૈર કહતે ને ઓ નાયજીકો દે દીજી સો પત્ર ઓ નાયજી

કો દેતે શ્રી નાયજી વિગ્રમ ઉત્તર લિખિકે રામદાસકો દેતે સો રામદાસ શ્રી ગુસાંઈજીકો દેતે તવ શ્રી ગુસાંઈજી વા પત્રકો વાંચિકે પાનીમે પીળતે યા ભાંતિસો છે મહિના વીતે પરિ શ્રી ગુસાંઈજીને શ્રી નાયજી કો અધિકારિ વૈષ્ણવ જ્ઞાનિ ઐર શ્રી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકો શેવક જ્ઞાનિ કહ્યુ ન કહ્યો પરિ શ્રી નાયજીકે વિરહકો રોહ વહુત કરને યા ભાંતિ છે મહિના ભયે તવ એક દિન રાજી વીરવજ આય નિકસે તવ તા દિન તો શ્રી ગુસાંઈજી પરાસોજી હુતે શરી ગિરધરજી ધર હુતે તવ રાજી વીરવજને શરી ગુસાંઈજીકો ખમર કરાઈ તવ પોરિયાનને કહી જો શરી ગુસાંઈજીનો પરાસોજી હે શરી ગિરધરજી ધરહે તવ રાજી શરી ગિરધરજીકે દરશનકો આયે તવ વીરવજસોં શરી ગિરધરજીને કહી જો કૃષ્ણદાસ અધિકારી કાકાજીકો શરી નાયજીકે દરશન નાંહી કરન દેત સો કાકાજીકો ખેદ વહુત હોતહે કાકાજી પરાસોજીમે જ્ઞાપ દર્શન કરતહે તમ વીરવજને શરી ગિરધરજીસોં કહી જો અવહુ જ્ઞાપકે કૃષ્ણદાસકો કાકુંગો યો કહિકે રાજી વીરવજ શરી ગિરધરજીસોં વિદા હોય કે મથુરા આયે ઐર શરી ગુસાંઈજી પરાસોજીતે શરી ગોકુલ આયે ઐર વીરવજને પાંચસે મનુષ્ય ભિજે ઐર કહ્યો જો કૃષ્ણદાસ કો પકરિ લાવો સો વે મનુષ્ય શરી ગોવરધન આય કે કૃષ્ણદાસકો બંદીખાનેમે દીનો તવ શરી ગિરધરજીસોં કહવાય પકાઈ જો કરસનદાસ કો બંદીખાનેમે દીનોહે તવ શરી ગિરધરજીને શરી ગુસાંઈજીસોં કહ્યો જો કરસનદાસકો બંદીખાનેમે દીનોહે તવ શરી ગુસાંઈજીને કહ્યો જો હાય હાય શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુનકે સેવકનકો એસો કહ્યુ તવ શરી ગુસાંઈજીને શરી ગિરધરજીસોં કહ્યો જો તુમને કહ્યો હોયગો તમ શરી ગિરધરજીને કહ્યો જો હમનેતો વીરવજસોં સહજહી કહ્યો હુતો જો કાકાજીકો દર્શન નાંહી કરન દેત સો કાકાજીકો બહુત ખેદ હોતહે તમ શરી ગુસાંઈજીને કહ્યો જો ભોજન જમ કરુંગો તવ કરસનદાસ આવેગો તવ શરી ગિરધરજી તત્કાલ ઘોડા મગાય અસવાર હોયકે મથુરાકો આયે તવ વીરવજસોં કહ્યો જો કાકાજી ભોજન નાંહી કરત તાતે કરસનદાસકો છોડિ દેઉ તવ રાજી વીરવજને કરસનદાસકો શરી ગિરધરજીકે હવાલે કરિ દીયો તવ શરી ગિરધરજી તત્કાલ સંગ લે શરી ગોકુલ આયે તવ શરી ગુસાંઈજીને સુની જો શરી ગિરધરજી કરસનદાસકો સંગ લેકે આવતહે સો શરી ગુસાંઈજી ઠકુરાની ઘાટ ઉપર પહુંચે ઐર વા ઐરતે કરસનદાસ આયે સો શરી ગુસાંઈજી કો દરશન કીઓ ઐર એક નયો પદ કરકે ગાયો સો પદ ॥

॥ રાગ કેદારો ॥ શ્રી વિઠ્ઠલ જીએ ચરનનકી બલિ ॥ હમ સેવ-  
 તી ॥ ઉધારન કારન પરમ કૃપાન આપે આપન ચલિ ॥ ૧ ॥ ઉજ્જવલ  
 અરુણા દયારંગ રંજિતદસ નખચંદ્ર વિહારતમનનીદંત ॥ સુભગકર સે-  
 ખર સોભન પાવન ભક્ત મુદિત લલિત કર અંજલ ॥ રા ॥ અતિસં  
 મરફલ સુગંધ સુસીતલ પરતવિ વિધિતા પડારતમલ ॥ ભજ કૃષ્ણ-  
 દાસ વાર એક સુધિ કરી તરો કહાકરેગોરિ પુકલ ॥ ૩ ॥ યહપદ શ્રી ગુ-  
 સાંઘજીએ આગે ગાયો પાછે શ્રી ગુસાંઘજી કૃષ્ણદાસકો અપને  
 ધર લે ॥ આખે પાછે કૃષ્ણદાસ સો શ્રી ગુસાંઘજીને કહ્યો  
 ને ઉઠો ભોજન કરો તવ કૃષ્ણાસને કહ્યો મહારાજ આપ ભોજન  
 કર્યો પાછે મે જીડન લેઉગો તમ શ્રી ગુસાંઘજી ભોજનકો બેઠે  
 તવ કૃષ્ણદાસને એક પદ ઝોર ગાયો સો પદ ॥ રાગ ॥ કાનહરો ॥  
 તાહીકો સિરનાધયે ને વલ્લભ સુન પદ રજરતિ હોયા કોળે કહા આન  
 જિયે પદ દિનસો કહા સગાઈ મોય ॥ ૧ ॥ સારસાર વીચારી મતો કરો  
 સુનિય અગોધનજિયોનિયોય ॥ તહાં નવનીત પ્રગટ પુર્યોત્તમ સહજર્ધ  
 ગોર સજિયો વિજોય ॥ ૨ ॥ જાકે મનમે ઉગ્ર ભરમ હૈ શરી વિઠ્ઠલ  
 શરી ગિરધર દોય ॥ તાકો સંગ વિખમ વિખલુતે બુજિ હુ અતુર કરે  
 જનકોય ॥ ૩ ॥ તેજ પ્રતાપ દેખી અપને અખ અસમ સારને ભિદેન  
 તોહિ ॥ કસ્તદાસ તે સુરતે અસર ભયે અસુર તે સુર ભયે ચરણુનિ  
 છોહિ ॥ ૪ ॥ યહ પદ સુનિકે શરી ગુસાંઘજી બહુત પ્રસન્ન ભયે પાછે  
 શરી ગુસાંઘજી ભોજન કરીકે પધારે તવ કૃષ્ણદાસ સો કહ્યો ને અખ  
 જાકે ભોજન કરો તવ કસ્તદાસ ભીતાર ગયે તમ શરી ગિરધરજીને  
 શરી ગુસાંઘજીકી જીડન પાતરી કૃષ્ણદાસકે આગે ધરી તવ કસ્તદાસને  
 મહાપ્રસાદ લીનો પાછે વીડા દોય દીએ રાત્રિકો કસ્તદાસ વહાંઈ સોઈ  
 રહે તાપાછે પિછલી રાત્ર ધડી દોઈ રહી તવ શરી ગુસાંઘજી ઉઠેદહ  
 કત કરીકે જ્ઞાન કીયો શરી નવનીત પ્રિયાજીએ મંગલાકે દર્શન કરીકે  
 વાહિર પધારે તમ શરી નાથજીદ્વાર પધારી વેકી તદ્ધારી કીએ તમ  
 ઘોડા દોઈ મંગાયે એક ઘોડા ઉપર શરી ગુસાંઘજી અસવાર ભયે એક  
 ઘોડા ઉપર કસ્તદાસ અસવાર કીયો ઝોર શરી ગોકુલ તે ચલેસો શરી  
 નાથજીદ્વાર દિન પહરસવા એક ચઢે જાય પહુચે સો યહાં શરી નાથ-  
 જીકો રાજ ભોગ આપો હુતો સો શરી ગુસાંઘજી તદ્ધાલ જ્ઞાન કરીકે  
 ઉપર પધારે ઝોર શરી ગુસાંઘજી વિગ્યમ પત્રપરા સોજીતે લિખીતે  
 સો રામદાસ ભીતરીયા કે હાથ પઢાવતે તાકો પ્રતિ ઉત્તર શરી નાથ-  
 જી પત્રમે લિખીકે શરી ગુસાંઘજીકો પઢાવતે સો શરી ગુસાંઘજી જ-

જામે ઘોરાકે પીનતે સોઝેલે દિનકો પત્ર શરી નાયજીકે હસ્તાક્ષરકો સો શરી ગુસાંઈજી રાખે હુતેસો પત્ર સાયહીલે આખે હુતે પાછે શરી નાયજીકો રાજ ભોગ આપો હુતો સો સમય બપો તપ શરી ગુસાંઈજી ભાગ્ય સરાયવેકો પધારે તપ શરી ગુસાંઈજીકો દેખીકે શરી નાયજી બહુત પ્રસન્ન બખે ઐર પૂજો જો નીકિહૌ તપ શરી ગુસાંઈજી કહેજો તુમકો દેખે સોઈ દિનની કહે પાછે પરસ્પર દોહજીને મસિક્કાખે પાછે શરી ગુસાંઈજી રાજ ભોગ સરાયો પાછે વહ પત્ર હુતો સો ઝાંપીને ધરચો પાછે રાજ ભોગ કે દર્શન જુલે તપ કૃત્નદાસને દર્શન કીખે પાછે શરી ગુસાંઈજી રાજ ભોગ આરતી કરો અનોસરી કરી નાંચે પધારે પાછે રસોઈ કરી ભોગ સમર્પિત ભોજન કરી શરી ગુસાંઈજી પોઠો સો ઉત્થાપન તે ઘડી દોષ પહલે ઉઠે પાછે ઉત્થાપનકો સમય બપો તપ રનાંત કરી ઉપર પધારે સો શંખનાદ કરવાયો શરી નાયજીકે ઉત્થાપન બખે પાછે જેન આરતી ઉપરાંત દર્શન કરીકે કૃત્નદાસકો શરી નાયજી કે સંનિધાન જુલાયો ઐર કહ્યો જો કૃત્નદાસ તુમ અધિકાર કરો ઐર શરી નાયજીકી શેવા નીકો ભાંતિસો કરી-ઓ તપ કૃત્નદાસને શરી નાયજીકે સંનિધાન એક પદ ગાયો સોપદ શાગ કાનહશે ॥ પરમ કૃપાલ શ્રીવલ્લભનંદન કરત કૃપા નિજ હાથ દે માથે ॥ જો જન સરણુ આખે અનુસરહો ગહિસોં પતિ શ્રી ગો-વર્ધનનાથે ॥ ૧ ॥ પરમ ઉદાર ચતુર ચિંતામણિ રાખત ભવ ધરાતે સાથે ॥ બજી કૃત્નદાસ કાજ સમ સરહોં જો જાને શ્રી ગિહલનાથે ॥ ૨ ॥ વહ પદ ગાયો ઐર બીનતી કીની જો મહારાજ મેરો અપરાધ ક્ષમા કરો તપ શ્રી ગુસાંઈજીને કહ્યો તુમારો અપરાધ શ્રી નાયજી ક્ષમા કરેગે પાછે કૃત્નદાસકો વિદા કીયો પાછે શ્રીનાજીકો પૌઠાયકે શ્રી ગુસાંઈજી નાંચે ઉતરે શ્રી ગુસાંઈજી પરમદયાલ કૃત્નદાસકો કૃત કધુ મનમે ન આનોં શ્રી આચારજીકે સેવક જાનિ અનુગ્રહ કીયો પાછે શરી ગુસાંઈજી દિન દોઈ રહે પાછે શરી ગોકુન પધારે ફિરી કૃત્નદાસ શ્રી ગુસાંઈજીકી આજ્ઞા તે અધિકાર કરન લાગે ॥

વાર્તા પ્રસંગ

સો વહુત ખરસલાં બલી ભાંતિસોં અધિકાર કીયો પાછે એક જૈ-બનવને કૃત્નદાસસો કહી જો મોકો એક કુવા ખનાવવાનો હૈ ઐર મોકો અપને દેશકો જાનો હે તાતે દ્રવ્ય જુમકો દે જાતહો સો જુમ વનવાય દોજો તપ કૃત્નદાસને કહી જો આજો તપ વહ વૈખવ તીનસે રૂપયા દેકે અપને દેશકો ગયો તપ કૃત્નદાસને જન રૂપધ્યાનમે તે એક સો રૂપીયા એક કુહરાંમે ધરિકે આંમકે વૃક્ષકે નાંચે ગાદિ દીખે કહ્યો જો

દોષ સૈ રૂપયા લગિ ચુકેગે તખ ઇનકો કાઢેગે સો આજો મહુત રહિ  
કે રૂઢ કુંડ ઉપર કુવા ખુદાયો તખ કેતેક દિનમે વહ કુવા મોહો તાંઈ  
બનિકે તૈયાર બયો ઐર દોષ સૈ રૂપયા લગે મહોદા બાકી રહો તખ  
ત્યાપનકે દર્શન કરી કે કૃશ્નદાસ કુવા દેખનકો ગયે સો હાથમે આસા  
હુતે સો આસાટોકિકે કુવાકે ઉપર ઠાઠે બચ્ચે સો વહ આસા સરકયો  
તખ કૃશ્નદાસ કુવામે બનઈ પડે તખ તો મનુષ્ય દોષ કુવામે ઉતરે સો  
વહુ તેરો દુંદે પરિ કૃશ્નદાસકો સરીરહુ ન પાયો તખ સખ મનુષ્ય ઉહાં  
તે ફિરિ આચ્ચે સો તા સમે શ્રી ગુસાંઈજી શરી નાથજીકો સેન ભોગ  
ધારિકે મંજુખમે બિરાજે હુતે ઐર રામદાસ શરી ગુસાંઈજીકે પાસ  
બેઠે હે તા સમે કાહુને આપકે કહો ને મહારાજ કૃશ્નદાસને કુવા  
ખનવાયો હોસો કૃશ્નદાસ દેખન ગચ્ચે હુતે સો આસા ટેકિકે કુવાકે  
મોહડે ઉપર ઠાડે હુતે સો આસાસરકયો સો કુવામે ગિરિ પરે ઐર  
મનુષ્ય દોષ કૃશ્નદાસકો હુંદિવેકો ઉતરે સો બહુ તેરો દુંદે પરિ શરીર  
ન પાયો કહા બનિયે કહા બયો તખ રામદાસજી કહે ને અધોગચંતિ  
તામસા તખ શરી ગુસાંઈજી કહે ને રામદાસ એસે ન કહિ અખળે  
કૃશ્નદાસ કુવામે ગિરે શો શરીર ન મિલ્યો તાકો કારન કહા સો તાકો  
કારન વહ ને કૃશ્નદાસ મેં કોઈ અલૌકિક જીવ હુતે શોતો શરીનાથજી  
કી બીલામે પ્રાપ્તિ બયો ઐર કૃશ્નદાસને માશરીરેશાં શરી ગુસાંઈજીકી  
અખસા કરીહે ને વહ શરીર અલૌકીક જીવ ભુગતનેહિ શો કુવામે  
ગિરત માત્ર કૃશ્નદાસકો શરીર લૌકિક શદ્દ હોય કે પૂછરીકી ઐરએક  
વૃક્ષ હે પીપરકો તહાં પ્રેત હોય કે રહો ભોગ ભુગતનકો તાતે કૃશ્ન  
દાસકો શરીર કુવામે ન મિલ્યો શરી ગુસાંઈજીકી અવસ્તાતે કૃશ્નદાસકી  
વહ ગતિ ભઇ ને પ્રેત હોય કે પૂછરીકી ઐર પીપરકે વૃક્ષ ઉપર વૈ-  
ડે રહત હે ॥

### વાર્તા પ્રસંગ ૮.

ઐર એક-શમે શરીનાથજીકી ભૈસિ ખોય ગઈ હુતીશો ગોપી-  
નાથ ગ્વાલ ઐર ચારિ પાંચ ગ્વાલ પૂછરીકી ઐર હુંદવેકો ગચ્ચે હુતે  
શો ગોપીનાથ દેખે તો પૂછરીકી ઐર શરીનાથજી ખેત્રતહે ઐર એક  
પીપર ઉપર કૃશ્નદાસ પ્રેત હવેકે વૈડે હૈ તખ કૃશ્નદાસને ગોપીનાથ ગ્વા  
લશોં કહી ને અરે ભઈયા મરી વીનતી શરી ગુસાંઈજીશોં કરિયો ઐર  
કહિયો ને કૃશ્નદાસને કહો હૈ ને હોં તુમહારો અપરાધિહોં તાંતે મે  
રી વહ વિવસ્થા હૈ હું શરીનાથજી કે પાય હોતો હુ મરી ગતિ હોત  
નાંહી તાતે મરો અપરાધ ક્ષમા કરી તો મરો ગતિ હોય ઐર ખાગમ



એક આમકે વૃક્ષકે નીચે કુલહરામે એક સૌ રૂપા ગડે હૈ શા કાઢિકે  
 વા કુવાકો મઠોડા વાકી રહ્યો શા બનવાવો તો મેરી ગતિ હોય તમ મે-  
 પીનાથ ગ્યાલને यह वात शरी गुथांछुके आगे कही जे महाराज  
 કૃનદાસ અધિકારીને यह विनती करी है तम शरी गुथांछु आभके  
 નીચે તે રૂપા લાયકે મઠોડા કુવાકો બનવાવો તમ કૃનદાસકી ગતિ બ-  
 ઈ કૃનદાસકો પ્રેત જીનમે શરીનાથજી દર્શન દેમે તે તાકે કારન यह  
 જો શીનાથજીકે શનિધાન શરી ગુથાંછુને કૃનદાસજો કહ્યો જો ક  
 ર્નદાસ તુમ અધિકાર કરો ઐર શરીનાથજીકી સેતાનીકી ભાંતિ ક-  
 રિયો તમ કૃનદાસને કહ્યો જો મહારાજ મેરો અપરાધ ક્ષમા કરો  
 તમ શરી ગોથાંછુને કહી જો તુમહારો અપરાધ શરીનાથજી ક્ષમા  
 કરે ગે સૌ શરીગુથાંછુ કૃપાતે શરીનાથજીને અપરાધ ક્ષમા કરો શા  
 પ્રેત જીનમે દર્શન દેતે પરસ્પર્સ ન કીયો જો સ્પર્શ હોય તો ઉદાર હોય  
 શા ઉદાર તો શરી ગુથાંછુકે હાયૈ કૃનદાસ શરી નાથજી સો કહેતે  
 જો મહારાજ તુમ મેકો દર્શન દેતૈૌ મેસોં બોલતૈૌ ઐરમે પ્રેત હું  
 તાતે મેરો ઉદાર ક્યો નાહી કરત તવ શરી નાથજીને કહી જોહું તોકો  
 દરશન દેતૈૌ બોલતૈૌં સૌતો શરી ગુથાંછુકે વચનકે લિયે નાહી તો  
 પ્રેત જીનમે દર્શન નાહી દેતો ઐર બોલતો હું નાહી ઐર ઉદાર તો  
 શરી ગુથાંછુકે હાયૈ તે શરી ગુથાંછુકો અપરાધ કીયોહૈ તાતે  
 શરી ગુથાંછુ ઉદાર કરેગે તમ હોયગો તાપાછે શરી ગુથાંછુ  
 આપપરમ કૃપાલ કૃનદાસકે ઉપર દયા આપજીને અગતો બહુત દિન  
 બએહૈ તાતે અગ ઉદાર હોય તો બલો તવ શરી ગુથાંછુ પ્રવધાટ  
 ઉપર આયકે કૃનદાસ કો કર્મ કરવાય ઉદાર કીયો તવ કૃનદાસકો ઉદાર  
 બયો ઐર લીલામે પ્રાપ્તિ બયો ઐર શરી ગુથાંછુ કહે જો કૃનદા-  
 સને તીનવાત આછી કરી એક તો અધિકાર કીયો શા એશા કીયોજો  
 ફેરી એશા ન કરે દુસરે શ્રીર્તન કીયેશા અદબુત કીયે ઐર તીસરે શરી  
 આચાર્યજી મહાપ્રભુતકો શેવક હોયકે શેવા હુ એસી કરી જોકો ઉન કરેગો  
 તાતે વે કૃનદાસ શરી આચાર્યજી મહાપ્રભુતકે એસે પરમકૃપાપાત્ર  
 ભગવદીયૈ તાતે ઇનકી વાર્તાકો પાર નાહી તાતે ઇનકી વાર્તા કહાંતાં-  
 ઈ લીખીયે.

॥ વાર્તા પ્રસંગ ૯ સંબંધ ૧૮૪ વૈશાખ ૮૪ ભઅ ॥

संपूर्णम्

